

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 की अपेक्षाओं के अनुरूप शिक्षक— शिक्षा का उद्देश्य प्रत्येक छात्राध्यापक को इस प्रकार समर्थ बनाना है कि वह—

- बच्चों का ख्याल रख सके और उनके साथ रहना पसंद करे।
- सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक संदर्भों में बच्चों को समझ सके।
- व्यक्तिगत अनुभवों से अर्थ निकालने को अधिगम अर्थात् सीखना समझे।
- सीखने के तरीके समझे, सीखने की अनुकूल परिस्थितियाँ पैदा करने के संभावित तरीके जाने तथा सीखने के प्रकार, गति तथा तरीकों के आधार पर विद्यार्थियों की विभिन्नताओं को समझे।
- ज्ञान को, चिंतनशील सीखने की सतत् उभरती प्रक्रिया माने।
- ज्ञान को पाठ्यपुस्तकों के बाह्य ज्ञान के रूप में न देखकर साझा संदर्भों और व्यक्तिगत संदर्भों में उसके निर्माण को देखे।
- उन सामाजिक, पेशेवर और प्रशासनिक संदर्भों के प्रति संवेदनशील हो जिनमें उसे काम करना है।
- ग्रहणशील हो और लगातार सीखता रहे, समाज और विश्व को बेहतर बनाने की दिशा में अपनी जिम्मेदारियों को समझ सके।
- वास्तविक परिस्थितियों में न केवल समझदारी वाले रवैये को अपनाने की उपयुक्त योग्यता का विकास करे बल्कि इस तरह की परिस्थितियों का निर्माण करने के भी योग्य बने।
- उसके भाषायी ज्ञान और दक्षता का आधार ठोस हो।
- व्यक्तिगत अपेक्षाओं, आत्मबोध, क्षमताओं, अभिरूचियों आदि की पहचान कर सके।
- अपना पेशेवर उन्मुखीकरण करने के लिए सोच समझ कर प्रयास करता रहे। यह विशेष परिस्थितियाँ अध्यापक के रूप में उसकी भूमिका तय करने में मदद करेंगी।

प्रारंभिक शिक्षा में पत्रोपाधि (डी.एल.एड.)

Diploma in Elementary Education (D.El.Ed.)

हिन्दी भाषा शिक्षण स्तर -1

प्रथम वर्ष

(प्रायोगिक संस्करण)

प्रकाशन वर्ष -2017



राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छत्तीसगढ़, रायपुर

प्रारंभिक शिक्षा में पत्रोपाधि (डी.एल.एड.)

Diploma in Elementary Education (D.El.Ed.)

हिन्दी भाषा शिक्षण स्तर-9

प्रथम वर्ष

(प्रायोगिक संस्करण)

प्रकाशन वर्ष-2017



राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,

छत्तीसगढ़, रायपुर

प्रकाशन वर्ष – 2017

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् रायपुर छत्तीसगढ़

संरक्षक एवं मार्गदर्शक

सुधीर कुमार अग्रवाल भा.व.से.

संचालक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

पाठ्य सामग्री समन्वयक

आर. के. वर्मा

यू.के. चक्रवर्ती

डेकेश्वर प्रसाद वर्मा

विषय संयोजक

बी.आर. साहू

आर.के. वर्मा

तकनीकी सहयोग एवं सामग्री संकलन

विद्या भवन सोसायटी उदयपुर, छत्तीसगढ़ शिक्षा संदर्भ केन्द्र, रायपुर

आई.सी.आई.फाउंडेशन, पुणे।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् रायपुर उन सभी लेखकों/प्रकाशकों के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता है जिनकी रचनाएँ/आलेख इस पुस्तक में समाहित हैं।

प्राक्कथन

विद्यालय में अध्ययनरत् बच्चे भविष्य में राष्ट्र का स्वरूप व दिशा निर्धारण करेंगे। शिक्षक बच्चों को कुम्हार की भाँति गढ़ता है और वांछित स्वरूप प्रदान करता है। इस गुरुतर दायित्व के निर्वहन के लिए शिक्षकों को बेहतर तरीके से तैयार करना होगा।

“शिक्षा बिना बोझ के” यशपाल समिति की रिपोर्ट (1993) ने माना है कि शिक्षकों की तैयारी के अपर्याप्त अवसर से स्कूल में अध्ययन-अध्यापन की गुणवत्ता प्रभावित होती है। इन कार्यक्रमों की विषयवस्तु इस प्रकार पुर्ननिर्धारित की जानी चाहिए कि स्कूली शिक्षा की बदलती आवश्यकताओं के संदर्भ में उसकी प्रासंगिकता बनी रहे। इन कार्यक्रमों में प्रशिक्षुओं में स्व-शिक्षण और स्वतंत्र चिंतन की क्षमता के विकास पर जोर होना चाहिए।

कोठारी आयोग (64-66) से ही यह बात की जाने लगी थी कि शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए शिक्षकों को बतौर पेशेवर तैयार करना अत्यंत जरूरी है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूप रेखा-2005 ने भी शिक्षकों की बदलती भूमिका को रेखांकित किया है। आज एक शिक्षक के लिए जरूरी है कि वह बच्चों को जाने, समझे, कक्षा में उनके व्यवहार को समझे, उनके सीखने के लिए उपयुक्त माहौल तैयार करे, उनके लिए उपयुक्त सामग्री व गतिविधियों का चुनाव करे, बच्चे की जिज्ञासा को बनाए रखे, उन्हें अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करे व उनके अनुभवों का सम्मान करे।

तात्पर्य यह कि आज की जटिल परिस्थितियों में शिक्षकों की भूमिका कहीं अधिक उत्तरदायित्वपूर्ण व महत्वपूर्ण हो गई है। इसी परिप्रेक्ष्य में शिक्षक-शिक्षा को और कारगर बनाने की आवश्यकता है। शिक्षक-शिक्षा में आमूल-चूल बदलाव की आवश्यकता बताते हुए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूप रेखा-2005 में शिक्षकों की भूमिका के संबंध में कहा गया है कि सीखने-सिखाने की परिस्थितियों में उत्साहवर्धक सहयोगी तथा सीखने को सहज बनाने वाले बनें जो अपने विद्यार्थियों को उनकी प्रतिभाओं की खोज में, उनकी शारीरिक तथा बौद्धिक क्षमताओं को पूर्णता तक जानने में, उनमें अपेक्षित सामाजिक तथा मानवीय मूल्यों व चरित्र के विकास में तथा जिम्मेदार नागरिकों की भूमिका निभाने में समर्थ बनाए।

प्रश्न यह है कि शिक्षक को तैयार कैसे किया जाए? बेहतर होगा कि विद्यालय में आने के पूर्व ही उसकी बेहतर तैयारी हो, उसे विद्यालय के अनुभव दिए जाएँ। इसके लिए शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रम व विषयवस्तु को फिर से देखने की जरूरत है। इसी परिप्रेक्ष्य में डी.एल.एड. के पाठ्यक्रम में बदलाव किया गया है।

पाठ्यसामग्री का लक्ष्य शिक्षण विधि से हटकर शिक्षा की समझ, विषयों की समझ, बच्चों के सीखने के तरीके की समझ, समाज व शिक्षा का संबंध जैसे पहलुओं पर केन्द्रित है। पाठ्यक्रम में शिक्षण के तरीकों पर जोर देने के स्थान पर विषय की समझ को महत्व दिया गया है। साथ ही शिक्षा के दार्शनिक पहलू को समझने, पाठ्यचर्या के आधारों को पहचानने और बच्चों की पृष्ठभूमि में विविधता व उनके सीखने के तरीकों को समझने की शुरुआत की गई है।

चयनित पाठ्यसामग्री में कुछ लेखक/प्रकाशकों की पाठ्य सामग्री प्रशिक्षार्थियों के हित को ध्यान में रखकर ज्यों की त्यों ली गई है। कहीं-कहीं स्वरूप में परिवर्तन भी किया गया है, कुछ सामग्री अंग्रेजी की पुस्तकों से लेकर अनुदित की गई है। हमारा प्रयास यह है कि प्रबुद्ध लेखकों की लेखनी का लाभ हमारे भावी शिक्षकों को मिल सके। इग्नू और एन.सी.ई.आर.टी. सहित जिन भी लेखकों/प्रकाशकों की पाठ्यसामग्री किसी भी रूप में उपयोग की गई है, हम उनके हृदय से आभारी हैं। हम विद्या भवन सोसायटी उदयपुर, दिगंतर जयपुर, एकलव्य भोपाल, अजीम प्रेमजी फाउण्डेशन बेंगलुरु, आई.सी.आई.सी.आई. फाउण्डेशन पुणे, आई.आई.टी. कानपुर, छत्तीसगढ़ शिक्षा संदर्भ केन्द्र रायपुर के आभारी हैं जिनकी टीम ने एस.सी.ई.आर.टी. और डाइट के संकाय सदस्यों के साथ मिलकर पठन-सामग्री को वर्तमान स्वरूप प्रदान किया।

अंत में पाठ्यसामग्री तैयार करने में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सहयोगियों का हम पुनः आभार व्यक्त करते हैं। पाठ्यक्रम तैयार करने व पाठ्य सामग्री के संकलन व लेखन कार्य से जुड़े लेखन समूह सदस्यों को भी हम धन्यवाद देना चाहेंगे जिनके परिश्रम से पाठ्य सामग्री को यह स्वरूप दिया जा सका। पाठ्य-सामग्री के संबंध में शिक्षक -प्रशिक्षकों, प्रशिक्षार्थियों के साथ-साथ अन्य प्रबुद्धजनों, शिक्षाविदों के भी सुझावों व आलोचनाओं की हमें अधीरता से प्रतीक्षा रहेगी जिससे भविष्य में इसे और बेहतर स्वरूप दिया जा सके।

धन्यवाद।

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण
परिषद्, छत्तीसगढ़, रायपुर

विषय-सूची

इकाई	अध्याय	पेज न.
इकाई-I	भाषा किस चिड़िया का नाम है-	01-29
1	बच्चों की भाषा	02-10
2	अपना सिर थपथपाना व पेट को मलना	11-15
3	भाषा : मानव शास्त्रीय दृष्टि में	16-29
इकाई-II	भाषा का दूसरा कदम-स्कूल	30-61
4	बच्चों की भाषा सीखने की क्षमता-1	31-36
5	बच्चों की भाषा सीखने की क्षमता-2	37-42
6	भाषा सिखाना माने क्या	43-48
7	भाषा व भाषा शिक्षण	49-52
8	बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं : कुदरती जादू या लंबा, लंबा सफर?	53-61
इकाई-III	समाज का ताना बाना और भाषा	62-84
9	बहुभाषिता, साक्षरता, भाषा-शिक्षण एवं बौद्धिक विकास	63-68
10	भारतीय भाषाएँ : विकासशील समाज में पहचान का माध्यम	69-74
11	भाषा और तौर तरीके	75-77
12	कौन भाषा, कौन बोली	78-84
इकाई-IV	बातें, पढ़ना, निजी संसार गढ़ना	85-108
13	बातें करना	86-99
14	पढ़ना यानि एक सृजनात्मक अनुभव	100-103
15	सही मायनों में आखिर 'पढ़ना' है क्या?	104-108
इकाई-V	पढ़वाना किस चिड़िया का नाम है?	109-154
16	बच्चे पढ़ क्यों नहीं पाते?	110-116
17	पढ़ना कैसे सिखाया जाय?	117-132
18	पढ़ने का आकलन कैसे करें	133-141
19	पढ़ाई पहली कक्षा की	142-146
20	पढ़ना सिखाना	147-154
इकाई-VI	अब, लिखना किस चिड़िया का नाम है?	155-199
21	लिखना - क्या और कैसे?	156-165
22	लिखना सिखाने के उभरते आयाम	166-174
23	लेखन के विविध प्रकार	175-189
24	लिखना-बातचीत	190-199
इकाई-VII	इम्तहान/आकलन	200-239
25	आकलन (NCERT Handbook)	201-218
26	मूल्यांकन (एन.सी.एफ.)	219-227
27	प्राथमिक स्तर पर आकलन की मौजूदा प्रक्रिया	228-233
28	आकलन के तरीके	234-239

भाषा किस चिड़िया का नाम है

अध्याय : 1. बच्चों की भाषा :

- भाषा क्या है?
- बच्चों द्वारा भाषा का उपयोग कहाँ-कहाँ व कैसे?
- भाषा व व्यक्तित्व।

अध्याय : 2. अपना सिर थपथपाना व पेट को मलना :

- इंसानों की भाषा सीखने की क्षमता,
- भाषा सीखने की प्रक्रिया।

अध्याय : 3. एक मानव शास्त्रीय दृष्टिकोण :

- इंसानी भाषा व जानवरों की भाषा,
- मानवीय भाषा की विशेषताएँ,
- भाषा का विकास,
- भाषा की संरचना ।

विचार करें —

क्या आग सिर्फ जलाती है या जन्म भी देती है? क्या चट्टानें बोलती हैं? क्या नदियाँ महसूस करती हैं क्या पंछी और पशु इतिहास बनाते हैं?

पहली नज़र में ऐसे सवाल अजीब लग सकते हैं, मगर गहरी नज़र डालने से इन सवालों में गहरे अर्थ निकलने लगते हैं। मसलन, सूरज नाम के दहकते आग के महापिंड से उपजी हमारी धरती एक अर्से बाद ठंडी होकर जीवन जन्म देने लायक हो पाई। मसलन, चट्टानों का होना इस बात का सबूत है कि हमारी धरती में जबरदस्त उठापटक हुई जिसमें पिघला लावा जमकर हिमालय बन गया।

इसी तरह के सवालों में जुड़ा है यह सवाल कि जिसे हम भाषा कहते हैं वह किस चिड़िया का नाम है। क्या वह महज हमारे अनुभवों का पिटारा है? या फिर, क्या वह साइकिल की तरह सफर का साधन है? या फिर, वह दूरबीन की तरह एक खोज का यंत्र है? या फिर, वह नाक और हाथों की तरह हमारा अंग है? साफ है कि, भाषा का चरित्र उतना ही जटिल है जितना हमारे जीवन का चरित्र।

एक बात और। अब सब मानते हैं कि पृथ्वी में जीवन का उदय सूक्ष्म बैक्टीरिया से हुआ और धीरे-धीरे बदलकर पनपता गया, और यह विकास आज तक पहुँचा है। मगर सफर खत्म नहीं हुआ। क्या हम यकीन के साथ कह सकते हैं कि आगे आने वाली मानव जाति में दो की जगह तीन आँखें नहीं होंगी? या फिर, कि आने वाली मानव जाति हवा में उड़ सकेगी? पक्का जवाब मुमकिन नहीं है। यही हाल भाषा का है। आने वाले युगों में जिस तरह हमारे जीवन में स्टील, बिजली, रसायनों की भूमिका में बदलाव आना तय है, उसी तरह सभ्यता में भाषा की भूमिकाओं में भी बदलाव तय है। ये मानव जीवन के भागीदार आपस में जुड़े हैं और जुड़े रहेंगे, मगर जुड़ाव के तौर-तरीकों में लगातार बदलाव आता रहेगा। हीरो-हीरोइनें तो ज्यादा से ज्यादा डबल रोल करते हैं। भाषा हमारे जीवन में सैकड़ों रोल एक साथ करती है, जिसमें से सिर्फ पाँच या छः रोल ही भाषा शास्त्री अभी तक समझ पाए हैं। भविष्य और भाग्य पहले से तय नहीं हैं।

आखिरी बात। क्या जानवर, पक्षी, कीड़े, ये सब भी भाषा का इस्तेमाल करते हैं? जवाब है : हाँ, मगर वैसे नहीं जैसे इंसान करते हैं। तो क्या इंसानों में भाषा का जन्म बन्दरों से इंसान बनने के सिलसिले के साथ हुआ? जवाब है : बेशक, मगर अलग-अलग तरीकों से — इसीलिए रूसी, जापानी, तुर्की जैसी अलग-अलग भाषाएँ बनी। आगे चलकर क्या सभी भाषाएँ मिट कर एक दुनियावी भाषा बन जाएँगी? आज तक का जवाब है : कहा नहीं जा सकता। पढ़ के देखो।

अध्याय — 1

बच्चों की भाषा

पाठ की रूपरेखा

- परिचय
- उद्देश्य
- शीर्षक व उप-शीर्षक
 - भाषा और काम करना।
 - भाषा क्या-क्या करती है।
 - अपने काम का संचालन
 - दूसरों के क्रियाकलाप और ज्ञान का संचालन
 - खेलना
 - समझना
 - जीवन का बयान करना
 - जुड़ना
 - तैयारी
 - पड़ताल और तर्क
 - हमारी बात का असर हम पर पड़ता है।

परिचय :

हममें से कई लोग भाषा को बातचीत का साधन मानने के इतने ज्यादा आदी हो चुके हैं कि हम सोचने, महसूस करने और चीजों से जुड़ने के साधन के रूप में भाषा के इस्तेमाल को अक्सर भूल जाते हैं। भाषा के उपयोग का यह बड़ा दायरा उन लोगों के लिए बेहद महत्वपूर्ण है जो छोटे बच्चों के साथ काम करना चाहते हैं। शिशु के व्यक्तित्व और उसकी क्षमताओं के विकास को आकार देने में भाषा एक विशेष भूमिका निभाती है। एक सूक्ष्म किंतु मजबूत ताकत की तरह भाषा संसार के हरेक बच्चे के दृष्टिकोण, उसकी रुचियों, क्षमताओं, यहाँ तक कि मूल्यों और मनोवृत्तियों को भी बनाती है। यह सब कैसे होता है— इस पाठ का यही विषय है।

उद्देश्य :

- यह समझ पाएँगे कि भाषा क्या है? क्या यह सिर्फ संप्रेषण का माध्यम है?
- क्या यह सिर्फ एक विषय है? अथवा इससे कहीं ज्यादा?
- बच्चों की जिदंगी में भाषा कहाँ-कहाँ पर व किन रूपों में होती है इस बारे में समझ बना पाएँगे।
- भाषा सीखने में हम बच्चों की मदद कैसे कर सकते हैं इस पर समझ बना पाएँगे।
- शिक्षक ऐसे मौके चिह्नित कर पाएँगे जहाँ बच्चों को भाषा का अलग-अलग स्तर पर उपयोग करना पड़े।

पहले हमें एक ऐसी बात साफ कर लेनी चाहिए जिस पर अक्सर काफी बहस छिड़ी रहती है। स्कूली अध्यापक भाषा के नाम पर 'हिंदी' और 'अंग्रेजी' या अन्य किसी भाषा को एक स्कूली विषय की तरह लेने के आदी हैं। इसलिए वे शायद सोचेंगे कि यह किताब किसी खास भाषा की पढ़ाई के बारे में होगी। दूसरी तरफ विशेषज्ञ हैं जो बच्चे की 'पहली भाषा' और 'दूसरी भाषा' इत्यादि में गहरे भेद करने के आदी हैं। अध्यापक और विशेषज्ञ दोनों सोचते हैं कि भाषा की शिक्षा में चर्चा एक खास भाषा के नियमों, उसकी आम संरचनाओं, शब्दावली इत्यादि के विवरण से होनी चाहिए।

यह सब इस इकाई में नहीं है। यह किसी एक खास भाषा के अध्यापन की निर्देशिका कतई नहीं है। 'यहाँ हम उन जरूरतों के बारे में बात करेंगे जिन्हें कोई भी भाषा बच्चों के जीवन में पूरा करती है।' दुनिया का हर बच्चा— चाहे उसकी मातृभाषा कोई भी हो—भाषा का इस्तेमाल कुछ उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए करता है। एक बड़ा उद्देश्य है दुनिया को समझना, और उस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए भाषा एक बढ़िया औजार का काम देती है। जब तक हम बच्चे की निगाह से देखने और बच्चे की जिंदगी में भाषा की भूमिका को समझने में असमर्थ रहते हैं, तब तक हम अध्यापक, माता—पिता या देखरेख करने वालों के रूप में अपनी भूमिका ठीक से तय नहीं कर सकते।

भाषा और काम करना

बच्चों की भाषा का संबंध उन अनुभवों से है जिन्हें वे अपने हाथों और शरीर से स्वयं करते हैं और उन वस्तुओं से भी है, जिनके संपर्क में वे आते हैं। बचपन में शब्द और क्रियाकलाप साथ—साथ चलते हैं। क्रियाकलाप और अनुभवों को हजम करने और बयान करने के लिए शब्दों की जरूरत होती है। कोई अनुभव जब पूरा हो चुकता है, उसके बाद भी वह शब्दों के जरिए उपलब्ध रहता है। बच्चे जिन चीजों के संपर्क में आते हैं उनसे और घनिष्ठ संबंध बनाने के लिए वे शब्दों की मदद लेते हैं। दूसरी तरफ, ऐसे शब्द, जो बच्चों के सक्रिय अनुभवों और वस्तुओं से जुड़े नहीं होते, उनके लिए खाली और बेजान रहते हैं। 'बिल्ली', 'दौड़ना', 'गिरना', 'नीला', 'नदी' और 'खुरदरा' जैसे शब्द यदि पहले—पहल किसी क्रियाकलाप या अनुभव के मौके पर नहीं आएँ तो उनका अर्थ बच्चे के लिए बहुत सतही रहेगा। केवल एक सक्रिय अनुभव के बाद ये शब्द एक तस्वीर से जुड़ते हैं और भविष्य में सार्थक इस्तेमाल के लिए उपलब्ध होते हैं।



प्रत्येक व्यक्ति की किसी शब्द को अर्थ देने अथवा उसका अर्थ समझने की प्रक्रिया अलग—अलग होती है। कभी बातचीत के संदर्भ से हम शब्दों के अर्थ के बारे में अनुमान लगा लेते हैं, कभी हम शब्दकोश का सहारा लेते हैं, कभी अनुभव करके जान लेते हैं। लेखक का कहना है कि शुरुआती दौर में जब बच्चे शब्दों को समझना सीख रहे होते हैं तो महत्वपूर्ण होता है कि वे उन शब्दों को अनुभव करें।

बच्चे के शारीरिक अनुभवों और शब्दों के बीच यह संबंध बड़ों, विशेषतया अध्यापकों पर एक निराली जिम्मेदारी डालता है। एक अध्यापक के रूप में आप शायद यह उम्मीद करते होंगे कि माता—पिता ने अपने बच्चों को तरह—तरह के अनुभव पहले ही करा दिए होंगे। पर यह बात ज्यादातर माता—पिता पर लागू करना मुश्किल है।

ज्यादातर माता—पिता में या तो इतना विश्वास नहीं होता कि वे अपनी दिनचर्या में चीजों को देखने और करने की बच्चों की धीमी रफ्तार को जगह दे सकें। बड़े अक्सर काफी परेशान हो जाते हैं अगर बच्चा नल में पानी की धारा से आधे घंटे खेलता रहे या सारे बर्तनों को फर्श पर बिखेर दे या छाते को सैकड़ों बार खोले और बंद करे। कभी—कभी चीजों को या फिर बच्चे को नुकसान या चोट से बचाने की खातिर बड़े कुछ इने—गिने अनुभवों को छोड़कर बाकी पर पाबंदी लगा देते हैं।

माता—पिता ने जो भी किया हो या न किया हो, अध्यापक की जिम्मेदारी साफ है। उसे ऐसा वातावरण पैदा करना है जिसमें बच्चे भाषा को लगातार जीवन के अनुभवों और चीजों से जोड़ सकें। ऐसा करने के लिए ये बातें मददगार होंगी:

गतिविधि –

- बच्चे स्कूल में कई तरह की वस्तुएँ (जैसे पत्तियाँ, पत्थर, पंख, तिनके, टूटी-फूटी चीजें) लाएँ और उनके बारे में बात करें, पढ़ें, लिखें;
- बच्चों से उन अनुभवों के बारे में कहने, लिखने के लिए जाए जो स्कूल के बाहर हुए हैं;
- बच्चों को कक्षा से बाहर ले जाया जाए जिससे वे स्कूल के इर्द-गिर्द फैली दुनिया की तमाम छोटी-मोटी चीजें (जैसे टूटी हुई पुलिया, कीचड़ से भरा गड़ढा, मरा हुआ कीड़ा, घोंसले में अंडे) बारीकी से देख सकें और उनकी चर्चा कर सकें। ध्यान दें स्कूल के पड़ोस की ऐसी खोजी-यात्राएँ भाषा सीखने के लिए मूल्यवान सामग्री दे सकती हैं।

ऐसे स्कूल में, जहाँ बच्चे अपने हाथों से तरह-तरह के काम नहीं कर पाते, जहाँ वे ज्यादातर बैठे और अध्यापक की बातें सुनते रहते हैं, और जहाँ छूने, उलटने-पुलटने, तोड़ने और ठीक करने के लिए चीजें नहीं होतीं, भाषा के कौशलों का विकास अच्छी तरह नहीं हो सकता।

अभ्यास

- भाषा को बच्चे जीवन के अनुभव से जोड़ पाएँ इस हेतु लेख में किस तरह की गतिविधियाँ सुझाई गई हैं?
- उपरोक्त गतिविधियाँ करते हुए बच्चों का अवलोकन कीजिए। किन्हीं दो बच्चों के बीच हो रही बातचीत को रिकॉर्ड कीजिए।
- क्या इस तरह की गतिविधियाँ भाषा सीखने में मददगार होती हैं। यदि हाँ तो कैसे?

भाषा क्या-क्या करती है ?

जिन लोगों ने बच्चों की भाषा का अध्ययन किया है, उनके अनुसार बच्चे बातचीत की बुनियादी क्षमता हासिल करते ही भाषा का प्रयोग अनेक मकसदों के लिए करना शुरू कर देते हैं। इनमें से कुछ मकसद इस प्रकार हैं :

1. अपने काम का संचालन

बच्चे कुछ करने के साथ-साथ उसके बारे में बात करते जाते हैं। यह बात अपनी गतिविधि पर एक तरह की निजी टीका होती है। शायद यह टीका उन्हें अपनी गतिविधि कुछ और देर तक जारी रखने में मदद देती है और उनकी दिलचस्पी बनाए रखती है। इससे फर्क नहीं पड़ता कि टीका कोई सुन रहा है या नहीं। संभव है गीली रेत में सुरंग या किले बनाते हुए छोटे बच्चों के दल में हर बच्चा अपनी टीका अलग चालू रखे। हो सकता है, यह टीका दूसरे को सिर्फ कुछ बुदबुदाहट की तरह सुनाई दे।



अभ्यास

- आपने भी कभी बच्चों को अकेले खेलते हुए अपने आपसे बातचीत करते हुए सुना होगा। यदि नहीं तो तीन से आठ साल के बच्चे को उस वक्त गौर से देखिए जब वह अकेले कुछ कर रहा हो या खेल रहा हो। वह जो कहे, ध्यान से सुनिए।
- उन बातचीत को लिखिए और बताइए कि क्या आपने उनकी एकांत 'बात' में कोई व्यक्तिगत फर्क पाया? क्या यह 'बात' बच्चों को एक काम में रुचिपूर्वक लगे रहने में मदद देती है? क्यों?

2. दूसरों के क्रियाकलाप और ध्यान का संचालन

भाषा के इस उपयोग से माता-पिता और अध्यापक के रूप में हम अच्छी तरह परिचित हैं क्योंकि हमारा बहुत-सा समय बच्चों की माँगों को पूरा करने में लगता है। अक्सर हम शारीरिक किस्म की माँगों के प्रति सचेत रहते हैं, पर दूसरी तरह की माँगें—जिनमें दिमागी और दिली माँगें शामिल हैं—भी महत्वपूर्ण हैं? बच्चे अजीब या आकर्षक चीजों की ओर ध्यान खींचने के लिए भाषा का इस्तेमाल करते हैं। उन्हें यह उम्मीद रहती है कि जिस चीज ने उनका ध्यान खींचा है, वह उनकी बात सुनने वाले का ध्यान भी खींचेगी।

यदि आप बच्चों की एक टोली को गौर से देखें तो पाएँगे कि वे एक-दूसरे का ध्यान अक्सर किसी ऐसी चीज या किसी चीज की ऐसी विशेषता की बात करके खींचते हैं, जिसे वे सोचते हैं, दूसरा देख न पाया होगा। दूसरों से उम्मीद प्रकट करना ही भाषा के इस उपयोग की विशेषता है : उम्मीद यह कि 'जो मैंने देखा उसे दूसरे भी देखना चाहेंगे।' यह उम्मीद मानवीय संबंधों और साथ-साथ रहने के आनंद की एक गहरी मान्यता पर टिकी है। यदि वह व्यक्ति, जिसका ध्यान खींचा जा रहा है, इस उम्मीद को पूरा नहीं करता है तो भाषा के विकास की बुनियाद को चोट पहुँचती है।



3. खेलना

अधिकतर बच्चों के लिए शब्द ढाई साल की उम्र से खेल और खुशी का एक प्रमुख साधन बन जाते हैं। अलग-अलग स्वर में दुहरा कर, नए रूपों और मौलिक संदर्भों में रखकर बच्चे शब्दों से खेलते हैं और संतुष्ट होते हैं :

‘दूध—जलेबी जगगगा

पर इसमें है मगगगा !’

‘गुड़िया को बादल में भेज दिया।

अब रोटी खाऊँगी। गुड़िया कल से

रो रही थी।’

‘मैं चम्मच में बाल्टी रखूँगा।

उससे कुँए का दूध निकालूँगा !’

गलत जगह पर शब्द का प्रयोग करना उन्हें भाता है। उन्हें ऐसी कविताएँ जल्दी से याद हो जाती हैं जिनमें इसी तरह शब्दों की खींचतान की गई हो। मतलब यह है कि छोटे बच्चे शब्दों को खिलौनों की तरह इस्तेमाल करते हैं। शब्दों से खेलना बच्चों की रचनाशक्ति और ऊर्जा को बाहर लाने में अनोखी भूमिका निभा सकता है।

प्रायोजना — घर के अंदर या गली में अकेले या टोली बनाकर खेलते-रस्सी कूदते, दौड़ते, उछलते, गेंद से टप्पा मारते हुए—बच्चे जो पंक्तियाँ दुहराते हैं सुनिए। अपने और इस तरह के खेल गीतों को संकलित कीजिए

बच्चों के कुछ पारंपरिक खेलगीतों के नमूने हैं :

सूख सूख पट्टी	शान्ती मन भान्ती
चंदन गट्टी	कहना क्यों नई मानती
राजा आया	पंडित जी बुलाने आए
महल चुनाया।	बस्ता क्यों नहीं बाँधती।
झंडा गाड़ा	
बजा नगाड़ा।	‘अक्कड़ बक्कड़ बम्बे बो
रानी गई रूठ	अस्सी नब्बे पूरे सौ
पट्टी गई सूख।	सौ में लगा धागा
	चोर निकल के भागा।’

अभ्यास

- ऊपर कही गई बात “बच्चे शब्दों को खिलौनों की तरह इस्तेमाल करते हैं, गलत जगह पर शब्द का प्रयोग करना उन्हें भाता है” क्या आपने कभी अपने आस-पास कक्षा में/स्कूल में बच्चों को ऐसा करते देखा है? दो उदाहरण दीजिए जब बच्चों ने ऐसा कुछ किया हो।

4. समझाना

बच्चों की बात का मकसद कई बार यह बताना होता है कि कोई चीज कैसे हुई। उदाहरण के तौर पर यदि आप एक बच्चे से पूछें कि बारिश कैसे हुई तो शायद वह आपको बताएगा कि पहले आसमान काले बादलों से घिर गया, फिर छोटी – छोटी बूँदें टपकने लगीं, फिर बारिश हुई, जो बाद में इतनी तेज हो गई कि कोई चीज दिखाई तक न दे। घटनाक्रम बताकर बच्चा यह समझाता है कि एक बड़ी घटना कैसे घटी।

भाषा के इसी प्रयोग से कहानियाँ जन्म लेती हैं। इस दृष्टि से कहानियाँ चीजों की व्याख्या करने का साधन होती हैं। जाहिर है कि सब कहानियाँ चीजों की विश्वसनीय या वैज्ञानिक व्याख्या नहीं करतीं। वे जीवन की व्याख्या करने की हमारी इच्छा की प्रतीक होती हैं। जिस तरह बड़े, दुनिया की घटनाओं या राजनीति की व्याख्या करने को उत्सुक रहते हैं, उसी तरह छोटे बच्चे भी जिंदगी की घटनाओं को बयान करना चाहते हैं।

प्रायोजन : कोई चीज क्यों शुरू हुई? यह समझाने वाली कहानियाँ इकट्ठी कीजिए। इस तरह की कई कहानियाँ आपको स्थानीय लोक कथाओं में मिलेंगी। बारिश क्यों होती है या आदमी ने आग कैसे ढूँढी—ऐसी एक कहानी नीचे दी गई है जो समझाती है कि हाथियों ने उड़ने की क्षमता कैसे गँवाई। इन कहानियों को भाषा के अध्यापन में काम में लाने के कुछ तरीके ‘बात’ और ‘पढ़ना’ शीर्षक अध्यायों में देखिए।

अभ्यास

- आपको अपने बचपन में कौन-सी कविता/कविताएँ अच्छी लगती थी? उन्हें याद कीजिए व क्या आप कक्षा के बच्चों के साथ इन्हें बाँटना चाहेंगे?
- बच्चे शब्दों को खिलौनों की तरह इस्तेमाल करते हैं, गलत जगह पर शब्द का प्रयोग उन्हें भाता है। अपने आस-पास कक्षा में, स्कूल में बच्चों को बातचीत करते हुए सुनिए व इस संदर्भ में दो उदाहरण दीजिए।

आसमान में हाथी

बहुत पहले एक जमाने में भारत के हाथी उड़ लेते थे। आज की तरह हाथी तब भी बहुत बड़े होते थे। उनका रंग बादलों की तरह सलेटी था। बादल आखिर उनके भाई ही तो थे। बादलों की तरह हाथी भी आसमान में जहाँ चाहे उड़ सकते थे। बस उन्हें अपने कान फटफटाने की देर थी।

बादलों की ही तरह वे अपना आकार भी बदल सकते थे। वे जो चाहे बन जाते थे—कभी एक राक्षस तो कभी छोटी—सी बिल्ली। वे कभी किले की तरह दिखते तो कभी पहाड़ की तरह और कभी दौड़ते हुए एक कुत्ते की तरह।

गर्मियों के मौसम में एक दिन मोती की तरह चमकते हुए सलेटी हाथी धूप में उड़ रहे थे। वे एक गाँव के ऊपर से गुजरे, जहाँ छोटे-छोटे बच्चे खेल रहे थे, एक खेत से गुजरे जहाँ किसान जुताई कर रहा था, एक नदी पर से गुजरे जहाँ लड़के मैसों को नहला रहे थे। वे बातूनी बंदरों से भरे एक जंगल के ऊपर से भी गुजरे।

लेकिन आकाश में बहुत ऊपर बड़ी गर्म हवा की एक लहर बह रही थी। हाथियों को देखकर वह उनके पीछे हो ली और सीधे उनकी सूँड में घुस गई। हवा क्या थी, काली मिर्च थी। हाथी लगे छींकने। छींकते-छींकते परेशान होकर उन्होंने सोचा कि कोई छायादार ठंडी जगह ढूँढ़ कर थोड़ी देर सुस्ता लें। उनके ठीक नीचे आम के बड़े-बड़े पेड़ थे। उनके नीचे ठंडक थी, छाया भी थी और आमों की बढ़िया खुशबू थी। गर्म हवा से बचने के लिए हाथी आहिस्ता से आम के सबसे बड़े पेड़ पर जा उतरे।

संयोग की बात थी कि उसी पेड़ के नीचे एक मास्टर जी और उनके छात्र बैठे हुए थे। स्कूल के अंदर उस दिन बहुत ज्यादा गर्मी थी। मास्टर जी थके हुए थे और बच्चे थे एकदम बेचैन। वे अपनी पेंसिलें तोड़ते, सारे सवाल गलत करते, फिर खुसफुसाते, हँसते और नन्हें चूहों की तरह कुलबुलाते। वे एक क्षण भी आराम से नहीं बैठ पा रहे थे।

मास्टर जी परेशान हो गए। पैर जमीन पर ठोंककर उन्होंने अपना डंडा हवा में घुमाया और बच्चों पर बरस पड़े। तभी अचानक उन्हें ख्याल आया—‘अगर ये बच्चे नहीं संभलते हैं तो मैं एक जादूमंत्र बोलकर इन सबको खरगोश बना दूँगा!’

उन्होंने सबसे शरारती बच्चे को पकड़ने के लिए अपनी बाँह बढ़ाई। उसी समय हाथी आसमान से नीचे उतरे और अध्यापक के ठीक ऊपर वाली डाल पर आ बैठे।

अर्..र..र..र..कर्..र..र..धड़ाम !

डाल टूटकर मास्टर जी पर आ गिरी। मास्टर जी भी गिर पड़े, पर हाथियों ने इसकी कोई परवाह नहीं की। वे चुपचाप अपने कान फटफटा कर अगले पेड़ की तरफ चल दिए।

उन्हें उड़कर जाता देख अध्यापक उठ खड़े हुए और हाथियों पर चिल्लाए—‘बुरे हाथियों! मैं तुम्हें मजा चखाता हूँ। मुझे गिराने की हिम्मत! मैं तुम्हें अभी बताता हूँ।’ अध्यापक ने अपना डंडा घुमाया और एक जादूमंत्र बोला।

धीमे से सारे हाथी जमीन पर उतर गए। वे उड़ना भूल गए। और उस दिन से हाथी जमीन पर चलते हैं। जब वे आसमान में बादलों को उड़ता देखते हैं, उन्हें वो ज़माना याद आता है, जब वे खुद उड़ लेते थे, जैसे चाहे दिखने लगते थे, जहाँ चाहे चले जाते थे।

अभ्यास

- घूमते-घूमते, कहाँ-कहाँ जैसे शब्द इस कहानी में भी आए हैं उन्हें खोजिए। ये शब्द युग्म शब्द कहे जाते हैं।
- इस कहानी में कल्पना की उड़ान है, बच्चों के भाषा सीखने में कल्पनाशीलता का क्या स्थान है?

5. जीवन को बयान करना

भाषा का यह काम उसके सारे अन्य कामों में शामिल है पर यदि हमने उसे अलग से नहीं जाँचा तो संभव है हम उसे चूक जाएँ। बड़ों की तरह बच्चे अक्सर भाषा का प्रयोग बीते हुए को याद करने के लिए करते हैं—कोई घटना, व्यक्ति या कोई छोटी—मोटी चीज। जो चीज अब हमारे आसपास है, उसे हम शब्दों के जरिए फिर पैदा कर सकते हैं और इस तरह हम जो रचते हैं वह कई बार इतना यथार्थ दिखता है कि हम उस पर लंबे समय तक बातचीत कर सकते हैं।

बच्चे अक्सर चीजों और अनुभवों को इसलिए बयान करते हैं कि उन्हें स्वीकार कर सकें (शायद किसी गहरे भावनात्मक स्तर पर)। किसी चीज से डरा हुआ बच्चा उसके बारे में बीसियों बार बताता है जब तक वह अपने भीतर उसके लिए जगह नहीं बना लेता। खास तौर से जब बच्चा किसी नई बात से चौंकता है तो उसे आम चुनावों में शामिल करने के उद्देश्य से कई बार दोहराता है। चौंकाने वाली घटना में जो अनिश्चय, भ्रम और कई बार डर छिपा रहता है, वह उसे दुहराने से दूर हो जाता है।

6. जुड़ना

जब हम किसी की कहानी सुनते हैं—जो उसके अपने या किसी दूसरे व्यक्ति के अनुभव पर आधारित होती है—तो हम उस कहानी के चरित्रों और घटनाओं से स्वयं को जोड़ने की कोशिश करते हैं। कहानी से जुड़ने की खातिर हम अपनी मौजूदा जिंदगी और यहाँ तक कि अपने पिछले सीमित अनुभवों को लाँघ जाते हैं। जब कोई बच्चा किसी खिलौने की भावनाओं की चर्चा करता है तो वह स्वयं को खिलौने की स्थिति में रख रहा होता है। दूसरे पर क्या बीत रही है, यह हम भाषा के जरिए अनुभव कर सकते हैं।

7. तैयारी

बातचीत का विषय बहुत बार ऐसी घटनाएँ होती हैं जो अभी घटी नहीं हैं और उनमें कुछ ऐसी भी होती हैं जो शायद कभी न घटें। बच्चे कई बार अपने डर, अपनी योजनाएँ, अपेक्षाएँ और अजीब परिस्थितियों में क्या होगा, इस पर अपने विचार प्रकट करते हैं। भविष्य की तस्वीर रचने में शब्द उनकी मदद करते हैं। कभी—कभी यह तस्वीर भविष्य को साकार बनाने में मदद करती है कभी ऐसा भी होता है कि यह तस्वीर उन्हें भविष्य का सामना करने की ताकत देती है।

8. पड़ताल और तर्क

हरेक स्थिति में एक उलझन छिपी होती है जिसे हल करने के लिए छोटे बच्चे को यह ढूँढना पड़ता है कि अमुक चीज अपने मौजूदा रूप में क्यों है ? कई प्रश्न ऐसे होते हैं जिसका उत्तर छोटा बच्चा सफलतापूर्वक ढूँढ सकता है। जैसे, बस एकाएक क्यों रुकी? या उसे ठंडे पानी से नहाना क्यों पसंद नहीं है? तीन साल का बच्चा इन उलझनों को समझ सकता है, हालाँकि यह जरूरी नहीं कि सब बच्चे किसी बात का सही कारण साफ—साफ बतला सकें। प्रायः वे बच्चे ऐसा कर पाने में समर्थ होते हैं जिन्होंने बड़ों को भाषा के सहारे किसी चीज की पड़ताल करते या तर्क करते सुना हो या जिन्हें ऐसा करने के लिए भरोसा मिला हो।

ऊपर दी गई समस्याओं के अलावा कई समस्याएँ ऐसी होती हैं जिन्हें छोटा बच्चा 'वैज्ञानिक' अर्थ में नहीं सुलझा सकता। उदाहरण के लिए 'बारिश' क्यों होती है 'बहुत तेज़ हवा से पेड़ क्यों गिर जाता है जैसे सवाल का सही हल चार—पाँच वर्ष के बच्चे की पहुँच के बाहर है। इसके बावजूद, ऐसी समस्याएँ भी पड़ताल के लिए भाषा के प्रयोग के बहुत उम्दा मौके उपलब्ध करा सकती हैं। इससे फर्क नहीं पड़ता कि दिया गया कारण सही

है या नहीं। महत्व इस बात का है कि बच्चा भाषा का इस्तेमाल तर्क करने, किसी नई बात को बूझने के लिए करे। भाषा से यह काम लेते बड़ों को कोई बच्चा जितना अधिक सुनेगा, भाषा का यह काम उतना ही बच्चे की पहुँच के भीतर आता जाएगा।

भाषा के जिन आठ कामों की चर्चा अभी हमने की है, क्या आप उन्हें पहचान सकते हैं? अपनी परीक्षा लेने के लिए बच्चों की बातचीत के इन आठ उदाहरणों को भाषा के आठ कामों के तहत रखिए:

1. बादल चले गए। बारिश रुक गई।
2. मैं जाऊँगा जम्मा। वहाँ मिलेगा मम्मा।
3. इस तरह नहीं। ये देखो घुंड़ी।
4. पानी रोज़ सवेरे इतने सारे घरों में कैसे पहुँच जाता है?
5. मैं इस कप को यहाँ रखूँगा। फिर रामू को आवाज दूँगा।
6. वे मिठाइयाँ बिल्कुल वैसी हैं जैसी जीत चाचा लाए थे।
7. दीवाली पर मुझे नई कमीज मिलेगी।
8. बिल्कुल बाजार जैसा था। इतनी सारी बत्तखें इतना शोर मचा रही थीं।

हमारी बात का असर हम पर ही पड़ता है।

बच्चों के जीवन में भाषा की तरह-तरह जिम्मेदारियों की इस चर्चा से एक बात यह साफ होती है कि भाषा एक बेहद लचीला माध्यम है। हम उसे जीवन की किसी भी परिस्थिति के अनुसार ढाल सकते हैं। उसे अपनी जरूरत के अनुसार ढाल कर हम परिस्थिति को भी अपने अधिक अनुकूल बना लेते हैं। रोज़ाना की जिन्दगी में इसके उदाहरण ढूँढ़े जा सकते हैं। जब हम किसी से नाराज़ होते हैं तो अपने गुस्से को प्रकट करने के लिए वे शब्द व स्वर चुनते हैं जो परिस्थिति पर हमारी इच्छा के अनुसार असर डालें। लड़ने की इच्छा हो तो हम कड़े शब्दों का प्रयोग करते हैं। मामले को शांत करना हो तो नरम शब्दों और धीमे स्वर से काम लेते हैं।

हम कह सकते हैं कि भाषा को लचीले ढंग से इस्तेमाल करने की क्षमता काफी हद तक यह तय करती है कि जीवन की विभिन्न स्थितियों का सामना हम किस तरह करेंगे। एक स्तर पर हमारी भाषा किसी स्थिति में हमारी प्रतिक्रिया प्रकट करती है। एक अन्य स्तर पर हमारी भाषा उस स्थिति को, जिससे हम जूझ रहे हैं, प्रभावित भी करती है। हमारे इर्द-गिर्द हर वक्त जो कुछ हो रहा होता है, भाषा उस सबसे निपटने में हमारी सहायता करती है। हम चाहे उस सब में स्वयं शरीक हों या सिर्फ उस पर विचार कर रहे हों, भाषा की मदद हमें दोनों दशाओं में मिलती है।

हम किसी घटना के प्रत्यक्ष गवाह हों या न हों उस घटना को प्रस्तुत करने के लिए इस्तेमाल की गई भाषा हमारी प्रतिक्रिया पर असर डालती है। हजारों चीज़ें रोज़ हमसे बहुत दूर स्थित जगहों पर होती रहती हैं। ये चीज़ें हम तक अखबार की खबर के रूप में पहुँचती हैं। एक तरह से अखबार हमें किसी घटना की तस्वीर बनाने में मदद देता है, उसी तरह जैसे एक बच्चा सड़क पर कोई चीज़ देखकर अपनी माँ को बताए। अखबार या बच्चे द्वारा बनाई गई तस्वीर उतनी ही वास्तविक या सही होगी जितनी सही तस्वीर बनाने के लिए प्रयोग की गई भाषा होगी। कोई बयान कितना सही है, यह प्रायः बयान देने वाले के इरादे पर निर्भर होता है— यानी सटीकता में हमेशा कमी-बेशी रहना स्वाभाविक है। यदि बच्चा एक दुर्घटना देखकर डर गया है तो संभव है कि वह उसे कुछ बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करे। बढ़ा-चढ़ाकर कहने से वह अपने डर को सही साबित करता है और इस तरह उस दृश्य से, जिसे उसने देखा है, समझौता करने में समर्थ होता है।

आखिरी बात यह है कि भाषा हमारी उम्मीदों पर असर डालती है। चीजों को धीरज से समझाने का शौकीन आदमी दूसरों में भी ऐसी ही अपेक्षा करता है। इसी प्रकार चीजों की गहराई से पड़ताल करने वाला व्यक्ति उम्मीद करता है कि दूसरे उसकी पड़ताल में रुचि लेंगे। इस तरह के व्यक्ति पड़ताल और व्याख्या के लिए भाषा का प्रयोग करके एक ऐसा वातावरण रचते हैं जिसमें व्याख्या और पड़ताल महत्वपूर्ण काम माने जाते हों। इसके विपरीत यदि किसी संस्था या समुदाय में भाषा का प्रयोग इन उद्देश्यों के लिए नहीं किया जाता हो तो वहाँ बड़े हो रहे बच्चों को ध्यान से कोई बात समझाने या धैर्यपूर्वक तर्क करने की आदत शायद ही पड़ सके। यदि माता-पिता और अध्यापक भाषा का इस्तेमाल मुख्यतया बच्चों को काबू में रखने के लिए करते हों तो यह स्वाभाविक है कि बच्चे भाषा को काबू करने का साधन मानने लगेंगे। यह बहुत संभव है कि बड़े होकर वे ऐसा कोई काम न करना चाहें जिसके लिए उन्हें आदेश न दिया गया हो।

यदि बच्चों के साथ हमेशा आदेशात्मक, निर्देशात्मक, रूखी.. भाषा का प्रयोग किया जाए, उन्हें प्रश्न पूछने की इजाजत न हो, न कोई उनकी बात धैर्य से सुनने व समझने का प्रयास करे तो ऐसा होने की बहुत संभावनाएँ हैं कि ऐसे माहौल को पाने वाले बच्चे बड़े होकर जायज़ प्रश्न भी ना पूछें, अपने आप को अभिव्यक्त करते हुए न किसी की बात धैर्य से सुने और ना ही धैर्य पूर्वक अपनी बात दूसरों को समझाने का प्रयास करें।

हमने इस पाठ की शुरुआत इस प्रश्न के साथ की थी कि भाषा बच्चे के व्यक्तित्व—उसकी दृष्टि, क्षमताओं, मनोवृत्तियों, रुचियों और मूल्यों—को क्यों प्रभावित करती है। इस प्रश्न का उत्तर अब हम यह कह कर दे सकते हैं कि भाषा बच्चे के व्यक्तित्व को इसलिए प्रभावित करती है क्योंकि **बच्चा भाषा द्वारा रचे गए वातावरण में जीता और बड़ा होता है।** इस वातावरण को बनाने में अध्यापक काफी योग देता है। यदि अध्यापक बच्चे के जीवन में भाषा के विभिन्न कार्य क्षेत्रों के प्रति संवेदनशील है तो वह बच्चे की बौद्धिक और भावनात्मक जरूरतों के अनुकूल कदम उठा सकता है। अलग-अलग अवसरों पर बच्चे द्वारा प्रयोग की गई भाषा पर अध्यापक की प्रतिक्रिया बहुत महत्वपूर्ण होती है। यदि प्रतिक्रिया दिखाती है कि अध्यापक बच्चे द्वारा एक खास ढंग से प्रयोग की गई भाषा का उद्देश्य समझ रहा है तो ऐसी प्रतिक्रिया भाषा-प्रयोग के उस ढंग को और समृद्ध बनाएगी। इसके विपरीत यदि अध्यापक की प्रतिक्रिया 'सही' और 'गलत' के संबंध में किन्हीं धारणाओं पर आधारित हो तो वह बच्चे की स्वतंत्र अभिव्यक्ति और संवाद-क्षमता के रास्ते में बाधा खड़ी करेगी।

अभ्यास

1. क्या आपने बच्चों को खेलते हुए देखा है, यदि हाँ तो बच्चों द्वारा प्रयुक्त की जाने वाली भाषा पर अपने विचार लिखिए।
2. बच्चे अपने जीवन को किस तरह बयान करते हैं
3. भाषा बच्चों के व्यक्तित्व रुचियों मूल्यों और मनोवृत्तियों को किस तरह प्रभावित करती हैं?
4. यदि आपसे कभी कक्षा में बच्चे नहीं संभलते हैं तो आप ऐसी स्थिति में क्या करते हैं?
- कहानी को कक्षा में बच्चों को सुनाइए व बताइए—
 - कौन सी कक्षा के बच्चों को सुनाई?
 - क्या आपको कहानी सुनाते वक्त कहानी में कुछ परिवर्तन करने पड़े? क्यों व किस तरह के परिवर्तन?
 - कहानी सुनते वक्त/बच्चों की क्या प्रतिक्रिया थी? क्या प्रश्न थे? कहानी की समझ इत्यादि पर विचार दें।

अध्याय – 2

अपना सिर थपथपाना व पेट को मलना

– जीन एचिसन (Articulate Mammal)

पाठ की रूपरेखा

- परिचय
- उद्देश्य
- शीर्षक व उप-शीर्षक
 - भाषा एवं अनुकूलन
 - भाषा उत्पादन की प्रक्रिया
 - भाषा और अनुमान
 - भाषा और योजना

परिचय :

हम भाषा का प्रयोग करते हैं तो हमारे शरीर में कई क्रियाएँ व प्रतिक्रियाएँ एक साथ सम्पन्न होती हैं। बातचीत के दौरान न केवल हम ध्वनियों का उच्चारण करते हैं, बल्कि आगामी वाक्यों का अनुमान भी लगाते जाते हैं। साधारणतया इन क्रियाओं से हम अनजान होते हैं। प्रस्तुत पाठ में हम इन्हीं बातों पर चर्चा करेंगे।

उद्देश्य :

- भाषा बोलने की प्रक्रिया कितनी जटिल है यह समझ पाना।
- भाषा बोलने की प्रक्रिया इतनी जटिल होने के बाद भी हम भाषा बोलने में कैसे सक्षम हैं?

भाषा एवं अनुकूलन :

मनुष्यों में एक और तरह का जैविक अनुकूलन होता है जो अपने आप स्पष्ट रूप से नहीं दिखता। लेकिन गहराई से सोचने पर यह काफी चौकाने वाला अनुकूलन है। अनुकूलन का अर्थ है, सफल होने के लिए परिस्थितियों के अनुरूप अपने आप को ढालना। हम यहाँ जिस अनुकूलन की तरफ इशारा कर रहे हैं वह हर समय बातचीत करने में सामने आता है। अगर हम इस बारे में सोचें कि बोलते समय हम क्या करते हैं, तो यह बात ज्यादा समझ आएगी। बोलते समय ध्वनि उत्पादन में और कही गई बात को समझने में बहुत सारी व तरह-तरह की प्रक्रियाएँ एक साथ जुड़कर काम करती हैं (लेशले 1951)।

बातचीत के विषय को खोलने से पहले यह देखना उपयुक्त होगा कि जैविकीय गतिविधियों में एक साथ कई कार्य करना कितना सरल अथवा कितना मुश्किल होता है।

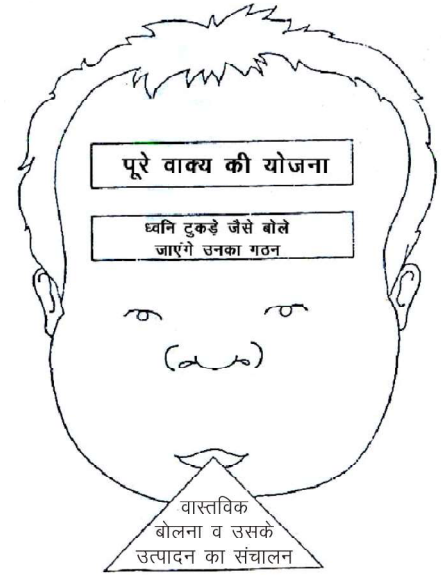
स्कूल जाने की उमर वाले बच्चे भी जान जाते हैं कि एक साथ अपने सिर को थपथपाना और पेट को मलना बहुत मुश्किल है। अगर आप भी प्रयास करें तो महसूस कर सकेंगे। आप अपनी जीभ को मुँह के एक तरफ से, दूसरी तरफ हिलाने का प्रयास करें और टाँगों को एक के ऊपर एक रखें और फिर साथ-साथ रखें (Cross-uncross) तो आप महसूस करेंगे कि यह संभव नहीं है। और इसके साथ-साथ ही अगर आप कोशिश करें कि आपके हाथ

आपके सिर को थपकाएँ और पेट को मलें तो यह पूरा काम नामुमकिन हो जाएगा। करतब दिखाने वाला नट जरूर अपनी नाक पर बोतल रखकर, टखनों में रिंग घुमाते-घुमाते हाथों में सात थालियों को हवा में रख सकता है—पर इन सबके लिए उसने पूरी जिंदगी अभ्यास में खर्ची होगी और यह भी हर कोई उतने अभ्यास से भी यह करना नहीं सीख सकता और यह कार्य कितना अस्वाभाविक है, इसी से साबित हो जाता है कि नट अपना यह हुनर दिखाकर अच्छा खासा पैसा कमा पाता है।

हम यदि ध्यान से सोचे तो भाषा बहुत सारी प्रक्रियाओं के एक साथ होने से व उनमें जुड़ाव कर पाने से उत्पन्न होती है। इन प्रक्रियाओं को देखने से लगता है कि यह सब कई मायने में एक नट के करतबों से ज्यादा पेचीदा है।

भाषा उत्पादन की प्रक्रिया :

एक तीर से दो शिकार वाली कहावत आपने ने सुनी होगी यथार्थ में एक तीर से दो शिकार कर पाना असम्भव तो नहीं परन्तु मुश्किल जरूर है। ऐसा सम्भव कर पाने के लिए निरंतर अभ्यास व काफी समय खर्च करने की आवश्यकता है। आप यह बात सर्कस के कलाकारों या नटों को करतब दिखाते हुए देखकर समझ सकते हैं परन्तु भाषा उत्पादन के मामले में एक तीर से दो शिकार वाली कहावत आसानी से चरितार्थ होती है। भाषा उत्पादन में वास्तव में कई प्रक्रियाएँ एक साथ सम्पन्न होती हैं।



भाषा उत्पादन में कम से कम तीन प्रक्रियाएँ एक साथ होती हैं—पहली प्रक्रिया है— ध्वनि का उत्पादन, दूसरी है— आगे आने वाले वाक्यांशों की ध्वन्यात्मक तैयारी (याने उसमें शामिल आवाजों के बारे में सोचना), तीसरा, शेष वाक्य की रचना की योजना व मन में उसका प्रतिपादन। इनमें से प्रत्येक प्रक्रिया जितनी दिखती है, उससे अधिक जटिल है। शब्दों के उच्चारण में निहित जटिलताएँ एकदम से हमें समझ में नहीं आतीं। उदाहरण के लिए ये माना जाता है कि अंग्रेजी में 'गीज़' (Geese) बोलते समय, पहले 'ग' बोला जाएगा फिर 'ई' की आवाज़ होगी और फिर 'ज़'। परन्तु गीज़ बोलने में इससे कहीं ज्यादा होता है।

भाषा और अनुमान :

जरा सोचिए क्या हम बोलते समय या पढ़ते समय पूरे वाक्यांश पर ध्यान देते हैं? पर्याप्त ध्यान की जगह हम आगे आने वाले अक्षरों शब्दों का अनुमान भी लगाते चलते हैं। यदि हम ऐसा शब्द बोलें या पढ़ें जैसे "गाय घास" तो जैसे ही हम बोलते अथवा पढ़ते हैं हमें आगे आने वाले शब्द का अनुमान हो जाता है। हमें पता चल जाता है कि आगे आने वाला शब्द 'खाती है' ही होगा। भाषा का प्रयोग करते समय न केवल बाद में आने वाली ध्वनि पहले आने वाली ध्वनि पर प्रभाव डालती है बल्कि पहले आने वाली ध्वनि भी बाद में आने वाली ध्वनि पर प्रभाव डालती है। उदाहरण के लिए कमला बोलते वक्त शब्द की ध्वनि संरचना होगी : क् + अ + म् + ल् + आ और कमल बोलते वक्त होगी क् + अ + म् + अ + ल् कमला में म् के साथ अ नहीं बोला जाएगा क्योंकि ल में आ जुड़ने से वह दीर्घ ध्वनि हो जाती है अतः उससे पहले आने वाली ध्वनि म् छोटी होगी जबकि कमल में म के साथ अ होगा ल् रहित होगा।

पहली बात तो यह है कि 'ग' की आवाज़ जो 'गूज़' में है वह 'गीज़' में ग की आवाज़ से बहुत फर्क है, यह अंतर 'ग' पर लगने वाली मात्रा से निर्धारित होता है। बोलने वाला पहले से ही 'ई' या 'ऊ' का अनुमान अनजाने में (Sub consciously) करता है। आगे आने वाली मात्रा कौन सी है, यह सोच कर वह उसके अनुसार 'ग' की आवाज़ को परिवर्तित कर लेता है। इसी तरह की एक और बात जो हम अनजाने में सफलतापूर्वक करते

रहते हैं वह है "Geese" में बोली जाने वाली ध्वनि को "Geyser" (गीज़र) के स्वर से छोटा करना। (आप यह भी देख रहे हैं कि इसका संबंध लिखने के ढंग से भी उतना सीधा नहीं है जितना हम मानते हैं। "Geyser" में "y" की ध्वनि में और yellow में "y" की ध्वनि बहुत फर्क है)

अतः यह स्पष्ट है कि बोलने वाला अलग-अलग अवयवों, हिस्सों का क्रमवार उच्चारण भर नहीं करता बल्कि उससे कहीं ज्यादा करता है।

1	2	3
G	EE	SE

वह आपस में गुँथी व जुड़ी ध्वनियों को निकालने के लिए परस्पर व्यापन करती हुई (जुड़ी हुई) क्रियाओं की शृंखला बनाता जाता है, जिसमें बाद में आने वाली ध्वनि पहले आने वाली ध्वनि पर काफी प्रभाव डालती है।

G..

EE..

SE..

इस परस्पर व्यापन के लिए तंत्रिकाओं और पेशियों में अच्छा खासा तालमेल आवश्यक है, विशेषकर इसलिए कि बोलने की गति काफी तेज़ होती है। एक सामान्य व्यक्ति प्रायः ध्वनि के 200 टुकड़े (Syllable) प्रति मिनट बोलता है। बोलने के साथ-साथ ही वह अगले 2-3 शब्दों वाले वाक्यांश (phrases) को भी अपने दिमाग में रचकर बोले जाने के लिए सक्रिय कर रहा होता है।

ध्वन्यात्मक रूप में इसका उदाहरण हमें तब देखने को मिलता है जब जीभ फिसल जाने से कोई ध्वनि जो किसी ध्वनि के बाद में आने वाली है, पहले ही बोल दी जाती है और दूसरी बाद में। जैसे— किसी ने "ओसामा बिन लादेन छिपा है" के बजाए "ओबामा सिन लादेन छिपा है" कह दिया। या जैसे किसी ने कहा "On the nerve of vergeous breakdown" जब वो कहना चाहता था "On the verge of a nervous breakdown" पर उन्होंने 'nerve' को ज़रूरत से पहले सक्रिय कर दिया।

अभ्यास

-
- भाषा उत्पादन की प्रक्रिया के दौरान हम क्या-क्या करते हैं?
 - सही व गलत बताइए।
 - एक सामान्य व्यक्ति प्रायः ध्वनि के 200 टुकड़े प्रति मिनट बोलता है।
 - बोलते समय हम आगे आने वाले शब्दों का अनुमान नहीं लगाते हैं।
 - Geyser की 'y' की ध्वनि में और yellow की 'y' की ध्वनि में कोई अन्तर नहीं है।
-

भाषा और योजना :

- (1) व्यापक प्रभाव पड़ने से वाक्य या शब्द के उच्चारण में प्रभाव पड़ता है। कभी-कभी हम करेला को कलेरा या 'ओसामा बिन लादेन' को 'ओबामा सिन लादेन' कह जाते हैं।
- (2) भाषा प्रयोग के दौरान वाक्यों की रचना की तुलना मोजेक निर्माण की कलाकारी से की जा सकती है। मोजेक के कलाकार को अपनी कल्पना का स्वरूप एक बार तय करके आगे बढ़ना होता है, किन्तु बोलने वाले को इसमें नित्य सुधार करना होता है।

आप जरा इन शब्दों को देखें Nervous verge of a breakdown ओसामा, लादेन, बिन, है, छिपा अगर मानव 2-4 शब्द समूहों के टुकड़ों को ही एक बार में बोलते तो पूर्व तैयारी कर पाना इतना आश्चर्यजनक नहीं लगता। हैरान करने वाली बात यह है कि आगे आने वाली ध्वनियों को सक्रिय करने की प्रक्रिया और लम्बी-चौड़ी बात की तैयारी एक साथ चलती है। जरा सोचिए बोलते वक्त हम एक साथ कितने वाक्यांश बोल देते हैं। लैनबर्ग (1967, p. 107) इसकी तुलना मोज़ैक जैसी कलाकारी (छोटे-छोटे टुकड़ों से बनी तस्वीर या आकृति) से करते हैं: समझ में आने वाली बात में शामिल शब्दों की ध्वनि शृंखला एक ऐसा क्रम अथवा पैटर्न (Pattern) है जिसकी तुलना मोज़ैक जैसी कलाकारी से की जा सकती है। मोज़ैक एक-एक छोटे पत्थर को देखकर उस रूप व पूरे ढाँचे की कल्पना के आधार पर सही जगह देख कर लगाया जाता है। बोलने की प्रक्रिया कुछ-कुछ उससे मिलती है। पत्थर जमाना शुरू करने से पहले ही जैसे आकृति पूर्ण रूप में कलाकार के दिमाग में बन चुकी होती है वैसे ही या उससे कुछ आगे तक की योजना बोलने वाले के दिमाग में बनती रहती है। (मोज़ैक के कलाकार को अपनी कल्पना का स्वरूप एक बार तय करके आगे बढ़ना होता है, किन्तु बोलने वाले को उसमें नित्य सुधार भी करना हो सकता है।)



कभी-कभी वाक्य सरल होते हैं। उनकी बनावट में कोई जटिलता नहीं होती। सभी हिस्से भी व अर्थ भी स्पष्ट उभर कर आते हैं, जैसे "The baby fell down from stairs" "The cat was sick" And "I have resigned," "बच्चा सीढ़ियों से गिर गया," "बिल्ली बीमार थी" और "मैंने इस्तीफा दे दिया है।" इनको समझना व बोलना सरल प्रतीत होता है। किन्तु कभी कभार वाक्य काफी पेचीदा भी होते हैं। इनमें वक्ता और श्रोता दोनों को उपवाक्यों की परस्पर निर्भरता (interdependencies) को याद रखना पड़ता है। उदाहरण के तौर पर यदि इस तरह का वाक्य है कि, बच्चा सीढ़ियों से गिर गया या बिल्ली बीमार हुई तो मैं या तो इस्तीफा दे दूँगा या पागल हो जाऊँगा। (If either the baby falls down stairs or the cat is sick, then I shall either resign or go mad). यहाँ, 'तो' 'यदि' पर आश्रित होगा तो वाक्य पूरा नहीं होगा। और इसी तरह 'या' (either) के साथ एक और या (or) का आना अनिवार्य है। इसके साथ 'Falls' अथवा 'गिरने' का कौन सा रूप उपयोग होगा यह शिशु अथवा उसके स्थान पर जो है उससे जुड़ा होगा। इसी तरह 'थी' (was) के रूप को बिल्ली के अनुसार ही होना होगा। स्पष्टतः यह पूरा वाक्य इसकी हुबहू छवि, और उसके लक्षणों के साथ पहले ही बन गया होगा। इसके बनने का क्रम योजनाबद्ध होगा।

इन उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि इंसानों की बातचीत में शामिल होकर बोलने के लिए लगातार योजना बनाते रहना व बोलते रहना ज़रूरी है। यह दोनों साथ-साथ कर पाने की क्षमता इस हद तक है कि यह माना जा सकता है उन्हें, इसी तरह के समन्वयन के लिए विशेष तौर पर बनाया गया है।

परन्तु फिर भी यह सोचना होगा कि इसमें किस-किस तरह के तरीके शामिल हैं? यह कैसे होता है? कैसे मनुष्य कथनों को सार्थक ढंग से बोल पाता है ? और सोचते-सोचते भी सही क्रम में बोलते चलता है? क्यों वह इन्हें गड़ड़-मड़ड़ नहीं कर देता लगभग सभी लोग RABBIT को सही ढंग से Rabit ही कैसे बोल पाते हैं, वे उसे BARIT या TIRAB क्यों नहीं बोलते? यह ध्यान देने योग्य बात है कि जिन लोगों के दिमाग को कोई भी क्षति हुई है, वे अकसर ऐसा बोल जाते हैं।

लैनबर्ग (1967) सुझाते हैं कि बोलने का सही क्रम ऐसे नियमों के तहत होता है जो लयबद्ध हैं। यह सभी बोलियों में मदद करते हैं। यह तो सब जानते हैं कि पद्य को याद रखना गद्य को याद रखने से सरल होता है क्योंकि पद्य में एक अंतर्निहित लय होती है।

I wandered lonely as a cloud

(ti-tim - ti-tum- ti-tum - ti-tum)

That floats on High O'er vales and Hells

(ti-tim - ti-tum- ti-tum - ti-tum)

वह देखो माँ आज खिलौने वाला फिर से आया है।

कई तरह के सुंदर—सुंदर नए खिलौने लाया है।

ऐसा भी हो सकता है कि मनुष्य की भाषा में कोई अंतर्निहित जैविक ताल (Biological 'beat') हो, ऐसी ताल जो उसे लय आधारित उचित क्रम बनाने में सहायक हो। इस ताल के टूट जाने से ही भाषा असंयमित तेज़ रफ़्तार से बोली जाने लगती हो (जैसे पार्किन्सन्स की बीमारी में)। लैनबर्ग सुझाते हैं कि भाषा उत्पादन में एक सेकण्ड का $1/6$ वाँ हिस्सा समय की आधार इकाई है। यह अनुमान उन्होंने कई प्रयोगों के आधार पर बनाया है। इसमें एक तथ्य जो शायद हम सब परख सकते हैं वह यह है कि सामान्य गति से बोलने में 6 स्वतंत्र ध्वनि टुकड़े (syllable) एक सेकण्ड में बोले जाते हैं। हालाँकि इन में से कई सूक्ष्म पहलुओं व बारीक बातों पर अभी अटकलें ही लगाई जा रही हैं।

हमें भले अभी विस्तृत जानकारी नहीं हो पर मोटी तस्वीर स्पष्ट है। भाषा के प्रति जिस तरह का शारीरिक अनुकूलन इंसान का है, वैसा पेड़, पौधे या बंदर का नहीं है। हमारे वाक् अंग, फेफड़े, दिमाग आदि भाषा की बारीकियों को समझने व उपयोग करने के लिए वैसे ही तैयार हैं जैसे बंदर पेड़ पर चढ़ने के लिए तैयार हैं।

अभ्यास :

-
- भाषा बोलते या पढ़ते समय हम किस तरह अनुमान लगाते हैं।
 - बोलने की प्रक्रिया की मोज़ैक निर्माण की कला से क्या समानता व क्या असमानता है?
 - पद्य को याद रखना गद्य की अपेक्षा सरल होता है। इसके क्या क्या कारण बताए गए हैं।
 - भाषा उत्पादन की प्रक्रिया पर अपने विचार कीजिए?
 - किसी व्यक्ति के साथ बातचीत की प्रक्रिया के लिए किन तथ्यों का होना आवश्यक है?
-

अध्याय — 3

भाषा : मानव शास्त्रीय दृष्टि में

पाठ की रूपरेखा

- परिचय
- उद्देश्य
- शीर्षक व उप-शीर्षक
 - जानवरों में संप्रेषण : कुछ शोध अध्ययन
 - वानर चिह्न भाषा का पुनः परीक्षण
 - वानर संप्रेषण पर आचार-शास्त्र शोध
 - चिंपाजी संप्रेषण—
 - मानव भाषा की विशेषताएँ
 - उत्पादन क्षमता
 - विस्थापन
 - मनमानापन
 - अवाजों को जोड़कर अर्थपूर्ण कथन बनाना
 - भाषा का विकास
 - भाषा की संरचना
 - मानव मस्तिष्क व बोली
 - मानव संरचना व बोली
 - क्या कभी पहले आदि प्राणी जो मानव समाज है वे बोल सकते थे?
- सामाजिक भाषा विज्ञान
 - बातचीत की भाषा में विभिन्नता
 - भाषा में आदरसूचकों का उपयोग
 - अभिवादन व्यवहार
- अमौखिक संप्रेषण
- गति संवेदन
- सामीप्य

परिचय :

क्या जानवर भी बातचीत के लिए भाषा का प्रयोग करते हैं? क्या जानवरों की भाषा सीखने की क्षमता ठीक वैसी ही है जैसी हम मनुष्यों की या जानवरों व मनुष्यों की भाषा सीखने की क्षमता में कोई अंतर है? मनुष्यों की भाषा की क्या विशेषताएँ हैं? मानव मस्तिष्क की बोलने की प्रक्रिया में क्या महत्वपूर्ण भूमिका है? भाषा का विकास कैसे हुआ? इसके बारे में क्या-क्या धारणाएँ हैं? भाषा किस तरह समाज को समझने में मदद करती है? इस पाठ में हम इन्हीं कुछ मुद्दों के बारे में पढ़ेंगे।

उद्देश्य :

- जानवरों व मनुष्यों की भाषा को लेकर विभिन्न वैज्ञानिकों के क्या मत हैं? इसके बारे में समझ पाना।
- जानवरों व मनुष्यों की भाषा में क्या मान्य व स्पष्ट अन्तर है? यह समझ पाना।
- यह समझ पाएँगे कि मनुष्यों की भाषा की क्या मुख्य विशेषताएँ हैं?
- भाषा का विकास कैसे हुआ तथा इस प्रश्न के बारे में प्रचलित धारणाएँ क्या हैं?
- भाषा के विभिन्न सामाजिक पहलू क्या हैं? यह समझ पाएँगे।

भाषा प्रतीकों का एक व्यवस्थित ढाँचा है। इस व्यवस्था में बने प्रतीकों का कुछ मान्य अर्थ होता है। इन प्रतीकों से बनी भाषा द्वारा ही सांस्कृतिक विचार व धरोहर एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संचारित होते हैं। भाषा के द्वारा समाज के लोग एक-दूसरे से बातचीत कर सकते हैं। यह संस्कृति का एक अहम हिस्सा है। भाषा इंसान की मदद करती है कि वह एक दूसरे को बता सकें कि उनके क्या अनुभव रहे हैं, वे क्या अनुभव कर रहे हैं और उनकी भविष्य को लेकर क्या योजनाएँ हैं। संस्कृति की तरह ही, भाषा इंसान के पैदा होने से पहले ही उपस्थित रहती है और सारे लोग इसे आपस में सामूहिक रूप से बाँटते हैं। अमरीका में पैदा होने वाला बच्चा अंग्रेजी भाषा के संपर्क में आता है, रूस में पैदा होने वाला, रूसी से। इस तरह भाषाएँ अलग-अलग समाजों में प्रतीकात्मक समझ के

लिए एक संदर्भ प्रदान करती हैं। इस मायने में भाषा संस्कृति का हिस्सा है जो इंसान को अनुभवातीत करता है। भाषा के बिना लोगों को संस्कृति संचारित करने में परेशानी होगी। संस्कृति के बिना मानव अपनी अद्वितीय मानवता खो देंगे।

भाषाविद् जब भाषा की बात करते हैं तो उनका मतलब बोली हुई भाषा से होता है, लेकिन 'बोली' भाषा संप्रेषण का एक आकार है। संप्रेषण का मतलब है एक दूसरे को जानकारी देना या विचारों को पहुँचाना। इस अध्याय में हम पढ़ेंगे कि जानवरों में भी कुछ-कुछ संप्रेषण करने की क्षमताएँ होती हैं। हम यह भी जानेंगे कि इंसान भाषा के अलावा अन्य तरीकों से भी एक दूसरे से संप्रेषण कर सकते हैं।

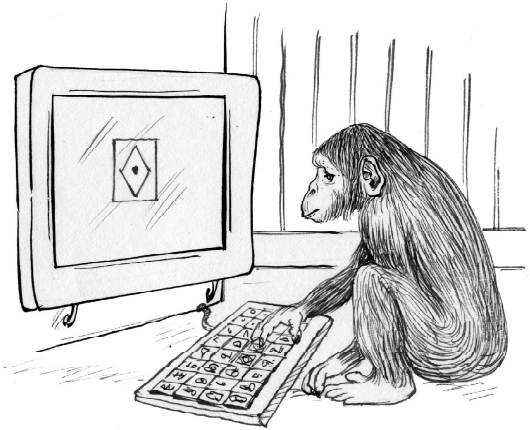
जानवरों में संप्रेषण : कुछ शोध अध्ययन

बंदरों को चिह्न सिखाना

मनोवैज्ञानिकों और अन्य वैज्ञानिकों ने जीव-जन्तु संप्रेषण पर बहुत शोध किया है। सबसे ज्यादा रोचक व विवादास्पद शोध वनमानुष (Chimpanzee) व गोरिल्ला पर किया गया है जो शारीरिक व विकास के स्तर के रूप में इंसान के करीब है।

ऐलन (Allen) और बियेट्रीस गार्डनर (Beatrice Gardner) ने 1966 में एक वनमानुष (Chimpanzee) को, जिसका नाम वाशो था, गोद लिया व उसे 'चिह्न भाषा' भाषा का अमौखिक आकार जो बहरे लोग इस्तेमाल करते हैं सिखाने लगी — बहुत वर्षों बाद, वाशो (Washoe) ने सौ से भी अधिक चिह्न सीख लिए। यह एक चिंपांजी के लिए सराहनीय, यहाँ तक की अप्रत्याशित उपलब्धि थी, जिसने इस धारणा को ललकारा कि सिर्फ इंसान में ही चिह्न या 'प्रतीक' सीखने की क्षमता है। (Gardner and Gardner, 1969)

1970 में यर्क्स (Yerks) रीजनल प्राइमेट रिसर्च सेन्टर, एमेरी विश्वविद्यालय, एटलांटा, जियोरजिया में 'लाना' नाम की चिंपांजी को एक ऐसा कम्प्यूटर 'की-बोर्ड' दिया जिसमें चिह्न को अलग-अलग ढंग से दर्शाया गया या इस 'की-बोर्ड' से इनपुट देकर 'लाना' संप्रेषण करना सीखी। शोधकर्त्ताओं ने यह पाया कि 'लाना' कम्प्यूटर के चिह्नों को सीख कर उनका उपयोग कर सकती थी। उसने खीरे को एक 'हरा केला' बताया और संतरे को 'संतरी' रंग का सेब (Rumbaugh, 1970) जिस तरह का कार्य गार्डनर (Gardner) ने वाशो नाम के चिंपांजी के साथ किया था उसी तरह का कार्य वनमानुष विशेषज्ञ रोजर फाउट्स (Roger Fouts) ने तीन और चिंपांजीओं के साथ किया। उन्होंने पाया कि ये चिंपांजी कुछ खास तरह के शब्द/वर्ग खाने के लिए उपयोग करते हैं जैसे वे अजवाइन के लिए (Celery) पाइप फूड, खरबूजे के लिए 'कैंडी ड्रिंक' और 'मूली' जिसे पहले वाशो ने चखा था, उसने नाम दिया ऐसा खाद्य जिसे खाने पर दर्द व रोना आता हो यानी दर्द-रोना-खाना (hurt-cry-food) (Budd, 1979).



एक और जाने माने शोध अध्ययन में फ्रेनसिस पैटरसन (Francis Patterson) ने 'कोको' नामक एक मादा गोरिल्ला को चिह्न भाषा के 170 शब्द सिखाए। कोको को विश्व की बात करने वाली पहली गोरिल्ला माना गया। चार साल की उम्र में कोको को Stanford-Binet Intelligence test दिया गया जिसमें उसने 85 अंक प्राप्त किए जो कि एक औसत इंसान से बस थोड़ा ही कम है। पैटरसन ने बताया कि कोको ने अफ्रीका में जिस तरह उसको

पकड़ा गया था उसकी कहानी भी सुनाई। इसी के साथ कोको ने झूठ बोलने, कसम खाने, मजाक करने व चिन्ह को नए व सृजनात्मक तरीके से जोड़ने की क्षमता भी दर्शाई।

आपने अभी पढ़ा कि जानवरों में भाषा सीखने की कितनी क्षमता है यह समझने के लिए विभिन्न वैज्ञानिकों ने तरह-तरह के शोध अध्ययन किए। इन अध्ययनों के आधार पर उनका कहना था कि जानवरों : विशेषकर गोरिल्ला, चिंपांजी, वानरों में भाषा सीखने की, उसका प्रयोग करने की क्षमता होती है लेकिन कुछ अन्य वैज्ञानिक इनकी बात से सहमत नहीं थे। इन्होंने वैज्ञानिकों द्वारा किए गए अध्ययनों को फिर से जाँचने की ठानी।

सही कथन पर (3) व गलत पर (x) का निशान लगाइए।

1. वाशो कुछ वर्षों में सौ से भी अधिक चिह्न सीख लिए थे।
2. लाना चिह्न भाषा सीखने वाली विश्व की पहली मादा गोरिल्ला थी।

वानर चिह्न भाषा का पुनः परीक्षण

वनमानुषों द्वारा भाषा के उपयोग के संबंध में किए गए इन अध्ययनों ने मानव व अन्य जानवरों के बीच दूरी को लेकर जो धारणाएँ थी उनके बारे में कई सवाल खड़े किए? लेकिन इन अध्ययनों की आलोचना भी की गई है। आलोचना का एक स्रोत कोलंबिया विश्वविद्यालय में हर्बर्ट टैरेस (Herbert Terrace) (1986) द्वारा किए गए अध्ययन पर आधारित है। टैरेस ने निम नामक चिंपांजी को प्रशिक्षित करते हुए इस संदर्भ में हुए पूर्व अध्ययनों की पुनः जाँच शुरू की। इस हेतु उसने पूर्व के भाषायी सत्रों के वीडियोटेप जिनमें चिंपांजी को भाषा सिखाने की कोशिश की गई थी उनका ध्यान से अवलोकन किया। वह यह देखना चाहता था कि इन सत्रों में प्रशिक्षण के किन तरीकों को अपनाया गया, क्या प्रशिक्षक द्वारा चिंपांजी को कोई दिशा निर्देश दिए गए इत्यादि। उसने चिंपाजियों के बीच संप्रेषण से संबंधित कई अन्य वीडियोटेप का भी अध्ययन किया। टैरेस के निष्कर्षों ने पहले के कुछ अध्ययनों पर कई प्रश्न खड़े किए। वीडियोटेप के विश्लेषण ने यह स्पष्ट किया कि न ही निम ने चिह्न व्यवहार की कभी पहल की और न ही दूसरों के जवाब ही दिया। 50 प्रतिशत चिह्न तो सिर्फ नकल ही थे। निम ने न तो यह सीखा कि बातचीत सांकेतिक व्यवहार या संवाद दो तरफा होता है और न ही उसने बिना किसी पुरस्कार के कभी भी कोई चिह्न दिखाया। उसने किसी भी अन्य चिंपांजी जिसे चिह्न – भाषा 'सिखायी गई थी से बात करने की कोशिश भी नहीं की। उसने सिर्फ उसे ही चिह्न दिखाए, जिसने उसे सिखाया था। यह भी पता चला कि प्रेरक ने अनजाने में चिंपांजी को शारीरिक इशारे भी दिए थे।

टैरेस (Terrace) के निष्कर्षों से यह साफ स्पष्ट हुआ कि यह तो माना जा सकता है कि चिंपांजी एक बहुत बुद्धिमान जानवर है जो बहुत से चिह्न सीख सकता है। लेकिन यह नहीं कहा जा सकता कि वह वाक्य बनाना और व्याकरण के नियम उपयोग करना, जो एक अर्थपूर्ण वाक्य बनाने में मदद करते हैं, समझ सकता है। अंग्रेजी अथवा कोई भी अन्य भाषा सीखने वाला बच्चा आसानी से वाक्यों में संज्ञा, कर्ता व कर्म (object) के स्थान पर आने वाले शब्दों में फेर बदल कर नए वाक्य बना सकता है। चिंपांजी न तो इस तरह के नियम सीख सकते हैं, और न ही वाक्य बना सकते हैं। चिंपांजी की बुद्धिमत्ता सराहनीय होती है लेकिन उसमें इंसान की तरह वाक्य बनाने की व्याकरण-सम्मत क्षमता नहीं होती।

टैरेस (Terrace) के काम ने वानर भाषा के विवाद को समाप्त नहीं किया। (Sue Savage Rumbaugh) (1986), ने अपनी किताब Ape Language - From Conditioned Response to Symbol (1986) में बताया है कि एक दस साल का कांजी नामक चिंपांजी एक दो वर्षीय बच्चे की तरह बातचीत करता है। कांजी ने इंसानी भाषा के शब्दों को इंगित करने वाले ज्यामितीय प्रतीकों का उपयोग करके संप्रेषण करना सीख लिया है। 250 शब्दों को एक बड़े से 'की-बोर्ड' पर दर्शाया गया था, $2\frac{1}{2}$ साल की उम्र में ही कांजी की-बोर्ड पर 'पकड़ो' (chase) शब्द को इंगित करने वाले प्रतीक को दिखा कर भाग जाता था। Savage Rumbaugh ने कांजी का 'पकड़ो' की

ओर इशारा करके जल्दी से भागना कई बार देखा। कांजी ने छह साल की उम्र तक शब्दों को इंगित करने वाले 90 चिह्न सीख लिए।

इसके अतिरिक्त Rumbaugh ने पाया कि कांजी के व्यवहार से लगता था कि वह अंग्रेजी भाषा के उच्चारित शब्दों को समझता है। उन्होंने पाया कि कांजी भी इन्सानी बच्चे की तरह बोले गए शब्दों को ध्यान से सुनता है। 'स्पीच संश्लेषक' वह यंत्र है जो बोलते हुए इन्सान की तरह आवाज निकाल सकता है। कांजी ऐसे किसी यंत्र द्वारा निकाले गए शब्दों को भी समझता था। Rumbaugh एक और आश्चर्यजनक बात बताती है, उनका कहना है कि कांजी को 'वाक्य-रचना' की भी अधिकचरी समझ हो गई थी। वह शब्दों को अर्थपूर्ण ढंग से जमा पा रहा था। वह यह बता पाता था कि वह क्या खेल चाहता है और किस क्रम में। जैसे अगर वह चाहता था कि कोई उसे पकड़े और फिर काटने का प्रयास करे, तो वह पहले 'पकड़ो' को दबाता और फिर 'काटने' को। Savage Rumbaugh का अनुमान है कि कांजी 650 वाक्यों को समझ सकता था।

यह और इनके बाद के बाद के कुछ और नतीजे महत्वपूर्ण हैं लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि क्या इनसे यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि वानर भी भाषा सीख सकते हैं। ज्यादातर मानव वैज्ञानिक मानते हैं कि वानर हाथों के उपयोग से व प्लास्टिक से बने भाषायी चिह्नों का उपयोग करने की क्षमता दिखाते हैं। वह किसी दो वर्षीय बालक के स्तर से ज्यादा भाषा नहीं उपयोग कर सकते किन्तु इसका मतलब यह नहीं कि वे असफल मानव हैं। चिंपांजी अपने आप में बहुत सक्षम चिंपाजी हैं। ऐसा लगता है कि मानव की भाषायी क्षमता बहुत ही अलग तरह की है।

अभ्यास

- सही व गलत का निशान लगाइये।

अंग्रेजी अथवा कोई भी अन्य भाषा सीखने वाला बच्चा आसानी से वाक्यों में संज्ञा, कर्ता व कर्म के स्थान पर फेर-बदल कर नए वाक्य बना सकता है। ()

भाषा द्वारा ही सांस्कृतिक विचार व धरोहर एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में संचरित होते हैं। ()

वानर व चिंपांजी चिह्न भाषा/सांकेतिक भाषा नहीं सीख सकते। ()

- टैरेस के प्रयोग के क्या निष्कर्ष निकले?
- कांजी के पास किस तरह की भाषायी क्षमता थी?

वानर संप्रेषण पर आचार-शास्त्र शोध

आचार-शास्त्री, ऐसे वैज्ञानिक हैं जो जानवर के व्यवहार का अध्ययन उनके स्वाभाविक परिवेश में करते हैं। इन वैज्ञानिकों ने पाया है कि सभी जानवर कई तरह की आवाजें निश्चित संदर्भ में खास अर्थ के लिए निकालते हैं। कुत्ते, मुर्गी, बंदर व चिंपांजी के बुलाने के अपने तरीके व आवाजें होती हैं।

अफ्रीका में किए गए George Schaller के एक शोध ने चिंपांजी द्वारा उपयोग की जाने वाले 22 ध्वनि चिह्न पहचाने। यह संख्या हॉलर बंदर के लिए 20, जापानी मकाक के लिए 30, और गिबन्स के लिए 9 है। गोरिल्लाओं समेत इन सभी जानवरों द्वारा निकाली गई यह सभी आवाजें विशिष्ट व्यवहार या भावात्मक मनोदशा से संबंधित हैं— जैसे आराम, खाना, यौन सम्बन्धी, खेल, गुस्सा व खतरे की सूचना करना। जब छोटे बच्चों की माँ कहीं जाती

है, तो वह भी विशेष प्रकार की आवाजें निकालते हैं। हालांकि शैलर मानते हैं कि कुछ ऐसी भी आवाजें हैं जिनके साथ कोई विशिष्ट व्यवहार जुड़ा प्रतीत नहीं होता।

चिंपांजी संप्रेषण—

Jane Goodall ने चिंपांजियों का उनके प्राकृतिक परिवेश में सबसे लंबा अध्ययन किया। 1960 से ही चिंपांजी पर अध्ययन कर रही Goodall ने चिंपांजियों द्वारा उपयोग की गई आवाजों पर जानकारी इकट्ठी की। उनके अध्ययन से पता चलता है कि चिंपांजी अलग-अलग तरह की पुकार का इस्तेमाल करते हैं जो उनकी भावात्मक मनोदशा — जैसे डर, गुस्सा व यौनावेश इत्यादि से जुड़ी होती हैं। उनका निष्कर्ष था कि चिंपांजी उपयुक्त भावात्मक दशा के बिना कोई आवाज नहीं निकाल सकते (Goodall 1986 : 125)। उन्होंने पाया कि चिंपांजी की दो तरह की पुकार होती है — एक अपने समूह के भीतर (Inter-party) व दूसरी अन्य समूहों के लिए जो दूर है। हाँफने, घुरघुराने की आवाजें समूह में अपने से ज्यादा ताकतवर जानवर को इज्जत देने के लिए और भौंकना, पिनपिनाना, चिल्लाना, खँसना और अन्य तरह की आवाजें बाकी सभी समूह सदस्यों से संप्रेषण के लिए। दूसरी श्रेणी की आवाजें यानी दूर की पुकार श्रेणी के कई- उपयोग होते हैं— वह पास में उपलब्ध खाने के स्रोत के बारे में बताने के लिए, मैं व अन्य साथी अपने इलाके में इस समय कहाँ हूँ इसकी सटीक सूचना देने के लिए, मुसीबत में मदद माँगने के लिए, दूर रह रहे सहयोगियों को पुकारने के लिए हो सकती है। और शोध करके यह पता करने की जरूरत है कि क्या चिंपांजी अलग-अलग तरह के खाने व अलग-अलग खतरों की तरफ संकेत करने के लिए कुछ अलग-अलग आवाजें निकालते हैं?

अभ्यास

-
- शैलर और जेनगुडाल के निष्कर्षों में क्या समानता थी?
-

मानव भाषा की विशेषताएँ

जानवरों में संप्रेषण के बारे में 'प्रयोगशाला' व जानवरों के स्वाभाविक परिवेश में किए गए अध्ययन, मानव व जानवर संप्रेषण में अंतर के बारे में रोचक अंतर्दृष्टि देते हैं। कई दार्शनिकों ने 'भाषा व बोल पाने की क्षमता' को मानव व जानवरों में अंतर का मुख्य आधार बताया है। जानवरों पर किए आधुनिक शोधों से यह तो पता चलता है कि भाषा का फासला इतना अधिक तो नहीं है, जितना समझा जाता है। परन्तु मानवीय भाषाओं व जानवर संप्रेषण में मूल भिन्नताएँ तो हैं। प्रश्न यह नहीं है, कि क्या जानवर भी संप्रेषण कर सकते हैं क्योंकि यह अब स्पष्ट है। असली प्रश्न यह है कि जानवरों के संप्रेषण का तरीका मानव से किस प्रकार भिन्न है? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए भाषाई मानव शास्त्री ने मानव भाषाओं के कई विशिष्ट गुण बताएँ हैं — इनमें से चार सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण हैं— उत्पादन क्षमता, विस्थापन, मनमानापन और आवाजों को मिलाना या जोड़ना। (Hockett & Ascher, 1964)

उत्पादन क्षमता (Productivity)

इंसानी भाषाएँ नैसर्गिक तौर से लचीली व सृजनात्मक होती हैं। इनका उपयोग करने वाले छोटे बच्चे भी ऐसे नए-नए वाक्य बोल सकते हैं जिन्हें किसी ने पहले कभी भी न सुना हो।

हम वर्तमान, भूत व भविष्य किसी के बारे में भी अनगिनत बातें बता सकते हैं। हम हर तरह के विचार, अनुभव व उनके अर्थ असीमित तरीकों में अभिव्यक्त कर सकते हैं। हम में यह क्षमता होती है कि हम नित नई बातें, विचार गठ सकें। इसके विपरीत अपने स्वाभाविक परिवेश में जानवरों के संप्रेषण सीमित और स्थाई होते हैं।

जानवरों में किसी भी जानकारी के लिए उपयोग की गई आवाज़ बदलती नहीं है। उदाहरण के लिए यदि कोई मां चिपांजी किसी परिस्थिति विशेष में एक विशेष आवाज़ का इस्तेमाल करती है तो बाकी चिपांजी चाहे वो नर चिपांजी हो, उनके बच्चे हो अथवा कोई और चिपांजी हो उस परिस्थिति विशेष में उसी आवाज़ का इस्तेमाल करेंगे। इसके विपरीत मानवीय भाषा में एक परिस्थिति के बारे में अलग-अलग व्यक्तियों (माँ, पिता, बच्चे, दोस्त) की अलग-अलग प्रतिक्रियाएँ होगी और उन प्रतिक्रियाओं हेतु अलग-अलग आवाज़ों का इस्तेमाल होगा। चाचा जी के घर आने पर जैसे— माँ कहती है देखो तुम्हारे चाचा जी आए हैं। बच्चा कह सकता है। सिर्फ़ हाँ/वह यह भी कह सकता है मेरे चाचा जी आए हैं पिताजी कह सकते हैं मेरे भाई आए हैं इत्यादि। चिपांजी के बच्चे किसी परिस्थिति विशेष में आने पर अपने माँ-बाप की तरह की आवाज़ इस्तेमाल करेंगे। मानवीय भाषा की अत्यधिक लचीली प्रकृति उसे अनूठी कार्य क्षमता और अदभुत व असीमित सृजन करने की संभावना देती है। William Von Thunboldt ने इन्सानी भाषा की इस बात के बारे में कहा है सीमित मीडिया का असीमित उपयोग— "The Infinite use of Finite media" (Humboldt 1972, Pinker, 1994)A

विस्थापन (Displacement)

स्वाभाविक परिवेश व प्रयोगशालाओं में किए गए बहुत से अध्ययनों से यह स्पष्ट है कि पशुओं द्वारा प्रयुक्त आवाज़ों का अर्थ किसी एक विशिष्ट प्रेरक परिस्थिति से जुड़ा होता है। जैसे चिपांजी का कोई भी उच्चारण एक विशिष्ट परिस्थिति व उसमें भी एक विशेष भावात्मक उद्वेग से जुड़ा होता है— 'गुरांना' या 'चिल्लाना' खतरे की अनुपस्थिति में नहीं होगा। उसी प्रकार से तोता या मैना बहुत सारी आवाज़ की नकल तो कर सकते हैं परन्तु क्या वे बीते हुए कल के बारे में बात कर सकते हैं? क्या वे उनके बचपन के बारे में बता सकते हैं? इसके विपरीत, इंसानी भाषा में किसी भी व्यक्ति, चीज़ या ऐसी परिस्थिति के बारे में बात हो सकती है, जो वहाँ मौजूद भी न हो इसे ही विस्थापन कहते हैं। विस्थापन यानी समय, संदर्भ परिस्थिति से हटकर चर्चा कर पाना। पहले से लेकर अब तक और आगे तक के बारे में व्यवस्थित रूप से बात कर पाना और तर्क कर पाना।

विस्थापन की क्षमता इन्सानों के लिए बातचीत में अत्यधिक अमूर्त अवधारणाओं का उपयोग सम्भव बनाती है। वे भूत, भविष्य व वर्तमान समय के संदर्भ में अपने लक्ष्य, सपने अपनी योजना व अनुभव के बारे में बता सकते हैं, उन पर चर्चा कर सकते हैं। वे आध्यात्मिक अनुभवों, काल्पनिक रचनाओं व ऐसे phenomena के बारे में विमर्श कर सकते हैं जिनका कोई वास्तविक ठोस अस्तित्व नहीं है। वे पुराने इतिहास की चर्चा कई तरह से कर सकते हैं और दंत कथाओं, परिवार का वंश क्रम आदि सभी के बारे में चर्चा कर सकते हैं। मृत्यु के बाद की कल्पना व चर्चा, स्वर्ग, निर्वाण जैसी धर्म द्वारा रचित धारणाओं के और myth के माध्यम से कर सकते हैं। विस्थापन इन्सान को पूर्वदृष्टि का उपयोग कर भविष्य की योजना बना पाने की काबलियत देता है और भाषीय क्षमता में विस्थापन की संभावना इन्सानों की बाकी अन्य इंसानी काबलियतों से कई तरह से जुड़ी है। अमूर्त सोच व प्रतीकों को गढ़ने व उनके उपयोग की क्षमता इन्सानों को अमूर्त अवधारणाओं का उपयोग करके समृद्ध समझ व विश्व दृष्टिकोण बनाने में सक्षम बनाती है।

मनमानापन (Arbitrariness)

इंसानी भाषा की एक और खासियत है उसका मनमानापन। किसी वस्तु अथवा विचार के लिए उपयोग किए जा रहे शब्दों का उस वस्तु अथवा अमूर्त विचार से सीधा संबंध नहीं होता। अंग्रेजी में वन, टू, श्री संख्या बताते हैं, हिन्दी एक, दो, तीन, तमिल में ओन, रंड, मुन और चीनी भाषा में इन्हें Yi, er, san कहते हैं। ये सारे शब्द अपनी-अपनी भाषाओं की दृष्टि से सही हैं और भाषा के मनमानापन के प्रतीक हैं।

एक भेड़ इकट्ठी करने वाले जर्मन शेपर्ड कुत्ते को फ्रेंच पुडल कुत्ते की भौंक समझने में कोई कठिनाई नहीं होगी। लेकिन एक अंग्रेजी भाषी व्यक्ति को किसी चीनी भाषा बोलने वाले को समझने में कठिनाई होगी।

ध्वनियों को जोड़ कर अर्थपूर्ण कथन बनाना (Combining sounds to Produce meaning)

हमने कहा है कि जानवर जो आवाज़ें निकालते हैं उनका विशिष्ट परिस्थितियों में ही अर्थ है और वह उन्हीं अर्थों को व्यक्त करती हैं। इंसानी भाषा में शब्द, ध्वनि की इकाइयों को अलग-अलग तरह से जोड़कर बनते हैं। ध्वनि की इन इकाइयों का अपने आप में कोई अर्थ नहीं है। अगर सभी इंसानी भाषाओं को देखे तो हम पाते हैं कि इनमें 12 से लेकर 60 तक ऐसी इकाइयाँ होती हैं। इन इकाइयों को ध्वनिग्राम (Phoneme) कहते हैं। किसी शब्द में एक ध्वनिग्राम बदलने से वह कोई दूसरा ही शब्द बन जाता है। जैसे 'कल' व 'जल' 'क' की जगह 'ज' रखने से दूसरा ही अर्थ व्यक्त होता है। हिन्दी में, अंग्रेजी में 45 ध्वनिग्राम हैं, इटेलियन में 27 और हवाईयन में 13 (फार्ब 1974 के अनुसार)।

अमानव, ध्वनि की इकाइयों को जोड़ कर नए अर्थ नहीं व्यक्त कर सकते। हर उच्चारण का मकसद उससे जुड़े व्यवहार की मांग करना होता है। इसके विपरीत, मानव भाषा में आवाज के अलग-अलग टुकड़ों को अलग-अलग ढंग से जोड़कर नित नए अर्थ व्यक्त किए जा सकते हैं। उदाहरण के तौर पर अक्षर प्रतीकों क प ट द्वारा इंगित ध्वनियों का कोई अर्थ नहीं होता।— किन्तु जब उनको कपट, लपट, टपक जैसे शब्दों की ध्वनियों को इंगित करने में इस्तेमाल किया जाता है तो सब उन्हें पढ़ पाते हैं और उनमें नए अर्थों की पहचान करते हैं। (यही नहीं नई तरह से टुकड़ों को जोड़कर नए-नए शब्द जिनके अर्थ हम खुद तय करते हैं बना पाते हैं।) हवाईयन भाषा में सिर्फ 13 आवाज़ इकाइयों को लेकर 3,000 शब्द बन सकते हैं— ध्वनिग्राम का अपना कोई अर्थ नहीं होता लेकिन उनको अलग-अलग तरीके से जोड़-तोड़ कर कई अर्थपूर्ण शब्द बनाये जा सकते हैं— जितने की लोगों को ज़रूरत है। किसी भी अन्य जानवर में यह नहीं होती।

अभ्यास

-
- नीचे कुछ अक्षर दिए गए हैं इनकी सहायता से आप भी शब्द बनाइए।
क, प, ट, म, ल, ह
कितने शब्द बना पाएँ?
 - अपनी कक्षा में बच्चों के साथ इस गतिविधि को कीजिए बताइए बच्चों की प्रतिक्रिया क्या रही?
 - मानवीय भाषा में विस्थापन का गुण होता है इसे उदाहरण द्वारा समझाइए।
-

इंसानी भाषा के यह लक्षण देखने के बाद यह स्पष्ट है कि इंसानी और जानवरों की भाषा में कुछ बुनियादी अंतर हैं। लेकिन कुछ शोधकर्ता जो प्रयोगशाला में चिंपाजी के साथ काम कर रहे हैं वह अभी भी इंसानी भाषा को ही ऐसी 'सच्ची भाषा' कहने में हिचकिचाते हैं। जो जानवरों की भाषा से पूर्णतः अलग है। वे इसे भाषा के मानवकेन्द्रित नज़रिए की संज्ञा देते हैं और उसकी आलोचना करते हैं। वे इंसानी भाषा को 'स्टैण्डर्ड' मानना सही नहीं समझते हैं क्योंकि उनके अनुसार चिंपाजी के शरीर में वह क्षमता नहीं होती कि वे इंसानों की तरह आवाज़ें निकाल सकें। वे अपने शारीरिक ढाँचे के अनुरूप आवाज़ों का उपयोग कर पाते हैं इसलिए, उनकी भाषा की इंसानों की बोली गई भाषा के साथ तुलना करना ठीक नहीं होगा।

भाषा के गुणों का सही जोड़ा बनाइए।

- नित नए विचार, संदेश गढ़ने की क्षमता।
 - उन चीजों के बात कर पाने की योग्यता जो भौतिक रूप से उपलब्ध नहीं है।
 - उपयोग किए जा रहे शब्दों का वस्तु से सीधा संबंध नहीं होता।
 - ध्वनियों की इकाइयों को जोड़कर नए अर्थ बनाना।
- विस्थापन

- मनमानापन
- ध्वनियों से अर्थपूर्ण कथन बनाना
- उत्पादकता

भाषा का विकास

कई शताब्दियों से भाषा वैज्ञानिकों, दार्शनिकों व भौतिक मानव शास्त्रियों ने भाषा के विकास व उद्भव के संबंध में अध्ययन किया है। इसे समझने का एक प्रयास जिसे बौ बौ (bow wow) थ्योरी (सिद्धान्त) कहते हैं, मानता है कि भाषा का विकास तब हुआ, जब इंसान ने ध्वनि को लय में जोड़कर प्रकृति की आवाजों की नकल करनी शुरू की। इससे कई प्रकृति से जुड़ी घटनाओं के लिए (onomatopoeic) शब्द जैसे cock-a-doodle do, 'sneeze', 'mumble' का प्रयोग शुरू हुआ।

दूसरी धारणा है, इन्सानी भाषा का विकास प्राकृतिक वस्तुओं की स्वाभाविक आवाजों को पहचानने से शुरू हुआ। इसे Ding Dong सिद्धान्त कहते हैं। इसके अनुसार शब्द और उसके अर्थ में एक संबंध है क्योंकि प्रकृति उसे एक सुस्वर ध्वनि देती है। उदाहरणार्थ पूरी प्रकृति जिसमें पत्थर, नदी, नहर, झरने, पौधे, पक्षी, जानवर आदि शामिल हैं में हर हिस्सा एक आवाज निकालता है जिसे इन्सान पहचान सकते हैं। पत्थर से निकलती सुस्वर ध्वनि पत्थर के समान प्रतीत होगी। यह दोनों विवेचनाएँ नकार दी गई हैं और इन्हें पूरी तरह हटा दिया गया है। भाषा के विकास के बारे में नई समझ बनी है, जिसमें इन्सान के शरीर में हुए परिवर्तनों का महत्व है।

भाषा की संरचना (The Structure of Language)

जैसा पहले बताया गया है, मानव के समान प्राणियों (hominids) का विकास मस्तिष्क के बढ़ते हुए आकार के साथ जुड़ा हुआ होगा। इन प्राणियों (Hominids) का बढ़ा हुआ मस्तिष्क प्रमस्तिष्कीय छाल (cerebral cortex) के आकार को भी बढ़ता हुआ दिखाता है। यह छाल (cortex) मस्तिष्क का वह हिस्सा है, जो मस्तिष्क के जटिल व इन्सान की तरह विशिष्ट कार्य करता है जैसे याददाश्त और शायद प्रतीकों के साथ कार्य करने की क्षमता। इसके अलावा सांस्कृतिक पकड़ व क्षमता भी इसी से आती है। मस्तिष्क की याददाश्त, सीखना, उसकी प्रक्रिया व अन्य क्षमताएँ भी विज्ञान पूरी तरह से नहीं समझ पाता है। फिर भी हमें पता है कि प्रमस्तिष्कीय छाल में हजारों करोड़ों कोशिकाएँ होती हैं, जो सूचना इकट्ठी करके उसे संभालती है व सूचनाएँ किस तरह व्यवहार में लाना है यह भी तय करती हैं।

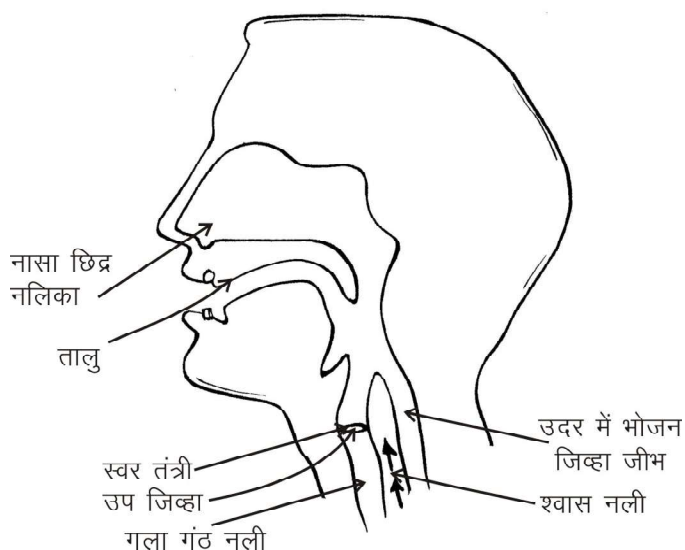
मानव मस्तिष्क व बोली (Human Brain and Speech)

मस्तिष्क के अन्य हिस्से भी इंसान की भाषायी क्षमता में मुख्य भूमिका निभाते हैं। इंसान का मस्तिष्क दो अर्ध गोलाकार हिस्सों में विभाजित है। हालाँकि दोनों हिस्से बराबर प्रतीत होते हैं और सारे कार्यों में अहम् भूमिका निभाते हैं। फिर भी उनके कार्य कुछ अलग-अलग भी हैं, अधिकतर भाषा संबंधी दक्षताएँ एक ही हिस्से से ज्यादा जुड़ी होती हैं। आमतौर पर बायाँ हिस्सा, भाषा से संबंधित दक्षताएँ नियंत्रित करता है और दायाँ जगह संबंधी समझ और अनुपात (spatial orientation and proportion)। बायें हिस्से का एक भाग— जिसे ब्रौक्स(Brocks) हिस्सा कहते हैं, भाषा को अधिक प्रभावित करता है, यह हिस्सा ध्वनि व आवाज़ को ठीक से निकाल पाना व व्याकरण— संबंधित क्षमताओं से जुड़ा हुआ है।

भाषा से जुड़ा दूसरा हिस्सा, वेरनीक का क्षेत्र (Wernickes area) है। यह भी बाएँ गोलार्द्ध की तरफ है। यह हिस्सा शब्दों व वाक्यों के अर्थ समझने, यानी भाषा के अर्थ तत्त्व से जुड़ा हुआ है। इसलिए मस्तिष्क का यह हिस्सा सुनने व पढ़ने में मदद करता है।

मानव संरचना व बोली (Human Anatomy and Speech)

इंसान के शरीर की बनावट व कार्य करने के ढंग में ऐसे तत्व हैं जो उसकी भाषा उपयोग करने की समता बनाते हैं। इंसान के अलावा किसी भी अन्य जीव में लगातार आवाज निकालते रहने के लिए उपयुक्त ढाँचा नहीं है। मानव के बोलने का ढाँचा एक टेढ़ी-मेढ़ी नली के रूप में दिखता है। इसमें फेफड़े, श्वास नली, गला (larynx) और आवाज डिब्बा (voice box) शामिल हैं। इस आवाज डिब्बे के अंदर स्वर तंतु (vocal chords) हैं। एक और बोल पाने के लिए आवश्यक अंग ग्रसनी (Pharynx) है। यह बोलने के ढाँचे (Vocal tract) का वह हिस्सा है जो जीभ के पीछे वाले हिस्से व कंठनली (Larynx) के बीच में होता है। Larynx फेफड़ों में हवा को बनाए रखता है व उसके प्रवाह को नियंत्रित करता है। यह सभी अंग हमारी जीभ, होठ, व नाक से मिलजुल कर आवाज के उत्पादन में मदद करता है। फेफड़े ग्रसनी में हवा फेंकते हैं, ग्रसनी (Pharynx) हवा को नियंत्रित करने के लिए अपना आकार बदल लेती है। नाक का छेद, होठ व जीभ किसी भी क्षण हवा के प्रवाह को रोक सकता है। इसी से ही स्वर या व्यंजन की आवाजें निकलती हैं।



चिंपांजी और आधुनिक मानव के शरीर की बनावट के ढाँचे में एक प्रमुख अन्तर है मानव में स्वरयंत्र का नीचे स्थित होना व vocal tract के ऊपरी हिस्से की लम्बाई का ज्यादा होना। यद्यपि इस व्यवस्था से सांस लेना थोड़ा ज्यादा मुश्किल हो जाता है, इससे दम घुटने से मृत्यु का डर भी बना रहता है तथा दाँतों का जमघट भरा-भरा हो जाता है, जिसकी वजह से टेढ़े-मेढ़े अकल दाढ़ आने का भी डर रहता है। इसके बावजूद, यही ढाँचा है जो भाषा को संभव बनाता है।

इंसान समान प्राणी जो इंसान नहीं हैं जैसे चिंपांजी बातचीत नहीं कर सकते। उनका मौखिक ढाँचा उन्हें इंसानों की तरह आवाज़ निकालने की इजाजत नहीं देता। इसके अलावा उनके द्वारा निकाली गई आवाज सोच-समझकर व्यवस्थित रूप से निकाली न होकर परिस्थिति के आवेश में निकाली आवाज होती है।

भाषा विकास के शुरुआत में क्या सिद्धान्त दिए गए?

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. आमतौर पर बायाँ हिस्सा से संबंधित दक्षताएँ नियंत्रित करता है व दायँ हिस्सा से संबंधित।
2. भाषा से जुड़ा पहला हिस्सा व दूसरा हिस्सा क्षेत्र है।
3. चिंपांजी व आधुनिक मानव शरीर की बनावट में क्या भिन्नता है?

क्या कभी आदि प्राणी (Hominids) बोल सकते थे?

कुछ भौतिक मानव शास्त्री कम्प्यूटर प्रोग्राम का इस्तेमाल करके नर वानरगण (hominids) व आधुनिक मानव के शारीरिक ढाँचे की तुलना करने की कोशिश कर रहे हैं। इसकी मदद से Philip Lieberman o Jefferay

Laitman ने भाषा के विकास को लेकर एक अवधारणा प्रस्तुत की है। उनका मानना है पहले के मानव समान प्राणी (जैसे australopithecines) में वह हिस्सा (vocal tract) नहीं था जो इंसानों को स्वर उत्पन्न करने में मदद करता है। Neanderthal, Archaic, जैसे आदि मानव भी अ, इ, उ जैसे स्वर नहीं निकाल सकते थे इस वजह से उनकी भाषायी क्षमताएँ कम थीं। लेकिन अगर Neanderthal phonemes को उत्पन्न करके अर्थपूर्ण इकाई बना सकते थे, तो उनके पास भाषा भी रही होगी। लेकिन अधिकतर शोधकर्ताओं ने यह निष्कर्ष निकाला कि भाषा जैसे कि हम जानते हैं सिर्फ पिछले कुछ 100,000 वर्षों में ही आई हो और वह बोलने के हिस्से (vocal tract) के विकास व मानव (Homo sapiens) में अन्य गुणों के विकास से जुड़ी हैं।

इस अवलोकन ने भाषा के विकास को लेकर एक लोकप्रिय अवधारणा को जन्म दिया कि australopithecines शायद चिह्न भाषा, आवाजों व इशारों से संचारण व संप्रेषण करते थे। इन क्षमताओं का Homo Habilis, Homo Erectus और Homo Sapiens के विकास के साथ ही धीरे-धीरे और भी विकास हुआ। इस विकास ने धीरे-धीरे भाषा के प्रतीकात्मक स्वरूप व उसकी ताकत को बढ़ाने में भी मदद की। तथ्यों की कमी के कारण यह अवधारणाएँ विवादास्पद ही हैं।

भाषा के क्रम विकास को लेकर जो भी विशिष्ट पहलू हैं, यह कह पाना मुश्किल है कि भाषा के विकास (एक साधारण चिह्न संबंधित संचारण से आधुनिक, प्रतीकात्मक रूप) का सबसे अहम अन्तराल कौन सा रहा होगा। कौन वह काल है, कौन सा कदम है जहाँ से यह एक बड़ी कूद लगा कर आगे बढ़ी है। लेकिन यह माना जाता है कि भाषायी क्षमताओं ने इंसान की अन्य सभी क्षमताओं जैसे अनुकूलन व सृजनात्मकता को बढ़ावा दिया। इंसान के जैविक विकास में भाषा की क्षमता का विकास शायद आखिरी पड़ाव था। तब से मानव इतिहास व हमारा विकास सांस्कृतिक विकास से निर्धारित हुआ है न कि जैविक विकास से। लेकिन यह सांस्कृतिक विकास अनुकूलन व सृजनात्मकता में विकास, भाषायी क्षमता के विकास के बिना संभव नहीं था।

सामाजिक भाषा विज्ञान (Sociolinguistics)

भाषा विज्ञानी मानव शास्त्रियों (Linguistic anthropologists) ने अलग-अलग सामाजिक परिवेशों में भाषा के उपयोग पर शोध किया है। इसे ही सामाजिक भाषा विज्ञान कहते हैं। सामाजिक भाषा वैज्ञानिक एक ही भाषायी समुदाय की भाषा, अलग-अलग सामाजिक परिवेशों में उपस्थित भाषायी भिन्नता को समझने का प्रयास करते हैं। इसमें वे उनकी भाषा के ढाँचे को आधार लेकर उसमें आई विभिन्नताओं पर ध्यान देते हैं। सामान्य तौर पर भाषा वैज्ञानिक मानवशास्त्री इसे pragmatics का अध्ययन भी कहते हैं, एक भाषायी समुदाय में भाषा इस्तेमाल करने के नियमों का अध्ययन। भाषायी समुदाय वह (Speech community) सामाजिक इकाई है, जिनमें भाषा इस्तेमाल करने के बहुत से पहलू साझा होते हैं। जैसे अमरीकी समाज में अंग्रेजी को उपयोग करने के कुछ अलग तरह के ढंग, जैसे खास तरह की वाक्य संरचना व उच्चारण के नियम विशेष संदर्भों में ठीक मान लिए जाते हैं। इसे अमरीकी मानक अंग्रेजी कहते हैं। लेकिन कुछ और वाक्य संरचनाएँ व उच्चारण के ढंग सही नहीं माने जाते। एक अमरीकी बच्ची परिवार में इस तरह के इस्तेमाल कर सकती है जिसे उसका परिवार प्यारा (cute) समझता है। यह बच्ची एक उम्र तक ऐसी भाषा का प्रयोग बार-बार कर सकती है। लेकिन जब बच्चा अपने परिवार से निकल कर बड़े भाषायी (Speech) समुदाय में जाता है तब वह पाता है कि उसकी भाषा उपयोग का ढंग (habit) अन्य लोगों से भिन्न है। अगर बच्चा घर में वाक्य शब्दों व व्यक्त करने के ढंग का प्रयोग करता है, तो उसको डाँटा जा सकता है या फिर उसका मज़ाक भी उड़ाया जा सकता है। अपने भाषायी समुदाय (Enculturation) की संस्कृति से अंतःक्रिया कर बच्चा उसमें रम जाता है व इसके 'भाषायी समुदाय' में सामाजिक एकीकरण से बच्चा अलग-अलग सामाजिक सांस्कृतिक व पारिवारिक संदर्भों में इस्तेमाल की जाने वाली भाषा सीख लेता है। अपने समुदाय में सांस्कृतिक एकात्मता (Enculturation) की प्रक्रिया में भाषा एक अहम भूमिका निभाती है। अमरीकी बच्चे अपने ही 'भाषा समुदाय' के अंदर प्रयुक्त उच्चारण व व्याकरण के इस्तेमाल के ढंग सीख लेते हैं।

बातचीत की भाषा में विभिन्नता (Dialectal Differences in Spoken Language)

एक ही भाषा बोलने व उपयोग करने वाले समूह में ऐसे छोटे-छोटे कई भाषायी समुदाय हो सकते हैं जिनके भाषा प्रयोग के तरीके में खास किस्म के लक्षण हैं। इन छोटे-छोटे उपसमूहों द्वारा प्रयोग की जा रही भाषा का ढंग अलग-अलग तो है पर इतना ही अलग है कि लोग एक दूसरे की बात तो फिर भी समझ पाते हैं तब इन सब को उस भाषा समूह की बोलियाँ कहते हैं। Dialect या बोली का मतलब है – एक भाषा के अंदर ही उच्चारण, शब्दावली व syntactical (वाक्य संरचनात्मक) छोटी-छोटी किन्तु भिन्नताएँ। उदाहरण के तौर पर मानक अमरीकी अंग्रेजी के कई भिन्न स्वरूप हैं, जो अलग-अलग क्षेत्रों जैसे उत्तर-पूर्व (North-east) मध्य-पश्चिम (mid-west) और दक्षिण-पश्चिम (south west) में पाई जाती है। जैसे अमरीकी राज्य के दक्षिण में यह सुनने को मिल सकता है – It wan't (या weren't me) या Mrs के लिए Miz और सलफा (sulpuh) 'र' की ध्वनि का अकसर शब्दों में से गायब हो जाना, जैसे four के लिए 'फोअ', Hear के लिए हीअ (heah), sulphus (sulph) के लिए सलफअ। लेकिन जो 'र' की ध्वनि स्वर के ठीक पहले हैं वह गायब नहीं होती।

अंग्रेजी की कई बोलियों को ज्यादा भद्र व प्रतिष्ठित माना जाता है। यह अंतर शैक्षिक स्तर, वर्गीय विभेद, जातीय ऊँच-नीच, कौमीय, आदि और क्षेत्रीय भिन्नताओं से बनते हैं। जब भाषाओं को एक वैश्विक सिद्धान्त (global phenomenon) की तरह देखा जाता है तो यह स्पष्ट है कि सारी भाषाएँ बोलियाँ ही हैं, जो विश्व के अलग-अलग हिस्सों में जनमी हैं। वास्तव में अंग्रेजी कोई एक मानक भाषा नहीं है वरन् बहुत सी बोलियों से मिलकर बनी है। भाषाविद् यह नहीं मानेंगे कि ब्रिटिश अंग्रेजी, अमरीकी अंग्रेजी से ज्यादा सही है, और यह सिर्फ इसलिए क्योंकि अंग्रेजी का जन्मस्थल इंग्लैण्ड है। इंग्लैण्ड, आस्ट्रेलिया कनाडा, अमरीका, भारत, साउथ अफ्रीका, वेस्टइण्डीज में बोली जाने वाली अंग्रेजी के उच्चारण व शब्दावली में स्पष्ट दिखने वाली भिन्नताएँ हैं। यही बात लगभग सभी अन्य भाषाओं पर भी लागू की जा सकती है।

अमरीका के भाषायी समुदायों का अध्ययन कर रहे कई भाषाविदों का मानना है, कि विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग होने वाली बोली की विशिष्टताएँ धीरे-धीरे लुप्त हो रही हैं। जब लोग नौकरी या शिक्षा के लिए एक जगह से दूसरी जगह जाते हैं, और जैसे-जैसे दूरदर्शन फिल्म व संचार के माध्यम बढ़ रहे हैं वैसे-वैसे अमरीकी लोगों का बोलना अब एक समान ही लगने लगा है। इस तरह की प्रक्रियाएँ संसार की अन्य भाषाएँ व बोलियों को प्रभावित कर रही हैं।

निम्न से आप क्या समझते हैं?

- सामाजिक भाषा विज्ञान
- भाषायी समुदाय
- भाषा व बोली के **Ding-Dong** सिद्धान्त के बारे में क्या कहा गया है?

भाषा में आदरसूचकों का उपयोग (Honorifics in Language)

सामाजिक भाषा वैज्ञानिकों Sociolinguistics ने पाया है कि कई भाषाओं में आदरसूचक रूप व्याकरण, वाक्य संरचना (syntax) व शब्दों के उपयोग को प्रभावित करते हैं। भाषा के आदरसूचक रूपों का उपयोग बोलने वाले विभिन्न व्यक्तियों के सामाजिक स्तर में क्या फर्क है यह बताने के लिए होता है। और ये आदरसूचक रूप उन समाजों में लगभग एक जैसे होते हैं। जिन समाजों में असमानता व वर्गीकरण किया जाता है। यह आदरसूचक लोगों के अलग सामाजिक स्तर को स्पष्ट दर्शाते हैं। ये पुरुष और महिलाओं, रिश्तेदार व गैर समाज के ऊपरी व निचले तबके के लोगों में इस्तेमाल होते हैं। उदाहरण के लिए प्रशान्त महासागर के द्वीपों के कई समाजों जैसे

हवाई (Hawaii) के समाज में राजकीय परिवार के सदस्यों के लिए बिलकुल अलग ही आदरसूचक शब्दावली का इस्तेमाल होता है। भाषा के इस प्रकार का बाकी लोग आपस में बातचीत के लिए प्रयोग नहीं कर सकते।

थाई Thai भाषा में कई प्रकार के सर्वनाम अलग-अलग सामाजिक परिवेश में उपयोग किए जाते हैं। उम्र, सामाजिक बातचीत में आप के लिए व किसी और के लिए कौन सा सर्वनाम उपयोग होगा यह तब के लिंग, शिक्षा, राजकीय ओहदे इत्यादि से निर्धारित होता है। उदाहरण प्रथम व्यक्ति का सर्वनाम I (मैं) है, थाई में पुरुषों के लिए I फोम (Phom) है। यह दो बराबर के लोगों के बीच भद्र संवाद के लिए इस्तेमाल होता है। लेकिन अगर वह पुरुष किसी अपने से उच्च स्तरीय सरकारी अफसर या किसी बौद्ध भिक्षु से बात कर रहा हो तो वह क्रेपहोम (kraphom) का उपयोग करेगा। यदि वह पुरुष किसी राजकुमार से बात कर रहा हो तो वह I के लिए क्लावकरामोम (Klaawkramom) का उपयोग करेगा। कुल मिलाकर थाई भाषा में (I) मैं सर्वनाम के 13 रूप हैं। Thai भाषा में अन्य सर्वनामों के कई-कई रूप हैं जो नम्रता व आदर दर्शाते हैं।

जापानी व कोरियन भाषा में आदरसूचक स्वरूप बोलने वाले से यह माँग करते हैं कि वह क्रिया के विभिन्न रूप व उद्बोधन के लिए उपयोगी शब्दों को आदर, भद्रता व संदर्भ के अनुसार चुने। यह रोजमर्रा की भाषा में उपयोग किए जाने वाले स्वरूप में फर्क होते हैं। भाषा के उम्र, लिंग, सामाजिक स्तर दर्शाते हैं और यह भी दर्शाते हैं कि किसी व्यक्ति को उस समाज में अन्दर का अथवा बाहर का माना जाता है। जापानी लोग tatemae और honne में हमेशा भेद करते हैं। Tatemae भद्र या नम्र भाषा का रूप है जो अपरिचित लोगों के साथ उपयोग में लाया जाता है और honne जो करीबी दोस्त व परिवार के साथ असली भावनाओं को दर्शाने के लिए उपयोग होता है।

- अपनी भाषा के बारे में सोचिए। बताइए कि आपकी भाषा में किन आदरसूचकों का प्रयोग होता है?
- कौन-से ऐसे शब्द हैं जो असमानता व वर्गीकरण इंगित करते हैं।

अभिवादन व्यवहार (Greeting Behaviour)

हर समाज, हर भाषा के लोग स्वाभाविक तौर पर एक दूसरे का अभिवादन करते ही रहते हैं। सामाजिक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन दिखाते हैं कि यह साधारण दिखने वाले रोजमर्रा के व्यवहार भी वास्तव में काफी जटिल होते हैं और अलग-अलग सामाजिक व सांस्कृतिक संदर्भ में अलग-अलग अर्थ व्यक्त करते हैं। अंग्रेजी भाषा बोलने वाले बहुत से संदर्भों में Hi या Hello बोलते हैं। ये शब्द 'healthy be thou' 'आप स्वस्थ रहें' से बने हैं। अमेरिकी समाज में लोग एक दूसरे को मिलने पर पूछते हैं, 'आप कैसे हैं?' या सब कुछ कैसा चल रहा है?' ज्यादातर मौकों पर उन्हें गम्भीर प्रश्न नहीं माना जाता। और इनका जवाब हाथ हिला कर, सिर को हलके से झुका कर या फिर हलकी मुस्कुराहट से दिया जाता है। यह सामान्य तरीके हैं और लगभग यान्त्रिक व स्वाभाविक हैं इस पर ज्यादा सोच विचार कर नहीं किया जाता।

मुस्लिम समुदाय के दो मर्द हाथ मिला कर व 'अस-सलामे- वालेकुम' से एक-दूसरे का अभिवादन करते हैं (इसका अर्थ है- अल्लाह का सुकून, रहम आपके साथ रहे।) यह वाक्यांश अरबी न बोलने वाले मुस्लिम समाज में भी बोला जाता है। इसी तरह से यहूदी संप्रदाय के लोग बोलते हैं- आप सुख शांति से रहें। दक्षिण पूर्व एशिया के कुछ समाज जैसे वियतनाम में पूछते हैं, "क्या आपने चावल खाया?"

इन्हीं सभी सम्बोधनों में दूसरों की खैरियत का ख्याल है। अंग्रेजी और वियतनामी भाषा में लोगों के शारीरिक स्वास्थ्य पर जोर है जबकि अरबी और यहूदी में आत्मिक पर। लेकिन यह सब लोगों के आपस में तरीके से मेल-जोल बढ़ाने में मदद करते हैं।

इन छोटे-छोटे संवादों में किन्तु इनके अलावा भी बहुत सी और सामाजिक जानकारीयों भी मिलती हैं। जैसे कि अमरीका का अंग्रेजीभाषी व्यक्ति निम्नलिखित प्रकार के वार्तालाप के विभिन्न सामाजिक परिवेश पहचान लेगा:

1. "Hello Mr. Thomas!"
"Hello Johnny! कैसे हो?"
2. "Good Morning, Monica"
"Good Morning, Sir"
3. "Sarah! तुम कैसी हो? बहुत अच्छी लग रही हो?"
"Bill, तुम्हें देख कर अच्छा लगा।"
4. "Good Evening, Congressman"
"Hello! जी आपको देखकर अच्छा लगा।"

पहले अभिवादन में बोलने वाला एक वयस्क और एक बच्चा है, दूसरे में रूतबे का अन्तर है, हो सकता है, बोलने वाला (employer) नियोजक और कार्यकर्ता (employee) हो।

तीसरे में करीबी परिचितों के बीच संवाद है

चौथे में दूसरा व्यक्ति ओहदे वाला है, वह पहले वाले को अच्छी तरह जानता या पहचानता नहीं है।

स्कूपिन (1988) ने थाइलैण्ड में अलग-अलग जातीय व धार्मिक समूहों में पाए जाने वाले अभिवादन व्यवहार का अध्ययन किया। उन्होंने पाया, कि संस्कृति द्वारा सुस्पष्ट प्रतिमान निर्धारित हैं जो बताते हैं कि अलग-अलग जाति व भिन्न स्तर के लोगों के बीच किस तरह का व्यवहार होगा। थाई बौद्धों में अभिवादन का पारम्परिक तरीका है हाथ उठाकर चेहरे व छाती को हल्के से छूना और साथ-साथ हल्के-हल्के आदर के कुछ शब्द बोलना इसको वाज कहते हैं। और यह अलग-अलग संदर्भों में कुछ अलग-अलग होते हैं। इसकी पहल निचले स्तर का इंसान करता है। हाथ जितना ऊपर उठता है, उतना ही ज़्यादा आदर। छोटा बच्चा वाज करते समय आँखों की भवों से ऊपर उंगली रखता है और जो बड़ा इस वाज को वापस करेगा, वह उंगलियाँ सिर्फ छाती तक ही उठाएगा। उच्च स्तर का इंसान निचले स्तर के इंसान का अभिवादन लगभग कभी नहीं करता। थाईलैण्ड के अन्य जातीय व धार्मिक समूह वाज सिर्फ थाई बौद्धों के साथ औपचारिक संपर्क में ही प्रयोग करते हैं, आपस में वही पारंपरिक अरबी अभिवादन का प्रयोग करते हैं।

थाई अभिवादन का एक और तरीका जो बौद्धों के लिए भी प्रयोग होता वह है, क्राब – नीचे झुक कर ज़मीन पर मुँह करके उच्च धार्मिक या राजनैतिक अफसर का वाज करना। क्राब किसी उच्च स्तरीय राजसी परिवार, बौद्ध भिक्षु, अफसर या अपने माँ-बाप के लिए प्रयोग होता है। जैसा पहले भी कहा था इस तरह के प्रदर्शित इज्जतपूर्ण तरीकों से अभिवादन उन्हीं समाज में पाया जाता है, जहाँ सामाजिक भेद-भाव होता है।

यद्यपि सम्मानपूर्ण अभिवादन का तरीका एक समाज से दूसरे समाज में भिन्न है, फिर भी संसार के सभी लोग एक दूसरे द्वारा किए जा रहे अभिवादन के निहितार्थ समझ सकते हैं।

Nonverbal communication (अमौखिक संप्रेषण)

लोगों से मेल-जोल करते समय हम, अमौखिक संकेतों का भी इस्तेमाल करते हैं। बोली गई भाषा की तरह ही अमौखिक संकेत भी जानवरों की तुलना में समाज पर निर्भर करते हैं। कुत्ता, बिल्ली व कोई अन्य जानवर को एक-दूसरे से गैर मौखिक संचार करते समय कोई कठिनाई नहीं होती। किन्तु इंसानी अमौखिक संप्रेषण बहुत विविध रूप ले सकता है। ऐसा कह सकते हैं कि इंसान एक मात्र ऐसे जानवर एक-दूसरे को समझने में भूल भी कर सकते हैं।

Kinesics (गति संवेदन)

शोधकर्त्ताओं का मानना है, कि इंसान के लगभग 250,000 मुख के भाव हो सकते हैं। इनमें से कई का अलग-अलग परिस्थिति में अलग-अलग मतलब होता है। जैसे मुस्कुराहट खुशी का इजहार करती है। लेकिन कुछ अन्य परिस्थिति में मुस्कुराहट का मतलब दूसरे व्यक्ति की व्यंगात्मक तौहीन भी हो सकता है। इसी प्रकार से सिर, आँख, भवें, हाथ व शरीर का मुद्रा अलग-अलग मतलब दर्शाता है, जिसे वहाँ की संस्कृति परिभाषित करती है।

अमरीकी चीजों की तरफ उंगली का इशारा करके बताते हैं व अन्य लोग अपनी आँखों, ठोढ़ी व सिर से बताते हैं। अपना सिर ऊपर-नीचे हिलाने का मतलब है— हॉ व एक तरफ से दूसरी तरफ हिलाने का मतलब ना। लेकिन भारत, ग्रीस व तुर्की के कई भागों में इसका विपरीत अर्थ है एक O.K. संकेत का मतलब, अमरीका या इंग्लैण्ड में मतलब है, “तुम ठीक हो”, लेकिन बेलजियम या फ्रांस में इसका मतलब है, “तुम शून्य हो” और ग्रीस व तुर्की में यह बहुत अभद्र बेहूदा संकेत माना जाएगा। अमरीका में अपने सिर की तरफ इशारा करने का मतलब है, वह स्मार्ट है व यूरोप में इसका मतलब मूर्ख। 1960 में V चिन्ह का मतलब “शांति” व ग्रीस में तौहीन था। इसी वजह से लोग एक-दूसरे को गलत समझते हैं।

इसके बावजूद शोध दिखलाता है कि मुख की अभिव्यक्तियों से सम्बन्धित कुछ भाव सभी जगह पाए जाते हैं। मनोवैज्ञानिक Paul Ekman ने दिखाया है, कि मुँह की अभिव्यक्तियों से संबंधित कुछ मूल समानताएँ हैं। अलग-अलग समाज के लोग मुँह की अभिव्यक्तियों जो खुशी, गम, चौंकना, गुस्सा इत्यादि दिखाते हैं, पहचान लेते हैं। Newman का काम Papua New Guinea के लोगों के साथ था, जिनका हाल में ही पाश्चात्य संस्कृति के लोगों के साथ वास्ता पड़ा। जब Fore लोगों को तस्वीर दिखाई गई, उन्हें पहचानने में कोई तकलीफ नहीं हुई। Ekman ने बताया है कि कुछ ‘सार्विक भाव’ संसार के सभी लोगों में दिखते हैं।

Proxemics (सामीप्य)

भाषा का एक और अमौखिक रूप है दूरी का प्रयोग करना। अलग-अलग समाज किस तरह जगह को देखता व उसका प्रयोग करता है, को Proxemics कहते हैं। Edward T. Hall (1981) का मानना है, कि जगह को लेकर, कोई सार्विक नियम नहीं है। अमरीकी समाज में लोग अलग-अलग मात्रा में, अलग-अलग परिस्थितियों में ‘personal space’ रखते हैं। हम अपने करीबी जानकारों से 18" का फासला रखते हैं और जिन्हें हम नहीं जानते, उनके साथ ज़्यादा दूरी रखते हैं। कई समाज में लोग बहुत नज़दीकी से संप्रेषण करते हैं बावजूद इसके कि उनके बीच क्या संबंध है।

सामाजिक मेल-जोल का अमौखिक संप्रेषण एक ज़रूरी पहलू है। स्वाभाविक इशारे, जैसे जापान में झुकना, अमरीका में हाथ मिलाना अलग-अलग परिवेश में गहरा प्रतीकात्मक महत्त्व रखते हैं। ऐसा माना गया है, अमौखिक संप्रेषण का अध्ययन इंसानी व्यवहार की समझ को न सिर्फ अलंकृत करेगा, बल्कि सुधारेगा भी।

1. कुछ वैज्ञानिकों का कहना है कि वानर भी भाषा सीख सकते हैं जबकि कुछ अन्य का कहना है कि वे कुछ शब्द सीख सकते हैं पर जैसे मानव भाषा का प्रयोग करते हैं वैसा प्रयोग वानर व चिंपांजी नहीं कर सकते। इस संदर्भ में आपके क्या विचार हैं?
2. मानव भाषा की क्या विशेषताएँ हैं जो उसे अमानवीय (जानवरों) भाषा से अलग करती है।
3. अमानवीय संप्रेषण के बारे में हुए विभिन्न शोध हमें क्या बताते हैं?
4. मानवशास्त्री भाषा के विकास के बारे में क्या कहते हैं?

भाषा का दूसरा कदम-स्कूल

- अध्याय : 4. बच्चों की भाषा सीखने की क्षमता - 1 :** चार वर्ष का बच्चा वयस्क के बराबर - भाषा के नियमों की सहज समझ - बच्चा कैसे सीखता है? बोरियत की वर्णमालाएँ - मजेदार सीखने के तरीके।
- अध्याय : 5. बच्चों की भाषा सीखने की क्षमता - 2 :** ठीक वर्तनी क्या है? - "जैसा बोलो वैसा लिखो" - वर्तनी में मुश्किलें - वर्तनी के दोहरे प्रचलन।
- अध्याय : 6. भाषा सिखाना माने क्या? :** कुछ प्रयोग - स्कूलों में छात्रों और शिक्षकों की मुश्किलें - क्या भाषा एक "विषय" है? - अपनी भाषा का इस्तेमाल - गलतियाँ क्या समझाती है? - सीखने के पड़ाव - लिखना।
- अध्याय : 7. भाषा व भाषा शिक्षण :** सिखाना बनाम सुधारना - बच्चा पहले से ही समृद्ध है - घर की भाषा, किताबों की भाषा - बच्चों की बातचीत से बनी पाठ्यपुस्तकें - भाषा सिखाने का उद्देश्य क्या है?
- अध्याय : 8. बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं :** कुदरती जादू, या लंबा, लंबा सफर? कुदरती सीखना - भाषा सीखने की मंजिलें-उम्र और भाषा सीखना - 20,000 शब्द - भाषा और बुद्धि का रिश्ता - भाषा और दिमाग का बाँया हिस्सा - भाषा और माहौल - सीखना और संयुक्त उद्यम - आगे और पीछे सीखना - गलतियाँ।

हमने अभिमन्यु की कहानी पढ़ी-सुनी है कि वह, अर्जुन का बेटा, जब अपनी माँ के पेट में ही था तब उसने अपने पिता अर्जुन की बातचीत सुनी। अर्जुन अपनी पत्नी को युद्ध के चक्रव्यूह में घुसने की तरकीब बता रहा था। अभिमन्यु ने यह तरकीब तो सुन ली मगर किसी वजह से बाद की बात - जिसमें चक्रव्यूह से बाहर निकलने की तरकीब अर्जुन ने बताई थी - वह नहीं सुन पाया। बाद में महाभारत की लड़ाई में क्या हुआ यह भी हम जानते हैं। जब बड़े-बड़े योद्धा मर गए तब नौजवान अभिमन्यु को लड़ाई में जाना पड़ा। वह चक्रव्यूह में घुस तो गया मगर बाहर निकल नहीं पाया - वहीं अपने चाचाओं, ताउओं, आदि के हाथों मारा गया।

इस कहानी का हमारी इस किताब में एक खास स्थान है।

पहली बात तो यह है कि अभिमन्यु अपने जन्म से पहले ही, अपनी माँ के पेट में, काफी कुछ सीखने लगा था। कुछ-कुछ यही बात सिर्फ अभिमन्यु में ही नहीं बल्कि हर बच्चे में देखी जाती है। हाँ, चक्रव्यूह वगैरह सीखना तो कहानीबाजी है, मगर वैज्ञानिक खोज ने साबित कर दिया है कि जन्म से पहले ही बच्चा बहुत कुछ तैयार हो जाता है। फिर जन्म के बाद शुरुआती 2-3 सालों में हर बच्चा अपने घर की बातचीत सुन-परख कर भाषा का ज्ञान हासिल कर लेता है। और 4-5 साल तक उसकी भाषायी काबिलियत लगभग एक वयस्क आदमी के बराबर हो जाती है।

फिर क्या होता है? फिर बच्चा स्कूल में डाल दिया जाता है - एक ऐसा चक्रव्यूह जो उसे अभिमन्यु की तरह खत्म करने की भरसक कोशिश करता है। 'मतारी' नहीं 'माता' कहो, 'अबू' नहीं 'पिता' कहो। गेंद जिससे वह अच्छी तरह खेलता है, उसे फिर से ग-ए की मात्रा - आधा-न द की शक्ल में पहचानना पड़ता है। अच्छी भली कहानियों की जगह अजीब, बेमतलब सीख रटनी पड़ती है। अचरज की बात नहीं कि एल्बर्ट आइन्सटीन जैसे महानतम वैज्ञानिक अपने बचपन में स्कूल से भागे थे, या भागने की सोचते रहते थे। अगर स्कूल नहीं होते, तो शायद आज तक दर्जनों आइन्सटीन हुए होते।

तो फिर, स्कूली पढ़ाई में क्या-क्या नुक्स है? शिक्षकों के तरीके, किताबों की बनावट, पढ़ाने के गुर, लिखवाने के तरीके, व्याकरण नाम का अजगर, तमीज़ से बैठने का आतंक, परीक्षा का जानलेवा बुखार - ये सब जैसे हमारे स्कूलों में हैं वैसा क्यों है? हम, हमारी सबसे प्यारी चीज़, यानि हमारे बच्चों को स्कूल नाम की जेल में क्यों जॉक देते हैं? सोचने वाली बात है।

गौरतलब है : स्कूलों का निज़ाम ज़्यादा पुराना नहीं है। प्राचीन काल में - पूरी दुनिया में राजों - रजवाड़ों के राजकुमारों (राजकुमारियों को भी नहीं) को गुरुओं - आचार्यों द्वारा शिक्षा दी जाती थी। उन्हें आगे जाकर राजकाज तो करना होता था। आम जनता जाहिल रहती थी। पिछले सौ-डेढ़ सौ सालों तक। तब से स्कूल नाम का निज़ाम शुरू हुआ है। पढ़ने-पढ़ाने की साइंस के बारे में भी जानकारी कम थी। पिछले 20-30 सालों में यह जानकारी बढ़ी है। साथ-साथ स्कूली पढ़ाई में भी निखार आना शुरू हुआ है।

मगर, अभी सफर काफी लम्बा तय करना है। पढ़ के देखो।

अध्याय – 4

बच्चों की भाषा सीखने की क्षमता भाग-1

ध्वनि संरचना, वर्णमाला, वर्तनी

पाठ की रूपरेखा

- परिचय
- उद्देश्य
- शीर्षक व उपशीर्षक
 - बच्चा नियम पकड़ता है
 - व्यंजन-स्वर-व्यंजन-स्वर
 - बच्चा यह कैसे सीखता है

परिचय :

हमारे अधिकांश शिक्षक एवं अभिभावक आमतौर पर बच्चों की भाषा सीखने की क्षमता के बारे में भ्रांतियाँ पाले हुए होते हैं, उन्हें लगता है कि बच्चों को जो भाषा आती है, वो गलत है। यह लेख इस बात पर केन्द्रित है कि एक 4-5 साल के बच्चे में न केवल भाषा की समझ होती है बल्कि भाषा की विभिन्न ध्वनियों के बारे में (उनके द्वारा बोली जाने वाली भाषा के संदर्भ में) बारीक व सटीक समझ है कि ध्यान से सोचकर देखें तो हम खुद हैरान रह जाते हैं। लेकिन स्कूल में बच्चों के इस ज्ञान को कोई महत्त्व नहीं दिया जाता है। बच्चों में भाषा सीखने की कोई क्षमता भी होती है, इस पर उन्हें विश्वास नहीं होता है, वे सोचते हैं कि बड़े या हम जो भाषा बोलते हैं वही सही है और वे उसे ही अपने तरीके से उन पर लादने का प्रयास करते हैं। जो बच्चों के भाषायी विकास को अवरुद्ध करती है। इस लेख में “बच्चों में भाषा की असीम क्षमताएँ होती हैं और यह सब वह खुद प्रयास करके सीखता है।” पर हम गहराई से समझने का प्रयास करेंगे।

उद्देश्य :

- आप समझ पाएँगे कि बच्चों के पास भाषा सीखने की असीम क्षमता होती है ।
- आप समझ पाएँगे कि भाषा सीखने-सिखाने के दौरान बच्चों की भाषायी क्षमता को कैसे उपयोग में लिया जाए ।
- साथ ही साथ आप शब्दों की ध्वनि संरचना के नियम समझ पाएँगे ।
- यह समझ पाएँगे कि स्वर व व्यंजन ध्वनियों की क्या विशेषताएँ हैं ।

जब हम स्कूल में बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाने का (अक्सर असफल) प्रयास करते हैं तो अक्सर यह भूल जाते हैं कि हर बच्चे में भाषा सीखने की असीम क्षमता होती है और वह अपनी भाषा व उसका व्याकरण पूर्णतया आत्मसात करने के बाद ही स्कूल आता है। यानी चार वर्ष की आयु का बच्चा भाषागत दृष्टि से एक वयस्क ही होता है। ध्वनि-संरचना का जटिल संसार बच्चा स्वयं

बिना किसी की मदद के सुलझा लेता है। यही नहीं कि हर बच्चा जानता है कि उसकी भाषा की ध्वनियाँ कैसे बोली जाएँगी अपितु यह भी कि ये ध्वनियाँ किस क्रम में आ सकती हैं और किस क्रम में नहीं। ये सब नियम बच्चे के दिमाग में सुव्यवस्थित ढंग से उपलब्ध रहते हैं। बच्चा सार्थक शब्द ही बोलता है, यदा-कदा नए-नए शब्द बनाता भी है तो वे ध्वनि संरचना के नियमों का उल्लंघन नहीं करते। जरा सोचिए कि 'प, फ, ब, भ और म' में क्या अंतर है। सब ओष्ठ्य ध्वनियाँ हैं। चलिए ओंठ तो दिखाई देते हैं। कुछ अनुकरण संभव है। 'क, ख, ग, घ और ङ' के उच्चारण व अंतर को बच्चा कैसे पकड़ता है और बच्चे को यह नियम कौन बताता है कि हिन्दी के अधिकतर शब्द 'कल, नल, काला, बाल, कील, दरवाजा, किताब, पेड़, फूल' आदि जैसे होंगे यानी उनकी संरचना 'व्यंजन-स्वर-व्यंजन-स्वर' होगी। 'परिणाम' शब्द की ध्वनि संरचना देखिए—

प+अ+र+इ+ण्+आ+म

बच्चा यह नियम कैसे पकड़ लेता है कि हिन्दी शब्दों के अंत में 'अ' (जो लिखित हिन्दी में सदैव दिखाई देता है) नहीं बोला जाएगा। 'कल' को 'क्+अ+ल्' बोलते हैं न कि 'क्+अ+ल्+अ' जैसा कि लिखा गया है।

कुछ देर के लिए लिखने को भूलकर ध्वनि-संरचना के बारे में सोचिए। हिन्दी-भाषी चार वर्ष की आयु के बच्चे के दिमाग में हिन्दी ध्वनि-संरचना का क्या चित्र होगा यह समझना तो असंभव है। लेकिन उसकी एक छोटी-सी झलक देखने का प्रयास हम कर सकते हैं, बच्चे की भाषा के आधार पर। बच्चा 'पापा, बाबा, मामा, चाचा, काका; काना, खाना; जाना, पाना; पानी, नानी; बाल, जाल; कील, नील आदि शब्दों में स्पष्ट अंतर करता है। यह अंतर कर पाना तभी संभव है जब बच्चे में 'प, ब, म, क, च, ख, ज, न, ल, ' आदि को एक-दूसरे से अलग करने की क्षमता हो। आखिर 'कील' और 'नील' में क्या अंतर है। केवल 'क्' और 'न्' का। 'क्' कण्ठ से बोली जाने वाली ध्वनि है— अल्पप्राण है व अघोष है। 'न्' दन्त्य है ' नासिक व सघोष। यह सब न तो माँ-बाप जानते हैं, न रिश्तेदार।

बच्चा नियम पकड़ता है

बच्चा यह सब कैसे पकड़ लेता है? और यह एक-दो ध्वनियों की बात नहीं। पूरी ध्वनि-व्यवस्था इन सूत्रों में बँधी है। व्यंजन व्यवस्था देखिए (देखिए तालिका)।

बच्चा यह कैसे समझ लेता है कि 'प' अल्पप्राण, अघोष, ओष्ठ्य ध्वनि है और 'घ' महाप्राण, सघोष, कण्ठ्य ध्वनि है।

	अघोष		सघोष		सघोष नासिक
	अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण	महाप्राण	
कण्ठ	क	ख	ग	घ	ङ
तालव्य	च	छ	ज	झ	ञ
मूर्धन्य	ट	ठ	ड	ढ	ण
दन्त्य	त	थ	द	ध	न
ओष्ठ्य	प	फ	ब	भ	म
इन 25 व्यंजनों के अलावा य, र, ल, व, स, ह; श, ष, ळ, ड और ढ के साथ वर्णमाला में अक्सर संयुक्त व्यंजन 'क्ष, त्र, ज्ञ और श्र' भी दिए जाते हैं। कुछ अन्य ध्वनियों यथा क, ख, ग, फ, ज आदि के बारे में भी चर्चा करेंगे।					

जैसा विवरण ऊपर दिया गया है वैसा तो बच्चा नहीं दे सकता। परन्तु इसमें कोई संदेह नहीं कि यह अंतर उसके दिमाग में है। वह 'पर' और 'घर' में अंतर करता है। दोनों में 'अर' तो समान है। अंतर केवल 'प' और 'घ' का ही है। अल्पप्राण/महाप्राण में यह समझना होता है कि ध्वनि के साथ अतिरिक्त वायु का उपयोग

पर

प + अ + र

घर

घ + अ + र

होगा या नहीं - 'ख' में है लेकिन 'क' में नहीं। सघोष/अघोष में यह समझना होता है कि गले के अंदर छुपी श्वास नली के ऊपर बैठी स्वर-तंत्री में कंपन है या नहीं। 'क' और 'ख' में कंपन नहीं है, वे अघोष हैं, 'ग' और 'घ' में कंपन है, वे सघोष हैं।

सवाल यहाँ बच्चों को अल्पप्राण, महाप्राण ध्वनियाँ सिखाना नहीं बल्कि सवाल यह है कि बच्चे यह सब कैसे समझ पाते हैं?

स्वर-ध्वनियों का संसार देखिए

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ
ओ औ अं अः ँ ऑ

(‘ऋ’ के बारे में अलग से चर्चा करेंगे। लिखने में मात्राओं का प्रश्न भी सामने आएगा।)

‘अ’ और ‘आ’ में अंतर शायद बहुत सरल लगे पर जरा महसूस करके देखिए कि ‘इ’ और ‘ए’ में क्या अंतर है। सुनने में तो साफ है जैसे ‘कि’ और ‘के’। पर बोलने में यह अंतर कैसे लाया जाता है। बच्चा यह कैसे पकड़ लेता है कि ‘उ’ में जीभ को पीछे खींचना है व ओठों को गोल करना है? यह भी समझता है कि व्यंजनों में तो वायु-प्रवाह को कहीं-न-कहीं अवश्य रोकना है; परन्तु स्वरों में वायु निरंतर बहती रहनी चाहिए। क्या यह सब अनुकरण से सीखना संभव है?

अभ्यास

- (क) अपने मुँह के सामने हाथ रख कर तालिका में दिए वर्णों को बोलिए। बताइए किन ध्वनियों को बोलते समय हवा बाहर आती है?
- (ख) क्या ये वही ध्वनियाँ हैं जो तालिका में महाप्राण वाले कॉलम में लिखी गई हैं।
- (क) अपने दोनों कानों में उँगली डालकर, तालिका की सारी ध्वनियों को बोलिए। अब बताइए बोलते समय स्वर-तंत्री में कंपन फिर से किन-किन ध्वनियों को बोलते समय महसूस हुआ ये ध्वनियाँ किस कॉलम में आएँगी?
- हिन्दी भाषा में कितनी स्वर ध्वनियाँ हैं? स्वर ध्वनियों की क्या विशेषताएँ होती हैं।
- हिन्दी भाषा में कितनी व्यंजन ध्वनियाँ हैं। व्यंजन ध्वनियों की क्या विशेषताएँ बताई गई हैं?

ध्वनि संरचना के दो नियमों की, जो 3-4 साल का बच्चा निश्चित रूप से जानता है, हमने ऊपर चर्चा की। एक तो यह कि बच्चा पकड़ लेता है कि अधिकतर शब्दों की संरचना ‘व्यंजन-स्वर-व्यंजन-स्वर’ होगी। दूसरा यह कि ध्वन्यात्मक मूल्य स्थान के अनुसार अलग-अलग हो सकते हैं। ‘लड़का’ में ‘ल’ पूरा है लेकिन ‘कमल’ व ‘कलकल’ के तीनों ‘ल्’ आधे हैं। हिन्दी का नियम है कि ‘व्यंजन-स्वर-व्यंजन-स्वर’ की कड़ी में अंतिम स्वर बोला नहीं जाएगा।

लड़का - ल् + अ + ड् + अ + क् + आ
कमल क् + अ + म् + अ + ल्
कलकल क् + अ + ल् + क् + अ + ल्

कुछ और नियम देखिए। अनुस्वार-अनुनासिक (चंद्रबिन्दु) तथा नासिक्य व्यंजनों को कैसे लिपिबद्ध किया जाएगा तथा वर्णमाला व वर्तनी में उसका प्रयोग कैसे होगा; ये तो स्कूली बातें हैं, लिखाई-पढ़ाई से जुड़ी। परन्तु इनके उपयोग के ध्वन्यात्मक नियम तो बच्चा सीखकर ही स्कूल आता है। स्वयं अपनी काबिलियत से सीखकर। बच्चा जानता है— ‘जिस वर्ग की ध्वनि उससे पहले उसी वर्ग का समस्थानीय पंचम नासिक व्यंजन’। यथा ‘पंप’

में 'म्' होगा; 'आनंद' में 'न्'; 'चंचल' में 'ञ्'; 'पंडित' में 'ण्'। देखिए 'संबंध' में पहला अनुस्वार 'म्' (प वर्ग के 'ब' से पहले) और दूसरा 'न्' (त वर्ग के 'ध' से पहले) — क्या कोई बच्चा कभी 'सन्बन्ध' बोलता है?

बच्चा नित ऊल-जलूल नए शब्द बनाया करे पर इस नियम का उल्लंघन न होगा। 'इंक-विक' में समस्थानीय नासिक व्यंजन 'ङ' ही आएगा। अनुनासिकता बिल्कुल अलग बात है और इसका संबंध स्वरों से है व्यंजनों से नहीं। कुछ विशेष शब्दों में बच्चे को यह सीखना है कि स्वर की ध्वनि मुख के साथ-साथ नाक से भी निकलेगी यथा आँख, आँधी, मैं, हूँ, ऊँट, फूँकना आदि। कुछ शब्दों में तो बच्चे को अनुनासिक स्वरों व नासिक्य व्यंजनों में सूक्ष्म ध्वन्यात्मक अंतर करना होता है जैसे— हँस (स्वर अनुनासिकता) व हंस (नासिक व्यंजन, पक्षी)।

अभ्यास

- हिन्दी के कौन-कौन से नियम उपर वर्णित पैरा में बताए गए हैं?
- अनुस्वार व अनुनासिकता में क्या अन्तर है?

व्यंजन-स्वर-व्यंजन-स्वर

ध्वनि-व्यवस्था के अन्य नियम देखिए। हर भाषा में संयुक्त ध्वनियों के अपने नियम होते हैं। भाषा इस्तेमाल करने वाला हर व्यक्ति इन्हें जानता है पर किसी को बता नहीं सकता। भाषा-वैज्ञानिक भी अनेक तरह के शोध के बाद उनकी झलक भर ही देख पाते हैं। क्योंकि प्रधान नियम है 'व्यंजन-स्वर-व्यंजन-स्वर' इसलिए संयुक्त-ध्वनियाँ कम ही देखने में आती हैं और जब आती हैं तो उन पर अनेक तरह के अंकुश लगे रहते हैं। अंग्रेजी में शब्द के शुरु में तीन से अधिक व्यंजन ध्वनियाँ आ ही नहीं सकती। और ये तीन भी केवल ऐसे शब्दों में मिलती हैं— Strike, Street, Scream, Split, Squash आदि। यानी अंग्रेजी का यह नियम है कि यदि शब्द के शुरु में तीन व्यंजन ध्वनियाँ होंगी तो

- पहली व्यंजन ध्वनि केवल 'स्'
- दूसरी व्यंजन ध्वनि केवल 'प्', 'त्' या 'क्'
- तीसरी व्यंजन ध्वनि केवल 'य्', 'र्य', 'ल्' या 'व्'

हिन्दी में भी 'स्त्री' में 'स्', 'त्' व 'र्य' ही हैं। 'प्रकार', 'न्यूनता', 'स्नान', 'स्नेह', 'क्रम', 'ट्रक', 'प्यास', 'व्याख्या' आदि के आरंभ में केवल दो ही व्यंजन ध्वनियाँ हैं। क्या हिन्दी में ऐसा संभव है कि शब्द के आरंभ में तीन व्यंजन ध्वनियाँ आएँ और उनका क्रम हो:

सघोष महाप्राण

+

अघोष महाप्राण

+

अघोष अल्पप्राण

(यथा 'घ्')+(यथा 'ख्')+(यथा 'क्')

आखिर बच्चे कैसे समझ लेते हैं कि 'हरव्कीच' जैसा शब्द हिन्दी में नहीं हो सकता? यही नहीं कि बच्चे हिन्दी के 41 व्यंजनों को अलग कर लेते हैं; वे इस नियम को भी सहज ही आत्मसात कर लेते हैं कि कौन-कौन सी व्यंजन ध्वनियाँ एक-दूसरे के साथ जुड़ सकती हैं। संभव है कि हिन्दी का यह नियम है कि 'सघोष महाप्राण + अघोष महाप्राण + अघोष अल्पप्राण' वाला क्रम हिन्दी में नहीं हो सकता। (जो अन्य किसी भाषा में हो सकता है)। यानि 'ध्ठे', 'भ्ठ्टा', 'ध्ख्त्री', 'भ्चू' आदि हिन्दी में संभव नहीं। हिन्दी का शब्दकोष देखें 'शब्दों के शुरु में अधिकांश 'क्' के साथ 'र' मिलेगा या 'श्' यानी 'क्रम', 'क्षमा' आदि। दो ही व्यंजन; उसके बाद स्वर।

‘व्यंजन-स्वर’, ‘स्वर-व्यंजन’ का क्रम बना रहे, यानी दो स्वर या दो व्यंजन साथ-साथ न आएँ इस व्यवस्था के लिए अलग-अलग भाषाएँ अलग-अलग प्रावधान करती हैं। बांग्ला में ‘सीता का’ कहने के लिए केवल ‘र’ जोड़ते हैं, ‘सीतार’। लेकिन ‘राम का’ कहने के लिए केवल ‘र’ जोड़ने से काम नहीं चलेगा क्योंकि ‘राम’ में सिर्फ ‘र’ जोड़ देने से दो व्यंजन साथ-साथ आ जाएंगे। इसलिए ‘एर’ का प्रयोग, ‘र’ से पहले स्वर, ‘रामेर’।

अंग्रेजी में भी यही नियम भाषा की पूरी ध्वनि-संरचना पर फैला हुआ है। a boy कहते हैं लेकिन an egg; दो स्वरों के बीच ‘न’ आ गया। car-park में दोनों ‘र’ का उच्चारण नहीं होता, इंग्लैंड की अंग्रेजी में। लेकिन car-engine में ‘र’ का उच्चारण होगा। ‘स्टेशन’ को पंजाब में ‘सटेशन’, उत्तर प्रदेश में ‘इसटेशन’ व हरियाणा में ‘टेशन’। दो व्यंजन साथ-साथ भाते नहीं हमें। बोलने को तो बोल ही सकते हैं। अंग्रेजी में तो दो स्वर साथ होने पर ‘र’ अक्सर आसमान से टपक पड़ता है जैसे India and Pakistan में India के बाद ‘र’ आएगा उच्चारण में; वैसे ही idea of में idea के बाद।

अभ्यास

1. यदि शब्द के शुरु में तीन व्यंजन ध्वनियां होंगी तो

- पहली व्यंजन ध्वनि केवल ‘स्’
- दूसरी व्यंजन ध्वनि केवल ‘प्’, ‘त्’ या ‘क्’
- तीसरी व्यंजन ध्वनि केवल ‘य्’, ‘र’, ‘ल्’ या ‘व्’

क्या आप लेखक की बात से सहमत हैं?

2. ऐसा शब्द ढूँढ़िये जिसमें शुरुआत में तीन व्यंजन ध्वनियां आती हो लेकिन शुरुआत की ध्वनि स् न हो।
(आप शब्दकोश की मदद ले सकते हैं)

बच्चा यह कैसे सीखता है?

ध्वनि-संरचना के संसार की यह एक छोटी-सी झलक है। बच्चा यह सब स्वयं कैसे सीख लेता है, चार वर्ष की छोटी-सी आयु में? अनुकरण से तो नहीं सीख सकता। अनुकरण उस बात का हो जो कोई दिखा सके या बता सके। ये नियम तो भाषा वैज्ञानिक भी ठीक से नहीं समझते। इस तरह का भाषागत ज्ञान होने के लिए खासकर दो चीजें होनी आवश्यक लगती हैं। भाषा सीखने की सहजात क्षमता और ऐसा वातावरण जिसमें भाषा तो खूब हो लेकिन स्पष्ट तौर पर नियम व व्याकरण न हों। वातावरण ऐसा कि बच्चे को कुछ बोझ महसूस न हो, बोरियत न लगे, मजबूरी न हो। बच्चे का ध्यान मौके की बात पर हो, न कि व्याकरण के नियमों व भाषा की शुद्धता पर। बच्चे के लिए हम किसी विशेष भाषागत वातावरण की रचना नहीं करते। स्वाभाविक, सहज संदर्भों में भाषा का प्रयोग करते हैं— उससे बातचीत करते हैं, उसकी बातचीत (कितनी भी गलत क्यों न हो) प्यार से सुनते हैं व उसको अन्य लोगों की बातचीत (चाहे उसे समझ आए न आए) सुनने की पूर्ण स्वतंत्रता देते हैं। सामाजिक बातचीत के अथाह समुद्र से बच्चा स्वयं एक सुव्यवस्थित व्याकरण व शब्द ढूँढ़ लाता है। ये कहाँ तक जायज है कि ऐसे बच्चे को हम स्कूल आने पर वर्णमाला, मात्रा व वर्तनी सिखाना शुरू करते हैं?

अभ्यास

- उपर्युक्त पैराग्राफ में लेखक ने बच्चों को भाषा सीखने के बारे में क्या-क्या बातें कहीं हैं?

शुरुआत वर्णमाला से ही क्यों?

आप खुद ही सोचिए ऐसी क्षमताओं वाले बच्चे को जब आप ‘न’ से ‘नल’ व ‘च’ से ‘चल’ पढ़ाते-लिखाते हैं तो उसे कितनी बोरियत होती होगी। जो बच्चा रोजमर्रा की बातचीत से स्वयं सब ध्वनियाँ एवं ध्वनि संरचना

के जटिल नियम सहज ही ढूँढ़ लाता है, क्या वह लिखने-पढ़ने की भाषा से वर्णमाला व वर्तनी के नियम न ढूँढ़ लाएगा? पता नहीं कब बच्चे की काबिलियत पर हम यकीन करना सीखेंगे?

बच्चे को कविता, कहानी, चित्रकथा, गीत सुनाइए-पढ़ाइए, उसके आसपास उसकी मनचाही सामग्री रखिए। हिज्जे सीखना कोई कठिन कार्य नहीं है बच्चे के लिए। अलग-अलग संदर्भों में अलग-अलग शब्द-चित्रों में जब वही वर्ण बच्चों के सामने आएँगे तो वह उन्हें स्वयं ही पहचान लेगा। सीखने की प्रक्रिया यह नहीं है कि टुकड़े-टुकड़े जोड़ो और एक पूर्ण इकाई बन जाएगी। ठीक इससे उल्टी है। एक पूर्ण छवि पहले बनती है उसमें रंग बाद में भरे जाते हैं, अलग-अलग तरह से। आप ही बताइए- ताजमहल बनने से पहले बना या बनने के बाद? सीखने की मुख्यतः वही दो शर्तें हैं – बच्चे की काबिलियत पर विश्वास व बच्चे के लिए मजेदार वातावरण का निर्माण।

अभ्यास

- लेख से ऐसे उदाहरण छाँटकर लिखिए जिससे पता चलता है कि बच्चों में भाषा सीखने की जन्मजात क्षमताएँ होती हैं?
- ताजमहल बनने से पहले बना या बनने के बाद लेखक इस वाक्य से क्या कहना चाहते हैं?
- बच्चे नए शब्दों के निर्माण के दौरान ध्वनि संरचना के नियमों का उल्लंघन नहीं करते हैं। कुछ उदाहरण लेख से दीजिए।
- दो-तीन वर्ष के बच्चों द्वारा बोले जाने वाले 20-25 शब्दों को लिखिए और उनका विश्लेषण कर पता कीजिए कि उनकी ध्वनि संरचना क्या है।
- लेखक ने बच्चों में भाषा सिखाने के लिए किन गतिविधियों की चर्चा लेख में की है।
- संयुक्त ध्वनियाँ क्या हैं?

हम कैसे करें कि शब्दों की संरचना क्या है? किस शब्द में कितने स्वर हैं कितने व्यंजन?

समझने के लिए हम व्यंजन/ध्वनि को C से दर्शाएँगे और स्वर ध्वनि को V से दर्शाएँगे। और हम शब्दों को देवनागरी व रोमन दोनों लिपि में लिखेंगे ताकि समझने में आसानी हो।

पहले कुछ हिन्दी शब्द कमल → क्+अ+म्+अ+ल् यानि CVCVC

KAMAL K+A +M +A +L यानि CVCVC

मामा म्+आ+म्+आ यानि CVCVC

MAMA M्+A+ M्+ A यानि CVCV

घर घ् +अ+र् यानि CVC

GHAR G+ H + A + R यानि CCVC

GH + A+ R यानि CVC

सही होगा GH+A+R क्योंकि अंग्रेजी में 'घ' की ध्वनि दर्शाने के लिए 'GH' का प्रयोग होता है। चिह्न दो लेकिन ध्वनि एक।

अब आप भी ऐसे ही कुछ शब्द लीजिए व उनकी संरचना पता कीजिए।

अध्याय – 5

बच्चों की भाषा सीखने की क्षमता

भाग-2

ध्वनि संरचना, वर्णमाला, वर्तनी

पाठ की रूपरेखा

- परिचय
- उद्देश्य
- शीर्षक व उपशीर्षक
 - वर्तनी व्यवस्था व अध्यापक का रोल
 - वर्तनी की कठिनाइयाँ
 - जैसा बोलो वैसे लिखो
 - क, ख, ग, ज और फ़
 - चन्द्रबिन्दु की स्थिति
 - वर्तनी के दोहरे प्रचलन

परिचय :

हमारे विद्यालयों में शिक्षकों द्वारा हमेशा भाषा सिखाने में विशेष परिपाटियों या नियमों का उपयोग किया जाता है, यही बात वर्तनी सिखाने में भी की जाती है, पर क्या आपको लगता है, हम सभी लोगों ने हिन्दी वर्तनी एक ही तरीके से सीखी है, क्या लिखते समय हम एक ही तरीका उपयोग में लाते हैं : नहीं न! शिक्षकों के अथक प्रयासों के बावजूद भी हम सभी अपने-अपने तरीके से लिखना सीखते हैं। लेकिन फिर भी वयस्क होते ही हम फिर से अपने विद्यार्थियों अथवा बच्चों के लिए नियम बनाने लगते हैं। हम क्यों ऐसे नियम बनाते हैं? आप इस अध्याय में देखेंगे वर्तनी व्यवस्था के जटिल होते हुए भी सीखने वाला व्यक्ति खुद ही वर्तनी के सारे नियम ढूँढ़ लेता है। जरूरत होती है, सीखने वाले व्यक्ति के लिए अच्छा साहित्य उपलब्ध कराने की एवं उन्हें लिखने के लिए आकर्षक मौके देने की।

उद्देश्य : इस पठन सामग्री को पढ़ने के बाद आपकी इन बातों पर समझ बन पाएगी—

- सभी बच्चों के सीखने का अपना अलग तरीका होता है। सीखने के तरीके का मानकीकरण नहीं किया जा सकता है।
- बच्चे अपनी भाषा के व्याकरण व नियम स्वयं बना लेते हैं।
- बच्चे भाषा सीखने के लिए आकर्षक मौकों एवं रोचक पठन सामग्रियों की आवश्यकता की महत्ता को समझ पाएँगे।

हिन्दी की वर्तनी व्यवस्था भी बेहद जटिल है। ऐसी स्थिति में अध्यापक का क्या रोल होना चाहिए?

देवनागरी के मानकीकरण की कोशिश लगातार होती रही है और इसके साथ-साथ देवनागरी लिपि सिखाने के तरीकों का भी मानकीकरण होता रहा है। आखिर हिन्दी राजभाषा है (ध्यान दें, राज्य भाषा नहीं है संविधान के अनुसार) और भारत सरकार ने समय-समय पर इसकी लिपि व वर्तनी में एकरूपता लाने के लिए विविध स्तरों पर प्रयास किए हैं। 1966 में शिक्षा मंत्रालय ने 'मानक देवनागरी वर्णमाला' प्रकाशित की। 1967 में 'हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण' पुस्तिका छपी और 1989 में केंद्रीय हिन्दी निदेशालय ने 'देवनागरी लिपि तथा हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण' नामक

पुस्तिका में 'मानक हिन्दी वर्णमाला, मानक हिन्दी वर्तनी, परिवर्धित देवनागरी वर्णमाला तथा संख्यावाचक शब्दों' को एक साथ छापा। इसकी प्रस्तावना में केंद्रीय हिन्दी निदेशालय के निदेशक ने पेज 3-4 पर लिखा है:

“प्रायः देखा गया है कि हिन्दी लिखते समय लोग देवनागरी वर्णमाला में प्रयुक्त वर्णों, शिरोरेखा और मात्राओं की लिखावट में एक निश्चित दिशा-पद्धति का निर्वाह नहीं करते। प्रारंभिक शालाओं में इसकी ओर ध्यान नहीं दिया जाता। द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी सिखाते समय तो इस प्रसंग पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। इसलिए 'हिन्दी वर्णमाला : लेखन विधि' इसमें दी जा रही है।”

इस लेखन विधि में 'स' लिखना ऐसे सिखाया गया है

ॐ २ २ २

लेकिन उसको ऐसे लिखने में क्या आपत्ति है:

ॐ ॐ ॐ ॐ

या उन हजारों अन्य तरीकों से जिनसे 'स' लिखा जा सकता है। हर बच्चा अपनी इच्छानुसार अपना लिखने का तरीका बनाए इससे किसी को कोई आपत्ति क्यों होगी? अंततः वास्तव में होता तो ऐसा ही है। शायद ही कोई दो व्यक्ति हों जिनकी लिखावट बिल्कुल एक ही जैसी हो। क्यों पठन-पाठन का इतना मूल्यवान समय हम ऐसी बेकार गतिविधियों में गँवाते हैं? क्या लिखावट में सरलता व मेहनत का कोई वैज्ञानिक पैमाना हो सकता है?

अभ्यास

- सही/गलत का निशान लगाएँ—
- हिन्दी हमारी राज भाषा है। ()
- मानक देवनागरी वर्णमाला 1967 में प्रकाशित हुई। ()
- वर्णमाला लेखन विधि के अन्तर्गत 'स' लिखना सिखाया गया है क्या आपको लगता है कि बच्चे/व्यक्ति द्वारा स अथवा किसी अन्य वर्ण को लिखने का एक ही तरीका होना चाहिए अथवा हर व्यक्ति/बच्चे को अपने तरीके से लिखने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। अपने उत्तर के पक्ष में तर्क भी दीजिए।

वर्तनी की कठिनाइयाँ :

यह सच है कि हिन्दी की वर्णमाला व वर्तनी सीखना कोई आसान काम नहीं। वास्तव में यह बात हर भाषा को लिखने-पढ़ने के बारे में सच है। हिन्दी के विषय में अधिक कठिनाई इसलिए आती है कि लोग इस भाषा को बहुत वैज्ञानिक समझते हैं; एवं ऐसा मानते हैं कि यह भाषा बच्चे के लिए बहुत सरल होनी चाहिए। फिर जब बच्चे निरंतर गलतियाँ करते हैं तो माँ-बाप व अध्यापक झुँझलाते हैं। हिन्दी लिखने का देवनागरी में जिस तरह मानकीकरण हुआ है उसकी वैज्ञानिकता व सरलता दोनों पर प्रश्न चिह्न हैं। बच्चों को न सिर्फ व्यंजन व स्वर वर्ण सीखने होते हैं, बल्कि उन्हें निम्न मात्राएँ भी सीखनी होती हैं।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

और अक्सर साथ ही हल्-चिह्न (,) और काफी जगह देवनागरी अंक।

1 2 3 4 5 6 7 8 9 0

शायद देवनागरी में ही ऐसा होता है कि एक ही वर्ण के कई रूप होते हैं और उसे चारों तरफ से बदला जा सकता है। उदाहरण के लिए 'क' को देखिए: 'क', 'क्', 'व', 'कि', 'की', 'कु', 'कू', 'के', 'को', 'कं' आदि और फिर 'क्ष' में भी 'क्'। दाएँ-बाएँ, ऊपर-नीचे हर तरफ कुछ न कुछ जोड़ने की संभावना। रोमन लिपि में ऐसा कुछ नहीं। दाईं तरफ को बराबर लिखते जाइए, बस। 'कि' में 'इ' की मात्रा लिखी पहले जाती है, पर बोली बाद में जाती है। अध्यापक अक्सर कहते हैं— देवनागरी सरल है, जैसा बोलो, वैसा लिखो। हिन्दी लिखने में यह बात सदा सार्थक नहीं होती। बच्चे बहुत-सी गलतियाँ मात्राओं के प्रयोग में करते हैं। सच बात यह है कि आज की हिन्दी में 'इ' और 'ई' व 'उ' और 'ऊ' में कोई विशेष अंतर नहीं रहा है। इसलिए बच्चे वही लिखते हैं जो सुनते हैं। यह बात 'ऋ' व 'श' और 'ष' के प्रयोग से और भी स्पष्ट हो जाती है। संस्कृत में 'ऋ' एक स्वर-ध्वनि थी। हिन्दी वर्णमाला में इसे लिखा तो स्वरों में जाता है पर इसका उच्चारण है 'रि' यानी 'व्यंजन' (र) + स्वर (इ)। (गुजरात, महाराष्ट्र व दक्षिण भारत में इसका उच्चारण 'रू' जैसा है।) जब 'ऋ' व्यंजनों के बाद आती है तो उच्चारण कई बार 'र' हो जाता है जैसे 'कृपा' या 'क्रपा', 'नृप' का 'न्रप' आदि। इसी प्रकार 'श' व 'ष' में किसी समय अंतर रहा होगा, लेकिन अब नहीं है। अब यही कहकर समझाना पड़ता है कि 'पेट कटा' 'ष' लिखो या षट्कोण वाला 'ष' — शक्कर वाला 'श' नहीं आदि। इस परिस्थिति में यदि बच्चे:

ऋषि को रिशि,

विष को विश,

ऋतु को रितु,

कोष को कोश

आदि लिखें तो उनका क्या दोष? उन्हें तो सही लिखने के लिए सराहना मिलनी चाहिए; लेकिन उन्हें तो सदैव गलत लिखने के लिए डाँट पड़ती है।

अभ्यास

आपकी कक्षा में बच्चे भी लिखते समय वर्तनी संबंधी गलतियाँ करते होंगे। आप इन गलतियों को ठीक करने में कैसे बच्चों की कैसे मदद करते हैं।

जैसा बोलो वैसा लिखो?

इसी प्रकार आपको अनेक ऐसे शब्द मिल जाएँगे जिनमें इ—ई, उ—ऊ, ए—ऐ या ओ—औ में अंतर साफ नहीं है। क्या 'भक्ति' की 'इ' उतनी ही छोटी है जितनी की 'कि' या 'कवि' की या फिर लगभग उतनी ही लंबी है जितनी की 'की' या 'घी' की। आप 'पेन' बोलते हैं या 'पैन'; 'भोंकना', 'भौंकना' या 'भूंकना'। उच्चारण वास्तव में अनेक हैं लेकिन लेखन मानकीकृत एकरूप। बच्चे गलती करें तो दोष उनका। वास्तव में सही लिपि सिखाने का नियम यह हो ही नहीं सकता कि 'जैसा बोलो, वैसा लिखो।' वर्तनी में सिखाने वाली बात ही यह कि, बोला जाएगा 'रिशि' लेकिन लिखना है 'ऋषि'। बच्चे को यह सिखाना है कि 'ऋतु', 'ऋषभ', 'ऋण', 'ऋषि' आदि कुछ ऐसे शब्द हैं जिनमें 'रि' को 'ऋ' लिखना है। इसी प्रकार 'श' और 'ष' के बारे में। वर्तनी के जो नियम तर्कसंगत हैं वे तो बच्चा खुद ही आत्मसात कर लेगा। 'क्ष', 'त्र', 'ज्ञ' और 'श्र' के संबंध में बच्चों को यह समझने में कोई परेशानी नहीं होती कि इनमें दो-दो व्यंजन शामिल हैं। हां, यदि आप 'कक्षा' को 'कच्छा' बोलते हैं और बच्चा आपके बोलने पर वही लिखता है जो आप बोलते हैं तो आपको क्या करना चाहिए यह आप ही जानिए!

'ड़' और 'ढ़' हिन्दी वर्णमाला में कई बार अलग से लिखे जाते हैं। आजकल तो 'ट वर्ग' के साथ ही लिख देते हैं। इनकी भी अपनी कहानी है।

अधिकतर शब्दों के शुरु में 'ड' व 'ढ' ध्वनि का प्रयोग होता था व दो स्वरों के बीच 'ड' व 'ढ' यथा डर, डाल, खड्ड, ढाल, ढक्कन आदि; व स्वरों के मध्य में लड़का, घड़ा, बड़ा, पढ़ाई, चढ़ाई आदि। पर संस्कृत, फारसी व अंग्रेजी के अनेक शब्दों पर यह नियम नहीं जमा जैसे— निडर, डालडा, सोडा, रेडियो, झंडा आदि। ध्वनि संरचना की दृष्टि से चारों ध्वनियाँ महत्वपूर्ण हैं। पैर में कहाँ बिन्दी लगेगी एवं कहाँ नहीं, इसका कोई नियम नहीं है। अगर आप 'रेडियो' बोलते हैं तो बच्चा शायद वही लिखेगा।

क, ख, ग, ज, और फ़

जिन ध्वनियों के लिए वर्णमाला में क, ख, ग, ज और फ़ रखे गए हैं उनकी कहानी तो और भी जटिल है। क्या आप कयामत, कसाई, नक़द, नक़ल, अख़बार, ख़बर, खाकी, ख़ानदानी, तारीख़, शराबख़ाना, काग़ज़, नग़मा, सुराग़, सौगात, ज़ख़्म, ज़मानत, ज़मींदार, फ़र्ज़, नज़ारा, फ़रवरी, फ़कीर, फ़सल, मुफ़्त, माफ़ी, लिफ़ाफ़ा आदि को हिन्दी के शब्द मानते हैं, और क्या आप चाहते हैं कि इनका उच्चारण भी संस्कृत में आए शब्दों जैसा शुद्ध हो?

साफ़ है इस बात का उत्तर इस पर निर्भर करेगा कि आपकी हिन्दी की परिभाषा क्या है? काफी प्रयत्न हुए हैं इन शब्दों को हिन्दी से निकाल फेंकने के। रही सही कसर छपाई की मज़बूरियों ने निकाल दी। 'क' और 'ग' के बारे में तो मानकीकरण करने वाली संस्थाओं ने मान ही लिया है कि वे हिन्दी के 'क' और 'ग' में घुल-मिल गए हैं— तो 'कसाई', 'कागज़' बोलिए और वैसा ही लिखिए। और ".....ख़" लगभग हिन्दी 'ख' में खपने की प्रक्रिया में है और शेष दो (ज, फ़) धीरे-धीरे अपना अस्तित्व खोने/बनाए रखने के लिए संघर्षरत हैं" (पृष्ठ 13, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, 1989) आप अध्यापक हैं या माता-पिता हैं— आप ही निर्णय लें कि आप किस तरफ़ संघर्ष करना चाहते हैं।

चंद्रबिन्दु की स्थिति

यह तो स्पष्ट हो ही गया होगा कि कब कौन-सी ध्वनि किस भाषा की कहलाएगी और उसको लिखने के लिए कौन-सा वर्ण वर्णमाला में रखा जाएगा, यह निर्णय राजनैतिक है। खैर छपाई की राजनीति ने काम काफी सरल कर दिया है: 'ड' और 'ढ' को छोड़कर शायद ही आपको किसी वर्ण के नीचे बिन्दी दिखाई दे। चंद्रबिन्दु भी आपको कहीं दिखाई नहीं देगा। और कई जगह तो पूर्ण-विराम की जगह आपको फुल-स्टॉप ही देखने को मिलेगा। 'रव' अब 'ख' लिखा जाता है, सोचिए क्यों? आखिर 'रव' के साथ भ्रम होने का प्रश्न आज ही तो न उठा होगा?

केवल भ्रम से बचने के लिए ही ध्वनि या वर्णों का लेखा-जोखा नहीं होता। आखिर

ताक	ताक्
हंस	हँस
खाना	ख़ाना
राज	राज़
बाग	बाग़
सजा	सज़ा
फन	फ़न

ताक — ताकना, देखना, ताकझोंक
ताक् — छोटी अलमारी
खाना — खाना खाना, रोटी खाना
ख़ाना — अलमारी का ख़ाना
शब्दकोश देखिए व बाकी शब्दों के अर्थ बताइए।

आदि में काफी अंतर है। यदि ँ व 'क', 'ख', 'ज', 'ग', 'फ' को निकाल दिया जाए तो शब्दों के अर्थ में भ्रम की काफी गुंजाइश बन जाती है।

अभ्यास

- ऐसे शब्दों की सूची बनाइए जिनमें सिर्फ बिन्दी (अनुस्वार) अथवा चन्द्रबिन्दु (अनुस्वार) के होने से अर्थ में परिवर्तन आ जाता है।
- 'रम' का 'र' और 'मर' के 'र' में क्या अन्तर है?

“किंतु जहाँ चंद्रबिन्दु के प्रयोग से छपाई आदि में बहुत कठिनाई हो और चंद्रबिन्दु के स्थान पर बिंदु का प्रयोग किसी प्रकार का भ्रम उत्पन्न न करे, वहाँ चंद्रबिंदु के स्थान पर बिंदु के प्रयोग की छूट दी जा सकती है” (पेज 13, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, 1989)

अंग्रेजी के शब्द सही लिखने के लिए वर्णमाला में कुछ जोड़ना भी पड़े तो चलेगा। चंद्रबिन्दु तो हटा दिया, लेकिन वृत्तमुखी (ँ) जोड़ दिया यथा हॉल, डॉक्टर, कॉलिज आदि।

वर्तनी के दोहरे प्रचलन

बड़ी ही जटिल व्यवस्था है वर्तनी के नियमों की। संयुक्त-वर्ण कैसे लिखे जाएँगे; हलन्त का क्या औचित्य है? 'श्रीमान्', 'महान्' लिखें या 'श्रीमान', 'महान' या दोनों ही चलने दें। 'र' को आपने 'ऋ' व 'ॠ' में देखा।

और भी कई समस्याएँ सुलझानी हैं पाँच-छः साल के बच्चे को जो हिन्दी की लिपि सीख रहा है। स्वरों का रूप कहाँ 'आ', 'इ', 'ई' आदि होगा और कहाँ इन्हें मात्राओं से दिखाया जाएगा; 'गयी' सही है या 'गई' या दोनों; 'द्वितीय' सही है या 'द्वितीय' या 'द्वितीय'; 'कुत्ता' सही है या 'कुत्ता' या 'कुत्ता'। विभक्ति-चिह्न सर्वनाम के साथ लिखें या नहीं – 'आपके लिए' लेकिन 'आप ही के लिए'। 'ऐ' और 'औ' का क्या-क्या उच्चारण हो सकता है – 'कैसा', 'गवैया', 'और', 'कौवा'।

वर्तनी की जटिलता के कुछ और उदाहरण देखिए:

रम

मर

आरती

क्रम, भ्रम, द्रव्य, ग्राम

ट्रक, ट्रेन, ड्रम, ड्रामा

गर्म, धर्म, शर्म, कर्म

क्या 'रम' का 'र' वही है जो 'मर या आरती' में है? हर बच्चा 'जानता' है कि 'मर' व 'आरती' का 'र' स्वर रहित है; 'रम' के 'र' में 'अ' है। देखने व लिखने में लेकिन बराबर।

'र' पैर में या सिर पर तब जाता है जब संयुक्त व्यंजनों का हिस्सा होता है। संयुक्त व्यंजनों में यदि पहला 'र' है तो सिर पर जैसे – 'गर्म'; यदि दूसरा 'र' है तो पैर में जैसे – 'क्रम'; और यदि दूसरा 'ट' वर्ग के साथ है तो रूप ऐसा जैसा कि 'ट्रक' में है। आखिर यह जटिल नियम कौन जानता है; कौन बच्चों को सिखाता है? लेकिन हर बच्चा स्वयं लिखित सामग्री से यह नियम बना लेता है।

‘क्रम’ व ‘कर्म’ में बच्चे गलती नहीं करते। शायद ही कोई बच्चा हो जो ‘ग्राम’ को ‘गार्म’ लिखे। हां, यह तो हम लोग खुद ही नहीं जानते कि ‘गरदन’ सही है या ‘गर्दन’; ‘गरम’ या ‘गर्म’; ‘सरदी’ या ‘सर्दी’; ‘कुरसी’ या ‘कुर्सी’; ‘बरतन’ या ‘बर्तन’।

सचमुच बहुत ही जटिल है वर्तनी व्यवस्था। कहीं—कहीं तो बहुत साफ़ नियम हैं। चेतन स्तर पर अक्सर ये नियम हमें मालूम नहीं होते। लेकिन हर हिन्दी पढ़ने—लिखने वाला व्यक्ति ये नियम स्वयं अलग—अलग रास्तों से बना लेता है। लेकिन बहुत कुछ ऐसा भी है जिसका कोई तर्क संगत आधार नहीं। दोनों परिस्थितियों में बच्चे को खुद सीखना है और उसमें सीखने की क्षमता है। ध्वनि—व्यवस्था लिपि व्यवस्था से कहीं अधिक जटिल है। और वहां तो कुछ ऐसा भी नहीं जो स्थाई हो। स्वाभाविक प्रश्न है— अध्यापक का क्या रोल है? यही कि सीखने—सिखाने की प्रक्रिया को समझें, बच्चे की क्षमता को समझें और बच्चे को अधिक—से—अधिक रोचक सामग्री दें।

इस लेख के लिए निम्न पुस्तकें संदर्भित की गई हैं:

1. देवनागरी लिपि तथा हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण, 1989, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली।
2. मानक हिन्दी का स्वरूप, भोलानाथ तिवारी, 1996, प्रभाव प्रकाशन, दिल्ली।
3. देवनागरी लेखन तथा वर्तनी व्यवस्था, लक्ष्मी नारायण शर्मा, 1976, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा।

अभ्यास

- अक्सर माना जाता है कि हिन्दी में हम जैसा बोलते हैं वैसा ही लिखते हैं। इस लेख को पढ़ने के बाद आपका इस मान्यता के बारे में क्या विचार है?
 - इस लेख को पढ़ने के बाद भाषा सीखने—सिखाने के संदर्भ में एक शिक्षक की क्या भूमिका होनी चाहिए?
कब ‘र’ पूरा बोला जाता है और कब आधा। उदाहरण देकर समझाइए?
-

अध्याय – 6

भाषा सिखाना माने क्या

पाठ की रूपरेखा

- परिचय
- उद्देश्य
- शीर्षक व उपशीर्षक
 - प्राथमिक शालाओं में शुरुआती अनुभव
 - भाषा सिखाने में क्या-क्या
 - भाषा एक विषय या
 - बच्चे कैसे बोलें?
 - बच्चों की भाषा व भाषा की समृद्धता बनाम गलतियाँ
 - गलतियाँ अथवा सृजन
 - भाषा-सोच का आधार
 - प्राथमिक शाला में भाषा शिक्षण

परिचय :

“भाषा सिखाने माने क्या” लेख, भाषा शिक्षण के क्षेत्र में कार्यरत लोगों की भाषा शिक्षण को लेकर लगातार विस्तृत होती समझ के सफ़र का विवरण है। भाषा को एक विषय के रूप में समझने से शुरु कर उसके साथ दूसरे विषयों का संबंध, भाषा केवल सम्प्रेषण का माध्यम भर होने के तथ्य को चुनौती, समेकित परिप्रेक्ष्य में ज्ञान की संरचना में खासतौर से गणित की अवधारणाओं को बनाने में और साथ ही अन्य विषयों को समझने में भाषा की भूमिका आदि कई आयामों का भाषा की समझ में जुड़ते जाना। ये इस लेख का केन्द्र बिन्दु है।

उद्देश्य :

- भाषा सिखाने के उद्देश्यों के बारे में समझ बन पाएँगे।
- ‘सीखने-सिखाने में गलतियों का क्या महत्त्व है’ इस बारे में समझ बना पाएँगे।
- प्राथमिक शालाओं में भाषा शिक्षण में क्या-क्या सम्मिलित हो इस बारे में समझ पाएँगे।

बात शुरु होती है प्राथमिक शाला में आने वाले बच्चों को पढ़ाना-लिखना सिखाने से। हमारे साथियों के शुरुआती अवलोकनों, अहसासों व विश्लेषण ने हमें यह तो समझा दिया था कि बच्चे सामान्य तौर पर पाठ्यपुस्तकों में लिखी बातें पढ़ नहीं पाते। प्राथमिक शाला के अधिकांश छात्र-छात्राओं के लिए किताब पढ़ने का मतलब है याददाश्त से उस पन्ने पर लिखी बातें सुनाना। उन्होंने यह भी पाया कि कक्षा 6-8 के बच्चों के लिए संस्कृतनिष्ठ हिन्दी समझना तो बच्चों के लिए कठिन है ही लेकिन सरल हिन्दी समझना भी कोई आसान नहीं है। यद्यपि संस्कृतनिष्ठ हिन्दी की तुलना में सरल हिन्दी वह कुछ ज्यादा समझ पाते हैं पर वह ज्यादा भी इतना कम है कि उसे हासिल करने के बाद भी वह पढ़ी जा रही सामग्री को ठीक से समझ नहीं पाते। बहुत से बच्चे तो हिज्जे करके पढ़ने के कारण शब्द को ही ठीक से समझ नहीं पाते थे और बहुत से शब्द तो समझ लेते थे लेकिन पूरा वाक्य समझना मुश्किल था। कोई बात अगर 3-4 वाक्यों से मिलकर समझाई गई हो तो उसके लिए समझना बहुत ही मुश्किल था।

अभ्यास

- लेखक का अवलोकन है कि 5वीं कक्षा पास करने के बाद भी बच्चे समझ के साथ पढ़ना नहीं सीख पाते हैं? क्या आप लेखक की बात से सहमत हैं? पहले के लेख में आपने पढ़ा है कि बच्चों में भाषा सीखने की अपार क्षमता होती है तो फिर बच्चे क्यों नहीं सीख पाते?

प्राथमिक शालाओं में शुरुआती अनुभव

प्राथमिक शालाओं में जाकर बच्चों के साथ बातचीत में यह कोशिश की कि वे उनकी रुचि की बातें पता करें, वह विषय पता करें जिन पर वे अक्सर बातें करते हैं, उनके किस्से, कहानियाँ व गीत आदि पता करें। यह सब इसलिए क्योंकि उनके परिचित विषय व उनके किस्से कक्षा में उपयोग करके उनमें बातचीत करवाई जा सकती है। ऐसे मौके उत्पन्न किए जा सकते हैं जिनमें ज्यादा बच्चे, ज्यादा से ज्यादा बोलें और एक दूसरे की सुनें, बजाय चुपचाप बैठकर शिक्षक की सुनने के।

हमने बच्चों की बातचीत को रिकार्ड करने की कोशिश की, उनके साथ कविताएँ गाईं, चित्र बनवाए व बनाए और उन्हें तरह-तरह के चित्र दिखाए। चित्र दिखाने के पीछे उद्देश्य यह था कि हम चित्र पर बातचीत करें और अपने विचारों को अभिव्यक्त करें। लेकिन चित्र दिखाने में यह समझ में आया कि चित्रों की भी एक भाषा है और उसे भी जानना आवश्यक है।

माध्यमिक शाला में विज्ञान के प्रयोगों को करवाते समय भी कई बातें समझ आईं। ये बातें न सिर्फ इन कक्षाओं में पढ़ रहे छात्रों के लिए थीं परन्तु उन सभी के लिए भी थीं जो इन कक्षाओं में व प्राथमिक शालाओं में पढ़ा रहे थे। निर्देश पढ़कर समझना व उनके अनुसार प्रयोग करना सबके लिए मुश्किल था और उतना ही मुश्किल था अपने अवलोकनों को लिख पाना। बोल कर बताना अपेक्षाकृत आसान था किंतु लिखने में अत्यधिक कठिनाई थी। अगर अवलोकन निर्धारित तरह से लेने हों व निर्धारित नापजोख लायक चीजों के हों और उन्हें किसी जगह भरना हो तो शिक्षक वह काम कर पाते किंतु अगर तालिका स्वयं सोच कर बनानी हो तो फिर काम नहीं होता था।

भाषा सिखाने में क्या-क्या

हमने सोचा कि भाषा सिखाने का मतलब क्या-क्या है? अब तक यह सोच रहे थे कि भाषा सिखाना यानी समझ कर पढ़ना सिखाना, अपनी बात बोल पाना, दूसरे की बात समझ पाना। स्वयं भी हम अक्षरों, शब्दों व वाक्यों से मिल कर बने पैराग्राफों व सम्पूर्ण अध्यायों की बात कर रहे थे। फिर हमने उसमें अब चित्रों को पढ़ना व समझना जोड़ा, तालिकाओं को जोड़ा और एक बार जब यह बुनियादी बात समझ आ गई कि भाषा यानी सिर्फ अक्षर व वाक्य आदि नहीं है तो उसमें नक्शा पढ़ना, हाव-भाव, संकेत आदि सभी जुड़ गए।

अभ्यास

- आपके अनुसार भाषा की कक्षा में क्या-क्या होना चाहिए?
- अमूमन भाषा की कक्षाओं में बच्चे शिक्षक की बात सुनते नजर आते हैं जबकि होना यह चाहिए कि बच्चे ज्यादा से ज्यादा बोलें और एक दूसरे की सुनें। इस कथन के बारे में आपके क्या विचार हैं?

भाषा एक विषय या.....?

इस सब के जुड़ने का क्या अर्थ हुआ और यह क्यों जुड़ पाया इसके बारे में अलग से इसके पहले एक और जरूरी बात है। हमने स्कूलों में भाषा के अध्ययन व अध्यापन को समझने का प्रयास किया। हमें लगा भाषा शिक्षण में आम तौर पर जोर होता है भाषा को एक विषय के रूप में पढ़ाने पर। विषय का अर्थ यह हुआ जैसे हम विज्ञान पढ़ते हैं, सामाजिक अध्ययन पढ़ते हैं वैसे ही हिन्दी। हमारा झुकाव जल्दी ही साहित्यिक कविताओं,

कहानियों व उनके विश्लेषण पर होता है। भाषा को समझने व उसके इस्तेमाल की ताकत को बढ़ाने के बजाय पाठ्यपुस्तक में चयनित रचनाओं पर केन्द्रित प्रश्नों के सही उत्तर याद करने पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है। शुरू में अपठित बनाई सामग्री को पढ़ कर स्वयं सवालों के उत्तर लिखने की अपेक्षा बच्चों से नहीं की जाती है। उन्हें रट कर ही शिक्षक द्वारा सही माने गए उत्तर उपयुक्त शब्दों में लिखने हैं। चयनित रचनाओं की भाषा व उनका स्तर भी ऐसा नहीं कि जिन्हें पढ़ने वाले बच्चे स्वयं पढ़ कर समझ सकें और स्वरूप अधिकांशतः ऐसा नहीं कि उन्हें उस रचना को पढ़ने में मजा आए।

प्राथमिक शालाओं में भाषा को उतना ही समय मिलता है जितना अन्य विषयों को। ऐसा उस समय होता है जब बहुत से बच्चों के लिए स्कूल, शिक्षक व किताब की भाषा उनकी अपनी भाषा से दूर से लेकर बहुत दूर तक है। भाषा सिखाने का मतलब लिपि, वर्तनी, सुन्दर लिखाई व व्याकरण बन जाते हैं। महत्व की दृष्टि से समय के अंसतुलित विभाजन के कारण भाषा से खेलने, उसमें डूबने, उसे अहसास करने व आत्मसात करने का समय ही नहीं मिलता। असल में तो इस बात का महत्व ही नहीं समझा जाता क्योंकि स्कूल में भाषा भी एक विषय है, आधार नहीं। आधार बन रहा हो तो जरूरी नहीं है कि उसमें कुछ दिखे और बच्चा क्रमबद्ध ढंग से कुछ सीखता व उसे प्रदर्शित करता दिखे। आधार तो जमीन के नीचे ही रहता है न। स्कूलों में इतना धैर्य कहाँ वे तो जल्द से जल्द इमारत खड़ी कर देना चाहते हैं। चाहे वह आधारहीन, ढहने वाली व अनुपयोगी ही क्यों न हो।

बच्चे कैसे बोलें

कैसे बच्चों का पढ़कर समझने में आत्मविश्वास बने, कैसे वे अपने आप को जाहिर करने लायक हो पाएँ यह हमारे लिए कुछ प्रमुख सवाल थे। हमने यह समझा कि कक्षा में बच्चों के लिए भाषा बातचीत का माध्यम बने। सभी विषयों का अध्ययन व अध्यापन किसी भाषा के माध्यम से ही होता है, इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि बच्चों को इस सब में मुश्किल न हो। बच्चे अपनी भाषा, जो कि उनकी संस्कृति, उनके मन, उनके घर व आधार का एक हिस्सा है, तो सीख नहीं रहे। फिर एक दूसरी भाषा में वे सम्प्रेषण की आजादी कैसे हासिल करें? उनकी भाषा और हमारे स्कूलों की भाषा में बहुत फर्क है। जहाँ कहीं भी सामान्य स्कूलों में हमें उनकी भाषा की झलक मिलती है, हम उसे गलत कह देते हैं। यानी उनकी पूरी संस्कृति, अनुभव व आत्मसम्मान मिट्टी में मिल जाता है क्योंकि स्कूल में उसका उपयोग गलत है, गँवारी है। न जाने और क्या-क्या जुड़ा है उनकी अपनी भाषा के उपयोग की इस बदहाली के साथ।

बच्चों की भाषा व भाषा की समृद्धता बनाम गलतियाँ

इन सबसे हमने सीखा उनकी भाषा को कक्षा में स्थान देना, सही-सही लिखने व गलतियाँ ढूँढने के स्थान पर लिखने व बोलने के ज्यादा मौके देना, इस बात पर ध्यान देना। क्योंकि हम सब कोशिश करके— गलतियाँ करके ही सीखते हैं। कोई भी पहले ही दिन से ठीक-ठाक व उल्लेखनीय ढंग से कोई काम नहीं कर सकता। गलतियाँ हमारे सीखने के पथ को दर्शाती हैं। वे ही हमारे द्वारा विचारों, आइडियाओं की समझ के विकास का आधार है। हमें यह लगा कि भाषा सीखने में यह बात बहुत ही आवश्यक है।

अपनी भाषा का ढाँचा, उसका व्याकरण हर बच्चा सीख जाता है क्योंकि वह भाषा को बोलते-बोलते, सुनते-सुनते सारे नियम समझ लेता है। हो सकता है कि वह उन्हें बता न पाए, समझा न पाए किन्तु वह वाक्यों को पहचान सकता है, व ठीक कर सकता है। अपनी भाषा को सीखना उसके लिए एक सहज एवं स्वाभाविक क्रिया है फिर दूसरी भाषा सिखाने में गलतियों, व्याकरण व अस्वाभाविकता पर कितना जोर हो? क्या विभिन्न परिस्थितियों में भाषा का इस्तेमाल कर वह उस भाषा के व्याकरण का अहसास नहीं कर सकता?

1. क्या आपने भाषा बिना गलतियाँ किए सीखी है?
2. आपकी गलतियाँ कैसे ठीक हुई? कितनी आपने स्वयं ने ठीक की और कितनी आपके अध्यापक ने?

गलतियाँ अथवा सृजन

हम गलतियाँ सुधारने की अपेक्षा उन्हें बढ़ावा देना चाहते थे, उनकी अपनी भाषा के इस्तेमाल के लिए। उनमें यह विश्वास व आस्था जगाने की कि वह स्कूल में उपयोग की जा सकती है यदि वह अपनी भाषा का इस्तेमाल स्कूल में करता है तो वह पिछड़ा नहीं समझा जाएगा। हम उसके लिए कक्षा में व कक्षा के बाहर भाषा के लचीले व निजी इस्तेमाल के मौके बनाने पर जोर देना चाहते हैं।

भाषा के विकास व उसकी समृद्धता का उसके लचीलेपन व सहजता से सीधा संबंध है। कोई भी जीवित भाषा व्याकरण की किताबों व शब्दकोशों की दीवारों में कैद नहीं हो सकती। ये ग्रंथ भाषा सीखने में सहायता के लिए हैं, न कि उसे सीखने में व उसके ज्यादा अलग-अलग मौकों पर उपयोग की क्षमता के विकास में बाधा बनने के लिए। हमने यह माना कि बच्चे की भाषा का मानकीकृत भाषा में मिल जाना एक हद तक भाषायी समृद्धता को बढ़ाएगा और ऐसी संरचनाओं के विकास में मदद करेगा जो सीखने वालों के लिए सीढ़ियाँ होंगी। हमने यह भी माना कि गलती को स्थूल व सतही तौर पर जाँच कर सही या गलत का चिह्न लगाकर सही ढंग से नहीं समझा जा सकता। शुरुआती सालों में अपने विचार लिखने व बोलने का प्रयास करना ज्यादा जरूरी है बनिस्बत गलतियाँ न करने व संकीर्ण 'तथाकथित मानक किताबी' भाषा में जकड़े जाने के।

अभ्यास

- "व्याकरण की किताबें, शब्दकोश आदि भाषा सीखने में सहायता के लिए हैं न कि उसे सीखने में बाधा बनने के लिए।" इस कथन के संदर्भ में उदाहरणों सहित समझाइए कि ये ग्रंथ स्कूली शिक्षा में किस तरह भाषा सीखने में बाधक बन जाते हैं?
- गलतियाँ सीखने की सीढ़ियाँ हैं। समझाइए।

भाषा-सोच का आधार?

भाषा शिक्षण के बारे में सोचते-सोचते हमें यह समझ में आया कि भाषा हमारे लिए सम्प्रेषण के माध्यम से भी ज्यादा है। शायद प्रकट या अप्रकट रूप से यह हमारे हर काम को संचालित करती है। एक मोटा उदाहरण: जब हम किसी चीज को देखते हैं, तो हमारी नजरों का पैनापन भी विवरण के लिए हासिल शब्दों पर आधारित है। जिस भाषा में बर्फ के लिए 26 शब्द हैं उसमें देखने वाला उन सभी रूपों को अलग-अलग देख सकता है। काँच का पारखी काँच में बारीक किस्मों को अलग नाम देकर छाँट सकता है। जो हमारे लिए लोहा है, लोहार के लिए अलग-अलग गुण वाली सामग्री है आदि। वैसे भी किसी विचार या आइडिया को समझने के लिए हम उसके साथ अन्य कई शब्दों को जोड़ते हैं। जितने व्यापक संदर्भों में, जितने ज्यादा शब्दों अथवा विचारों व अवधारणाओं के साथ जोड़कर हम उस विचार अथवा अवधारणा को समझ पाएँगे, उतनी ही हमारी उस अवधारणा की समझ गहरी होगी।

फिर हमने यह बात पढ़ी और उसे महसूस किया कि बच्चे जब कोई क्रिया करते हैं, जिसमें वह मन से मशगूल हों तो वह अपने आप से बोलते रहते हैं। उसे बोलने से वे अपने काम को व्यवस्थित करते हैं व संचालित करते हैं। इसका मतलब यह हुआ कि हम क्रियाओं को भी भाषा के अंदर समाते हैं।

हम लोग अवधारणाएँ कैसे सीखते हैं, विचार कैसे समझते हैं व समझने व सोचने के अपने ढाँचे को कैसे बदलते व ज्यादा सुदृढ़ बनाते हैं? इन सब के बारे में कई तरीके के विचार व सोच हैं। आज यह माना जाता है कि सामान्यतः सीखते समय हम ठोस अनुभवों में अमूर्तता की तरफ जाते हैं। पर ऐसा क्यों हो जाता है कि बहुत से बच्चे व बड़े अमूर्तता में हिचक जाते हैं और सोच के तार्किक ढाँचे या तार्किक समझ नहीं बना पाते? यह एक खास विषय में नहीं वरन् सभी अमूर्त बातों पर लागू है।

सीखने के विकास के ढंग से संबंधित समझ के विभिन्न ढाँचों व मॉडलों में कोई एक स्पष्ट दिशा नहीं दिखती। इसके अलावा हमारे दिमाग की रचना, उसमें भावनाओं का स्थान, भाषा का स्थान, जगह की समझ से संबंधित अमूर्त क्षमताओं का स्थान, आदि पर भी शोध कार्य जारी है और हम किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँचे हैं। इस सब के बीच हम प्राथमिक शाला में भाषा सिखाने के अर्थ, उसके लिए उपयुक्त तरीके व सामग्री खोजने की कोशिश कर रहे थे।

अभ्यास

- एक पेंटर रंगों के अलग-अलग नामों को बखूबी जानता है। वह नीला हल्का नीला, गहरा नीला करे जल्दी से फरक या अंतर कर सकता है क्योंकि वह इन शब्दों व उनके अर्थों को रोज काम में लेता है। लेकिन एक आम आदमी को शायद ही रंगों के बारे में इतनी समझ हो। आप इस तरह के अन्य उदाहरण सोचिए जहाँ भाषा गहराई से सोचने व समझने में मदद करती है।

प्राथमिक शाला में भाषा शिक्षण

हम यह जरूर मानते थे कि हमें आम तौर पर उपयोग किए जा रहे तरीके व उसके पीछे छिपी समझ पर विश्वास नहीं है। यह हम भी मानते थे कि अभी स्कूलों में बच्चों के अनुभवों, सोच, भावनाओं, कल्पना व फन्तासी का कोई स्थान नहीं है और वह अनिवार्य है। भाषा सिखाना सोच के ढाँचों के विकास के साथ-साथ ही किया जा सकता है। भाषा सीखने व अमूर्तता की ओर बढ़ने में संबंध है। पढ़ी गई बात को गहराई से समझने के लिए विश्लेषण, संश्लेषण, तुलना, कल्पना, उसका गैर संदर्भीकरण, सामान्यीकरण, उसमें क्रम की पहचान, सार निकालना आदि-आदि कितनी ही क्षमताओं का उपयोग जरूरी है। इनमें कितनी गणित सीखने की प्रक्रिया में नहीं जुड़ती?

एक पेंटर रंगों के अलग-अलग नामों को बखूबी जानता है वह नीला, हल्का नीला, गहरा नीला को जल्दी से फर्क कर सकता है क्योंकि वह इन शब्दों व उनके अर्थों को रोज काम में लेता है। लेकिन एक आम आदमी को शायद ही रंगों के बारे में इतनी समझ हो। आप इस तरह के अन्य उदाहरण सोचिए जहाँ भाषा गहराई से सोचने व समझने में मदद करती है।

अभ्यास

- "भाषा सीखने व अमूर्तता की ओर बढ़ने में सम्बन्ध है।" क्या आप इस कथन से सहमत हैं? अपने अनुभव व उदाहरणों की मदद से पुष्टि करें।

दरअसल खासतौर पर प्राथमिक शाला में हमें बच्चों को अटूट अनुभव देने की आवश्यकता महसूस होती है। यह जुड़ाव मात्र स्थूल रूप में नहीं कि, एक ही किताब में भाषा भी व गणित भी दोनों को सिखाया जाना है, वरन् किताब को और सीखने की प्रक्रिया के साथ-साथ क्या सीखा जाना है, उसको परिभाषित करने के ढंग में। यह आवश्यक नहीं कि किताब के हर सबक में भाषा हो, गणित भी हो, विज्ञान भी हो और सामाजिक अध्ययन भी, किन्तु यह कि इन सबकों का सिलसिला एक अटूट समझ पर आधारित हो। ऐसी इकाइयों की संरचना का क्या तार्किक आधार हो, हर इकाई में क्या शामिल हो सकता है, इसमें भाषा कैसी हो, चित्र कैसे होने चाहिए आदि, वे सवाल हैं जिनके बारे में विचार करना, बच्चों के सोच के ढाँचे के अनुसार सामग्री व कार्य विधि बनाने में मदद करेंगे।

प्राथमिक शाला कार्यक्रम के अन्तर्गत हम विशेष तौर पर लिखित भाषा को भी सीखने की बात कर रहे थे। ऐसे अभ्यास सोच रहे थे जिसमें कि सीखने वाला औपचारिक तर्क समझ सके व अभिव्यक्त कर सके। एक सार्थक कोशिश कर सके अपने विचारों को दूसरों तक पहुँचा पाने की व दूसरे के विचार समझ पाने की, व्यापक संदर्भों व अनुभवों के साथ-साथ विभिन्न प्रकार की किताबों से जुड़ा पाने की। हमने माना कि इस सब को करने

के लिए भाषा व गणित सीखने में एक गहरा संबंध है। गणित की अवधारणाओं के विकास का ढाँचा भी तर्कों के ढाँचे पर आधारित है। इस तर्कों के ढाँचे के विकास के लिए इसके टुकड़ों को भाषा में व्यक्त कर पाना बहुत आवश्यक है। हमने यह भी माना कि तथाकथित इन अलग-अलग विषयों की बिखरी अवधारणाओं में गहरे संबंध हो सकते हैं और उनमें पारस्परिक समझ को मजबूत बनाने की गुंजाइश है। इन सभी विषयों को एक दूसरे के सापेक्ष रखकर ही समझना चाहिए। उनकी विभिन्न अवधारणाओं में अमूर्तता का स्तर, अवधारणा समझने के लिए आवश्यक बुनियादी ढाँचे का विकास, अलग-अलग विषयों में एक-दूसरे के समान या एक-दूसरे से जुड़े विचारों/अवधारणाओं/क्षमताओं आदि को एक ढाँचे में लेना चाहिए।

जैसा कि मैंने पहले भी कहा कि यह आवश्यक नहीं है कि हर अभ्यास में सब कुछ हो, यह भी आवश्यक नहीं है कि बच्चा यह सब एक साथ सीख जाए पर इस पारस्परिक संबंध व निर्भरता का ध्यान रखना होगा और उसी के आधार पर कार्य का संतुलन बनाना होगा। ऐसा ही प्रयास हमने प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम में किया है। इसमें भाषा को उसके बच्चे कल्पना, समझ, अभिव्यक्ति, जगह की समझ, परिप्रेक्ष्य के विकास आदि ही नहीं वरन मस्तिष्क व सम्पूर्ण व्यक्तित्व के आधार के रूप में मानकर कार्यक्रम के सभी हिस्से विकसित किए गए हैं।

प्रोजेक्ट वर्क

(1) भाषा की कॉपियाँ जाँचने में शिक्षक किस प्रकार का फीडबैक देते हैं, इसका एक छोटे से सर्वेक्षण के आधार पर ब्यौरा प्रस्तुत करें। इसमें निम्नांकित बिन्दुओं पर (लेकिन केवल इन तक ही संकुचित नहीं) गौर किया जा सकता है।

(क) क्या केवल 'X' ही लगा है या कोई टिप्पणी भी है?

(ख) किस प्रकार की टिप्पणियाँ हैं?

(ग) अधिकतर कैसी गलतियाँ निकाली गई हैं?

2. बच्चे किस तरह की गलतियाँ करते हैं?

आप कक्षा 5 वीं के 25 छात्र-छात्राओं की कॉपियों का अवलोकन कर गलतियों का सूचीकरण करें।

अध्याय – 7

भाषा व भाषा शिक्षण

पाठ की रूपरेखा

- परिचय
- उद्देश्य
- शीर्षक व उपशीर्षक

परिचय :

बच्चों में भाषा सीखने की जन्मजात क्षमता होती है। बच्चे जब स्कूल आते हैं तो वे न केवल भाषा को सही बोल लेते हैं बल्कि उनका उचित प्रयोग भी कर रहे होते हैं। जब हम घर की भाषा और मातृभाषा की बात करें तो ये बच्चा स्वाभाविक रूप से अपने घर और समाज के वातावरण से सीख लेता है। इस लेख में भी इस बात पर जोर दिया गया है कि स्कूल में शिक्षण का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए और धीरे-धीरे मानकीकृत भाषा की ओर जाना चाहिए।

उद्देश्य :

- आप इस सवाल का जवाब दे पाएँगे कि बच्चों को भाषा क्यों व कैसे पढ़ाएँ?
- भाषा की कक्षा में क्या-क्या होना चाहिए इस बारे में समझ बन पाएगी।
- भाषा की कक्षा में मातृभाषा की उपयोगिता को समझ पाएँगे।

भाषा हमारे जीवन का शायद उतना ही कुदरती अंग है जितना कि साँस लेना। बिना बातचीत किए, चाहे बोलकर या लिखकर, समाज में शायद कुछ भी करना संभव नहीं है। अपनी बात समझाने के लिए, दूसरे की बात समझने के लिए, नई बातें जानने के लिए, पढ़ने-लिखने के लिए, सभी कुछ के लिए तो हम भाषा का सहारा लेते हैं। इस स्वाभाविकता के ही कारण शायद हम भाषा और उसके उपयोग पर कभी गम्भीरता से विचार नहीं कर पाते। यदि कोई बच्चा इतिहास, भूगोल या विज्ञान में पीछे रह जाता है तो हम (शिक्षक हों या पालक) बहुत चिन्तित हो जाते हैं। भाषा के बारे में अक्सर यही सोचा जाता है कि भाषा तो बच्चों को आती ही है, फिर आगे की कक्षा में अपने पसन्द का विषय लेने के लिए आमतौर पर भाषा की समझ का महत्व ही नहीं होता है।

शालाओं में जो थोड़ी बहुत भाषा पढ़ाई भी जाती है उसका उद्देश्य अक्सर बच्चे को भाषा सिखाना नहीं बल्कि उसकी भाषा सुधारना है। शालाओं में भाषा की शुद्धता पर अधिक ध्यान दिया जाता है, बजाय इसके कि बच्चा लिखी हुई बात को समझ पाए और अपनी बात कह पाए। भाषा सिखाने के बारे में सोचते समय हम भूल

जाते हैं कि भाषा बौद्धिक व मानसिक विकास का आधार भी है और माध्यम भी। अखबार, पत्र-पत्रिकाएँ, साहित्य या शासन के कागजात सभी को समझने के लिए भाषा सीखना जरूरी है। जो भाषा सीखने में पिछड़ गया उसका सामाजिक जीवन के लगभग हर पहलू में पिछड़ना तय है।

लेकिन यह भी एक निर्विवाद सत्य है कि हर बच्चा अपने आसपास बोली जा रही भाषा अच्छी तरह से जानता है। जैसे वह उठना, चलना-फिरना, खाना-पीना आदि सीखता है, वैसे ही वह यह भाषा सीखता है और उसे अपने उपयोग के अनुरूप ढाल लेता है। बच्चा वही भाषा सीखता है जो उसके माता-पिता, सगे-सम्बन्धी, पड़ोसी और मित्र बोलते हैं। इसी भाषा के माध्यम से बच्चा अपनी पहचान बनाता है और परिवार के अलग-अलग कार्यों व गतिविधियों में भाग लेता है। इस भाषा को लिखने-पढ़ने के अलावा सभी तरह से उपयोग करना बच्चा खुद सीख लेता है। यह भाषा, चाहे हम उसे बोली कहें या कुछ और भाषा-विज्ञान की दृष्टि से उतनी ही समृद्ध और नियमबद्ध है जितनी कि कोई भी मानकीकृत भाषा। दोनों की अपनी-अपनी ध्वनि और शब्द संसार होता है। और वाक्य बनाने के अपने अपने नियम। दोनों का अपना-अपना साहित्य भी हो सकता है और अपनी-अपनी परम्परागत कहानियाँ जो पीढ़ी दर पीढ़ी सुनाई जाती हैं। किसी भी बोली को लिपि देकर और विभिन्न गतिविधियों के लिए उपयोग करके हम उसे उस स्तर पर ला सकते हैं जिसे आमतौर पर भाषा कहा जाता है। साफ है कि किसी बोली का भाषा बनना एक भाषिक नहीं बल्कि ऐतिहासिक एवं सामाजिक प्रश्न है। यह समझ भाषा पढ़ाने वाले शिक्षक के लिए आवश्यक है, जिससे कि वह बच्चों की बोली के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण रख पाए और उसे अविकसित या असम्य मान कर नकार न दे।

अभ्यास

- भाषा और बोली में क्या फर्क है?
- अक्सर घर की भाषा व स्कूल की भाषा अलग-अलग होने से भाषा सीखने में बच्चों को समस्याएँ आती हैं? आप बच्चों का अवलोकन कर समस्याओं की सूची बनाइए।

यह तो सही है कि हर बोली मानकीकृत भाषा नहीं बन पाती परन्तु बोलने वालों की धारणाओं, मूल्यों एवं दृष्टिकोणों को हर बोली अपने आप में संजोए रहती है। जिस प्रकार इस बोली को बोलने वालों के समाज व संस्कृति को समझने के लिए उनकी बोली ही एक मात्र सहारा है, उसी प्रकार बोली को समझने के लिए बोलने वालों के समाज और उनकी संस्कृति को समझना आवश्यक है। बच्चों को एक मानकीकृत भाषा सिखाते समय, इस बात का अहसास आवश्यक है। यह अहसास होने पर ही हम बच्चों की दुविधा के प्रति संवेदनशील हो पाएँगे और उनके जीने के तरीके से सामंजस्य रखते हुए नई भाषा सिखा पाएँगे। वरना बच्चा इसी समस्या में उलझ कर रह जाएगा, कि जो घर में ठीक है वह स्कूल में क्यों गलत है (विशेषकर उस परिस्थिति में जब उसकी बोली का कोई मान्य स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है)। बोली/भाषा जीवन मूल्यों व संस्कृति से प्रभावित होती है और इसलिए एक ही स्थान पर अलग-अलग वर्ग के लोगों की बोली में भी अन्तर होगा। क्या एक शाला में, जहाँ हर आर्थिक स्तर के बच्चे पढ़ते हैं, इस अहसास का महत्व नहीं है?

यह हमारा दुर्भाग्य है कि शिक्षा प्रणाली में, विद्यालयों और पाठ्यपुस्तकों आदि में प्रयोग होने वाली भाषा घर में और दोस्तों के साथ बोली जाने वाली भाषा से अलग होती है। आम तौर पर तो शालाओं में इस्तेमाल की जाने वाली भाषा का दफ्तरी काम-काज व शाला की चारदीवारी के बाहर बहुत कम उपयोग होता है। जहाँ शाला और बच्चे की आम जिन्दगी की भाषा को एक ही नाम दे दिया है (जैसा कि मध्य प्रदेश में जहाँ दोनों को हिन्दी कहा जाता है) वहाँ इन दोनों भाषाओं के अन्तर की गम्भीरता समझना और भी कठिन हो जाता है और इस भाषा को सीखने में बच्चों की समस्याओं को समझना लगभग असम्भव ही है।

स्कूल में अक्सर मानकीकृत भाषा का ही प्रयोग होता है। यह मानकीकृत भाषा अपने आप में कोई विशेष गुण नहीं रखती, पर किसी समय समृद्ध और पढ़े-लिखे तबके की भाषा होने के कारण लिपिबद्ध हो जाती है। साहित्य, शब्दकोश व्याकरण आदि भी इसी भाषा में लिखे व छापे जाने लगते हैं। संचार और सम्पर्क के सभी स्थापित माध्यमों (जैसे पाठ्यपुस्तकों, अखबारों, पत्रिकाओं, रेडियो, टेलिविजन आदि) में इसी भाषा का प्रयोग होता है और इसी भाषा में पिछड़े होने के कारण बच्चे अन्य विषयों और समाज में पिछड़ जाते हैं। क्या यह आवश्यक है कि सभी बच्चों को यही भाषा सिखाई जाए? (असल में सिखाने के स्थान पर थोपना कहना आज के भाषा पढ़ाने के ढंग को ठीक से चित्रित करेगा)। क्या आप को ऐसा नहीं लगता कि आज की सामाजिक एवं राजनैतिक परिस्थिति में यह आवश्यक है कि बच्चों किताबों और अखबारों में लिखी बात को पूरी तरह समझें? क्या यह समाज में परिवर्तन लाने के लिए जरूरी नहीं है? यदि समाज और उसकी गतिविधियों को समझना उसमें परिवर्तन लाने का पहला महत्वपूर्ण कदम है तो क्या समझ हमारे पाठ्यक्रम में नहीं दिखनी चाहिए? खासकर जबकि हम अपने आप को शिक्षा के प्रति प्रतिबद्ध कहते हैं।

इस सबके बाद हम पूछ सकते हैं कि, क्या हम बच्चे को उसकी भाषा में नहीं पढ़ा सकते? क्या उसकी ही भाषा में अखबार व किताबें नहीं उपलब्ध हो सकती? शायद वर्तमान में यह व्यावहारिक नहीं है। हम शायद यह तर्क भी दें कि व्यापक स्तर पर संवाद के लिए बच्चों को मानक भाषा पढ़नी आवश्यक है। माना कि एक ऐसी भाषा का होना जिसे समझते, बोलते हों आवश्यक है, परन्तु क्या यह मानकीकृत भाषा उसी तरह से पढ़ाई जानी चाहिए जिस तरह आजकल हम लोग अपने स्कूलों में पढ़ते-पढ़ाते हैं। क्या मानकीकृत भाषा पढ़ाने के लिए बच्चों की बोली को नकारना आवश्यक है? क्या भाषा शिक्षण बच्चे के पर्यावरण और उसकी रुचि से जुड़ा हुआ नहीं हो सकता? आप किसी भी पाठ्यपुस्तक को देखें अक्सर अध्याय ऐसे विषयों पर होंगे जिनमें आमतौर पर बच्चों की कोई रुचि नहीं होती और न ही बातों का बच्चों की जिन्दगी से दूर दराज का कोई संबंध होता है। भाषा ऐसी प्रयोग की जाती है जिसका बच्चों की घर परिवार की भाषा तथा उनकी ग्राह्य क्षमता से कोई तालमेल नहीं होता। इस बात का भी आमतौर पर कोई ध्यान नहीं रखा जाता है कि बच्चों को कैसे रंग, कैसे चित्र एवं कैसे उदाहरण अच्छे लगेंगे और उनके लिए सार्थक होंगे। शायद यह मान्यता है कि पाठ्यपुस्तकों को आकर्षक बनाना अपने आप में कोई महत्व नहीं रखता। क्या हम ऐसी पाठ्यपुस्तकें नहीं बना सकते जिनका आधार बच्चों की बातचीत हो? उनके अध्याय उनकी रुचि के विषयों पर हों, चित्र एवं उदाहरण ऐसे हों जो उन्होंने ही बनाए हों और जो उन्हें आकर्षित करें, जिसमें लिए गए चित्र उनकी समझ व उम्र के अनुरूप हो। भाषा सिखाने के लिए उनकी बोली का इस्तेमाल हो और उनकी बोली के कुछ शब्द भी किताब में हों।

अभ्यास

- हमारी भाषा में अन्य भाषाओं या बोली के शब्द आ जाने से वह अशुद्ध हो जाती है। क्या इस बात से सहमत है? क्यों या क्यों नहीं?

एक नया सवाल जो कि आमतौर पर भाषा की शुद्धता की वकालत करने वालों से है। यदि ऐसी पुस्तकों में बच्चों की भाषा के जिसे हम बोली कहते हैं, कुछ शब्द आ भी जाएँ तो क्या मानकीकृत भाषा बिगड़ जाएगी? क्या अन्य भाषाओं के भाव व अभिव्यक्ति के ढंग लेकर भाषा अशुद्ध हो जाती है? यदि हम ऐसा मान लें तो अन्य समाजों में उभरे नए-नए विचार हमारी भाषा में कैसे आएँगे? शायद अन्य बोलियों के शब्दों को लेने से हमारी भाषा और समृद्ध ही होगी।

क्या हमारे लिए यह सोचना आवश्यक नहीं है कि जब बच्चा कोई गलती करता है तो क्यों करता है? क्या उस गलती का कारण समझ कर उसे सिखाना सही तरीका नहीं है? वैसे कोई भी गलतियाँ किए बिना सीख ही नहीं सकता चाहे वह भाषा हो या और कुछ। गलतियों के आधार पर नई बातें सीखी जाती हैं। भाषा के संदर्भ में जिन्हें हम गलतियाँ कहते हैं, वह इस बात का भी दर्पण है कि बच्चे के चारों तरफ कैसी भाषा प्रयोग की जाती

है। जिसे हम आमतौर पर गलतियाँ करना कहते हैं शायद वह भाषा बदलने की प्रक्रिया का आवश्यक अंग भी है। यदि भाषा स्थायी रूप से मानकीकृत हो जाए और कोई नयापन या परिवर्तन न होने दिया जाए तो क्या होगा? जरा सोचिए।

वास्तव में हमारे लिए मुख्य सवाल यह है कि भाषा पढ़ाने का उद्देश्य क्या है? भाषा सिखाने का हमारे लिए क्या महत्व है? बच्चे को भाषा सिखाने में हमारी क्या अपेक्षा है? क्या यही कि वह कुछ चुने हुए विषयों पर जटिल और व्यवस्थित शब्दों में निबन्ध इत्यादि लिख पाए जो उसे रटने ही पड़ेंगे, चाहे और किसी विषय पर वह दस लाइन भी न लिख सके? क्या बच्चे के लिए ज्यादा उपयोगी है कि वह अपनी हर मात्रा और व्याकरण की गलती को सुधारे या यह कि वह शब्दों और वाक्य संरचना के लचीलेपन और विविधता का अहसास करें? भाषा सीखने, बच्चे की स्वतंत्र अभिव्यक्ति का विकास और भाषा के लचीलेपन का इस्तेमाल करने की क्षमता, मात्रा और व्याकरण की शुद्धता से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। क्या यह आवश्यक नहीं है कि प्राथमिक स्तर पर बच्चे को मानकीकृत भाषा सिखाने की अपेक्षा उसे अपनी भाषा में अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए और धीरे-धीरे एक सामंजस्य स्थापित करते हुए मानकीकृत भाषा सिखाई जाए?

अभ्यास

- आप किसको ज्यादा महत्व देंगे और क्यों?
 - सही उच्चारण अथवा स्वतंत्र अभिव्यक्ति?
 - मात्रा, व्याकरण की गलतियों अथवा भाषा सीखने को प्रोत्साहित करने के लिए शुरुआत में इनको केन्द्र बिन्दु बनाना?
 - शुद्ध भाषा अथवा भाषा का उपयोग?
 - बच्चों के भाषा सीखने में किन-किन तत्वों का प्रभाव पड़ता है?
 - बच्चों के भाषा विकास के दौरान हमें किस प्रकार का धैर्य रखना चाहिए?
-

अध्याय — 8

बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं : कुदरती जादू या लंबा सफर?

जीन आइचिसन

पाठ की रूपरेखा

- परिचय
- उद्देश्य
- शीर्षक व उपशीर्षक

परिचय:

“बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं” में जीन आइचिसन के बच्चों में मात्र रुदन से लेकर सम्भवतः दुनिया के नायाब और जटिल तन्त्र यानी मानव-भाषा को लगभग पूर्णतः ग्रहण करने के सफर का तथा उन 3-4 वर्षों के दौरान विकास के अन्य पहलुओं, उनसे भाषा-विकास के सम्बन्ध तथा इस सफर को देखने के अलग-अलग सैद्धान्तिक नज़रियों की काफी गहन चर्चा की है।

उद्देश्य :

- बच्चे के जन्म से लेकर भाषा किस-किस रूप में उसके जीवन, सोच-समझ, सम्प्रेषण और विकास के हिस्सों के बारे में समझ बना पाएँगे।
- बच्चे के विकासात्मक पहलुओं के साथ-साथ भाषा के संरचनात्मक पहलुओं को भी समझ पाएँगे।

यह व्याख्यान भाषा के ज्ञान के निर्माण के बारे में है, और इस बारे में है कि क्या भाषा सीखना एक कुदरती जादू है या एक लंबा परिश्रम? खैर, यह थोड़ा-थोड़ा दोनों है। ज़ाहिर है कि कुछ तो कुदरती यानी जन्मजात है अन्यथा गोल्डफिश भी बोलना सीख जाती। मगर सीखने की भी भूमिका है; बरसों बाद ही बच्चे दक्ष हो पाते हैं। मैं मुख्य रूप से प्रथम भाषा सीखने के बारे में बात कर रही हूँ मगर थोड़ी बात दूसरी भाषा सीखने के बारे में भी।

सबसे पहले, यह सीखने की मंजिलें वितरित पर्चे के पहले खण्ड में कहा गया है कि भाषा में कुदरती रूप से निर्देशित सीखना शामिल होता है। इस तरह के सीखने में जंतु सहजवृत्ति से जानता है कि उसे किस बात पर ध्यान देना है, मगर बारीकियाँ सीखने में समय लगाना होता है। पक्षी और मधुमक्खियाँ और फूल इसके उम्दा उदाहरण हैं।

फूल एक-दूसरे से काफी अलग होते हैं और मधुमक्खियाँ फूलों के बारे में जानते हुए पैदा नहीं होतीं, उन्हें सीखना होता है। उन्हें सहजवृत्ति से पता होता है कि उन्हें गंध, रंग और आकृति पर इसी क्रम में ध्यान देना है। इसलिए वे किसी बस स्टॉप या पोस्ट बॉक्स की ओर उड़ना सीखने की बजाय गुलाब तक उड़ना सीखती

हैं जबकि कभी-कभी बस स्टॉप और पोस्ट बॉक्स भी चटख रंगों के होते हैं। इसी प्रकार से मानव शिशु भी कुदरती तौर पर लोगों के मुँह से निकलती ध्वनियों पर ध्यान देते हैं और उन्हें सहजवृत्ति से इनका अर्थ निकालना आता है। मगर इसमें लंबा समय लगता है।

हम रोने के साथ शुरू करते हैं। शुरू में बच्चे सिर्फ रोते हैं। ऐसा कहते हैं कि बेंजामिन फ्रेंकलिन ने (बच्चों के बारे में) कहा था, “एक सिरे पर जोरदार आवाज़ और दूसरे पर जिम्मेदारी का कोई एहसास नहीं”। सारी भाषाओं में एक ही तरह का रोना देखा जा सकता है। कोई भारतीय माँ और कोई अंग्रेजी माँ खुद अपने और एक-दूसरे के बच्चे का रोना पहचान जाएँगी। इसके बाद बच्चे गूँ-गूँ करते हैं, यह करीब 6 सप्ताह में आता है। और इसके बाद करीब छः माह पर वे ऊल जलूल आवाज़ें निकालते हैं, या जैसी आवाज़ें दुहराते रहते हैं। माता-पिता कई बार मान लेते हैं कि उनके बच्चे उन्हें पुकार रहे हैं, हालाँकि अपने होंठों के साथ प्रयोग करते हुए यही आवाज़ें निकालना उनके लिए सबसे आसान होता है। अब हम उतार-चढ़ाव पर आते हैं, जो करीब 8 माह में आता है। बच्चों की आवाज़ ऐसी लगती है जैसे वे बातें कर रहे हैं, मगर वे तो सिर्फ सुनी हुई भाषा की लय की नकल कर रहे हैं।

फिर हमें दो शुरूआती भाषाएँ मिलती हैं। एकल-शब्द-उद्गार करीब 12 माह में आता है। जैसे अंग्रेजी में बच्चे अक्सर 'du' कहते हैं जिसका मतलब होता है juice। दो शब्दों के उद्गार करीब 18 माह में आते हैं—जैसे more मतलब more juice। where daddy जैसे सवाल, और no bed जैसे नकारात्मक वाक्य करीब दो वर्ष में आते हैं।

अब हम आगे के मुकाम पर पहुँचते हैं। हम देखते हैं कि लंबे वाक्य करीब 3 वर्ष की उम्र में आते हैं मगर थोड़ा सावधानी से छानबीन करने पर पता चलता है कि इस समय तक बच्चे कहीं अधिक जानते हैं। 10 वर्ष की उम्र तक सारी प्रमुख संरचनाएँ तैयार हो जाती हैं, काफी जटिल संरचनाएँ भी। मगर सीखने का एक पक्ष आजीवन जारी रहता है— शब्द सीखना, शब्द भंडार का अर्जन।

अब हम अगले पड़ाव पर पहुँचते हैं : शब्द सामर्थ्य। बच्चे बहुत छोटे उम्र से ही कई शब्द समझते हैं; मेरा भतीजा, जब उसके माता-पिता कहता है कि ‘मुझे बाघ दिखाओ’ तो वह अपने पालने के ऊपर लगे चित्र में काफी विश्वसनीय ढंग से बाघ की ओर इशारा कर सकता था मगर उसके लिए यह एक खेल भर था। जब उसके माता-पिता बाघ शब्द बोलते तो उसे पता था कि पट्टे वाले जानवर की ओर इशारा करना है। उसे शायद यह पता नहीं था कि यह उस जानवर का नाम है जिसकी ओर वह इशारा कर रहा है। किसी अवस्था में बच्चे नामों की ताकत समझ जाते हैं, वे ‘नामकरण समझ’ नामक कोई चीज़ हासिल कर लेते हैं यानी यह समझ कि चीज़ों के नाम होते हैं। वे इस मुकाम पर दूसरे साल में, आम तौर पर 15 से 18 माह की उम्र में पहुँचते हैं। इसके बाद वे हर चीज़ को नाम देते हैं। अब जाहिर है हम घुटने चलते बच्चों से इसकी बात नहीं कर सकते, मगर बहरे बच्चों के अनुभव से इस मुकाम के बारे में काफी कुछ जानते हैं जो नामकरण समझ के पड़ाव पर देर से पहुँचते हैं।

हाल का एक मामला एक बहरे मेक्सिकन अल डेफांसो का है, जिसने नामकरण की समझ खोज ली थी जबकि उसे बताया नहीं गया था। उसने इसकी खोज चरणों में की थी। सबसे पहले संख्याएँ, फिर संज्ञाएँ और फिर क्रियाएँ। अब सब लोग सहमत हैं कि करीब 18 माह की उम्र में शब्द उफान आता है, जब लगता है कि बच्चे शब्द सीखते जाते हैं। दो वर्ष की उम्र तक आम तौर पर बच्चे कई सैकड़ा शब्द जानते हैं, और बड़े लोगों के समान बोलते हैं जबकि वे अभी बड़े नहीं हुए हैं, और तीन वर्ष की उम्र तक हजार से ज्यादा शब्द जानते हैं। बच्चों के पास सक्रिय शब्द भंडार करीब 3000 शब्दों का होता है, अक्रिय शब्द भंडार (जिन्हें वे समझते हैं) संभवतः इससे काफी ज्यादा, अनुमानित 10000 शब्दों का, हो सकता है। शब्द खोज करीब 13 वर्ष की उम्र में होती है। मैंने एक शोधकर्ता एन कोपेल के साथ 11-14 वर्ष के ब्रिटिश बच्चों के शब्द भंडार का एक सर्वेक्षण किया था। हमने 400 बच्चों की जाँच की थी, दो स्कूलों के 200-200 बच्चे थे और हमने देखा कि 11 और 12 वर्षीय बच्चे

एक समूह में रहे और 13-14 वर्षीय बच्चे दूसरे समूह में। अधिकांश ब्रिटिश बच्चों ने 13 वर्ष की उम्र तक 20,000 शब्द हासिल कर लिए थे। यह संख्या याद रखें 20,000। 20,000 शब्द वह सरहदी मात्रा है जो धाराप्रवाह अंग्रेज़ी बोलने के लिए चाहिए। मैंने पाया कि विदेशी छात्र, जिनमें से कुछ का परीक्षण मैंने किया था (कुछ भारतीय भी थे), जो इस मात्रा तक पहुँच गए थे किसी भी विषय के बारे में दक्षता पूर्वक बात कर सकते थे। और 20,000 से कम शब्दों वालों को जूझना पड़ता था। औसत ब्रिटिश भाषी वयस्क 50,000 शब्द जानता है। तुलना के लिए देखें कि कंसाइज्ड ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी का दावा है कि उसमें 75,000 शब्द हैं। तो एक औसत ब्रिटिश वयस्क दो-तिहाई कंसाइज्ड ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी जानता है। मगर कोई इससे पीछे भी है तो चिंता नहीं क्योंकि शब्द सीखना आजीवन चलता है।

अब मैं अगले खण्ड पर जा रही हूँ— भाषा और बुद्धिमत्ता का पृथक्करण। भाषा, यानी बोलने की क्षमता, (आश्चर्यजनक रूप से) आम बुद्धिमत्ता से अलग है। आम तौर पर भाषा और बुद्धि साथ-साथ आगे बढ़ते हैं, मगर ऐसे कई विचित्र मगर मेधावी इन्सान हैं जिनमें भाषा और बुद्धि अलग-अलग होती हैं। पहली है एक महिला लौरा, कभी-कभी मार्था। लौरा व्याकरण की दृष्टि से नफीस वाक्यों का उपयोग करती थी मगर अक्सर इनका कुछ मतलब नहीं होता था, जैसे— “पिछले वर्ष मैं 16 वर्ष की थी और अब मैं इस साल 19 वर्ष की हूँ”; और यह मेरा प्रिय वाक्य है— “वह सोच रही थी कि यह कोई आम स्कूल नहीं है, यह तो बस अच्छा सा पुराने किस्म का था, कोई बसें नहीं और मुझे यह बिलकुल अच्छा नहीं लगता कि वह मेरे मुँह में पेपर ऑवेल डोले।” लौरा सीखे हुए वाक्यों के टुकड़े नहीं दोहरा रही थी, क्योंकि वह व्याकरण की गलतियाँ भी करती थी। जैसे, “These are two glasses I have taken, it was given by a friend, I don't know how I caught it.” एक और उदाहरण क्रिस्टोफर का है जिसकी भाषा व बुद्धि अलग-अलग हो गए थे। वह गंभीर मानसिक अपंगता से पीड़ित है। वह अपनी देखभाल नहीं कर पाता, मगर भाषा सीखने में खासा हुनर रखता है। जब वह 29 वर्ष का था, उसने स्वीडिश से यह तर्जुमा किया था— “Mia is sitting crouched in the kitchen sofa, with her knees bent and her feet tied up in lovely night shirt, the cat spins in her knee.” यह एकदम सही अनुवाद था। “Mia is crouched up on the kitchen sofa, with her knees drawn out and her feet tucked into her stripy nightie, the cat is purring into her knee.” भी वही अनुवाद है जो क्रिस्टोफर का था मगर क्रिस्टोफर ने purr शब्द को स्वीडिश के शब्द spin शब्द से भ्रमित कर दिया था जो purr जैसा ही लगता है। और एक किस्म का बच्चा है, जो बच्चे विलियम सिंड्रोम से पीड़ित हैं। वे विशेष कार्यों से नहीं निपट पाते, जैसे, वे एक सायकल से पुर्जों को जोड़कर पूरी सायकल नहीं बना पाते। मगर उनकी भाषा काफी नफीस और विस्तृत होती है। उदाहरण के लिए 17 वर्ष के एक बच्चे द्वारा दिया गया ब्रेन स्कैन का विवरण देखिए— “एक बड़ी चुंबकीय मशीन होती है, उसने भेजे के अंदर का चित्र खींचा। आप बात कर सकते हैं मगर अपना सिर नहीं घुमा सकते क्योंकि उससे पूरी चीज़ बरबाद हो जाएगी और उन्हें फिर से शुरू करना पड़ेगा। यह सब होने के बाद, वे आपको एक कंप्यूटर पर आपका भेजा दिखाते हैं और वे देखते हैं कि वह कितना बड़ा है।”

अब मैं उन तथ्यों का वर्णन करना या चर्चा करना चाहती हूँ कि इन्सान जैविक रूप से, शारीरिक व मानसिक दोनों तरह से, भाषा के लिए ढले हैं। शारीरिक स्तर पर जीभ मांसल और गतिशील है। वह कुत्ते जैसे अन्य जानवरों की तरह सुस्त नहीं है। इन्सान की जीभ उपयोगी है; यह न सिर्फ मुँह के हर हिस्से से भोजन को बटोर सकती है, बल्कि विभिन्न किस्म की आवाज़ें निकाल सकती है। इन्सान के दाँत एक बराबर होते हैं, और हालाँकि शायद यह भोजन खाने के लिहाज़ से बहुत बढ़िया न हो, मगर इसकी बदौलत मुँह में एक उपयोगी पर्दा बनाने में मदद मिलती है जिसके द्वारा [t, s, z, l] जैसी आवाज़ें उच्चारित की जा सकती हैं। बोलते समय फेफड़े साँस को जल्दी-जल्दी खींचने और धीरे-धीरे छोड़ने में मददगार होते हैं।

यह अनुकूलन असाधारण है क्योंकि अधिकांश मामलों में श्वसन को नियंत्रित नहीं किया जा सकता। मगर इन्सान बगैर परेशानी घण्टों बोल सकते हैं; उन्हें साँस लेने में दिक्कत की नहीं, गला दुखने की संभावना ज़्यादा है। हमारे स्वर रज्जु गले में झिल्लियों की पतली-पतली पट्टियाँ हैं, जो मूलतः (और आज भी) फेफड़ों

को बंद करके पसलियों के पिंजर को सख्त बनाने में उपयोगी हैं जो भारी बोझ उठाने या पेड़ों पर झूलने जैसे मेहनत के काम में ज़रूरी होता है।

किसी चिंपेंजी के सिर और भाषा और शरीर इन्सान के सिर में अंतर पर गौर कीजिए। इन्सान नाक की गुहा को बंद कर सकते हैं और पहचानने योग्य आवाज़ें पैदा कर सकते हैं, खासतौर से तीन एंकर स्वर [i, u, a]। और जब एक बार हम ये तीन स्वर बोल पाएँ तो यह भाषा की हमारी उड़ान की कुंजियों में से एक थी। अब मैं 50–75 हजार साल पहले की बात कर रही हूँ। अब, हमारे मानव मस्तिष्क भाषा के लिए विशेषीकृत हो गए हैं। हमारे दिमाग चिम्पेंजी से बड़े हैं, खास तौर से अगला हिस्सा, मगर वास्तव में साइज़ की बजाय गुणवत्ता का ज़्यादा महत्व है। अधिकांश इन्सानों में बाएँ गोलार्ध का उपयोग भाषा के लिए होता है। अधिकांश इन्सान दाएँ हाथ से काम करने में दक्ष होते हैं और इनमें से 90 प्रतिशत में भाषा बाएँ गोलार्ध या भेजे के बाएँ हिस्से में होती है। वामहस्त लोग, जो अपेक्षाकृत बिरले होते हैं, मैं से भी अधिकांश में भाषा मुख्यतः बाएँ गोलार्ध में होती है। ये आंकड़े तंत्रिका विज्ञान की एक किताब से हैं जो बताते हैं कि 90 प्रतिशत दक्षिणहस्त लोगों में और अधिकांश वामहस्त लोगों में भी भाषा बाएँ गोलार्ध में होती है। एक जीव वैज्ञानिक एरिक लेनबर्ग ने 1967 में एक महत्वपूर्ण किताब लिखी थी जिसका नाम था *दी बायोलॉजिकल बेसिस ऑफ़ लैंग्वेज*। उन्होंने बताया था कि भाषा एक परिपक्व नियंत्रित व्यवहार है, यानी चलना सीखने या यौन व्यवहार के समान एक व्यवहार जिसमें व्यवहार के विभिन्न पहलू व्यक्ति के जीवन के अलग-अलग मुकामों पर कुदरती रूप से विकसित होते हैं, बशर्ते कि आसपास के परिवेश में पर्याप्त उद्दीपन मौजूद हो। उन्होंने इस तरह के व्यवहार को पहचानने के लिए कुछ प्रमुख बिंदु बताए थे:

1. परिपक्व नियंत्रित व्यवहार उसकी ज़रूरत होने से पहले उभरता है।
2. यह किसी बाह्य घटना से प्रेरित होकर शुरू नहीं होता। जब बच्चों को बोलना होता है तब माता-पिता उन्हें अचानक सिर के बल नहीं पटकते।
3. यह किसी सचेत निर्णय का परिणाम नहीं होता।
4. प्रत्यक्ष शिक्षण का असर अपेक्षाकृत कम होता है। और
5. पड़ावों का एक नियमित क्रम होता है।

1967 की अपनी किताब में लेनेबर्ग ने दलील दी थी कि एक तयशुदा निर्णायक अवधि होती है जिसके दौरान भाषा अर्जन संभव है। उन्होंने दावा किया था कि यह (अवधि) करीब दो वर्ष की उम्र में शुरू होती है और किशोरावस्था में समाप्त हो जाती है। इसके बाद, उनके मुताबिक, “भाषा अर्जन नामुमकिन है”। मगर इस कठोर निर्णायक अवधि के बारे में वे गलत थे। वे दो लिहाज़ से गलत थे। पहला कि बच्चे दो वर्ष की उम्र से पहले बड़ी मात्रा में भाषा अर्जित करते हैं। दो वर्ष से कम उम्र में बाएँ गोलार्ध में गंभीर क्षति होने पर भाषा संबंधी स्थायी क्षति हो सकती है। दूसरा, पार्श्वीकरण (यानी भाषा का विशेषीकरण बाएँ गोलार्ध में होना) बहुत कम उम्र के शिशुओं में देखा गया है। अर्थात् यदि उनके सामने भाषा की ध्वनियाँ बज़ाई जाएँ तो वे बाएँ गोलार्ध से ध्यान देती हैं। यह बात काफी विस्तृत प्रयोगों से पता चली है। और यह भी काफी महत्वपूर्ण है कि नवजात शिशु भी खुद अपनी भाषा पर ज़्यादा ध्यान देते हैं, जिससे पता चलता है कि वे कोख में ही इसकी लय के प्रति अनुकूलित हो चुके होते हैं। और लेनेबर्ग की सोच के विपरीत, किशोरावस्था किसी बिन्दु पर यकायक शुरू नहीं होती। भाषा अर्जन 13 वर्ष की उम्र के बाद भी चलता रह सकता है। अधिक उम्र के कुछ लोग भी भाषा सीखने में बढ़िया होते हैं। एक और महत्वपूर्ण बात है कि शब्द भंडार का निर्माण तो ताज़िन्दगी चलता रहता है। लोग अपना शब्द भंडार (यदि संभव हुआ हो तो) 100 वर्ष की उम्र तक बढ़ाते रह सकते हैं और यह भी काफी महत्वपूर्ण है कि शब्द भंडार का निर्माण करीब 13 वर्ष की उम्र में शिखर पर होता है। तो शोधकर्ता आजकल सरहदी अवधि की बजाय संवेदी अवधि की बात करते हैं, वह समय जिसमें बच्चों का संपर्क भाषा से कराया जाना चाहिए, मगर यह अवधि लेनेबर्ग ने जो सोचा था उससे काफी पहले शुरू हो जाती है और देर तक जारी रहती है। तो मूलतः लोग मानते हैं कि

अवसरों की खिड़की ज़्यादा लंबे समय तक खुली रहती है और अपेक्षाकृत धीरे-धीरे बंद होती है। और, उदाहरण के लिए जो परिवार कनाडा प्रवास कर गए हैं, उन्होंने देखा है कि उनके बच्चे वो फ्रांसीसी सीख लेते हैं जो फ्रांसीसी कनाडावासी बोलते हैं। प्रवास के समय बच्चे जितने छोटे होते हैं, उतनी ही आसानी से वे फ्रांसीसी सीखते हैं। जैसा कि हम आज जानते हैं, यह संवेदी अवधि बदलती संवेदनाओं का दौर होता है। बहुत छोटे बच्चे अपनी भाषा की ध्वनि संरचना सीखने में बहुत तेज़ होते हैं। बड़े बच्चे व्याकरण की संरचना पर ध्यान देते हैं। किशोर बच्चे शब्द भंडार पर ध्यान देते हैं। बड़े बच्चे वास्तव में भाषा अर्जित करने के लिए तैयार नहीं होते।

भाषा और माहौल

इसमें कोई संदेह नहीं कि जो लोग बच्चों की देखभाल करते हैं वे इसमें सहायक या बाधक हो सकते हैं। एक समय था जब बच्चों से बोलने की बोली के लिए मदरीज़ यानी माँ की बोली शब्द का प्रयोग होता था। मगर अब हम इस शब्द का उपयोग ज़्यादा नहीं करते क्योंकि सिर्फ माँ ही बच्चों की देखभाल नहीं करती। पिता, रिश्तेदार और दोस्त भी करते हैं। तो आजकल प्रचलित शब्द देखभालकर्ता है, यानी जो भी देखभाल करे। और हम देखभालकर्ताओं और बाल-संबोधित बोली (child directed speech - CDS) की बात करते हैं। अब यह पता चला है कि लोग जो बातें प्रथम भाषा के देखभालकर्ताओं और सीडीएस के बारे में कहते हैं वे काफी हद तक द्वितीय भाषा सीखनेवालों पर भी लागू होती हैं।

अब, सबसे पहले तो सीधे बच्चे से बात करना आवश्यक है। इसमें यह मतलब नहीं है कि बच्चे को टीवी के सामने पटक दें और उम्मीद करें वह अंग्रेज़ी सीख जाएगा, वह नहीं सीखेगा। विन्सेन्ट नाम के बच्चे का एक बहुत दिलचस्प मामला हुआ था, जिसके माता पिता बधिर थे। वे चाहते थे कि विन्सेन्ट न सिर्फ उनकी भाषा—संकेत भाषा — सीखे बल्कि अंग्रेज़ी भी सीखे। तो वे उसे टीवी के सामने बैठा दिया करते थे, मगर विन्सेन्ट ने कुछ अंग्रेज़ी नहीं सीखी। तो, कुल मिलाकर, जी हाँ, आपको बच्चे से बातचीत करनी चाहिए, मगर सही ढंग से। सबसे पहले तो बच्चों (या किसी भी सीखने वाले) को आलोचना की शैली में, खुले आम या दबे-छुपे, टोकना नहीं चाहिए। अर्थात् आप यह कभी न कहें, “नहीं, यह गलत है।” इस ढंग का भूल सुधार बच्चे को अवरुद्ध कर सकता है, खास तौर से यदि देखभालकर्ता आलोचना का स्वर अख़्तियार कर ले। वास्तव में जितना कहा जाता है, बच्चे उससे अधिक देखते हैं। और वे यह समझ जाते हैं कि उनका तिरस्कार किया जा रहा है। यह बात द्वितीय भाषा सीख रहे बड़े बच्चों के लिए भी सही है। तो भूल सुधार, खास तौर से यदि आलोचना की शैली में किया जाए, तो बाधक बन सकता है। फिर बच्चे अक्सर इस बात पर ध्यान नहीं देते कि किस चीज़ को सुधारा जा रहा है। वे तो बस इतना जानते हैं कि उन्हें कोई पसंद नहीं करता या कोई उनकी तारीफ नहीं करता और हो सकता है कि वे इसे देखे नहीं या इसकी परवाह न करें। इसके अलावा, माता-पिता जिन चीज़ों में सुधार करते हैं उसमें एकरूपता नहीं रहती। और अक्सर वे भाषा की गलतियों की बजाय तथ्य को सुधारने की कोशिश करते हैं।

जैसे जब बच्चे ने कहा कि "teddy sock on" (जब टेडी ने जुराबें पहनी हुई थी) तो हो सकता है कि उसके पालक कहें "Good! That's right. Teddy's got a sock on"। मगर यदि बच्चे ने व्याकरण के लिहाज़ से सही कहा कि "Teddy's got his sock on" जबकि टेडी ने जुराबें नहीं पहनी हुई हैं, तब शायद पालक कहेंगे "No, you are wrong. Teddy is not wearing a sock"। संक्षेप में, जैसा कि रॉजर ब्राउन ने कभी कहा था, “यदि भूल सुधार उसी ढंग से काम करता हो जैसा पालक सोचते हैं, तो उम्मीद की जानी चाहिए कि बच्चे सत्य को व्याकरण-विरुद्ध बोलते बड़े होंगे।”

दरअसल, मामला उल्टा लगता है। अब कई लोगों ने हाल में भूल सुधार पर अनुसंधान किया है और दर्शाया है कि यह कभी-कभी कारगर होता है, बशर्ते कि बच्चा उस समय भाषा के उस पहलू पर काम कर रहा हो और यदि यह दोस्ताना अंदाज़ में किया जाए। किसी भी समय बच्चे भाषा के किसी पहलू पर चुनिंदा ढंग से ध्यान देते हैं और यही बात द्वितीय भाषा सीखने वालों पर भी लागू होती है। जैसे एलेक्स के उदाहरण को देखिए:

किसी समय एलेक्स भूतकाल के प्रति खास तौर से सजग था। उसने कहा, "The crocodile bitted the giraffe's feet"। पिता ने कहा, "He bit his feet" और एलेक्स ने कहा, "Yes, and he bite me too" इससे पता चलता है कि बच्चे ने भूत काल पर ध्यान दिया था। मगर हम इतना जानते हैं कि पालकों और शिक्षकों को चाहिए कि वे सीखनेवाले के लिए संशोधन हेतु एक बढ़िया आधार मुहैया करवाएँ। उन्हें चाहिए कि वे धीमे, सुस्पष्ट, उतार-चढ़ाव को बढ़ा-चढ़ाकर, छोटे-छोटे, सुगठित कथन दें। इसमें दोहराव होना चाहिए मगर यह सीधी पुनरावृत्ति न हो और इसमें व्याकरण की विविधता होनी चाहिए। जैसे आप बच्चे को कह सकते हैं, "It's breakfast time. Shall we make some toast? You must be hungry. What do you want to drink? Some orange?" वैसे भी मात्र बोलना महत्वपूर्ण नहीं है, बच्चों या सीखनेवालों को यह महसूस भी होना चाहिए कि वे एक वयस्क के साथ एक संयुक्त उद्यम में शामिल हैं।

उदाहरण के लिए, "Shall we go and feed the rabbits now? The rabbits must be getting hungry. They want their dinner, shall we give them some cabbage leaves? They like cabbage leaves, don't they?"

द्वितीय भाषा सीख रहे बड़े बच्चों के साथ संयुक्त उद्यम मुश्किल जरूर है मगर नामुमकिन नहीं है। यह मुमकिन है, बशर्ते कि आप उन्हें कुछ करने को दें, जैसे, इंग्लैण्ड या अमेरिका का नक्शा बनाकर उसमें लंदन या न्यूयॉर्क दर्शाने या भारत में दिल्ली और मुंबई को सही जगह पर रखने को कहें। भारतीय बच्चों द्वारा अंग्रेजी सीखने के बारे में प्रभु की एक महत्वपूर्ण किताब है, और रमाकांत अग्निहोत्री ने भी काफी महत्वपूर्ण काम किया है।

भाषा सीखने का सिलसिला

बच्चे कंप्यूटर्स से भी शुरुआत कर सकते हैं, अंततः उन्हें जिन प्रोग्राम्स से काम करना है उनकी बनिस्बत सरल प्रोग्राम्स से शुरु कर सकते हैं। इंग्लैण्ड में जब हम कंप्यूटर चालू करते हैं तो बूटिंग अप कहते हैं। अमरीकी लोग बूटस्ट्रैपिंग की बात करते हैं। तो बच्चे में बूटस्ट्रैपिंग कैसे काम करेगा? शुरु में बच्चा एक सरल परिकल्पना बनाएगा, कि हर वाक्य डैडी, ममी, डैडी गो जैसे शब्दों से शुरु होता है। फिर उसके बाद कार या कप या गर्ल जैसा कोई शब्द आएगा, जैसे डैडी कार, ममी कप, डैडी गो। फिर वह शायद यह समझ पाए कि इन उद्गारों में अंतर थे और सोचने लगे कि ऐसा क्यों है और इससे उसकी कही बात पर क्या असर पड़ा। और अंत में वे समझ पाएंगे कि वाक्य अलग-अलग तरह के वैयाकरणिक संबंध व्यक्त करते हैं। आम तौर पर हम जानते हैं कि जब बच्चे भाषा के किसी पहलू पर लगे होते हैं, तो वे सुनने की कोशिश करते हैं, इन्तज़ार करते हैं, जोड़-तोड़ करते हैं, और फिर पुष्टि करने के लिए सुनते हैं। यों कहें कि सबसे पहले वे सुनते हैं, बोलने की कोशिश करने से पहले वे अपनी भाषा के बारे में काफी कुछ सीखते हैं। फिर वे आजमाइशी तौर पर प्रयोग करते हैं। (और हाँ कभी-कभी द्वितीय भाषा सीखने वालों को काफी अधिक अंग्रेजी सुनने की ज़रूरत पड़ती है, इससे पहले कि वे बोलने को विवश हों।)

भाषा अर्जित करने के बारे में एक महत्वपूर्ण बात यह है कि बच्चे और वयस्क सह-घटना (शब्द और संरचनाएँ जो एक के बाद एक आती हैं) के प्रति विशेष रूप से सजग होते हैं। इसी ढंग से एक अंधी बच्ची सैली ने look और see के बीच अंतर सीखा था और वह अपनी भाषा में देखने वाले बच्चों से थोड़ी ही पीछे थी। जैसे "Look, here's how you wind the clock" और "Come and see the kitty." तो जाहिर है कि जो शब्द वह सीख रही थी, उसने उसके दोनों ओर के शब्दों पर ध्यान दिया था। और यह सबसे महत्वपूर्ण है कि बच्चे (और द्वितीय भाषा सीखने वाले भी) वास्तव में चीजों को संदर्भ में ही सीखते हैं।

अब तक मैंने मुख्य रूप से यह बात की कि बच्चे आगे कैसे बढ़ते हैं, मगर वे अपनी गलतियों को पहचानकर पीछे भी चलते हैं। और किसी को पक्का पता नहीं है कि वे ऐसा कैसे करते हैं, सिवाय इसके कि यदि आप उनसे धीमे-धीमे और स्पष्ट रूप में बात करते रहें तो वे पीछे देखते हैं। शायद असंगतियों को पकड़ना सबसे महत्वपूर्ण होता है। बच्चे देखते हैं कि उनका बोलना पालकों से थोड़ा अलग है और फिर वे बदलाव कर लेते हैं।

मैंने विविधता के बारे में ज़्यादा कुछ नहीं कहा है। बच्चों का भाषा सीखना कई मायनों में सामान्य रूपरेखा में एक समान है। मगर व्यक्तियों के बीच विविधता तो होती है। कुछ बच्चे शब्दों के बारे में जानना चाहते हैं, कुछ बच्चे संरचनाओं के बारे में जानना चाहते हैं। दूसरा, भाषाओं के बीच विविधता होती है और लगता है कि भाषा के अलग-अलग प्रकार सीखने वालों में अलग-अलग रणनीतियों को बढ़ावा देते हैं। तीसरा, बेशुमार बच्चे द्विभाषा-भाषी और त्रिभाषा-भाषी बनते हैं। यह किसी भी बच्चे के लिए काफी फायदेमंद होता है। उनके पालक कभी-कभी चिंतित हो जाते हैं क्योंकि शुरू-शुरू में एक भाषा-भाषी परिवार की अपेक्षा ऐसा बच्चा भाषा में धीमे आगे बढ़ता नज़र आता है। मगर यह अस्थायी होता है। अंततः बच्चा दोनों भाषाएँ अर्जित कर लेता है, हालाँकि इससे कभी-कभी मदद मिलती है यदि एक पालक निरंतर एक ही भाषा बोले। यानी यदि बच्चे को पता हो कि उसकी माँ अंग्रेजी बोलेंगी और पिता स्पैनिश बोलेंगे तो शायद मदद मिलेगी।

बहरहाल, मैं आखरी बात पर आती हूँ। समय की कमी के कारण मैंने सिर्फ भाषा की संरचना पर बात की। मैंने उस आम अंतःक्रिया की बात नहीं की जिसे भी सीखना होता है, जैसा कि निम्न कार्टून शृंखला में दिखता है:

एक ने टेलीफोन को संभालना नहीं सीखा है। टेलीफोन बजता है। बच्चा उसे उठाकर कहता है "हैलो"। दूसरे छोर की आवाज़ कहती है "क्या मैं तुम्हारे पिताजी से बात कर सकता हूँ", बच्चा कहता है, "ऊँह, मुझसे पूछने की ज़रूरत नहीं है।"

चर्चा

प्रश्न : सबसे पहले तो मैं आपको बहुत सुंदर व जानकारी से भरपूर व्याख्यान के लिए बधाई देता हूँ। मेरा सवाल नहीं है; वास्तव में कुछ जोड़ रहा हूँ। अब तक हम बातें इस लिहाज़ से ज़्यादा कर रहे हैं कि भाषा कैसे सिखाई जा सकती है या भाषा कैसे सीखी जाती है और इसका परिवेश आम तौर पर स्कूल की कक्षा होती है। मैं इसे आगे बढ़ाने के लिए शुरूआती उम्र में शिशु को उद्दीपन या बच्चे को उद्दीपन की भूमिका के बारे में जोड़ना चाहता हूँ। भाषा आकार लेने लगे उससे बहुत पहले बच्चे और देखभालकर्ता के बीच संवाद होने लगता है और भाषा सीखने की भूमिकाएँ शुरू हो जाती है। क्योंकि जब माँ बच्ची को देखती है और बच्ची माँ को देखती है और मुस्कान का आदान-प्रदान होता है, तो यह एक किस्म की अंतःक्रिया की शुरुआत है। और वर्तमान संदर्भ में, ज्ञान का निर्माण कैसे होता है, खासकर एशियाई देशों में, शुरूआती उद्दीपनों की भूमिका के चलते यह महत्वपूर्ण हो जाता है। हम प्रथम भाषा और द्वितीय भाषा पर ध्यान दे रहे हैं, मैं कहूँगा कि कोई भाषा नहीं। जहाँ मैं काम कर रहा हूँ (आदिवासी इलाकों में) वहाँ कई मर्तबा ऐसा होता है कि माँ और देखभालकर्ता और बच्चों को आपसी अंतःक्रिया का मौका ही नहीं मिलता। तो हमें इस बात पर भी जोर देना चाहिए कि बच्चों को कैसे भाषा का एक आवरण मिलना चाहिए, कैसे शुरूआती वर्षों में बातचीत होनी चाहिए क्योंकि वही समय है जब ये सारे केन्द्र सक्रिय होते हैं।

जीन आइचिसन : मूलतः मैं आपकी बातों से सहमत हूँ और मेरा आशय है कि मानव भाषा के बारे में एक दिलचस्प बात यह है कि वे पैदा ही अंतःक्रिया के लिए हुई हैं। तो आप देखेंगे कि बहुत छोटे बच्चे की माँ भी यह नाटक करती है कि वे बातचीत में अपनी बारी से बोल रही हैं। तो मुझे नहीं लगता कि बारी-बारी से बात करना सिखाने की ज़रूरत है। वैसे मुझे यह ज़रूर लगता है कि इसके बारे में सजग होना ज़रूरी है। मुझे लगता है कि अक्सर हम बहुत ज़्यादा बोलते हैं।

प्रश्न : इतने थोड़े समय में यह, लगभग एक पूरे कोर्स का, अद्भुत प्रस्तुतीकरण था। आपने स्वर रज्जुओं और दिमाग के बड़े होने की बात जैविक सुरक्षा के बतौर की। मगर आपने भाषा संकाय का जिक्र नहीं किया। आपने इस बारे में भी कुछ नहीं कहा कि भाषा का विकास कैसे हुआ है, सिवाय इसके कि आपने दो मोटे-मोटे अंतर बताए। दूसरी बात मैं यह जानना चाहूँगा कि क्या भाषा और बुद्धि के पृथक्करण को डिसलेक्सिया, सेरेब्रल

डॉमिनेन्स वगैरह के रूप में समझा जा सकता है। तीसरा कि हमारे पास भारतीय बच्चों के भाषा के अर्जन को लेकर काफी आँकड़े हैं। मेरा ख्याल है कि भारतीय बच्चों के मामले में भाषा सीखना पश्चिमी बच्चों से थोड़ा तेज़ होता है। कुदरती कुछ नहीं है, हो सकता है कि यह संयुक्त परिवार की वजह से हो जो बढ़ते बच्चों को कहीं ज़्यादा भाषा इनपुट उपलब्ध करता है। चौथा, जिनेटिक डिक्लाइन्स के बारे में क्या कहेंगे, वैसे यह भी एक जैविक कारक है?

जीन आइचिसन : खैर, ये सवाल नहीं टिप्पणियाँ ही लगती हैं। मैं इतना ही कह सकती हूँ कि सबसे पहले तो मुझे भलीभाँति पता है कि हिंदी बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं और यह निहायत दिलचस्प है और मेरे कुछ छात्रों ने इस पर काम किया है। मगर मुझे लगा कि सिर्फ हिंदी बच्चों की बजाय अंग्रेजी बच्चों के बारे में सुनना ज़्यादा रोचक होगा। मैं यह मानकर चल रही थी कि यदि मैंने हिंदी के बारे में बात की तो मैं ऐसे लोगों से बात करूँगी जो पहले से जानते हैं। मगर मैं हिंदी बच्चों के बारे में साहित्य से परिचित हूँ और सिर्फ हिंदी ही क्यों, कुछ दक्षिण भारतीय विद्वानों जैसे लक्ष्मी बाई ने तेलगू और तमिल (खासकर तेलगू) पर बहुत महत्वपूर्ण काम किया है। इसलिए मैंने भारतीय शोध का ज़िक्र नहीं किया।

मैं पूरी तरह सहमत हूँ कि मैं इस बारे में ज़्यादा बात कर सकती थी कि भाषा कैसे उभरी है। हमने इस पर एक किताब भी लिखी है— *दी सीड्स ऑफ़ स्पीच*। आपने दो और टिप्पणियाँ की थी मगर मुझे पता नहीं कि वे सवाल थे या टिप्पणियाँ।

प्रश्न : मेरा सवाल खास तौर से भाषा और संज्ञान के पृथक्करण से संबंधित है। विलियम सिंड्रोम संबंधी अधिकांश अध्ययनों में विशिष्ट संज्ञान और अन्य किस्म के संज्ञान के परीक्षण के लिए पियाजेवादी ढाँचे का उपयोग किया गया है। अब यह तो जानी-मानी बात है कि पियाजेवादी ढाँचा थोड़ा अमूर्त और पेचीदा है। मुझे लगता है कि हम एक अपेक्षाकृत सरल ढाँचा उपयोग करें, क्या आप बता सकते हैं कि आपके ख्याल में किस हद तक हमें वैसे ही नतीजे मिलेंगे?

जीन आइचिसन : अब्बल तो मैं पियाजेवादी नहीं हूँ। यकीनन मैंने पियाजे पर हुए काम को पढ़ा है मगर पक्की तौर पर मैं पियाजेवादी ढाँचे में बँधी नहीं हूँ। मेरा ख्याल है कि कई लोगों ने भाषाओं के संबंधों पर, मेरा मतलब है अन्य भाषाएँ सीखने वाले बच्चों पर काम किया है, जैसे स्लोबिन ने वाकई दिलचस्प काम किया है जिसमें उन्होंने कई द्विभाषा-भाषी बच्चों को देखा और यह देखने का प्रयास किया कि कौन-सी भाषा पहले विकसित होती है और क्यों। और किसी ने अभी कहा था कि हिंदी अधिक तेज़ी से विकसित होती है। आम तौर पर स्लोबिन के अध्ययनों से हमें पता चलता है कि प्रत्येक भाषा के कुछ पहलू अन्य की अपेक्षा तेज़ी से विकसित होते हैं और किसी भी भाषा में कुल मिलाकर लाभ नहीं होता। आप कुछ चीज़ें जल्दी सीखते हैं, बस।

प्रश्न : भाषा और बुद्धि के पृथक्करण के जितने भी उदाहरण आपने दिए, वे ऐसे बच्चों के हैं जिनके पास सुविकसित भाषा थी मगर सुविकसित बुद्धि नहीं थी। क्या कोई ऐसे उदाहरण हैं जिनमें बच्चे (या किसी की भी) बुद्धि तो सुविकसित थी मगर भाषा नहीं, और यदि है तो इसके क्या मायने हैं? यह तो था पहला। दूसरा है, हम अक्सर सुनते हैं कि एक तीन वर्षीय बच्चा भाषा के लिहाज़ से वयस्क होता है। इस कथन का मतलब क्या है, और आपका पर्चा तो इस बात का गवाह है कि ऐसा नहीं है।

जीन आइचिसन : सबसे मशहूर बच्ची, जिसके पास भाषा नहीं थी मगर बुद्धि थी, तो जेनी है जिसका अध्ययन कर्टिस ने किया था और मैंने जेनी का ज़िक्र इसलिए नहीं किया क्योंकि वह काफी समय से मौजूद रही है। मैं मानकर चल रही थी कि उसे सब लोग जानते हैं। शायद मैं गलत थी। अन्य मामले भी हैं, जैसे एक भिक्षु का किस्सा है जिसे किसी तरह के दौरे पड़ते थे और जब दौरे पड़ते थे तो वह बात नहीं कर पाता था मगर किसी होटल का रास्ता खोज लेता था। तो मैंने ऐसे बच्चों के बारे में बात की थी जो भाषा में तो धाराप्रवाह थे मगर जिन्हें कोई सामान्य समस्या नहीं थी क्योंकि मुझे लगा कि समय के अभाव में वही ज़्यादा रोचक होगा। और मुझे पता नहीं आपका दूसरा सवाल क्या है।

प्रश्न : दूसरा प्रश्न यह था कि हम कभी-कभी यह दावा सुनते हैं कि तीन वर्ष का बच्चा भाषा के लिहाज से वयस्क होता है, जिसका मतलब होता है कि बच्चा या बच्ची अपने घर की भाषा या देखभालकर्ता वगैरह की भाषा के बारे में सीखने योग्य सब कुछ जानता या जानती है और बाद में वह सिर्फ शेष चीजों को विस्तार देता है। मगर ऐसा लगता है कि आपका पर्चा कहता है कि बच्ची वास्तव में तीन साल के बाद भी लगातार परिपक्व होती है, विकसित होती है, भाषा सीखती है।

जीन आइचिसन : हम ऐसा सोचते थे कि बच्चे यह सब तीन साल की उम्र तक हासिल कर लेते हैं। और कई पाठ्य पुस्तकें भी ऐसा कहती हैं मगर पिछले पाँच-दस सालों में इस पर काफी काम हुआ है। इससे पता चला है कि नहीं, उन्हें उतना पता नहीं होता जितना सब सोचते हैं। मेरा एक दोस्त था 'कोरी गमर' जो लंदन में काम करता था, उसने यह पता किया था कि करीब आठ वर्ष के बच्चे यह नहीं समझ पा रहे थे— "the doll is easy to see." तो उसने एक गुड़िया की आँखों पर पट्टी बाँध दी और फिर बच्ची से कहा, "What does it mean to say that doll is easy to see?" इस पर बच्ची ने कहा, "You silly doll, take the blindfold off then you can see." ज़ाहिर है कि उनसे यह नहीं पूछा जा रहा था। तो इस तरह की संरचनाएँ भी हैं।

अभ्यास

-
- जंतु जिस प्रकार सहजवृत्ति से जानता है कि किस बात पर ध्यान देना है वैसे ही मानव शिशु भी कुदरती तौर पर भाषा सीखने को प्रवृत्त रहते हैं। इसका अर्थ स्पष्ट कीजिए।
 - एक छोटा बच्चा विभिन्न अवस्थाओं में किस प्रकार की भाषायी समझ का परिचय देता है विस्तार से उम्र के अनुसार विवरण दें।
 - "इंसान जैविक रूप से भाषा के लिए ढले हैं"। इसे स्पष्ट कीजिए।
 - भाषा आकार लेने लगे उससे बहुत पहले बच्चे और देखभाल कर्ता के बीच संवाद होने लगता है।
 - लेख में कुछ ऐसे लोगों का जिक्र किया गया है जो बौद्धिक स्तर पर पिछड़े किन्तु भाषिक स्तर पर काफी मेधावी हैं। क्या आपको लगता है कि ऐसा केवल कुछ ही इंसानों में होता होगा, अधिकतर में नहीं? या फिर बुद्धि और भाषा का विकास अलग ही होता है किन्तु इतनी भिन्नता कुछ ही लोगों में दिखाई देती है?
 - लेनेबर्ग द्वारा दी गई संज्ञा 'क्रांतिक अवधि' को किन कारणों से 'संवेदी अवधि' कहना ज़्यादा उपयुक्त समझा जाता है?
 - पहली और दूसरी भाषा सीखने में क्या-क्या समानताएँ और विभिन्नताएँ देखी जा सकती हैं?
 - लेख में इस बात की संभावना जताई गई है कि भाषा के अलग-अलग प्रकार सीखनेवालों में अलग-अलग रणनीतियों को बढ़ावा देते हैं।
 - (क) करीब 7-8 महीने के एक बच्चे का लगभग 3 माह तक साप्ताहिक अवलोकन करें और नोट करें कि उसकी भाषा में क्या-क्या अन्तर आते हैं?
 - (ख) माँ/दूसरे वयस्क बच्चे के साथ क्या भाषिक आदान-प्रदान करते हैं? क्या आपको लगता है कि बच्चे के भाषिक विकास पर इसका कुछ असर पड़ता है?
 - लगभग $1\frac{1}{2}$ साल के एक बच्चे की सुबह उठने से रात को सोने तक पूरे दिन की भाषा को रिकॉर्ड करें अब इसका शब्दों व वाक्यों की संख्या, उनकी जटिलता, अलग-अलग स्तरों पर विभिन्नता, संदर्भ के साथ मेल आदि के आधार पर विश्लेषण करें। इस विश्लेषण के आधार पर भाषा के नज़रिए से व्यवहारवादी और वागर्थवादी मतों की तुलना करें।
-

समाज का ताना बाना और भाषा

अध्याय : 9. बहुभाषिता, साक्षरता, भाषा-शिक्षण एवं बौद्धिक विकास : संविधान में भाषाएँ— बहुभाषायी मतलब क्या? — भाषा की राजनीति — बहुभाषिता अच्छी बात या बुरी? — साक्षरता कार्यक्रमों में अंधापन — एकभाषी मानदंडों का प्रकोप — दिमागी विकास और भाषा।

अध्याय : 10. भारतीय भाषाएँ : विकासशील समाज में पहचान का माध्यम — अमरीका बनाम भारत में भाषाएँ — भारत में भाषाएँ कम हुई हैं या ज्यादा — भाषा से अपनी पहचान करना — सामाजिक पहचान से भाईचारा या फिर झगड़ा? — भाषा और लिपि की भूमिका—भारत की भाषाएँ : मुसीबत या दौलत?

अध्याय : 11. भाषा और तौर तरीके : इंसान के कई रोल—अलग रोल की अलग भाषा — क्या ठीक है और क्या गलत? — देश-देश में अलग-अलग तौर तरीके, रीति-रिवाजों और समारोहों की भाषा।

अध्याय : 12. कौन भाषा, कौन बोली? : बोली और व्याकरण किसके पास है? — भाषा और बोली के बेबुनियाद भेद — एक ही मापदंड क्यों हो? सत्ता से जुड़े भाषायी सवाल — लिपि और भाषा — व्यापक क्षेत्र का बखेड़ा — वैज्ञानिक समझ की ज़रूरत।

(1) जग जग सारा जग सारा निखर गया
हुण प्यार के वादे विच बिखर गया
हुण मौजौ ही मौजौ

(2) रमैय्या वत्ता वैय्या
रमैय्या वत्ता वैय्या
मैंने दिल तुझ को दिया ...

ये दो फिल्मी गीत हैं जिन्हें हिन्दुस्तान में करोड़ों लोगों ने सुना है, गाया है, जिन्होंने सबका दिल छुआ है। पहला आजकल का, दूसरा पचास साल पुराना। अब सवाल है : ये किस भाषा में हैं, या किस बोली में हैं, या किस अंचल के हैं?

इन सवालों का जवाब ढूँढते हुए हम घंटों सोच सकते हैं मगर साफ जवाब नहीं मिलेगा। क्यों? क्योंकि भाषा क्या है, बोली क्या है, ये सब मसले उलझे हुए हैं। भाषा शास्त्री कुछ कहते हैं, कानूनदों कुछ और कहता है, राजनीति वाले कुछ और ही कहते हैं— क्योंकि इन सब लोगों का मकसद अलग-अलग है। इन गीतों को डोगरी मातृभाषा वाले भी उतनी ही अच्छी तरह समझते हैं जितनी तमिल भाषी, या असमी, या गुजराती। लोग फिल्मों के मामले में बहुभाषी हैं, मगर राजनीति के मामलों में नहीं— और उधर साइंस या तकनीकी मामले हो तो अंग्रेजी भी अपनी और भारतीय भाषा बन जाती है।

पहले या दूसरे विश्व युद्धों में ऐसा होता था— और आज भी छोटे-मोटे हर युद्ध में हो रहा है— कि मुल्कों की सीमाओं पर युद्ध में उजड़े लोग एक मुल्क से दूसरे मुल्क पनाह लेने चलते हैं, और सीमा-चौकियों पर सेना-पुलिस के अफसर एक-एक की जाँच-पड़ताल करके ही उनको आने देते हैं। वजह? वजह यह कि असली उजड़े लोगों की भीड़ में दुश्मनों के भेदिये और जासूस मिले होते हैं। इस जाँच पड़ताल में भाषा-बोलियाँ समझने वाले भाषा वैज्ञानिक भी सेना-पुलिस के साथ बैठे होते हैं। क्यों? इसलिए कि वे आने वाले की बातचीत सुनकर पता लगा लेते हैं कि वे कौन से अंचल, या जिले, से आ रहे हैं, और क्या वे अपने निवास-स्थान के बारे में झूठ बोल रहे हैं। हर इंसान की बातचीत में उसके परिवार, जगह, अंचल, पेशा, शिक्षा, इन सब का निशान रह जाता है। भाषा इतनी गहरी चीज है। उलटा भी होता है। इंग्लैंड में जन्मी एक नई पुस्तक पंजाबियों की हो गई है। उनकी पंजाबी सुनकर भाषा वैज्ञानिक चकरा जाते हैं कभी लगता है ब्रैडफोर्ड शहर की भाषा है, और कभी लगता है भटिंडा की।

भाषा जोड़ती भी है, और तोड़ती भी है— मजहब की तरह। आजादी के समय 'दो-देश' का महजबी फार्मूला लगाकर देश को दो भागों में बाँट दिया गया, भारत और पाकिस्तान में। मगर चौबीस साल बाद उर्दू-बंगला को झगड़ा बनाकर पाकिस्तान भी दो टुकड़ों में बाँट दिया गया, पाकिस्तान और बांग्लादेश में। मजहब की तरह, क्या भाषा इंसान की पहचान बनती है? हाँ, लेकिन पहचान के ज़रिये सैंकड़ों हो सकते हैं। इंसान खुद चुनता है कि वह अपनी पहचान किस-किस जरियों से करता है।

हिन्दी राजभाषा है? राष्ट्रभाषा है? लोकभाषा है? क्या ब्रज, अवधी, मैथिली हिन्दी की बोलियाँ हैं? भाषा और बोली में क्या फर्क है? ये सब पेचीदा सवाल हैं। इनका पूरा जवाब भाषा विज्ञान में नहीं मिलेगा — इनका धरातल सामाजिक, राजनीतिक, और व्यक्तिगत है।

आखिरी बात। क्या हमारे देश, या हमारी दुनिया में, भाषा-बोलियाँ बढ़ रही हैं या कि अंग्रेजी/हिन्दी के चलते लुप्त हो रही हैं? जवाब मजेदार है। पढ़ के देखो।

अध्याय – 9

बहुभाषिता, साक्षरता, भाषा-शिक्षण एवं बौद्धिक विकास

रमाकांत अग्निहोत्री

पाठ की रूपरेखा

- परिचय
- उद्देश्य
- शीर्षक व उपशीर्षक
 - बहुभाषी भारत
 - भाषा, समाज, राजनीति
 - साक्षरता
 - भाषा-शिक्षण
 - बौद्धिक विकास

परिचय :

“बहुभाषिता, साक्षरता, भाषा-शिक्षण एवं बौद्धिक विकास” रमाकांत अग्निहोत्री के इस लेख में भारत के बहुभाषी होने के Unique तथा अनेकार्थी रूपों को उजागर किया गया है और उसके साथ ही बहुभाषिता को समस्या के रूप में न देखकर एक प्रचुर-स्रोत के रूप में देखने की बात पर जोर दिया गया है।

उद्देश्य :

- बहुभाषिता के अर्थ को गहराई से समझ पाएँगे?
- भाषा और राजनीति के गहरे संबंध को समझ पाएँगे?
- भाषा-शिक्षण में बहुभाषिता के महत्त्व को समझ पाएँगे?

बहुभाषी भारत

हमारा देश किस मायने में बहुभाषी है, यह समझना जरूरी है। खासकर उन लोगों के लिए जो साक्षरता, शिक्षा, बौद्धिक विकास एवं सामाजिक बदलाव के साथ जुड़े हैं। कुछ लोग तो केवल यही समझते हैं कि भारत बहुभाषी है क्योंकि उसके संविधान की आठवीं सूची में 18 भाषाएँ अनुसूचित हैं। हमारा देश केवल अपने संविधान की ही दृष्टि से बहुभाषी नहीं, यह अलग बात है कि उसका संविधान कई भाषायी आयामों की दृष्टि से अनूठा है। जब संविधान लागू हुआ तो आठवीं सूची में केवल 14 भाषाएँ थीं, 1967 में सिंधी जोड़ दी गई व 1992 में कोंकणी, मणिपुरी व नेपाली। स्पष्ट है कि भारतीय गणतंत्र में इतनी जगह है कि जब भी कोई समुदाय चाहे तो उपयुक्त राजनीतिक एवं प्रशासनिक तरीकों से आठवीं सूची में अपनी भाषा का नाम जुड़वा सकता है। यह महत्वपूर्ण बात है कि इसके लिए कोई आवश्यक नहीं कि उस भाषा की अपनी विशेष लिपि हो या कोई प्राचीन लंबा-चौड़ा साहित्य हो। एक बात और महत्वपूर्ण है संविधान की दृष्टि से। भारतीय संविधान बनाने वालों ने राष्ट्रभाषा का सवाल नहीं उठाया। इस बात से देश को मुक्त रखा कि राष्ट्र, राष्ट्रीयता व राष्ट्रभाषा में कोई अनिवार्य समीकरण है— ऐसे समीकरण जो लगभग सभी अन्य देशों में अनिवार्य माने जाते हैं। बहुत अधिक हुआ तो राज्य की दो, राष्ट्रीय भाषाएँ मान लीं। भारत में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया, हिंदी के प्रचार, विस्तार व

मानकीकरण के लिए प्रावधान रखे व अंग्रेजी को सह-राजभाषा का दर्जा दिया और अहिंदीभाषी भारतीयों को यह आश्वासन कि जब तक वे नहीं चाहेंगे, अंग्रेजी को इस देश से हटाया नहीं जाएगा। इन सब बातों के बावजूद, संवैधानिक बहुभाषिता भारत के बहुभाषी होने का केवल एक आयाम है जो उसकी बहुभाषिता की रक्षा तो करता है पर उसे परिभाषित नहीं करता, उसके मर्म को नहीं समझता। यह संविधान का काम भी नहीं है शायद।

- **टीप** — वर्तमान में आठवीं अनुसूची में 22 भाषाएँ अनुसूचित हैं।

कुछ अन्य लोग कहते हैं कि भारत में केवल 18–20 नहीं अपितु 1632 भाषाएँ हैं, क्योंकि ऐसी गिनती जनगणना दफ़्तर ने की है। इसलिए भारत बहुभाषी है। राजनीतिक या धार्मिक कारणों की वजह से गिनती करते वक्त कई छोटे-मोटे समुदायों की भाषाएँ, जो एक-दूसरे से काफी मेल खाती थीं, अलग-अलग गिना गया, और दूसरी तरफ भोजपुरी, अवधी, मैथली, बुंदेली आदि जैसी मुख्य भाषाओं को हिंदी भाषा के अंतर्गत गिन लिया गया। उत्तर भारत मुख्यतः हिंदीभाषी है, ऐसी मान्यता बनाने के लिए आखिर कोई आधार तो बनाना ही था। स्पष्ट है कि बहुभाषिता का एक आयाम यह भी है कि आप भाषा किसे कहते हैं। भाषा व बोली में अंतर करते हैं या नहीं। समाज भाषा किसे मानता है? भाषा-वैज्ञानिक भाषा किसे मानते हैं? क्या भाषा के बारे में समाज से हटकर कुछ भी सोचा जा सकता है? भाषावैज्ञानिक होने के नाते मैं समाज से कितना भी कहूँ कि अवधी अपने आप में एक भाषा है व हिंदी की माँ जैसी है, समाज यही कहेगा कि अवधी हिंदी की एक बोली है। भाषाविदों ने तो कह दिया कि एक शब्दकोश व कुछ संरचनात्मक नियमों की नियमबद्ध व्यवस्था भाषा है। अब इस परिभाषा में न तो समुदाय के लिए कोई स्थान है, न जनगणना की राजनीति के लिए और न ही मानकीकरण के सामाजिक परिणामों के लिए।

कुछ लोग भारत को बहुभाषी इसलिए मानते हैं क्योंकि हमारे यहाँ अखबार फिल्में, किताबें, टी.वी., रेडियो, शिक्षा, दफ़्तर, कचहरी आदि का कामकाज कई भाषाओं में एक साथ होता है। कोठारी कमीशन से लेकर आज तक त्रिभाषा सूत्र भारतीय शिक्षा का आधार-सा बना हुआ है। यह बात अलग है कि कुछ अनुसूचित जातियों के लिए इसका अर्थ रहा है, चार या पाँच भाषाएँ सीखी जाएँ व कुछ समृद्ध उत्तर-भारतीयों के लिए केवल एक या दो।

असल में भारतीय बहुभाषिता के कई आयाम हैं और यह कोई हैरानी की बात नहीं कि पश्चिमी एकभाषी देशों को यह सब एक सिरदर्दी-सा लगता है, अधिकतर पिछड़ेपन से जुड़ा हुआ। अभी तक जितने पहलुओं की हमने चर्चा की है उन सभी में भारतीय बहुभाषिता का कोई न कोई अंश अवश्य निहित है लेकिन सबको मिलाकर भारत की बहुभाषिता परिभाषित नहीं की जा सकती और उसको समझे बिना, उसके प्रति संवेदनशील हुए बिना, किसी भी साक्षरता, शिक्षा या सामाजिक परिवर्तन के कार्यक्रम को कैसे सफल बनाया जा सकता है?

सबसे मुख्य बात तो यह है कि बहुभाषी होना व्यक्तिगत या सामाजिक स्तर पर भारत के लिए कोई सिरदर्दी का विषय नहीं रहा, कभी भी। कई भाषाओं को अपने-आप में समेट लेना व अन्य देश-विदेश की भाषाओं से स्वतंत्रतापूर्वक आदान-प्रदान करना, भारतीय व्यक्ति व समाज के लिए एक आम बात है। यहाँ यह कोई अचरज की बात नहीं कि बेटा माँ-बाप से तो भोजपुरी में बात करता है, पुराने दोस्तों से भोजपुरी व हिंदी में, कॉलेज के दोस्तों से हिंदी या अंग्रेजी में व अपने व्यवसाय का सारा काम केवल अंग्रेजी में करता है। यही नहीं, कई परिस्थितियों में तो ऐसा भी होता है कि दो या अधिक भाषाएँ मिल-जुल जाती हैं। ऐसी प्रक्रिया से भाषाएँ समृद्ध होती हैं न कि खिचड़ी बनती हैं। एकभाषी मापदंडों से बहुभाषी क्षमता को नापा नहीं जा सकता। भाषाएँ मरती नहीं, हमारे यहाँ अक्सर बदलती रहती हैं। कोई भी समुदाय अपनी भाषाई पहचान को आसानी से नहीं छोड़ता। आज भी लोग बहस करते हैं कि भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम का माध्यम अंग्रेजी थी, हिंदी, हिंदुस्तानी, उर्दू या लोगों

की स्थानीय भाषाएँ। किसी-न किसी स्तर पर मानना पड़ेगा कि सभी थीं। जब तक कोई विशेष राजनीतिक या धार्मिक प्रश्न सामने नहीं आता, हम एक भाषा, एक भौगोलिक परिधि, एक समुदाय, एक धर्म आदि के चक्रव्यूह से दूर ही रहते हैं।

भाषा, समाज, राजनीति

लेकिन ऐसा नहीं है कि भाषा, सामाजिक सत्ता व राजनीति में कोई संबंध नहीं। न जाने कितने वर्षों से संघ लोकसेवा आयोग के बाहर कई लोग इसलिए धरना दिए बैठे हैं क्योंकि उनके मतानुसार अंग्रेजी का ज्ञान भारतीय शासकीय तंत्र में कोई पद प्राप्त करने के लिए आवश्यक नहीं होना चाहिए। वे नहीं मानते कि हमारे लिए केवल अंग्रेजी ही ज्ञान की भाषा है या अंग्रेजी के बिना भारत का वैज्ञानिक व तकनीकी विकास संभव ही नहीं। या कि हम और अधिक पिछड़ जाएँगे, हमारे विचार फिर से दकियानूसी हो जाएँगे, वो जो विश्व के साथ जुड़े रहने का एक झरोखा है, हमारे पास वह बंद हो जाएगा। उनका कहना है कि यदि फ्रांस अपना काम फ्रेंच में व जर्मनी अपना काम जर्मन में कर सकता है तो भारत अपना काम भारतीय भाषाओं में क्यों नहीं कर सकता। ऐसा क्यों है कि अंग्रेजी ही सामाजिक सत्ता पाने का एकमात्र तरीका है? ऐसा क्यों है कि हर महत्वपूर्ण क्षेत्र में—वैज्ञानिक या तकनीकी, शैक्षिक या व्यापारी, शासकीय या न्यायिक, चिकित्साशास्त्रीय या औद्योगिक सभी जगह अंग्रेजीवालों का बोलबाला है? ऐसा क्यों है कि त्रिभाषीय कार्यक्रम हिंदीभाषी क्षेत्रों में अधिकतर द्विभाषी होकर रह गया? भाषा और राजनीति में गहरे संबंध से आप कहाँ तक भागेंगे?

नई आर्थिक-नीति को लेकर एक बहुत ही मोहक शब्दकोश लोगों तक इस खूबसूरती से पहुँचाया जा रहा है कि लोग उसे लगभग अपना ही मानने लग गए हैं। भाषा के राजनीतिक आयामों की वास्तविकता अब कुछ साफ होने लगी है। कुछ झारखंड में, कुछ सिंधी, कोंकणी, नेपाली व मणिपुरी के संविधान की आठवीं सूची में आने से, कुछ उन लोगों के प्रयासों की विफलता से जो साक्षरता से जुड़े हैं और कुछ उन लोगों की घोर निराशा से जो दूर-सुदूर गाँवों में जाकर एक तरफ तो गाँववालों की भाषाओं को बचाना ही नहीं बल्कि समृद्ध करना चाहते हैं और दूसरी तरफ उन्हें सामाजिक तरक्की के लिए मानकीकृत भाषाएँ पढ़ाने को भी अपने आप को मजबूर पाते हैं। बहुभाषिता के इस तरह कई आयाम हैं।

एक अपार स्रोत है हमारी शक्ति का। लेकिन यदि हम बहुभाषिता के बारे में और अधिक संवेदनशील होकर कुछ गहराई से नहीं सोचेंगे तो हम उस प्राचीन सदियों से चली आ रही, हमारे घर-घर में बसी अपार संपत्ति का कुछ फलदायी इस्तेमाल नहीं कर पाएँगे। यह दुर्भाग्य का विषय है कि हमारे अधिकतर भाषावैज्ञानिक अपने शोध-कार्य को संरचनात्मक सीमाओं में ही रखते हैं। उसे ही विज्ञान समझते हैं। और अधिकतर जो बातें संरचना की दृष्टि से पश्चिमी भाषाओं में दिखाई जा चुकी हैं उन्हें अपनी भाषाओं में निरंतर ढूँढ़ने का प्रयास करते रहते हैं। शायद वह समय आ गया है कि यदि भाषाविज्ञान एक सामाजिक विज्ञान है तो भाषाविद् अपने आप से कुछ सामाजिक सवाल पूछें व अपने शोध-कार्य को उन सवालों से जोड़ें।

अभ्यास

-
- भाषा व राजनीति में संबंध है इसकी क्या वजहें बताई गई है?
 - क्या आपको भी लगता है कि हमारा देश/समाज बहुभाषी है। उदाहरण देकर बताइए।
-

साक्षरता

साक्षरता कार्यक्रमों में शिक्षाकर्मी अक्सर ये मानकर चलते हैं कि जो पढ़ा-लिखा नहीं वह अज्ञानी है और अज्ञान का यही अंधेरा उसकी गरीबी व दुःखों का एकमात्र या मुख्य कारण है। वे लोग यह भी मानकर चलते हैं कि साक्षरता से, यानी लिखना-पढ़ना सीखने से या कुछ गिनती व पहाड़े याद करने से उसका अज्ञान दूर हो जाएगा और उसके साथ-साथ गरीबी भी। ऐसी अवधारणाएँ कितनी गलत, बेबुनियाद व खतरनाक हो सकती हैं, यह समझने में एक भाषावैज्ञानिक काफी मदद कर सकता है। वह शायद यह भी समझा सकता है कि इस प्रकार की अवधारणाएँ मासूमियत की निशानी नहीं, पर उनके पीछे एक पूरा राजनीतिक एजेण्डा छुपा रहता है।

पहली बात तो यह कि जिसे पढ़ना-लिखना नहीं आता वह अज्ञानी नहीं है। वह पूरी तरह से अपनी भाषा या भाषाएँ समझ व बोल सकता है। उनमें कहानी व कविता कह सकता है। विवरण व इतिहास सुना सकता है। अपनी भाषा के साथ नए-नए प्रयोग कर सकता है। अपनी भाषा का प्रयोग कर सकता है शोषण के लिए, अपनी पहचान के लिए या फिर अपने अस्तित्व के लिए लड़ने के लिए। साक्षरता में जुटे शिक्षाकर्मी के लिए यह समझना आवश्यक है कि उसके विद्यार्थी उसके सामने ज्ञान व भाषाओं की एक संपत्ति लिये बैठे हैं। ऐसी संपत्ति जिसका सदुपयोग करने से साक्षरता सार्थक हो सकती है।

उदाहरण के लिए, साक्षरता का कार्यक्रम हम सीखनेवालों की भाषाओं से ही क्यों न शुरू करें। यदि वे अपनी भाषा लिखना सीख जाएँगे तो मानकीकृत भाषा खुद ही सीख जाएँगे। अपनी भाषाएँ लिखने की प्रक्रिया में उनके सामने अपनी भाषाओं की समानताएँ व अंतर कुदरती रूप से सामने आएँगे। इन सब बातों को वे आसानी से अपने माहौल से जोड़ पाएँगे। भाषागत विश्लेषण से बौद्धिक क्षमता व सवाल उठाने की ताकत का सार्थक विकास संभव है।

भाषा-शिक्षण

बहुभाषिता केवल साक्षरता में ही नहीं अपितु भाषा-शिक्षण में भी बहुत मददगार हो सकती है। वास्तव में, हमारे लिए तो ज़रूरी है कि हम ऐसे तरीके निकालें जिनका आधार बहुभाषिता ही हो। दुर्भाग्यवश हम निरंतर एकभाषी देशों में बनाए गए तरीकों व सामग्री का उपयोग अपने देश में करते रहे हैं। जब व्याकरण व अनुवाद पर आधारित तरीकों की हवा चली तो हमने अंग्रेजी ही नहीं संस्कृत व उर्दू भी उसी तरीके से पढ़ाई। फिर व्यवहारवाद का जमाना आया और हम सब मानो पावलोव के कुत्ते — जैसे हो गए—अधिक अभ्यास, अधिक ज्ञान। एक ही चीज को बार-बार याद करो तो वह आदत—सी बन जाएगी। व्याकरण व अनुवाद की छुट्टी। आजकल संप्रेषण-आधारित तरीकों (कम्यूनिकेटिव एप्रोचज) की बात होती है। फंक्शनलिज्म का जमाना है। काम होना चाहिए। परिस्थिति उपयुक्त भाषा बोलनी व लिखनी आनी चाहिए। मुझे कभी यह समझ नहीं आया कि एकभाषी समाज में स्थापित मानदंडों से आप बहुभाषी समाज की क्षमताओं को कैसे नाप सकते हैं?

अक्सर आपने सुना होगा कि भारत में अंग्रेजी के स्तर बहुत तेजी से गिर रहे हैं और कई भारतीय अंग्रेजी वाक्यों व अभिव्यक्तियों को लेकर भारतीयों का काफी मजाक भी उड़ाया जाता है। लेकिन क्या कोई एकभाषी अंग्रेजी बोलनेवाला भोजपुरी, हिंदी या तमिल जैसी अन्य भाषाएँ भी बोलता है? जो बात साक्षरता के संदर्भ में कही है वही मुझे भाषा-शिक्षण के संदर्भ में भी कहनी है। एक कक्षा है आपके सामने, जो एकभाषी नहीं है। अलग-अलग भाषाएँ बोलनेवाले कई बच्चे हैं, उस कक्षा में। इस बात को नकारने की बजाय या इसे एक समस्या समझने की बजाय, इसका अत्यधिक क्रियात्मक उपयोग कक्षा में ही हो सकता है।

उदाहरण के लिए मान लीजिए आपकी कक्षा में तीन-चार अलग-अलग भाषाएँ बोलनेवाले बच्चे हैं। यह कोई अनूठी बात नहीं। दिल्ली के किसी भी स्कूल में हिंदी, भोजपुरी, बंगाली व तमिल बोलनेवाले बच्चे एक ही कक्षा

में हो सकते हैं। गाँवों या छोटे-मोटे शहरों में भी ऐसी परिस्थिति हो सकती है। होशंगाबाद (मध्य प्रदेश) के किसी भी मिडिल या हाईस्कूल की कक्षा में अक्सर बुंदेली, मराठी, हिन्दी व गोंडी बोलने वाले बच्चे साथ-साथ पढ़ते हैं। एक गतिविधि पर गौर कीजिए। आठवीं कक्षा मानकर चलिए। अध्यापक बच्चों से पूछकर हिंदी के कुछ शब्द बोर्ड पर लिख देता है। फिर उन्हीं से उनके बहुवचन पूछकर लिख देता है। अध्यापक का काम लगभग खत्म। अब तमिल बच्चा उठकर उन्हीं शब्दों के एकवचन या बहुवचन सभी बच्चों को सिखाता व लिखवाता है। देवनागरी लिपि में तमिल लिखी जा सकती है। कोई भी भाषा किसी भी लिपि में लिखी जा सकती है। अध्यापक भी इस प्रक्रिया में कुछ तमिल शब्द सीख रहा है, बच्चों के साथ बैठा। इसके बाद इसी तरह बंगाली बच्चे की बारी आती है। काफी मसाला हो गया दो दिन के लिए। बच्चों को तीनों भाषाओं के एकवचन-बहुवचन बनाने के लिए नियम निकालने हैं व सारी कक्षा को समझाने हैं। अध्यापक को भी।

आपका यह पूछना अनुचित न होगा कि इसमें पढ़ाई क्या हुई? सच पूछिए तो काफी पढ़ाई ही नहीं बल्कि और भी बहुत कुछ हुआ। बच्चों व अध्यापक के बीच का फासला कुछ कम हुआ। दूसरे, बच्चों को यह अहसास हुआ कि उनकी भाषा का भी स्कूली पाठ्यक्रम में कोई स्थान है। जब बच्चे और अध्यापक मिलकर यह समझते हैं कि बुंदेली भी उतनी ही नियमबद्ध व व्याकरणयुक्त है जितनी हिंदी तो बुंदेली बोली के लिए उनके दिल में जो एक अनादर की भावना बनी हुई थी, दूर होने लगती है। तीसरे, बच्चे एक-दूसरे की भाषा के प्रति अधिक संवेदनशील होने लगते हैं। चौथे, भाषाई संरचना के प्रति जागरूक होते हैं— भिन्न-भिन्न भाषाओं की समरूपता व अंतरों को पहचानने लगते हैं। वास्तव में, यही व्याकरण है। पाँचवाँ, जो कि शायद सबसे अधिक महत्वपूर्ण है, वे एक ऐसी प्रक्रिया से गुजरते हैं जिसे वैज्ञानिक माना गया है।

अभ्यास

- आपकी कक्षा में बच्चे कौन-कौन सी भाषाएँ बोलते हैं?
- कक्षा के विभिन्न भाषाओं को उपयोग करने के क्या सकारात्मक पहलू बताएँ हैं? क्या आप इनसे सहमत हैं?

बौद्धिक विकास

विज्ञान व वैज्ञानिक तरीके की क्या परिभाषा हो? इस पर काफी वाद-विवाद है। लेकिन शायद इस बात पर कोई विशेष असहमति न हो कि सामग्री या आँकड़े एकत्रित करना, उनका समरूपता या किसी अंतर के आधार पर अलग-अलग वर्गीकरण करना व उस वर्गीकरण के आधार पर कुछ नियम बनाना और फिर उन नियमों को और भी ज़्यादा सामग्री पर जाँचना वैज्ञानिक प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। और जब बच्चे बार-बार ऐसी प्रक्रिया से गुजरते हैं तो उनका दिमागी विकास लाज़िमी है।

पहले ऐसा माना जाता था कि बहुभाषिता व बौद्धिक स्तर में एक उलटा रिश्ता है— जैसे-जैसे बहुभाषिता बढ़ती है, बौद्धिक स्तर घटता है। इसी तरह की मान्यताएँ व शोध-कार्यक्रम जरूरी भी थे एकभाषी उपनिवेशवादियों के लिए, जो बहुभाषी देशों पर राज करना चाहते थे। लेकिन आज पूरी तरह से साबित हो चुका है कि बहुभाषिता व बौद्धिक स्तर में सीधा रिश्ता है— जैसे-जैसे बहुभाषिता बढ़ेगी, बौद्धिक-स्तर भी ऊँचा होगा।

हमारे पास तो पहले ही भंडार है बहुभाषिता का। हम क्यों न कोशिश करें ऐसी पठन-सामग्री बनाने का, पढ़ाने के ऐसे तरीके निकालने का व मूल्यांकन के ऐसे मापदंड बनाने का जिनका आधार बहुभाषिता हो। यह कोई कठिन कार्य नहीं है। केवल हमें अंधे होकर एकभाषीय संदर्भ से उपजे तौर-तरीकों की नकल को बंद करना होगा।

अभ्यास :

-
- भारत को किन-किन कारणों से बहुभाषी माना जाता है?
 - लेखक के अनुसार एकभाषी मापदंडों से बहुभाषी क्षमता को नहीं नापा जा सकता। कुछ एकभाषी समाजों/देशों का उदाहरण लेकर भारत की स्थिति के साथ तुलना करते हुए इस कथन पर चर्चा करें।
 - उदाहरणों की मदद से चर्चा करें कि भारत के संदर्भ में साक्षरता/शिक्षा में शिक्षक किस प्रकार अक्सर पाई जाने वाली बहुभाषिता को छात्रों के साथ इस्तेमाल कर सकता है?
 - बहुभाषिता और बौद्धिक स्तर/विकास में विपरीतात्मक संबंध मानने के पीछे क्या कूटनीति रही होगी? लेखक के अनुसार दोनों में किस प्रकार का रिश्ता है? कुछ ऐसे अध्ययनों के बारे में पता लगाएँ जिनमें इन दोनों के बीच सीधा संबंध स्थापित होता है?
 - संविधान की आठवीं अनुसूची में वर्तमान में कितनी भाषाएँ हैं?
 - भारत में कुल कितनी भाषाएँ हैं?
 - राज भाषा का मुद्दा भाषायी मुद्दा कम राजनैतिक मुद्दा ज़्यादा है इस सम्बन्ध में आपके क्या विचार हैं?
 - जिसे पढ़ना, लिखना नहीं आता वह अज्ञानी नहीं है। ऐसा क्यों कहा गया है?
-

पाठ की रूपरेखा

- परिचय
- उद्देश्य
- शीर्षक व उपशीर्षक
 - अमरीका बनाम भारत
 - भाषा और पहचान
 - भाषा और समुदाय
 - समेकन

परिचय :

आपने यह अक्सर सुना होगा कि भारत विविधताओं से भरा देश है। यहाँ खान-पान, रीति-रिवाज, पहनावे, भोजन, धर्म आदि में बहुत विविधता है। इसी तरह यहाँ भाषाओं में भी विविधता है। यहाँ अलग-अलग क्षेत्रों व समुदायों की अपनी अलग भाषा है और न जाने कितना समय गुजर जाने के बाद भी ये भाषाएँ जीवित हैं। इसका एक प्रमुख कारण यह है कि भाषा हमारी पहचान व अस्मिता से जुड़ी हुई है। आपने महसूस किया होगा कि हम बाहर व्यक्तियों से चाहे जिस भाषा में बात करें अपने क्षेत्र के, समुदाय के लोगों से अपनी मातृभाषा या स्थानीय भाषा में ही बात करते हैं क्योंकि हम उसमें अपने को सहज महसूस करते हैं, उससे हमारा एक अपनापन होता है। यह कह सकते हैं कि भाषा हमारी पहचान का माध्यम होता है। प्रस्तुत अध्याय में इसी भाषा व पहचान के मुद्दे पर चर्चा की गई है तथा अमरीका व भारत में भाषायी विविधता व विविध भाषाओं की सजीवता की आपस में तुलना की गई है। इस पर चर्चा करते हुए यहां पर भाषाओं व उनको बोलने वालों के विस्तृत आँकड़े भी दिए गए हैं।

उद्देश्य :

- भारत की भाषायी विविधता को जान पाएँगे?
- आप समझ पाएँगे कि किन कारणों से भारत में विभिन्न भाषाएँ आज भी जीवित हैं।
- भाषाओं के प्रति उदारता व्यक्ति को बहुभाषी भी बनाती है, वहीं भाषा की संकीर्णता विवाद को जन्म देती है। इन दोनों मुद्दों पर आप विश्लेषणात्मक चिंतन कर पाएँगे।
- अध्याय में दिए आँकड़ों के आधार पर किए दावों की नए आँकड़ों के आलोक में विवेचना कर पाएँगे।

अमरीका बनाम भारत

भाषावैज्ञानिकों और जनगणना विशेषज्ञों का कहना है कि हालांकि अल्पसंख्यक समुदाय अपनी पहचान बनाए रखने के लिए अपनी भाषा को सजीव रखने का भरसक प्रयास करता है लेकिन वह शायद ही इसमें सफल होता है। इस मत की पुष्टि का साक्षात् उदाहरण है— संयुक्त राज्य अमेरिका जो यूरोप, एशिया, अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका से आए हुए विभिन्न समुदायों का देश है। यद्यपि इन समुदायों की अलग-अलग भाषाएँ और बोलियाँ थीं, किंतु संयुक्त राज्य अमेरिका मुख्य रूप से एकभाषी देश है। यह

सही है कि 1983 की अमरीकी जनगणना में यह कहा गया है कि उस देश में 83 विभिन्न बोलियाँ बोली जाती हैं किंतु जहाँ तक ठोस आँकड़ों का प्रश्न है, सिर्फ निम्नलिखित भाषाओं का विवरण दिया गया है : स्पैनिश 1,46,00,000, चीनी 8,06,000, जापानी 7,01,000 कोरियन 3,54,000 और वियतनामी 2,61,000 (गार्जियन, 24 जून 1984)। हालाँकि अमरीकी संविधान में किसी भाषा को राष्ट्रभाषा की संज्ञा नहीं दी गई है, लेकिन यह स्पष्ट रूप से लिख दिया गया है कि उसी व्यक्ति को अमरीकी नागरिकता दी जाएगी जो अंग्रेजी भाषा जानता है। हाल में कुछ चुनिन्दे नगरों के स्कूलों में कुछ गैर-अंग्रेजी भाषाओं को पढ़ाने की व्यवस्था की गई है, लेकिन अधिकांश स्कूलों में इस तरह की कोई व्यवस्था नहीं है। अधिकांश अप्रवासी अपने बच्चों को अपनी मातृभाषा सिखाने के लिए रविवारीय विद्यालयों का सहारा लेते हैं, जो उनके सामुदायिक संगठनों या चर्च द्वारा चलाए जाते हैं। स्पष्ट है कि इस तरह की व्यवस्था अधिक दिनों तक कारगर ढंग से नहीं चल पाती है और तीसरी पीढ़ी के आते-आते अप्रवासी अमरीकी अपने बाप-दादाओं की भाषाएँ भूलने लगते हैं। जातीय चेतना के जागरण के चलते गैर-अंग्रेजी भाषाओं को स्कूलों में पढ़ाने की जो व्यवस्था अमेरिका में की जा रही है, उससे राजनीतिज्ञों का एक बड़ा तबका नाराज़ है, जैसा कि सिनेटर वाल्टर इडलस्टन के इस बयान से साफ है : अगर हम हाल में अपनाए गए रास्ते पर चलते रहे तो मेरा विश्वास है कि हम अपनी उस एकता को, जिसे हमारी मानी हुई भाषा ने बना रखा है, अपूरणीय क्षति पहुँचाएँगे।

अभ्यास

- तीसरी पीढ़ी तक आते-आते अप्रवासी अमरीकी अपने बाप-दादाओं की भाषा भूलने लगते हैं ऐसा क्यों कहा गया है?
- क्या अमरीकी संविधान में किसी भाषा को राष्ट्र भाषा की संज्ञा दी गई है?
- क्या कारण है कि अमेरिका में अप्रवासी अमेरीकी अपनी भाषाओं को जीवित नहीं रख पा रहे हैं जबकि भारत में आज भी कई भाषाएँ। बोलियाँ जीवित हैं?
- सिनेटर वाल्टर इडलस्टन कहते हैं— अगर हम हाल में अपनाए गए रास्ते पर चलते रहे तो मेरा विश्वास है कि हम अपनी उस एकता को, जिसे हमारी मानी हुई भाषा ने बना रखा है, अपूरणीय क्षति पहुँचाएँगे। यहां सिनेटर हाल ही में अपनाएँ गए किस रास्ते की ओर इशारा कर रहे हैं? और उन्हें ऐसा क्यों लगता है कि इससे एकता को क्षति पहुँचेगी?

हालाँकि संयुक्त राज्य अमेरिका और भारत दोनों जनतांत्रिक देश हैं, भाषा के संदर्भ में देखने पर भारत की स्थिति अमेरिका से बिल्कुल भिन्न है। देश के बँटवारे के और स्वतंत्रता के प्राप्ति के समय और उसके बाद सिंधी भाषाभाषी पाकिस्तान से भारत आए और देश के विभिन्न भागों में बस गए। इस बात के प्रायः पचास साल बीत गए हैं किंतु अभी भी भारत में, 1981 की जनगणना के अनुसार, 20,44,389 सिंधीभाषी हैं (जिसमें कच्ची भाषी भी शामिल हैं) ये देश के नौ राज्यों और एक संघीय क्षेत्र में बिखरे हुए हैं। सिंह और मनोहरन (1993 : पृ. 267) के अनुसार यह भाषा इकसठ समुदायों के द्वारा बोली जाती है (लैंग्वेज एंड स्क्रिप्ट्स, पीपुल ऑफ इंडिया, खंड नौ, कुमार सुरेश सिंह और एस. मनोहरन)। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जो दूसरा अप्रवासी काफी संख्या में भारत में आया है, वह तिब्बतियों का है। 1981 की जनगणना के अनुसार, उनमें 63, 431 ऐसे तिब्बती हैं जो भारतीय नागरिक हैं और इस भाषा का मातृभाषा के रूप में प्रयोग करते हैं, वे मुख्यतः अरुणाचल प्रदेश, दिल्ली और सिक्किम के निवासी हैं। (इस आँकड़े में तिब्बती शरणार्थी सम्मिलित नहीं हैं)। अगर हम यह कहकर बात टाल दें कि ये तो तिब्बतियों की पहली या दूसरी पीढ़ी है और बाद की पीढ़ियाँ अपनी भाषा भूल जाएँगी तो यह गलत होगा क्योंकि हमारा इतिहास ऐसा नहीं बताता। पिछले चालीस वर्षों में चीनियों का अप्रवास नहीं हुआ है, अर्थात् जो भी भारतीय चीनी नस्ल के हैं, वे कम-से-कम दूसरी या तीसरी पीढ़ी के हैं, फिर भी 1971 की जनगणना के अनुसार हमारे देश के 10,958 नागरिक चीनी भाषा को मातृभाषा के रूप में बोलते हैं। ये चीनी मुख्यतः पश्चिम बंगाल में रहते हैं। उसी प्रकार 10,504 भारतीय फारसी को अपनी भाषा मानते हैं। ये फारसी बोलनेवाले हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश के निवासी हैं। 1971 की जनगणना के अनुसार पंजाब,

जम्मू-कश्मीर और चण्डीगढ़ में रहनेवाले 8,688 भारतीय नागरिक पश्तोभाषी हैं। 1981 की जनगणना के अनुसार 28,116 भारतीय नागरिक अरबी-भाषी हैं। ये मुख्यतः आंध्र प्रदेश के निवासी हैं, पांडिचेरी में रहनेवाले 2,593 भारतीय फ्रेंच बोलते हैं। असम में रहनेवाले 1,381 भारतीय नागरिकों ने यह दावा किया है कि उनकी मातृभाषा कई है। उसी प्रकार अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह में रहने वाले 2,871 भारतीय नागरिक बर्मी को अपनी मातृभाषा मानते हैं। पश्चिम बंगाल के 62 भारतीय नागरिक आर्मेनियनभाषी हैं और दिल्ली नगर के 506 व्यक्ति हिब्रू को अपनी मातृभाषा मानते हैं। पांडिचेरी के 13 भारतीय नागरिकों ने लाओशियन को अपनी मातृभाषा बताया है। इन सभी नागरिकों के पूर्वज काफी पहले भारत में आए थे। इनकी भाषाएँ जीवित हैं जो इस बात को प्रमाणित करती हैं कि भारतीय समाज अल्पभाषियों की भाषाओं को जीवित रखने के लिए प्रोत्साहित करता है। यही कारण है कि भारत के 2,02,440 ऐंग्लो इंडियनों ने बिना झिझक अंग्रेजी को अपनी मातृभाषा घोषित किया है। ऐसा नहीं कि ये तिब्बती, चीनी, फारसी, पश्तो, हिब्रू, अरबी या आर्मेनियन बोलनेवाले भारतीय मूल की कोई भाषा नहीं बोलते। इनमें से अधिकांश कम-से-कम द्विभाषी हैं। दूसरे भाषाभाषियों से घिरे रहकर भी इन्होंने अपनी भाषा को जीवित रखा है क्योंकि ये इसे अपनी पहचान के लिए आवश्यक मानते हैं।

अभ्यास

- भारत में कौन-कौन सी भाषाओं को बोलने वाले समुदाय हैं?

भाषा और पहचान

जिस प्रकार पहचान बनाए रखने के लिए अपेक्षाकृत नए अप्रवासी भारतीय अपने पूर्वजों की भाषा को सँजोए हैं, उसी प्रकार अन्य समुदाय के लोगों ने भी अपनी मातृभाषा को बचा रखा है। उदाहरण के लिए, तिब्बती-बर्मन समूह की एक भाषा बोडो को लें, जो 1981 की जनगणना के अनुसार असम, मेघालय और पश्चिम बंगाल में 28,619 लोगों द्वारा बोली जाती है। इसी ग्रुप की दो अन्य भाषाएँ हैं दोआरी (9,103) और करबी (मिकिर) (12,600) ये सभी भाषाएँ बोडो समुदाय के व्यक्ति अपने समुदाय के अंतर्गत ही संपर्क के लिए प्रयोग में लाते हैं, दूसरे समुदायों से संपर्क सूत्र बनाए रखने के लिए ये अन्य भाषाओं का प्रयोग करते हैं।

नागा समुदाय के विभिन्न उपसमुदायों की पहचान अपनी-अपनी अलग भाषा से की जा सकती है। अंगामी, आओ, चक सांग, चांग, जेमा, कबुई, कुछ, खिमानगन, कोनयक, लोथा, माओ, मरम, मरिंग, फोम, पोचुरी, रेंगम, संगतम, सेमा, तांगखुल, यिमचुनगर और जेलियांग उपजातियों की भाषाएँ भी इन्हीं नामों की हैं (सिंह व मनोहरन, वही, पृ. 87-88)। पीपुल ऑफ इंडिया सर्वे में इक्कीस नागा उपजातियों और उसकी इक्कीस भाषाओं का उल्लेख है। भिन्न उपजातियाँ आपस में 'नागामीज' में बातें करती हैं जो असमिया भाषा को आधार बनाकर एक तरह की खिचड़ी भाषा है। प्रायः सोलह उपसमुदायों के लोग इसका प्रयोग करते हैं। तेरह उपसमुदाय हिन्दी का, चार असमिया या मैनी (मणिपुरी) का, चार अंगामी का, तीन कबुई का, दो कोनयन का और एक बांग्ला का प्रयोग अंतर-उपसमुदाय संचार के लिए करते हैं। इस सर्वे के अनुसार, सभी उपजातियाँ कम-से-कम द्विभाषी हैं। बारह उपजातियों के लोग तीन भाषाओं का प्रयोग करते हैं और पाँच उपजातियों में मातृभाषा के अतिरिक्त चार भाषाओं का प्रयोग किया जाता है। याद रहे कि नागालैंड में प्रशासन और शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है और हिन्दी जाननेवालों की संख्या भी कम नहीं है। मैंने नागा जनजाति और उसकी उपजातियों की चर्चा विस्तार से इसलिए की है कि हम परिस्थिति की संश्लिष्टता और गतिशीलता को समझ सकें। ये सभी उपजातियाँ अपने आप पर और अपनी भाषा पर गर्व करती हैं और ऐसा समझती है कि अपनी पहचान के लिए भाषा को जीवंत बनाए रखना आवश्यक है। जिन उपजातियों के लोग-दूसरी उपजातियों से जितना अधिक मिलते-जुलते हैं, उनके बीच उतनी ही अधिक बहुभाषिकता है। इसके अतिरिक्त ये जनजातियाँ उस क्षेत्र के समतल क्षेत्र के रहनेवालों से बातचीत के लिए नागामीज का प्रयोग करती हैं और उत्तरी पूर्वी भारत के बाहर के भारतीयों से बातचीत के लिए अंग्रेजी या हिंदी का, संक्षिप्त में यों कहा जा सकता है कि नागा जनजाति की विभिन्न उपजातियों के लोग अपनी पहचान के लिए आपस में अपनी मातृभाषा का प्रयोग करते हैं। दूसरी उपजातियों से बातचीत के लिए उनकी भाषा का या नागामीज का प्रयोग करते हैं। अपने क्षेत्र से बाहर के लोगों से बातचीत के लिए हिन्दी या अंग्रेजी का प्रयोग करते हैं। एक औसत नागा व्यक्ति के लिए 'बाहरी व्यक्ति' का अर्थ है 'नागा

जनजातियों के निवास—स्थान (नागालैंड और मणिपुर) से बाहर का व्यक्ति चाहे वह बिहार का हो या पंजाब का या इंग्लैंड का।

भाषा के आधार पर झगड़े : जैसा कि हमने अभी पढ़ा गोआ में कोंकणी भाषी व मराठी भाषी आपस में झगड़ते रहते हैं। यह सही है कि भाषा के आधार पर कई बार झगड़े होते हैं। अपने समुदाय की पहचान को सशक्त करने के लिए इंसान चाहता है कि उसकी भाषा का विस्तार हो और आस-पास रहने वाले दूसरे भाषी लोग भी वही भाषा बोलें जो कि उसकी भाषा है। इसका एक ताजा उदाहरण अभी कुछ समय पहले देखने को मिला जब मुंबई में विभिन्न भाषा-भाषी लोगों को जबरन मराठी भाषा बोलने या सीखने को बाध्य किया गया। लेकिन यह विचारणीय प्रश्न है कि अपनी भाषा के प्रति यह संकिर्णता कहाँ तक उचित है आखिरकार बहुभाषिता हमारी धरोहर है जिस पर हमें गर्व होना चाहिए।

अगर नागा जनजाति की भाषा संबंधी उदारता उन्हें बहुभाषी बना देती है तो गोआ निवासियों का भाषा विमोह उन्हें संकीर्ण विवादों और झगड़ों में उलझाए हुए है। गोआ के मूल निवासियों का एक बड़ा हिस्सा कोंकणीभाषी है। स्मरणीय है कि कोंकणी इंडो-आर्यन ग्रुप की दक्षिणी शाखा की भाषा है। मराठी भी इसी ग्रुप की भाषा है, फिर भी मराठी और कोंकणी बोलनेवालों के आपसी संबंध अच्छे नहीं हैं। इसका जितना संबंध इन भाषाओं के संरचनात्मक विभेद से है, उससे ज्यादा संबंध इस बात से है कि मराठी इस क्षेत्र के मराठों की भाषा है और कोंकणी सारस्वत ब्राह्मणों, दैव्यायन ब्राह्मणों और कैथलिकों की। देखने वाली बात है कि जो मराठे कोंकणीभाषी हैं वे अपने को गोमंतक मराठी कहते हैं, महाराष्ट्रीय (मराठी) नहीं। दूसरे शब्दों में, यों कहें कि झगड़े की जड़ मराठों और गोअनीज जन समुदाय का स्वार्थ है, भाषाएँ झगड़े की पहचान और प्रतीक बनकर रह गई हैं। विभिन्न समुदायों को लगता है कि अगर कोंकणी या मराठी उन पर थोपी गई तो उनकी खासियत खत्म हो जाएगी। यही बात कर्नाटक राज्य में स्थित बेलगाँव के संबंध में भी कही जा सकती है। वहाँ के कन्नड़भाषियों और मराठीभाषियों का झगड़ा तब से चल रहा है जब से भाषाधार राज्यों का गठन हुआ है। शायद यह तब तक चलता रहेगा जब तक निष्पक्ष जनमत के आधार पर बेलगाँव का विभाजन नहीं हो जाएगा। स्मरणीय है कि सिर्फ गोआ और बेलगाँव में ही ऐसे झगड़े नहीं हैं। नेपालीभाषी और अन्य भाषाभाषी लोगों के बीच सिक्किम और दार्जिलिंग में जो झगड़े और विवाद होते रहते हैं, वे अपनी अलग पहचान को लेकर हैं। भाषाएँ उस पहचान के प्रश्न को सिर्फ तीव्र कर देती हैं, वे इनकी अभिव्यक्ति मात्र हैं, कारण नहीं। ये इस बात का संकेत हैं कि ये अन्य समुदाय विकासोन्मुख भारत में अपनी पहचान बनाए रखना चाहते हैं और अपना स्थान लाभप्रद बनाना चाहते हैं।

अभ्यास

- नागा जनजाति की भाषा संबंधी उदारता उन्हें बहुभाषी बना देती है। नागा लोग ऐसा क्या करते हैं कि उन्हें भाषा के सम्बन्ध में उदार कहा गया है?

भाषा और समुदाय

1881 से लेकर 1991 तक की भारतीय जनगणना में लोगों से सिर्फ यह पूछा जाता रहा है कि उनकी मातृभाषा क्या है और वे दूसरी और कौन-सी भाषाएँ जानते हैं। इसके विपरीत, पीपुल ऑफ इंडिया प्रोजेक्ट में दो प्रश्नों पर जोर दिया गया:

- आपके घर और परिवार में किस भाषा या बोली का प्रयोग किया जाता है? उसे किस लिपि में लिखा जाता है?
- अपने समुदाय/उपजाति से बाहर के लोगों के संपर्क में रहने के लिए आप किस भाषा/बोली और लिपि का प्रयोग करते हैं?

इन प्रश्नों की अपनी अहमियत है जिसे हिन्दी-उर्दू के संदर्भ में समझा जा सकता है। सर्वे के अनुसार भारतीय मुसलमान आपस में सिर्फ उर्दू-बांग्ला या मलयालम में बातचीत करते हैं लेकिन अंतर-समुदाय बातचीत के लिए वे हिंदी या क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग करते हैं। सिर्फ गढ़वाल क्षेत्र के मुसलमानों ने कहा है कि वे उर्दू की जगह आपसी बातचीत में भी हिंदी या गढ़वाली का प्रयोग करते हैं। हिन्दी क्षेत्र के बाहर कच्छ के मुसलमानों

ने स्वीकार किया है कि वे कच्ची में बातचीत करते हैं। यहाँ यह कहना आवश्यक नहीं है कि भाषा की संरचना की दृष्टि से हिन्दी और उर्दू में शायद ही कोई अंतर है। अगर भिन्नता है तो वह शब्द-भंडार के स्तर पर है, व्याकरण की नहीं है। हाँ, लिपि का अंतर तो है ही। यह बात महत्त्व की है कि मुसलमान समुदाय आम तौर पर फारसी-अरबी लिपि का प्रयोग करता है और हिन्दू समुदाय देवनागरी लिपि का। इसी अंतर को भाषायी अंतर मान लिया गया है जिसे अधिकांश मुसलमान अपनी पहचान के लिए एक आवश्यक अंतर मानते हैं। इस मामले में संथाली की बात देखी जा सकती है जो ऑस्ट्रोएशियाटिक परिवार की मुण्डा शाखा की भाषा है। इसे संथाली जनजाति के लोग मातृभाषा के रूप में बिहार, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, असम और त्रिपुरा के कुछ क्षेत्र में बोलते हैं। बिहारी संथाली इसे देवनागरी लिपि में लिखते हैं, बंगाली संथाली बांग्ला लिपि में और उड़ीसा के संथाली ओड़िया लिपि में, कुछ इसाई संथाली इसे रोमन लिपि में लिखते हैं और कुछ कट्टरपंथी संथाली अपनी अलग लिपि में। इस लिप्यंतर का भाषा पर कोई असर नहीं है, संथाली भाषा एक समझी ही जाती है। इसकी वजह यह है कि संथालियों की अपनी अलग जनजातीय पहचान है जो लिपि पर निर्भर नहीं है। उनका रुझान विभिन्न राज्यों में फैले संथालियों को एक सूत्र में करने की ओर है जिसमें संथाली भाषा सहायक है चाहे वह किसी भी लिपि में रखी जाए।

पीपुल ऑफ इंडिया प्रोजेक्ट के अनुसार भारत में 4,635 नृजातीय (इथनोग्राफिक) समुदाय हैं जिनमें से 4,536 समुदायों के बारे में तथ्य इकट्ठे किए गए हैं। इनमें से 2,209 समुदायों को मुख्य समुदाय की संज्ञा दी गई है, 586 समुदायों को 'खंड' (सेगमेंट) माना गया है और 1,840 को क्षेत्रीय इकाई के रूप में देखा गया है। सर्वे के अनुसार सिर्फ 325 भाषाएँ ऐसी हैं जिन्हें मातृभाषा या पारिवारिक भाषा के रूप में बोला जाता है। उनमें 96 भाषाएँ ऐसी हैं जिनका प्रयोग द्विभाषी या बहुभाषी समाज द्वारा किया जाता है। इसके अलावा जो बोलियाँ हैं, उन्हें मातृभाषा के रूप में बोलनेवाले भी किसी भाषाविशेष की उपभाषा या बोली मानते हैं। अगर हम सर्वे के आँकड़ों की तुलना 1961 की जनगणना में एकत्र भाषा संबंधी आँकड़ों से करें तो पाएँगे कि भारत में शायद ही कोई भाषा लुप्त हुई है। 1981 की जनगणना भी इस बात की पुष्टि करती है। इस जनगणना के अनुसार हिन्दी बोलनेवालों की संख्या 38 प्रतिशत से बढ़कर 42.88 प्रतिशत हो गई है जो खासकर हिन्दी के दूसरी भाषा के रूप में बढ़ते प्रयोग के कारण हुआ है। हिन्दी द्विभाषियों की संख्या 1,76,20,783 से बढ़कर 4,44,02,182 हो गई है जिसमें 17.14 प्रतिशत लोग ऐसे हैं जिनकी मातृभाषा मलयालम है। 9.69 प्रतिशत तमिलभाषी, 6.81 प्रतिशत तेलुगुभाषी और 6 प्रतिशत कन्नड़भाषी हिन्दी को दूसरी या अन्य भाषा के रूप में प्रयोग में लाते हैं, अण्डमान के निवासियों ने तो अपनी अलग हिन्दी बना ली है जिसे 'अण्डमानी हिन्दी' कहते हैं।

ऊपर कही बातों से हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि कुछ समुदाय भाषा और बोलियों का प्रयोग अपने आपको एक सूत्र में पिरोने के लिए करते हैं और दूसरे समुदाय से अपने को अलग-अलग रखने एवं अपनी अलग पहचान बनाए रखने के लिए भी। ऐसा नहीं है कि भारत में भाषाई झगड़े नहीं होते लेकिन आमतौर पर भारतीयों में भाषा के प्रश्न पर असीम सहिष्णुता है जिस कारण सभी भाषाएँ जीवन्त हैं और द्विभाषियों की संख्या बढ़ती जा रही है। नतीजन एक ओर भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित भाषाओं को बोलनेवालों की संख्या बढ़ रही है तो दूसरी ओर उन क्षेत्रीय भाषाओं और बोलियों में भी सृजनात्मक कार्य हो रहा है जो अब तक मौखिक परंपरा पर निर्भर थीं। यही हमारे बहुभाषी समाज की सबसे बड़ी दौलत है। हमें इन विरोधाभासी लगनेवाली प्रवृत्तियों से घबराने के बजाय उन्हें समझने की कोशिश करनी चाहिए और उनके प्रति स्वस्थ रवैया अपनाना चाहिए।

अभ्यास

- अध्याय में भाषा के दो रूप दिखाए गए हैं। एक, नागा लोग भाषा के प्रति उदार हैं व वे कई भाषाओं का प्रयोग करते हैं जबकि गोआ निवासी भाषा के नाम पर झगड़ते हैं। भाषा के इन दोनों रूपों में से आप किस रूप को समर्थन देंगे और क्यों?
- 1971, 1981, 1991 एवं 2001 की जनगणना के अनुसार आठवीं अनुसूची की भाषाओं को बोलने वालों की जनसंख्या का प्रतिशत सारणी में दिया गया है। इसी तरह 2011 की जनगणना के आँकड़े एकत्र करें?

भारत सरकार
गृह मंत्रालय
जनगणना 2001
कथन 6

बोलने वालों की संख्या (जनगणना-1971, 1981, 1991 और 2001 के अनुसार) के घटते क्रम में अनुसूचित भाषाओं का तुलनात्मक स्थान।
कुल जनसंख्या की भाषायी आधार पर प्रतिशतता

1971			1981*			1991***			2001****		
क्र. स.	भाषा	प्रतिशत	क्र. स.	भाषा	प्रतिशत	क्र. स.	भाषा	प्रतिशत	क्र. स.	भाषा	प्रतिशत
1			2			3			4		
1.	हिन्दी	36.99	1.	हिन्दी	38.74	1.	हिन्दी* ²	39.29	1.	हिन्दी	41.03
2.	बंगाली	8.17	2.	बंगाली	7.71	2.	बंगाली	8.30	2.	बंगाली	8.11
3.	तेलुगु	8.16	3.	तेलुगु	7.61	3.	तेलुगु	7.87	3.	तेलुगु	7.19
4.	मराठी	7.61	4.	मराठी	7.43	4.	मराठी	7.45	4.	मराठी	6.99
5.	तमिल	6.88	5.	उर्दू	5.25	5.	तमिल	6.32	5.	तमिल	5.91
6.	उर्दू	5.22	6.	गुजराती	4.97	6.	उर्दू	5.18	6.	उर्दू	5.01
7.	गुजराती	4.72	7.	कन्नड़	3.86	7.	गुजराती	4.85	7.	गुजराती	4.48
8.	मलयालम	4.00	8.	मलयालम	3.86	8.	कन्नड़	3.91	8.	कन्नड़	3.69
9.	कन्नड़	3.96	9.	उड़ीया	3.46	9.	मलयालम	3.62	9.	मलयालम	3.21
10.	उड़ीया	3.62	10.	पंजाबी	2.95	10.	उड़ीया	3.35	10.	उड़ीया	3.21
11.	पंजाबी	2.57	11.	मैथिली ¹	1.13	11.	पंजाबी	2.79	11.	पंजाबी	2.83
12.	असामी	1.63	12.	सन्थाली ¹	0.65	12.	असामी	1.56	12.	असामी	1.28
13.	मैथिली	1.12	13.	कश्मीरी	0.48	13.	मैथिली ¹	0.93	13.	मैथिली ¹	1.18
14.	सन्थाली ¹	0.69	14.	सिन्धी	0.31	14.	सन्थाली ¹	0.62	14.	सन्थाली ¹ @	0.63
15.	कश्मीरी	0.46	15.	कोंकणी ²	0.24	15.	नेपाली ²	0.25	15.	कश्मीरी (+)	0.54
16.	सिन्धी	0.31	16.	डोगरी ¹	0.23	16.	सिन्धी	0.25	16.	नेपाली ²	0.28
17.	कोंकणी ²	0.28	17.	नेपाली ²	0.20	17.	कोंकणी ²	0.21	17.	सिन्धी	0.25
18.	नेपाली ²	0.26	18.	मणिपुरी ²	0.14	18.	बोडो ¹	0.15	18.	कोंकणी ²	0.24
19.	डोगरी ¹	0.24	19.	संस्कृत	0.00	19.	मणिपुरी ²	0.15	19.	डोगरी (+) ¹	0.22
20.	मणिपुरी ²	0.14	20.	असामी**	**	20.	संस्कृत	0.01	20.	मणिपुरी ² \$	0.14
21.	बोडो ¹	0.10	21.	बोडो ¹	**	21.	कश्मीरी	***	21.	बोडो ¹	0.13
22.	संस्कृत	0.00	22.	तमिल**	**	22.	डोगरी (+) ¹	***	22.	संस्कृत	0.00

नोट :

- संविधान के 100वें संशोधन के द्वारा 2001 की जनगणना के आधार पर अनुसूचित भाषाओं में बोडो, डोगरी, मैथिली और सन्थाली को शामिल किया गया।
- संविधान के 73वें संशोधन के द्वारा 1991 से कोंकणी, मणिपुरी और नेपाली अनुसूचित भाषाओं में शामिल हुई।
- 1991 में प्रकाशित प्रतिशतता की तुलना में 1991 में हिन्दी प्रतिशतता में परिवर्तन का कारण हिन्दी में मैथिली को शामिल नहीं करना है।
- * 1981 के लिए प्रत्येक भाषा के बोलने वालों की प्रतिशतता भारत की कुल जनसंख्या के आधार पर परिईलित की गयी है। इसमें असम की जनसंख्या को शामिल नहीं किया गया है क्योंकि व्यवधान के कारण वहाँ 1981 में जनगणना नहीं करायी जा सकी।
- ** 1981 के लिए तमिल, असमी और बोडो बोलने वालों की कुल संख्या उपलब्ध नहीं हो सकी क्योंकि तमिलनाडु के जनगणना संबंधी रिकॉर्ड बाढ़ के कारण खत्म/नष्ट हो गए और असम में मौजूद अव्यवस्था के कारण वहाँ 1981 की जनगणना सम्पन्न नहीं हो सकी।
- *** 1991 के लिए प्रत्येक भाषा के बोलने वालों की प्रतिशतता भारत की जनसंख्या के आधार पर निकाली गयी है। इसमें जम्मू कश्मीर की जनसंख्या शामिल नहीं है क्योंकि व्यवधान के कारण वहाँ 1991 में जनगणना नहीं कराई जा सकी।
- **** 2001 के लिए प्रत्येक भाषा के बोलने वालों की प्रतिशतता भारत की कुल जनसंख्या के आधार पर निकाली गयी है। इसमें मणिपुर के सेनापति जिले के माओ-मराम, पाओमाटा और पुरुल सब-डिविजन की जनसंख्या जनगणना के कारण शामिल नहीं है।
- (+) 1991 के लिए कश्मीरी और डोगरी बोलने वालों की कुल संख्या उपलब्ध नहीं है क्योंकि जम्मू कश्मीर में मौजूद अव्यवस्था के कारण 1991 में जनगणना सम्पन्न नहीं हो सकी।
- \$ 2001 के लिए मणिपुर के सेनापति जिले के पाओमाटा, माओ-मराम और पुरुल सब-डिविजन की जनसंख्या शामिल नहीं है।
- @ मैथिली बोलने वालों की संख्या हिन्दी भाषा से अलग कर दी गई है क्योंकि 1971 से 1991 जनगणना तक यह हिन्दी की मात भाषा मानी जाती थी।

भाषा और तौर तरीके

पाठ की रूपरेखा

- परिचय
- उद्देश्य
- शीर्षक व उपशीर्षक
 - सामाजिक दर्जा
 - समारोहों की भाषा

परिचय :

यह अध्याय मुख्य रूप से दो बातों की ओर हमारा ध्यान दिलाता है। एक तो यह कि भाषा का हमारी सामाजिक भूमिका से गहरा जुड़ाव होता है। इंसान जिस प्रकार की सामाजिक भूमिका निभाता है और उस भूमिका को निभाते हुए वह जिस प्रकार के व्यवहार करता है, उसी के अनुसार उसकी भाषा बदलती रहती है जैसे एक पिता के रूप में उसकी भाषा, एक पुत्र के रूप में उसकी भाषा, एक पत्नी के रूप में उसकी भाषा अलग-अलग होगी। कभी-कभी इंसान को नई सामाजिक भूमिका मिलने पर उसे नई भाषा भी सीखनी होती है जैसे डॉक्टर, वकील या कोई पर्यटक मार्गदर्शक। दूसरी बात जिसकी बात इस अभ्यास में की गई है वह यह कि ज्यादातर समुदायों में सामाजिक रीति-रिवाजों, समारोहों की भाषा, आम बातचीत या रोजमर्रा की भाषा से अलग होती है। आम जीवन में लोग कुछ और भाषा का इस्तेमाल करते हैं लेकिन किसी रीति-रिवाज के संचालन में किसी और भाषा का उपयोग किया जाएगा जबकि वह सुनने वाले को समझ में आए या नहीं।

उद्देश्य :

- आप समझ पाएँगे कि मनुष्य जिस प्रकार की सामाजिक भूमिका निभाता है उसी के अनुसार उसकी भाषा या शब्दावली होती है।
- आप समझ पाएँगे कि कभी-कभी कुछ खास सामाजिक भूमिका अपनाने पर नई भाषा भी सीखनी होती है।
- उन कारणों की खोज कर पाएँगे जिनकी वजह से आम बोलचाल की भाषा व समारोहों/रीति-रिवाजों की भाषा में फर्क होता है।

सामाजिक दर्जा (Status)

सामाजिक दर्जा किसी भी व्यक्ति के समाज में स्थान को दिखाता है। सामाजिक भूमिका (Roles) मान्य व्यवहार हैं, जिनकी उम्मीद समाज हर उस व्यक्ति से करता है, जो उस पद पर हो। राजकीय भूमिकाओं के साथ अक्सर विशेष औपचारिक चिन्ह जुड़े रहते हैं जैसे कि वर्दी। लेकिन सामाजिक दर्जे के प्रमुख चिह्नों में से

एक, बेशक, भाषा है। हर व्यक्ति कई भूमिकाएँ अदा करता है, उसकी कई पहचान होती हैं। घर में एक (जैसे परिवार का मुखिया, सबसे बड़ा पुत्र/पुत्री आदि), और इसी तरह से कार्य स्थल में भी एक और भूमिका होती है (जैसे सुपरवाइजर, शागिर्द आदि)। इसी तरह चर्च में, स्थानीय खेलकूद केन्द्र में और ऐसे ही और भी कई मौकों पर। हर भूमिका के साथ पुकारे जाने की एक खास भाषाई शब्दावली जुड़ी है, एक औपचारिक ढंग है या एक खास शब्दावली। अपने जीवन में हर व्यक्ति बहुत से ऐसे व्यवहार सीखता है।

ऐसा कभी-कभी ही होता है कि एक खास सामाजिक भूमिका अपनाने के लिए एक बिल्कुल नई भाषा सीखने की ज़रूरत पड़े। जैसे कि किसी खास भाषा का शिक्षक बनना हो या विदेशी पर्यटकों का मार्ग दर्शक बनना हो। आमतौर पर एक व्यक्ति भाषा का नया प्रकार तभी सीखता है जब वह कोई सामाजिक भूमिका लेता है जैसे किसी संस्कृति में कोई भी खास किस्म की सांस्कृतिक क्रिया को संचालित करना (शादी की रस्म या फिर कुछ और); या फिर किसी खास कारोबार में (वकील, पुलिस या डॉक्टर) आदि। इन सभी तरह की कार्य भूमिकाओं में नए तरीके की लय में बात रखना, बोलते समय कहाँ जोर देना है, कहा नहीं देना है, आदि सीखना पड़ता है।

इस तरह की भूमिकाओं में निभानेवाले का लहजा, उच्चारण का ढंग, कुछ बातें जोर से कहना, लय और उतार-चढ़ाव आदि सभी खास प्रकार के होते हैं। इस तरह की किसी भी सामाजिक भूमिका के भाषायी गुण आमतौर पर काफी आराम से पहचाने जा सकते हैं। लेकिन कई बार इन्हें आसानी से नहीं भी पहचाना जा सकता। ऐसा तब होता है, जब उन भूमिकाओं को ही आसानी से अलग करके नहीं पहचाना जा सके। जिन संस्कृतियों से आपका कम परिचय होता है जैसे विदेशी लोगों की व उन भाषाओं को जिन्हें आप उनकी अपनी आबोहवा में नहीं सीखते, उसके संदर्भ में यह समझना खास मुश्किल हो जाता है कि समाज के अन्दर-अन्दर में क्या कुछ हो रहा है। जो हो रहा है उसके पीछे क्या है? यह समझना भी मुश्किल होता है कि किसी सामाजिक समारोह, बैठक अथवा जब भी लोग इकट्ठे होकर कुछ कर रहे हों तो उसमें भागीदार के रूप में कैसा व्यवहार करना है। किसी एक भाषायी समुदाय अथवा किसी दूसरे समुदाय में आने पर मेहमान को कैसे व्यवहार करना है, यह भी अलग-अलग होता है। कुछ देशों में यह सभ्य व शिष्ट समझा जाता है कि खाने के साथ-साथ खाने की तारीफ़ की जाए, किन्तु कई अन्य जगहों पर इसे अभद्र समझा जाता है। कुछ देशों में औपचारिक आमंत्रण पर आए मेहमान से अपेक्षा होती है कि वह खाने के बाद तत्काल एक छोटा भाषण दें, अन्य देशों में ऐसी कोई अपेक्षा नहीं होती। कई बार चुप्पी को भी महत्वपूर्ण मान लिया जाता है।

अभ्यास

- इंसान जिस प्रकार की सामाजिक भूमिका निभाता है उस अनुरूप उसकी भाषा बदलती रहती है। कैसे?

समारोहों की भाषा

रीति-रिवाजों को सम्पन्न करने के लिए सभी समुदायों ने अपनी-अपनी भाषा का विकास किया है। इन रीति-रिवाजों के संचालन में जिन लोगों की मुख्य भूमिका होती है वे खास तौर की भाषा का उपयोग करते हैं। जो इनमें भाग लेते हैं वे भी विशेष भाषा का उपयोग करते हैं। रीति-रिवाज की भाषा में यह फर्क नई भाषा के उपयोग में भी है (इसमें सुननेवाले को कुछ भी समझ आया या नहीं इसकी चिन्ता नहीं होती)। हिन्दू समुदाय के रीति-रिवाजों में अक्सर संस्कृत भाषा के मंत्रों श्लोकों, प्रार्थनाओं का व मुस्लिम समुदाय के समारोहों में अरबी भाषा का उपयोग ज्यादा होता है जबकि यह रोजमर्रा की भाषा से भिन्न है। कभी यह फर्क रोजमर्रा की भाषा में थोड़े बहुत फर्क तक ही सीमित होता है। जैसाकि प्रार्थनाओं व धार्मिक भाषणों में यह फर्क खास सुर, तान, लय, गायकी, या फिर कभी-कभी खास व्याकरण व शब्दावली आदि।

कोलम्बिया के खाम्सा आदिवासियों के रीति-रिवाजों में उपयोग होने वाली भाषा में भी लय व ताल स्पष्ट पता चलती है जो कुछ-कुछ (मंत्र) की तरह है पर इसके अलावा रीति-रिवाज की भाषा में व्याकरण में व शब्दों के अर्थ में भी कुछ अन्तर होता है। वे स्पेनिश भाषा से लिए हुए शब्दों का कहीं अधिक उपयोग करते हैं। सामान्य में हो रहे 20% उपयोग के स्थान पर 60% तक स्पेनिश शब्दों तक। इसी तरह हिन्दू शादियों में अधिकाधिक संस्कृत शब्दों व मंत्रों का उपयोग होता है जबकि आम बोलचाल में उन शब्दों/मंत्रों का उपयोग नहीं होता है। इस तरह के कई उदाहरण अन्य अलग-अलग स्थानों व समाजों के भी उपलब्ध हैं।

यह फर्क क्यों?

अभी हमने देखा कि लगभग सभी समुदायों में रोजमर्रा की भाषा से रीति-रिवाजों की भाषा अलग होती है। सोचने वाला सवाल यह है कि यह फर्क क्यों है? रीति-रिवाज व परम्पराएं काफी समय से चले आ रहे होते हैं और हम उनका उसी रूप में, बिना कोई बदलाव किए, बिना कुछ सोचे पालन करते हैं तथा उन रीति-रिवाजों की जड़ जिस भाषा में है अर्थात् जिस भाषा में उनके बारे में बात की गई है, उनके बारे में लिखा गया है, उनके पालन के तरीके व नियम, कायदे लिखे गए हैं, हम उसी भाषा में, उसी रूप में उनका पालन करते रहते हैं जबकि रोजमर्रा की भाषा तो निरन्तर बदलती रहती है। इसीलिए रोजमर्रा की भाषा व रीति-रिवाजों की भाषा अलग होती है।

अभ्यास

- जब आप अपने पिता या किसी बड़े से बात करते हैं तब की भाषा व किसी दोस्त से बात करते हैं तब की भाषा में कुछ अंतर होता है? यदि हाँ तो कुछ उदाहरण दीजिए।
- आम बोलचाल की भाषा व रीति-रिवाजों/समारोहों की भाषा में फर्क होता है। अपने यहाँ की स्थानीय भाषा व स्थानीय रीति-रिवाजों में प्रयुक्त भाषा को ध्यान में रखते हुए उदाहरण सहित इस बात को समझाइए।

अध्याय – 12

कौन भाषा, कौन बोली

पाठ की रूपरेखा

- परिचय
- उद्देश्य
- शीर्षक व उप-शीर्षक
 - व्याकरण की समझ कितनी?
 - कौन भाषा, कौन बोली
 - एक ही मापदण्ड क्यों
 - ब्रज भाषा में
 - सत्ता से जुड़े सवाल
 - कोई भी लिपि, कोई भी भाषा

परिचय :

यह एक आम धारणा है कि भाषा व बोली दो अलग-अलग चीजें हैं। यदि आप किसी को जाकर कहे कि भाषा व बोली में कोई फर्क नहीं होता है तो वह आपकी बात को सिरे से खारिज कर देगा और करे भी क्यों ना? उसके पास इसके लिए अच्छे खासे कारण है भाषा शुद्ध होती है, बोली नहीं। भाषा को ज्यादा लोग बोलते हैं, बोली को कम। भाषा को लिख सकते हैं, बोली को नहीं। लेकिन ये सारे कारण कहां तक सही हैं और वास्तव में भाषा और बोली में कोई अन्तर होता है या नहीं? यदि है तो यह अन्तर किस आधार पर किया जाता है? इस लेख में इन्हीं सब के बारे में बात की गई है।

उद्देश्य :

- आप समझ पाएंगे कि हर व्यक्ति अपनी भाषा अच्छे से बोलता, समझता है और उसके बारे में बहुत कुछ जानता है।
- आप समझ पाएंगे कि किन कारणों से आमतौर पर लोग भाषा व बोली को अलग-अलग मानते हैं।
- आप यह जान पाएंगे कि कौन भाषा होगी और कौन बोली होगी? इसका निर्धारण किस आधार पर किया जाता है।

“अध्यापक स्वयं को शुद्ध व मानकीकृत भाषा का रखवाला मान लेते हैं। प्रश्न समझ व दृष्टिकोण का है। पहली बात बच्चा जिस भाषा को लेकर स्कूल आता है वह पूर्णरूप से व्याकरणयुक्त है। दूसरी बात उसकी भाषा उसकी शिक्षा का माध्यम नहीं बन पाई यह एक राजनैतिक, सत्तागत प्रश्न है।”

हर सामान्य व्यक्ति अपनी भाषा खूब अच्छी तरह से बोलता व समझता है। इसलिए यह स्वाभाविक है कि हर व्यक्ति यह समझे कि वह भाषा के बारे में काफी कुछ जानता है। असल में सच तो यही है कि हर व्यक्ति अपनी भाषा के बारे में बहुत कुछ जानता है। लेकिन इस भाषागत ज्ञान के बारे में आम आदमी अक्सर सचेत नहीं होता। वास्तव में उस ज्ञान के बारे में उसके लिए कुछ भी विशेष

कहना संभव नहीं हो पाता। अगर यह कहा जाए कि आपकी अपनी भाषा का पूर्ण व्याकरण आपके पास है— आपके दिमाग में—तो शायद कुछ अटपटा—सा लगे। लेकिन यह बिल्कुल सच है। दूसरी तरफ भाषा के बारे में जो कई बातें लोग अक्सर कहते हैं वे एकदम निराधार अवधारणाओं से जुड़ी रहती हैं। इन निराधार अवधारणाओं के कारण काफी सामाजिक, मानसिक व शैक्षिक नुकसान होता है। यदि हम सब भाषा की प्रवृत्ति को समझने का प्रयास करें तो शायद इस नुकसान से बचने का कोई रास्ता निकले।

व्याकरण की समझ कितनी?

अपनी भाषा के बारे में आपका ज्ञान पूर्ण एवं त्रुटिरहित है। अपनी भाषा बोलने व समझने में आप कभी गलती नहीं करते। यदि करें तो तुरन्त उसमें सुधार कर लेते हैं। इस तरह यदि कोई दूसरा आपकी भाषा बोलने में गलती करता है तो आप उसे तुरन्त पकड़ लेते हैं।

आप नित नए—नए वाक्य बोल व समझ सकते हैं। यही नहीं आपको यह भी मालूम है कि किस सामाजिक संदर्भ में कैसी भाषा उचित रहेगी। लेकिन इस ज्ञान के बारे में मुक्त रूप से चर्चा करना केवल भाषाविदों तक ही सीमित रह गया। और भाषाविद् जिस भाषा में बात करते हैं वह आम आदमी की समझ में नहीं आती।

उदाहरण के लिए, यह तो हर हिन्दीभाषी जानता है कि—

गीता खाना खाता है।

ठीक वाक्य नहीं है। कुछ सोचकर शायद वह यह भी बता दें कि 'गीता' स्त्रीलिंग है इसलिए क्रिया पुल्लिंग नहीं हो सकती। (गो कि भारत में ही ऐसी अनेक भाषाएँ हैं जिनमें कर्ता के पुल्लिंग या स्त्रीलिंग होने से क्रिया पर कोई असर नहीं पड़ता— अंग्रेजी भी ऐसी ही भाषा है)। लेकिन निम्न दो वाक्यों में यह नियम लागू नहीं होता।

मोहन ने खाना खाया।

गीता ने खाना खाया

'मोहन' पुल्लिंग है व 'गीता' स्त्रीलिंग फिर भी दोनों ने 'खाया'। यह कहना कि—

गीता ने खाना खाई।

गलत है। इसी तरह यदि आप दुविधा में पड़े हिन्दीभाषी का ध्यान निम्न दो वाक्यों—

मोहन ने रोटी खाई।

गीता ने रोटी खाई।

की ओर ले जाएँ, तो शायद कुछ कठिनाई से वह यह बता पाए कि यदि कर्ता के सामने 'ने' आ जाए तो क्रिया कर्म से मेल खाती है। सो कर्ता कोई भी हो— पुल्लिंग या स्त्रीलिंग— पर 'ने' आने पर

..... **खाना खाया** (खाना पुल्लिंग है)

..... **रोटी खाई** (रोटी स्त्रीलिंग है आदि)

लेकिन निम्न दो वाक्यों के बारे में हिन्दीभाषी क्या कहेगा!

मोहन ने गीता को मारा।

गीता ने मोहन को मारा।

ऐसी ही समस्याओं को लेकर भाषावैज्ञानिक भाषा से जूझते रहते हैं। अब देखिए ना—

गीता मोहन को मारती है।

तो सही है लेकिन

गीता ने मोहन को मारी।

ठीक नहीं है।

वास्तव में जैसे ही एक हिन्दीभाषी ऐसा कोई वाक्य सुनता है उसे मालूम होता है कि कोई अहिन्दीभाषी हिन्दी बोलने का प्रयास कर रहा है। साफ है कि हर व्यक्ति अपनी भाषा का व्याकरण पूरी तरह से जानता है। लेकिन उस व्याकरण का अध्ययन करना व उसके बारे में बातचीत कर सकना बिल्कुल अलग बात है; कठिन बात है। इसलिए हमारे यहाँ कहते हैं— मोक्षार्थे व्याकरणमधितव्यम्।

मोक्षार्थे व्याकरणमधितव्यम् — ऐसा शास्त्रों में कहा गया है कि इंसान को मोक्ष प्राप्त करने के लिए व्याकरण पढ़ना चाहिए। हमने देखा कि हर व्यक्ति अपनी भाषा अच्छे से बोलता, सुनता है और इसके लिए उसे अलग से व्याकरण नहीं सीखना पड़ता है बल्कि वह अपनी भाषा का व्याकरण जानता है। इसी बात को पुष्ट करने के लिए यहाँ कहा गया है 'मोक्षार्थे व्याकरणमधितव्यम्'।

अभ्यास

- यदि आपको किसी को यह समझाना हो कि व्यक्ति अपनी भाषा को अच्छे से समझता है और उसके बारे में बहुत कुछ जानता तो आप उसे कैसे समझाएँगे?

खैर हमें तो उस ज्ञान के बारे में बातचीत करनी थी जिसका आधार अवैज्ञानिक व बेबुनियाद अवधारणाएँ हैं। हर सामान्य व्यक्ति इस तरह के ज्ञान पर आधारित अनेक विश्वास या मान्यताएँ पाल लेता है, निर्णय ले लेता है, लोगों को अलग श्रेणियों में बाँट लेता है और कुछ से घृणा व कुछ से प्यार करने लगता है।

इन निराधार मान्यताओं को समझना आवश्यक है। बिना समझे इनसे छुटकारा पाना संभव नहीं।

कौन भाषा, कौन बोली

एक मुख्य मसला है भाषा व बोली का। किसी भी सामान्य व्यक्ति से पूछकर देखिए, वह अत्यधिक विश्वास से आपको भाषा व बोली में अंतर बताने लगेगा। कहेगा, “भाषा का व्याकरण होता है, बोली का नहीं। भाषा की लिपि होती है, बोली की नहीं। भाषा का क्षेत्र विस्तृत होता है जबकि बोली का स्थानीय। भाषा मानकीकृत व परिमार्जित होती है, बोली नहीं। जिसका प्रयोग साहित्य, पत्राचार, दफ्तरों, अदालतों आदि में हो वह भाषा और जो बोलचाल के लिए इस्तेमाल हो वह बोली। भाषा में शुद्ध-अशुद्ध का प्रश्न उठता है, बोली में सब चलता है आदि, आदि।”

वास्तव में इस तरह के सभी तर्क गलत हैं, समाज के लिए अत्यधिक हानिकारक हैं। भाषायी दृष्टि से भाषा व बोली में कोई अन्तर नहीं। दोनों का व्याकरण होता है। दोनों नियमबद्ध हैं। किसको भाषा कहा जाएगा और किसको बोली यह एक सामाजिक प्रश्न है; राजनैतिक प्रश्न है। सत्ताधारी व पैसेवाले लोग अक्सर जो बोली बोलते हैं, वह भाषा कहलाने लगती है। उसी के व्याकरण व शब्दकोश लिखे जाते हैं। उसी में साहित्य लिखा जाता है। स्कूलों में शिक्षा का माध्यम बनकर वही बोली मानकीकृत भाषा बन बैठती है। उसी से मिलते-जुलते, बात-चीत करने के अन्य तरीके उस 'भाषा की बोलियाँ' कहलाने लगती हैं। भाषा व समाज के इस रिश्ते को समझना आवश्यक है।

शायद यह ठीक ही कहा गया है कि भाषा केवल एक सशस्त्र बोली है। मुख्य प्रश्न वास्तव में दृष्टिकोण का है। एक गरीब बच्चे की भाषा को एक मानकीकृत भाषा के मापदंड से निम्नतम नापना कहाँ तक जायज है?

अभ्यास

- बोली व भाषा में कोई अन्तर नहीं यह बताने के लिए क्या तर्क दिए गए हैं?

एक ही मापदण्ड क्यों

व्याकरण के प्रश्न को लीजिए। हिन्दी का अपना व्याकरण है। लेकिन ब्रज, अवधी व मैथिली का भी अपना व्याकरण है, जो हिन्दी से कदाचित् अलग है। हिन्दी व्याकरण को मापदण्ड मानकर ब्रज के व्याकरण को क्यों देखा जाए? सदियों से लोग संस्कृत, ग्रीक, लैटिन आदि को आधार मानकर संसार की सभी भाषाओं में शब्दों के आठ कारकगत रूप तलाश करते रहे हैं। हिन्दी के हर व्याकरण में आपको संस्कृत की ही तरह आठ कारक रूप दिखाने का प्रयत्न रहेगा। लेकिन वास्तव में हिन्दी में तीन ही कारकों के अनुसार शब्द परिवर्तन होता है यथा:

‘लड़का’ आदि

	एकवचन	बहुवचन	उदाहरण के लिए	
कर्ता	लड़का	लड़के	लड़का जा रहा है।	लड़के जा रहे हैं।
कर्म/अन्य	लड़के	लड़कों	लड़के ने खाना खाया।	लड़कों ने खाना खाया।
संबोधन	हे लड़के!	हे लड़को!	हे लड़के इधर आ।	हे लड़को इधर आओ।

‘किताब’ आदि

कर्ता	किताब	किताबें
कर्म/अन्य	किताब	किताबों
संबोधन	हे किताब!	हे किताबो!

हिन्दी की कारक व वचन संरचना समझने के लिए इससे अधिक आवश्यकता नहीं है। इसी प्रकार हिन्दी व्याकरण से अन्य भाषाओं को नापना उचित नहीं है। हिन्दी का नन्द का नन्दन कदम्ब के पेड़ के नीचे धीरे-धीरे मुरली बजाता है।

अभ्यास

- इसी आधार को ध्यान में रखते हुए आप भी निम्न शब्दों के वाक्य में प्रयोग करते हुए बहुवचन बनाइए। नदी, घर, पेंसिल। बताइए क्या-क्या एकवचन व बहुवचन के रूप मिले।

ब्रज भाषा में

“नन्द को नन्दन कदम के तरु तर धीरे धीरे मुरली बजावै।”

हो जाएगा।

और मैथिल— कोकिल विद्यापति ने इसे यूँ कहा;

“नन्दक नन्दन कदमक तरुतर धीरे धीरे मुरली बजाव।”

मैथिली का नियम है कि ‘नन्द’ व ‘नन्दन’ में जो संबंध है वह ‘क’ के प्रयोग से दिखाया जाएगा; ब्रज में वहीं ‘को’ के व हिन्दी में वह ‘का’ के प्रयोग से। तो:

हिन्दी : नन्द का नन्दन

ब्रज : नन्द को नन्दन

मैथिली : नन्दक नन्दन

यह कहना कि ब्रज या मैथिली भाषा को सदैव 'नन्द का नन्दन' ही कहना चाहिए उचित न होगा। ऊपर के उदाहरणों से यह भी स्पष्ट हो गया होगा कि कब हिन्दी— ब्रज—मैथिली एक दूसरे से घुल मिल जाएँगी और कब अपना—अपना स्वतंत्र रूप दिखाएँगी, यह कहना भी कोई आसान काम नहीं।

आप मैथिली, सिंधी, कोंकणी, नेपाली या मणिपुरी को कब 'भाषा' का दर्जा देना चाहते हैं, यह एक राजनैतिक प्रश्न है, भाषायी नहीं।

अभ्यास

- हिन्दी के वाक्य लीजिए और उन्हीं वाक्यों को छत्तीसगढ़ी में भी लिखिए। देखिए कि छत्तीसगढ़ी के क्या नियम हैं? उदाहरण के लिए यदि हिन्दी में नन्द का नन्दन है ब्रज में नन्द को नन्दन अवधि में नन्दक तो छत्तीसगढ़ी में या अपनी अपनी भाषा में क्या होगा?

सत्ता से जुड़े सवाल

व्याकरण को लेकर शुद्ध—अशुद्ध का प्रश्न भी बार—बार सामने आता है। विशेषकर अध्यापक स्वयं को शुद्ध व मानकीकृत भाषा का रखवाला मान लेते हैं। मैंने पहले भी कहा कि प्रश्न समझने व दृष्टिकोण का है। पहली बात— बच्चा जिस भाषा को लेकर स्कूल आता है वह पूर्णरूप से व्याकरण युक्त है। दूसरी बात— उसकी भाषा उसकी शिक्षा का माध्यम नहीं बन पाई यह एक राजनैतिक, सत्तागत प्रश्न है। तीसरी बात— मानकीकृत भाषा के सीखने के प्रयास में जो अशुद्धियाँ बच्चा करता है वे निराधार या बेतरतीब नहीं होतीं, उनकी अपनी संरचना होती है। चौथी बात— किसी अध्यापक के शुद्ध करने से बच्चे अपनी गलती एकदम सुधार नहीं लेते। गलतियाँ समय आने पर ही सुधरती हैं। पाँचवीं बात— कोई भी बच्चा, कोई भी भाषा (पहली, दूसरी या दसवीं) बिना 'गलतियों' को किए बिना नहीं सीखता।

साहित्य के प्रश्न को ही लीजिए। अक्सर कहा जाता है कि जिसमें शिष्ट साहित्य लिखा जाए वह भाषा, शेष उस भाषा की बोलियाँ। आम आदमी आज यही समझता है कि खड़ी बोली हिन्दी की मानकीकृत भाषा है, साहित्य उसी में लिखा जाता है; अखबारों दफ्तरों आदि में यही प्रयोग होती है। ब्रज, अवधी, मैथिली आदि हिन्दी की बोलियाँ हैं।

कैसी विडम्बना है— अवधी, जिसमें तुलसीकृत रामचरितमानस लिखा गया; ब्रज, जिसमें सूरदास ही नहीं अपितु अनेक हिन्दू व मुसलमान लेखकों ने महान् साहित्य की रचना की व मैथिली, जिसमें विद्यापति ने लिखा— सब आज हिन्दी की माताएँ न होकर उसकी बोलियाँ हो गईं। जब राजनीति व सत्ता का केन्द्र कन्नौज था, तो साहित्य की शिष्ट भाषा थी 'अपभ्रंश'। खड़ी बोली, ब्रज, अवधी आदि का जो भी रूप रहा हो, उसकी बोलियाँ कहलाईं। इसी तरह जब राजनैतिक केन्द्र ब्रज—क्षेत्र बना तो शिष्ट साहित्य की भाषा 'ब्रज' हो गई और दिल्ली, मेरठ की खड़ी बोली उसकी बोली कहलाईं। शासन व सत्ता का केन्द्र दिल्ली, मेरठ हुआ तो ब्रज, अवधी आदि हिन्दी की बोलियाँ कहलाने लगीं। वही बात कि सवाल दरअसल भाषा व राजनीति के संबंध को समझने का है। उसको समझकर एक ऐसा सजग दृष्टिकोण बनाने का है जो वैज्ञानिक व संरचनात्मक हो। इसलिए साहित्य के आधार पर भाषा व बोली में अन्तर संभव नहीं।

कोई भी लिपि, कोई भी भाषा

लिपि के प्रश्न को लीजिए। अक्सर लोग ऐसे बात करते हैं जैसे भाषा व लिपि का कोई जन्मजात संबंध हो। वास्तव में संसार की सभी भाषाएँ एक ही लिपि में लिखी जा सकती हैं। और एक ही भाषा को लिखने के लिए आप संसार की सभी लिपियों का प्रयोग कर सकते हैं। उदाहरण के लिए हिन्दी व अंग्रेजी भाषा व देवनागरी व रोमन लिपि को लीजिए:

हिन्दी (देवनागरी)

मोहन खेल रहा है।

हिन्दी (रोमन):

Mohan khel rahaa hai.

अंग्रेजी (देवनागरी):

मोहन इज़ प्लेइंग।

भारत की अनेक भाषाएँ देवनागरी में लिखी जाती हैं व एक संस्कृत को लिखने के लिए भारत में ही अनेक लिपियों का प्रयोग होता है। ऐसा भी नहीं है कि लिपि होने से ही किसी भाषा में साहित्य की संभावना होती है। ऋग्वेद जैसे साहित्य के लिए सदियों से किसी लिपि की आवश्यकता नहीं पड़ी। सारे भारत में फिर भी ऋग्वेद का वाचन एक ही तरह से होता है। गाँव-गाँव में रामचरितमानस नित गाया, सुना जाता है— लिपि की कोई आवश्यकता नहीं। भाषा प्राचीन है; लिपि अभी कल का आविष्कार। लिपि होने न होने से भाषा-बोली में अंतर करना संभव नहीं। आप कुछ दोस्त मिलकर अपनी भाषा के लिए बड़ी आसानी से अपनी एक अलग लिपि बना सकते हैं। उसे कितना राजनैतिक समर्थन मिलेगा वह एक अलग बात है। संथाली आज कई लिपियों में लिखी जाती है— देवनागरी, रोमन, बंगला, उड़िया व ओल चिककी। इनमें से कौन-सी लिपि मानकीकृत हो जाएगी यह एक राजनैतिक प्रश्न है। अभी द्वन्द्व जारी है।

विस्तृत क्षेत्र व व्यापक प्रयोग

विस्तृत क्षेत्र व व्यापक प्रयोग की खूब ठहरी। बार बार कहो कि हिन्दी का क्षेत्र विस्तृत है, प्रयोग व्यापक। जगह-जगह पोस्टर लगाओ। अखबारों में नित इशतहार दो, रेडियो व टी.वी. पर प्रयोग करो और न जाने क्या-क्या बातों-बातों में हिन्दी को 'संवैधानिक राजभाषा' से 'राष्ट्रभाषा' का दर्जा दे दो। शिक्षा का माध्यम हिन्दी कर दो। और फिर कहो— लो भाई हिन्दी हुई भाषा व ब्रज, अवधी मैथिली, बुन्देली, भोजपुरी आदि उसकी बोलियाँ। इन 'बोलियों' को बोलनेवालों की अपार संख्या को हिन्दी में जमा कर दो और फिर कहो कि देखो, करोड़ों लोग हिन्दी बोलते हैं, कन्याकुमारी से लेकर हिमालय तक। थोड़ा धीरज रखकर ध्यान से सोचिए— हिन्दी आखिर कहाँ बोली जाती है? मानकीकृत हिन्दी का प्रयोग कहाँ-कहाँ होता है?

क्या आप या आपके दोस्त घर पर या आपस में हिन्दी बोलते हैं या आप भोजपुरी, अवधी, मैथिली, छत्तीसगढ़ी, मगही, बुन्देली, ब्रज आदि-आदि बोलते हैं। मानकीकृत हिन्दी शायद मेरठ, इलाहाबाद व बनारस के कुछ हिस्सों में बोली जाती है। क्या चम्बा व हमीरपुर (हिमाचल), रोहतक व भिवानी (हरियाणा), जैसलमेर व सवाई माधोपुर (राजस्थान), छपरा व बलिया (बिहार), छिंदवाड़ा (मध्यप्रदेश) व रायपुर में मानकीकृत हिन्दी बोली जाती है?

अभ्यास

- आप अपने रोजर्मा के जीवन में जो बातचीत करते हैं उसमें से 10 वाक्यों को यहाँ उसी रूप में लिखिए जैसे आप उन्हें बोलते हैं। अब उन वाक्यों को ध्यान से देखिए और पता लगाइए कि उनमें क्या-क्या चीज़ें ऐसी हैं जो तथाकथित मानकीकृत हिन्दी से अलग हैं?

मेरी हिन्दी में निम्न प्रयोग देखकर मेरे कुछ साथी अक्सर हँसते हैं, लेकिन जब उनके अपने बच्चे वही प्रयोग करते हैं तो लाचार से हो जाते हैं:

मैंने बाज़ार जाना है।

मेरे को काम है।

मुझे एक कौली दे दो।

ज़रा सब्जी को छेड़ा दे देना।

जो पंजाबी कहकर मेरा मज़ाक उड़ाते हैं वे यह भूल जाते हैं कि राजनीति व सत्ता का केन्द्र अब दिल्ली है। हिन्दी भी यहीं की चलेगी। या फिर लाखों पंजाबी जो अपनी मातृभाषा हिन्दी बताते हैं या लाखों ऐसे लोग जिनकी मातृभाषा हिन्दी गिन ली जाती है— हिन्दी बोलनेवालों की संख्या में से कम कर देने चाहिए।

साफ है कि लिपि, व्याकरण, साहित्य, विस्तृत क्षेत्र व व्यापक प्रयोग आदि के आधार पर भाषा व बोली में अंतर करना संभव नहीं। फिर भी यह अंतर क्यों किया जाता है? और इतनी गहराई से किया जाता है कि हम 'हिन्दी' को भाषा व 'ब्रज' या 'बुन्देली' को बोली कहने में कुछ भी झिझक महसूस नहीं करते। हिन्दी को एक मानकीकृत भाषा का दर्जा देने के लिए व ब्रज अवधी आदि को उसकी बोलियाँ बनाने के लिए आपके चारों ओर निरन्तर प्रयास हो रहे हैं; उन्हें ज़रा गौर से समझने का प्रयास करें।

अभ्यास

- सही कथन के सामने (3) व गलत कथन के सामने (X) का निशान लगाइए।

- | | |
|--|--------------------------|
| — भाषायी दृष्टि से भाषा व बोली में कोई अन्तर नहीं है। | ☐ |
| — एक भाषा को अनेक लिपियों में नहीं लिखा जा सकता है। | ☐ |
| — हिन्दी व्याकरण को आधार मानकर ही ब्रज, मगही, छत्तीसगढ़ी आदि भाषाओं के व्याकरण को देखना चाहिए। | ☐ |
| — कोई भी बच्चा, भाषा बिना गलतियाँ किए हुए नहीं सीखता है। | ☐ |

- भाषा व लिपि में किस तरह का संबंध है?
- इस लेख में भाषा के किन पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है?

बातें, पढ़ना, निजी संसार गढ़ना

अध्याय : 13. बातें करना : क्लास में बातें करना — अच्छा या बुरा — बातचीत से क्या-क्या हासिल होता है? — बातचीत की आदत को कैसे इस्तेमाल किया जाए — टीचर की भूमिका और जिम्मेदारी — कहानी बनाना और सुनाना — नाटक करना — मजेदार गतिविधियाँ।

अध्याय : 14. पढ़ना यानी एक सृजनात्मक अनुभव : पढ़ना असल में है क्या? — पढ़ना और पाठक — पढ़ना और पाठक का निजी संसार — अपरिचित शब्द — पढ़ाने के तरीके — गतिविधि का महत्व।

अध्याय : 15. सही मायनों में आखिर 'पढ़ना' है क्या? : पढ़ने के नमूने — सही मायने में पढ़ना — पढ़ाने के बोज़िल तरीके — पढ़ने में रुकावटें — पढ़ना सिखाना।

कहते हैं :

पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ
पंडित हुआ न कोय,
ढाई आखर प्रेम का
पढ़े सो पंडित होय।

जब खुदा ने पहली बार हजरत मुहम्मद से बात की, उन्होंने ज़िब्रील के हाथ संदेश भेजा। संदेश था : 'पढ़'। हजरत मुहम्मद ने कहा कि लेकिन वे तो 'उम्मी' (निरक्षर) थे, फिर कैसे पढ़ सकते हैं? खुदा गलत नहीं हो सकते। सो ज़िब्रील ने तीन बार जोर देकर कहा 'पढ़'। फिर हजरत मुहम्मद ने 'पढ़ा', और बात आगे बढ़ी।

इन सब में पढ़ने का मतलब क्या है? नल, जल, जग, कर, सर, या फिर सड़क, कमल, मबर, रहट, वगैरह? जब टीचर यह सब 'पढ़ा' रहा होता है बच्चे बोर होकर आपस में बातें करने लगते हैं। खामोश। आपस में बातें करना जुर्म है, टाइम ज़ाया होता है, बच्चा नालायक रहता है, माँ-बाप परेशान होते हैं, डिसिप्लिन खराब होता है। कोहराम मच जाता है। हेडमास्टर आकर देखता है, समझता है कि टीचर ढीला है। कमाल है।

रटना या पढ़ना? रटने की परम्परा पुरानी है, मगर अब साबित हो गया है कि रटना समझकर पढ़ने का दुश्मन है। क्लास में बच्चों की आपसी बातचीत से पढ़ाई बेहतर सीखी जाती है, बनिस्बत किताबी रटत से। बच्चों की बातचीत सुनना, फिर बारीक सवाल करके बातचीत आगे बढ़ाना, फिर बातों से बच्चों को कहानी सुनाना, फिर उन्हीं को कहानी बनाने पर शाबासी देना — इन सब से बच्चे बढ़िया पढ़ाई करना सीखते हैं।

हर बच्चे का, इंसान का, अपना निजी संसार होता है जिसमें उसके जीवन भर के अनुभवों, भावनाओं, कल्पनाओं, आइडियाओं, जानकारीयों, आदि का बना एक महाकंप्यूटर होता है। और पढ़ते वक्त पढ़े जा रहे शब्दों/वाक्यों का इस निजी महाकंप्यूटर के साथ आमना-सामना होता है। एक जटिल गुत्थम-गुत्था होती है जिससे 'समझ' पैदा होती है — निजी और बाहरी संसार मिलकर एक हो जाते हैं। पढ़ना अनोखी चीज़ है। तोता पंडित नहीं होता, सिर्फ नकल करता है।

इस अनोखी चीज़ को सिखाया कैसे जाए? टीचर कैसे बच्चे का महाकंप्यूटर बाहरी दुनिया से जोड़ सकता है? पढ़ना सिखाने में क्या-क्या रुकावटें आ सकती हैं? गतिविधियों का इस्तेमाल कैसे किया जाना चाहिए?

इन सवालों के जवाब अब हमें हासिल हैं। 'पढ़ के' देखो।

अध्याय — 13

बातें करना

पाठ की रूपरेखा

- परिचय
- उद्देश्य
- शीर्षक व उप-शीर्षक
 - अपने बारे में बात करने के अवसर देना
 - स्कूली अनुभवों पर बात करने के अवसर देना
 - तस्वीरों पर चर्चा करना
 - ढूँढना
 - तर्क करना
 - आरोपण
 - भविष्यवाणी
 - संबंध बैठाना
 - कहानियाँ सुनना और उन पर चर्चा करना
 - अभिनय करना
 - अध्यापक की प्रतिक्रिया
 - कुछ गतिविधियाँ

परिचय :

हम सभी का प्राथमिक शालाओं के बारे में शुरुआती अनुभव यह बताता है कि हम अपनी कक्षाओं में बच्चों का एक-दूसरे से बातचीत करना पसंद नहीं करते हैं। हम यह सोचते हैं कि हमारी कक्षाएँ ऐसी हो जहाँ बच्चे शांत बैठे हों, अनुशासित हों आपस में बात करने की बजाए चुपचाप बैठकर शिक्षक की सुनें। जबकि हमें प्राथमिक शालाओं में आने वाले बच्चों की रुचि के विषयों के बारे में उनके किस्से, कहानियों को जानकर उन पर कक्षा में ढेरों बातचीत के अवसर देना चाहिए ताकि बच्चे कक्षा में अपनापन महसूस कर सकें और पढ़ने-पढ़ाने की प्रक्रिया में सहजतापूर्वक भाग ले सकें। साथ ही हमें बातचीत के ऐसे अवसर जानने या पता करने होंगे जो सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को प्रभावी बनाते हों। हम लेख में कक्षा में बातचीत क्यों जरूरी हैं या क्या फायदे हैं इसके बारे में और गहराई से पढ़ेंगे।

उद्देश्य :

- शिक्षक यह समझ पाएँगे कि प्राथमिक शालाओं में बच्चों का आपस में बातचीत करना सीखने का माध्यम है।
- शिक्षक ऐसी गतिविधियों को पहचान पाएँगे जहाँ बच्चे एक-दूसरे से बात कर सकें।
- शिक्षक कक्षा-कक्ष में ऐसी गतिविधियों का संचालन कर पाएँगे जो बच्चों को बातचीत के लिए प्रेरित कर पाएँ?

हमारे स्कूलों में 'बात करना' प्रायः गलत समझा जाता है। यह माना जाता है कि यदि कोई बात कर रहा है तो ठीक से पढ़ाई नहीं कर रहा होगा। इसलिए जैसे ही अध्यापक बच्चों को बात करता हुआ देखता है, वह तुरंत उन्हें रोकता है। बात करने की छूट बच्चों को सिर्फ आधी छुट्टी में रहती है जब अध्यापक कोई खास काम नहीं कर रहा होता है।

बातचीत के प्रति उपेक्षा की वजह से हम शिक्षा में बातचीत के उपयोगों की अवहेलना करते आ रहे हैं। यह स्थिति सभी स्तरों पर है, पर प्रारंभिक स्तर पर यह सबसे ज़्यादा है। नर्सरी व प्राइमरी स्कूल के बच्चों के लिए बातचीत करना सीखने और सीखी हुई

चीज को सुदृढ़ बनाने का एक बुनियादी माध्यम है। सच तो यह है कि ऐसे अध्यापक, जो बच्चों को बात नहीं करने देते, वे किताबों व अन्य सामग्री के लिए पैसे की कमी की शिकायत करने के हकदार नहीं हैं। वे पहले ही एक ऐसा बेशकीमती साधन बेकार जाने दे रहे हैं जिसके लिए कोई पैसा नहीं खर्च करना पड़ता। इसलिए ऐसा स्कूल जहाँ छोटे बच्चे बात करने को स्वतंत्र नहीं, बड़ा फिजूलखर्च स्कूल कहलाएगा।

यह सही है कि बच्चे तरह-तरह के उद्देश्य लेकर बातचीत करते हैं और ये सभी उद्देश्य अध्यापक के लिए उपयोगी नहीं कहे जा सकते। उदाहरण के लिए बोरियत के मारे बात करने और दूसरे की निगाह से चूकी हुई चीज उसे दिखाने के लिए बात करने में फर्क है। दूसरी किस्म की बात बच्चे की सीखने की प्रक्रिया को बल देती है, जैसा कि दो बच्चों के इस संवाद में हो रहा है। ये बच्चे अध्यापिका की मेज के पास इंतजार में खड़े फुसफुसा रहे हैं और अध्यापिका रजिस्टर भरने में लगी है:



यदि आप इस छोटे-से संवाद का विश्लेषण करें तो सीखने की उन संभावनाओं को पहचान सकेंगे जो बातचीत के जरिए ही इन दो बच्चों को उपलब्ध हुई। यदि पहले बच्चे ने अध्यापिका की अंगूठी देखकर बात नहीं छोड़ी होती तो उसे यह याद करने का मौका न मिलता कि बहन जी पहले भी अंगूठी पहनती थी। यदि यह बातचीत न हुई होती तो दूसरे बच्चे को पुरानी और नई अंगूठी में फर्क देखने का अवसर न मिलता, न ही यह समझने का अवसर मिलता कि 'छोटी' और 'पतली' में क्या भिन्नता है। बातचीत के इन उपयोगों के प्रति सचेत होने के लिए जरूरी है कि हम बच्चों की बात सुनने की आदत डालें। यह कहना आसान है, पर इसे करना इसलिए मुश्किल है क्योंकि बड़े यह मानकर चलते हैं कि उनका काम बच्चों को हुक्म देना है और बच्चों का काम हुक्म सुनना है। बच्चों की बातचीत के अच्छे श्रोता बनने के रास्ते में यह मान्यता अड़चन पैदा करती है। अच्छे श्रोता से मेरा आशय एक ऐसे व्यक्ति से है जो बात के सूक्ष्म उद्देश्य और बातचीत के कारण पैदा हुई सीखने की संभावनाओं को धैर्यपूर्वक पहचान सके।

किसी भी आम स्थिति में बातचीत में मस्त बच्चे ये दस क्रियाएँ करते नजर आ सकते हैं:

1. जिस चीज पर अभी तक ध्यान नहीं दिया, उस पर ध्यान देना,
2. उसे मोटे तौर पर या बारीकी से देखना,
3. अपने-अपने निरीक्षणों का आदान-प्रदान करना,
4. निरीक्षणों को तरतीब से लगाना,

5. दूसरे के निरीक्षण को चुनौती देना,
6. निरीक्षण के आधार पर तर्क करना,
7. भविष्यवाणी करना,
8. पिछले किसी अनुभव को याद करना,
9. दूसरे की भावनाओं या उसके अनुभवों की कल्पना करना,
10. किसी काल्पनिक स्थिति में अपनी भावनाओं की कल्पना करना।

अगर आप बच्चों की बातचीत को ध्यानपूर्वक सुनने की आदत डाल लें तो आप जल्दी ही इन दस और कई अन्य संभावनाओं में फर्क करने में समर्थ हो जाएंगे। आप यह भी समझने लगेंगे कि ये संभावनाएँ किस तरह विश्लेषण और तर्क करने की क्षमताओं के विकास से जुड़ी हैं। इस अध्याय में आगे चलकर दी गई गतिविधियाँ आपको इन क्षमताओं का विकास करने वाली परिस्थितियाँ बनाने में मदद देंगी।

अभ्यास

- बातचीत में मस्त बच्चे कौन-कौन सी क्रियाएँ करते नज़र आते हैं? नाम लिखिए एवं दो उदाहरण दीजिए।

बच्चों की बातचीत को शिक्षण सामग्री के तौर पर इस्तेमाल करने के इच्छुक अध्यापक को पहले **बातचीत के लिए अनुकूल वातावरण पैदा करना** होगा। अपने कामकाज और टीका-टिप्पणियों के जरिए अध्यापक को बच्चों में यह विश्वास पैदा करना होगा कि वे बात करने के लिए स्वतंत्र हैं। इसका आशय अराजकता को न्यौता देना नहीं है। उल्टे, जरूरत इस बात की है कि:

- हर बच्चा यह महसूस करे कि जब वह कुछ कहेगा तो उसे सुना जाएगा और
- सभी बच्चे यह महसूस करें कि अध्यापक को उनका बोलना अच्छा लगता है।

कक्षा में बच्चों को बातचीत के लिए प्रोत्साहित करने वाले मौकों को हम पाँच किस्मों में रख सकते हैं:

1. अपने बारे में बात करने के अवसर देना

सब बच्चे अपनी जिंदगी के बारे में— उन घटनाओं के बारे में जो हो चुकी हैं और उनके बारे में भी जो अभी नहीं हुई हैं— बात करने को उत्सुक रहते हैं बशर्ते कि उन्हें इसके लिए प्रोत्साहन और मौका दिया जाए। कई अध्यापक बच्चों की व्यक्तिगत जिंदगी और स्कूल में उनकी पढ़ाई के बीच कोई संबंध नहीं देख पाते। वे इस बात पर जोर देते हैं कि कक्षा में सिर्फ पाठ्यपुस्तकों में दी गई सामग्री पर ही चर्चा हो। अध्यापक की इस मान्यता के कारण कई बच्चे कक्षा में किसी भी किस्म की हिस्सेदारी नहीं निभा पाते। अध्यापक जिन चीजों पर चर्चा करते हैं, वे बच्चों को आकर्षित नहीं कर पातीं, और बच्चों के व्यक्तिगत अनुभव (जैसे किसी रिश्तेदार का आना, आंधी और बारिश में घर की हालत, या बीमार पड़ना) अध्यापक को रास नहीं आते।

ऐसी स्थिति बच्चों को पाठ्यक्रम से एकदम काट देती है। अध्यापक चाहें तो उनके इस अलगाव को रोक सकते हैं। इसके लिए उन्हें बच्चों की घरेलू जिंदगी और उनके पिछले अनुभवों की चर्चा के अवसर पैदा करने होंगे। यदि बच्चों को इन चीजों पर बात करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए तो धीरे-धीरे वे कई तरह के अनुभवों से जुड़े भावों और विचारों को प्रकट करने में समर्थ हो जाएंगे। साथ ही वे स्कूल के पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों (जैसे विज्ञान, भूगोल, नागरिक शास्त्र) में शामिल ज्ञान से एक गहरे, व्यक्तिगत स्तर पर संबंध बना सकेंगे।

2. स्कूली अनुभवों पर बात करने के अवसर देना

स्कूल का परिवेश खोजबीन और निरीक्षण का एक शानदार माध्यम है। स्कूल कहीं भी हो उसके इर्दगिर्द ऐसी कई छोटी-छोटी चीजें होती हैं जिनसे विस्तृत जांच और बहस की सामग्री मिलती है। दुकानें, पेड़, पत्थर, मकान, सड़क, बाड़, मिट्टी, फाटक, घोंसले, छत्ते, फूल, तितलियाँ, खुली नाली, नल और तमाम चीजें स्कूल के पड़ोस में ढूँढ़ी जा सकती हैं, और बारीक अवलोकन, अवलोकनों के आदान-प्रदान, सच के निर्धारण और दूसरी चीजों से उसके संबंध की खोज के लिए काम में लाई जा सकती हैं।

छोटे बच्चों के साथ यह सब करने के लिए बातचीत एक उम्दा माध्यम है। जैसा कि आगे दी गई गतिविधियों से स्पष्ट होगा, यह कतई जरूरी नहीं कि अध्यापक बहुत सारे बच्चों को औपचारिक रूप से भ्रमण के लिए ले जाए। दरअसल तीन-चार बच्चों को किसी चीज की रपट लिखने के लिए भेजना उपयोगी हो सकता है। यह जरूर है कि भ्रमण में खूब मजा आता है, अतः जो अध्यापक बच्चों को स्कूल से दूर किसी जगह पर ले जाने का खर्च उठा सकते हों, उन्हें ऐसा अवश्य करना चाहिए। पर जो अध्यापक बच्चों को किसी संग्रहालय या डाकखाने तक नहीं ले जा सकते, उन्हें इस बात का बहाना नहीं बनाना चाहिए कि वे बच्चों को स्कूल के करीब एक टूटी पुलिया या स्कूल के पिछवाड़े गंदे पानी की निकासी तक भी नहीं ले जा सकते। महत्वपूर्ण चीज यह है कि सभी बच्चों को भ्रमण में देखी गई सब चीजों पर बात करने का पर्याप्त अवसर मिले।

3. तस्वीरों पर चर्चा करना

ऐसी बातचीत जो सर्जना और विश्लेषण को प्रोत्साहित करती हो, तस्वीरों के जरिए अच्छी तरह की जा सकती है। तस्वीरें कैसी भी हो सकती हैं—अखबारों और पत्रिकाओं के विज्ञापनों या खबरों के साथ छपे चित्र, कैलेंडरों, टिकटों, लेबलों और पोस्टरों पर छपे चित्र। ये सभी काम में लाए जा सकते हैं। इस प्रकार तस्वीरों के स्रोत बहुत व्यापक हैं और किसी छोटे गाँव में भी ढूँढ़े जा सकते हैं। अध्यापक साल दर साल अपने इस्तेमाल के लिए तस्वीरों का एक संग्रह बना सकता है।

इन स्रोतों के अलावा स्कूलों को थोड़ा अतिरिक्त पैसा खर्च करके तस्वीरों वाला बाल-साहित्य खरीदने की कोशिश करनी चाहिए। सुरुचिपूर्वक छपा गया बाल-साहित्य भारत की सभी भाषाओं में उपलब्ध है लेकिन अक्सर देखा गया है कि अध्यापकों का इस साहित्य से कोई वास्ता नहीं होता। स्कूल में यदि कुछ बाल साहित्य है भी तो उसका दैनिक इस्तेमाल इस डर से नहीं किया जाता कि किताबें खराब हो जाएँगी। बाल साहित्य का अपने शिक्षण में प्रयोग करने के इच्छुक अध्यापकों को चाहिए कि किताबों की देखरेख के काम में बच्चों को शामिल करें और उन्हें इसकी ट्रेनिंग दें कि किताब को कैसे उठाना-रखना है, कोने मोड़े या थूक लगाए बिना पन्ना कैसे पलटना है। ऐसी छोटी बातें ध्यानपूर्वक ट्रेनिंग देकर सिखाई जा सकती है। ये छोटी-छोटी चीजें आगे जाकर बच्चों में किताबों के प्रति आदर पैदा करेंगी और उन्हें सीखने का साधन मानने की प्रवृत्ति विकसित करेंगी। ये चीजें बच्चे में चीजों को सहेज कर रखने की प्रवृत्ति का विकास करने में भी मदद देंगी।

बच्चों के बीच बैठकर बगैर किसी तैयारी के, बिलकुल अनौपचारिक ढंग से किसी तस्वीर के बारे में बातचीत करना भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है। लेकिन यदि हम देखने के विभिन्न पहलुओं के बारे में सचेत हो जाएं तो बच्चों की भाषा के विकास की दृष्टि से हम ऐसी बातचीत को और भी अधिक उपयोगी बना सकते हैं। अध्यापक का हर प्रश्न बच्चों की प्रतिक्रिया को एक निश्चित ढंग से प्रभावित करता है। सवालियों के जरिए बच्चों की निगाह और प्रतिक्रिया को विस्तार देने की क्षमता हम किस प्रकार हासिल कर सकते हैं? प्रतिक्रिया के स्तर, जिनकी तरफ बच्चों का ध्यान हम प्रश्नों की मदद से मोड़ सकते हैं, ये हैं :

- (i) **ढूँढ़ना** : इस स्तर पर हम बच्चों से केवल इतना कहेंगे कि वे चित्र में दिखाई गई चीजों को ढूँढ़ें। हम इस तरह के प्रश्न पूछ सकते हैं: 'इस चित्र में क्या है?' 'क्या इस चित्र में एक चूहा है?' 'साइकिल पर कौन बैठा है?' 'लड़का कितना बड़ा है?'
- (ii) **तर्क करना** : प्रतिक्रिया के इस स्तर का संबंध कारण बताने की क्षमता से है। चित्र में दिखाई गई किसी बात का जो भी कारण बच्चा बताए, अध्यापक को उसे स्वीकार करना चाहिए। अध्यापक स्वयं भी कारण बता सकता है— **पर केवल एक संभव उत्तर के तौर पर, अंतिम उत्तर के तौर पर नहीं।** प्रश्नों के उदाहरण : 'नन्ही लड़की क्यों रो रही है?' 'मोटर साइकिल का पिछला हिस्सा हमें दिखाई क्यों नहीं दे रहा?' 'चूहा क्यों छिपा है?'
- (iii) **आरोपण** : इस स्तर पर हम बच्चे से खुद को चित्र में आरोपित करने को कहते हैं। अतः इस स्तर पर प्रश्न पूछने का उद्देश्य बच्चे को एक कल्पित स्थिति में स्वयं को डालने, कौन क्या कहेगा यह कल्पना करने, और उन्हें कैसा लगेगा यह सोचने को प्रोत्साहित करना है। प्रश्नों के उदाहरण : 'यदि तुम इस पेड़ पर बैठे होते तो तुम्हें कैसा—क्या दिखाई देता?' 'छोटी लड़की साइकिल पर बैठे आदमी से क्या कह रही है?' 'चूहा क्या सोच रहा है?'
- (iv) **भविष्यवाणी** : इस स्तर का संबंध चित्र में दिखाई गई स्थिति के बाद की घटनाओं का अनुमान करने से है। बच्चों को यह सोचने के लिए प्रेरित करना है कि अब आगे क्या होगा। प्रश्नों के उदाहरण: 'यह आदमी अब कहाँ जाएगा?' 'नन्हीं लड़की घर पर क्या करेगी?' 'वह घर कैसे पहुँचेगी?'
- (v) **संबंध बैठाना** : अब हम ऐसे प्रश्न पूछेंगे जो बच्चों को चित्र में दिखाई गई स्थिति से मिलती-जुलती कोई चीज अपनी जिंदगी में ढूँढ़ने को प्रेरित करें। प्रश्नों के उदाहरण : 'तुम कभी मोटर—साइकिल पर बैठे हो?' 'बैठकर कैसा लगता है?' 'क्या तुम कभी किसी अजनबी के साथ रहे हो?' 'उस दिन फिर क्या हुआ?'

अभ्यास

- कौन-सी बातचीत पर सर्जना एवं विश्लेषण को प्रोत्साहित करते हैं? तर्क देकर समझाइए।
- तस्वीरों पर बातचीत के क्या-क्या मौके होंगे समझाइए।

4. कहानियाँ सुनना और उन पर चर्चा करना

कोई कहानी सुनते वक्त हमारा ध्यान उसमें चित्रित घटनाओं और चरित्रों की तरफ भागता है। कई कहानियों का संबंध हमारी देखी हुई घटनाओं से नहीं होता, पर हम उनकी कल्पना कर लेते हैं। इसी तरह भले ही हमने कहानी के चरित्रों जैसे लोग कभी न देखे हों, फिर भी हम उनकी तस्वीर मन में बना लेते हैं। इस प्रकार अपरिचित घटनाएँ और लोग दुनिया के उस नक्शे में शामिल हो जाते हैं जो हमने अपने दिमाग में बना रखा है। बाद में इन घटनाओं की हम ठीक उसी तरह चर्चा कर सकते हैं जिस तरह अपनी जिंदगी में सचमुच घटी घटनाओं की चर्चा करते हैं। **फिल्मों, किताबों और अखबारों में छपी अधिकांश खबरों की चर्चा लोग इसी तरीके से करते हैं।** कहानी चाहे किसी असली घटना के बारे में हो या किसी के द्वारा कल्पित घटना के बारे में, वह एक नई सामग्री हमारे ध्यान में लाती है और हम इस सामग्री को बगैर ज्यादा कोशिश या परेशानी के अपने मन में जगह दे देते हैं।

कहानी सुनते समय हम घटनाक्रम और चरित्रों के व्यवहार की कल्पना करते चलते हैं। दूसरी तरफ जब हम स्वयं कोई कहानी सुनाते हैं तो उसमें शामिल अनुभवों को व्यवस्थित करते चलते हैं। ये अनुभव वास्तविक हो तो उन्हें ज्यों का त्यों रखने की कुछ चिंता अवश्य होती है। पर ऐसा कम ही होता है कि कोई अपने अनुभव को एकदम हू-ब-हू सुना सके। छोटी-मोटी फेरबदल हो ही जाती है क्योंकि कुछ बातें हमें दूसरी बातों से ज्यादा महत्वपूर्ण लगती है। यदि हमारी कहानी वास्तविक अनुभवों के बारे में न हो तो हम उसे कुछ ज्यादा आजादी से प्रस्तुत करते हैं। शायद तब हमारा मुख्य उद्देश्य अपने श्रोता की दिलचस्पी जगाना होता है। कहानी चाहे असली हो या काल्पनिक, उसमें दो चीजें अवश्य रहती हैं :

1. जीवन की घटनाओं, चरित्रों आदि का पुनर्योजन, और
2. सुनने वाले का ध्यानाकर्षण।

ये दोनों बातें भाषा के कुशल इस्तेमाल पर निर्भर हैं। दरअसल हरेक कहानी हमसे भाषा की चतुरता की माँग करती है और कहानियाँ सुनने का अनुभव हमें भाषा के चतुर कौशल के नमूने देता है। इसी कारण कहानी कहना नन्हें बच्चों के अध्यापक के लिए एक बढ़िया साधन है।

कुछ अध्यापक कहानी सुनाने को एक कला मानते हैं। वे सोचते हैं कि इनेगिने लोग ही अच्छी तरह कहानियाँ सुना सकते हैं। यह एक दुर्भाग्यपूर्ण मान्यता है क्योंकि इसकी वजह से बच्चे कहानियाँ सुनने के आनंद से वंचित रह जाते हैं। यदि कोई कहानी अच्छी है तो बच्चे उसे सुनकर जरूर खुश होंगे। कहने का कौशल तो समय और अभ्यास से ही आएगा। असली बात है अच्छी कहानियाँ चुनना और उन्हें बार-बार सुनाना। कोई कहानी सिर्फ एक बार सुनाने के लिए नहीं होती और अच्छी कहानियाँ तो ढेरों बार सुनाने लायक होती हैं।

अभ्यास

- कोई कहानी सिर्फ एक बार सुनाने के लिए नहीं होती और अच्छी कहानियाँ तो ढेरों बार सुनाने व सुनने लायक होती है? क्या आप इस बात से सहमत हैं क्यों?
- अपने पसंद की एक कहानी लिखिए जो आपको बहुत अच्छी लगती है और यह भी बताइए कि यह कहानी आपको क्यों पसंद है?

कहानी सुनाकर उस पर चर्चा करना जरा टेढ़ा मामला है। अनेक अध्यापक जो कहानी से मिलने वाली सीख की चर्चा करने को उत्सुक रहते हैं। कहानी समाप्त होते ही वे पूछ उठते हैं : 'इस कहानी से तुम्हें क्या शिक्षा मिली?' एक सार्थक संवाद की शुरुआत के लिए यह प्रश्न बिलकुल बेकार है। कहानी के नैतिक मूल्य का (यदि कहानी में ऐसा कोई मूल्य है) बच्चों के लिए कोई विशेष आकर्षण नहीं होता। उनके लिए तो कहानी का ही महत्व होता है। नैतिक मूल्य के बारे में पूछने वाला अध्यापक अपनी ही मेहनत को गुड़गोबर कर देता है। इतनी ही फिजूल उन अध्यापकों की माँग होती है जो कहानी ज्यों की त्यों याद करने पर जोर देते हैं। वे चाहते हैं कि बच्चे पूरी कहानी हू-ब-हू सुना दें। वे यह माँग इतने नियमित रूप से करते हैं कि बच्चे कहानी का आनंद लेना छोड़ अपने ऊपर लादी जाने वाली माँग की चिंता में डूब जाते हैं।

कहानी सुनाते वक्त श्रोता के लिए महत्वपूर्ण चीज कहानी से अपना संबंध स्थापित करना है, और हमें यह समझना चाहिए कि हर बच्चा यह संबंध एक अलग ढंग से स्थापित करता है। उसका व्यक्तित्व और उसके पिछले अनुभव कहानी के प्रति बच्चे की प्रतिक्रिया को प्रभावित करते हैं। हो सकता है कि बच्चा किसी चरित्र की कल्पना कहानी में दिए विवरण से एकदम अलग रूप में करे। संभव है कि उसे कोई घटना भावनात्मक रूप से बाकी सब घटनाओं से ज्यादा सार्थक लगे। कहानी और उसके चरित्रों की ऐसी पुनर्रचना करना, जो खुद को

सार्वभौमिक लगे, हर बच्चे का मौलिक अधिकार है। ऐसा अध्यापक, जो चरित्रों की कल्पना किसी भी ढंग से करने के बच्चे के अधिकार को स्वीकार करता है, बच्चों को इस बात की पूरी आजादी और अवसर देगा कि वे कहानी के बारे में किसी भी तरह से बात करें— उसे तोड़े—म रोड़ें उसे बढ़ाएँ, उसके चरित्रों की अदला-बदली करें या स्वयं कहानियाँ गढ़ें। ऐसे अवसर कहानी कहने के फौरन बाद देना जरूरी नहीं है। प्रायः ठीक यही रहता है कि कहानी सुनाने के बाद कोई और एकदम अलग गतिविधि शुरू की जाए।

अभ्यास

- नैतिक मूल्य के बारे में पूछने वाला अध्यापक अपनी ही मेहनत को गुड़गोबर कर देता है। लेखक ने यह बात क्यों कही होगी?

कहानी कोष

कई शिक्षक बच्चों को सुनाने लायक कहानियों की कमी महसूस करते हैं। कभी-कभी वे पत्रिकाओं या अखबारों में छपी छोटी-मोटी कहानीनुमा रचनाएँ सुनाकर संतोष कर लेते हैं। पचास-साठ अच्छी यानी सुनाने लायक कहानियों का व्यक्तिगत कोष बनाने के लिए कहानियों का चयन इन स्रोतों से किया जा सकता है:

- पंचतंत्र, कथासरित्सागर, जातक, महाभारत, बेटाल पच्चीसी, सिंहासन बत्तीसी और पौराणिक कहानियाँ;
- देश और दुनिया के विभिन्न हिस्सों की लोककथाओं के संग्रह;
- अपने इलाके की लोककथाएँ—इन्हें इकट्ठा करने के लिए बड़े-बूढ़ों लोगों की मदद ली जा सकती है;
- ऐतिहासिक कहानियाँ;
- कहानी बनाने लायक पुरानी स्थानीय घटनाएँ।

5. अभिनय करना

कहानी और नाटक में संबंध है, इसलिए अध्यापक आसानी से एक को दूसरे से जोड़ सकता है। कहानी को ध्यानपूर्वक सुन रहा बच्चा उसमें चित्रित भूमिकाओं को चुपचाप ग्रहण कर रहा होता है। यही चीज नाटक में होती है, पर अधिक मुखर रूप में। नाटक में बच्चों को विभिन्न भूमिकाओं को बातचीत, हाव-भाव और शरीर के जरिए प्रस्तुत करने का मौका मिलता है। कहानी के श्रोता की तरह नाटक में भाग लेते वक्त भी उन्हें स्वयं को किसी दूसरे पर आरोपित करना होता है और उसकी निगाह से चीजों को देखना होता है। फर्क यही है कि नाटक में यह ज्यादा सक्रियता पूर्वक करना होता है, कल्पित स्थिति और चरित्रों के अनुभव शब्द और हाव-भाव ढूँढ़ने पड़ते हैं। इस सबमें तुरतबुद्धि से अभिनय करने के लिए सुनहरा मौका रहता है जो नाटक को बातचीत के विस्तार के लिए इस्तेमाल करने का मुख्य आधार है।

दुर्भाग्यवश स्कूलों में होने वाली ज्यादातर गतिविधियों में तुरतबुद्धि के लिए जगह नहीं होती। बच्चों को निश्चित भूमिकाएँ दे दी जाती हैं और उन्हें संवाद याद करने को कह दिया जाता है। नाटक का उपयोग किसी त्योहार या अतिथि के आगमन जैसे खास अवसरों के लिए किया जाता है। नाटक के इस उपयोग के भी कुछ न कुछ फायदे तो होंगे ही, पर इससे बच्चों की भाषा के विकास में कोई खास मदद नहीं मिलती। थोड़े से बच्चे ही नाटक में हिस्सा लेते हैं, बाकी सिर्फ देखते हैं। तैयारी और अंतिम प्रदर्शन के दौरान लगातार सबको यह डर

बना रहता है कि कोई गलती न हो जाए। ऐसे नाटकों में आजादी और आनंद की गुंजाइश नहीं रह जाती। एक भाषायी गतिविधि के रूप में नाटक के इस्तेमाल के लिए ये दो चीजें: आजादी और आनंद बहुत जरूरी हैं।

जो अध्यापक नाटक का भाषा शिक्षण में उपयोग करना चाहते हैं, उन्हें याद रखना चाहिए कि नाटक बच्चों के लिए कोई विशेष या निराली चीज नहीं है— वह तो उनकी जिंदगी का भाग है। नकल उतारना, किसी चीज को बढ़ा-चढ़ाकर बताना, स्वांग करना जैसी नाटकीय युक्तियों का प्रयोग बच्चे करते ही रहते हैं। बच्चों के अपने पारंपरिक खेलों में भी नाटक का एक विशेष स्थान रहता है। ऐसा बच्चा मुश्किल से मिलेगा जिसमें नाटकीय कौशल न हो। पर अनेक बच्चे अपने नाटकीय कौशल का कक्षा में प्रयोग करने को उत्सुक नहीं होते। उन्हें लगता है कि कक्षा इसके लिए ठीक जगह नहीं है। ऐसा माहौल बनाने की कोई एक तकनीक नहीं है। आप इसके लिए धीरे-धीरे प्रयास कर सकते हैं। और इसके लिए जरूरी है कि आप बच्चों को स्वाभाविक रूप से यथार्थ जिंदगी के बारे में बात करने को प्रोत्साहित करें, बच्चों की बातचीत को ध्यान लगाकर सुनें और मधुर व्यवहार करें।

दूसरी खास बात यह है कि प्रदर्शन के लिए नाटक करने और नाटक के रोजमर्रा के इस्तेमाल में अंतर है। हमारा विषय रोजमर्रा का नाटक है और उसके लिए पहले से तैयार पटकथा, संवाद, पोशाकें, रिहर्सल और रोशनी की व्यवस्था बेमानी है। अभिनय के लिए किसी भी घटना की कहानी पर्याप्त है। **नाटकीय कहानियों के सबसे अच्छे उदाहरण आपको प्रायः बच्चों की बातों से मिल सकते हैं, बशर्ते कि बच्चे जो रोज देखते, महसूस करते हैं उसके बारे में बात करने की स्वतंत्रता वे अनुभव करते हों।**

बस कैसे रुकी, कुछ लोग उतरे, कुछ चढ़े, बस फिर से कैसे चली और इस समय उसके अंदर क्या हो रहा है— यह कक्षा के पूरे 40 बच्चों के अभिनय करने लायक बढ़िया कथानक है। दूसरी तरफ अध्यापक द्वारा या पढ़ी गई कहानियाँ भी नाटक के लिए जोरदार सामग्री दे सकती हैं। यदि कहानी में थोड़े से चरित्र हैं तो पाँच-पाँच बच्चों की टोलियाँ उस पर अलग अलग काम कर सकती हैं या उन्हें अलग अलग कहानियाँ दे दी जाएँ। टोलियों में प्रतियोगिता करवाने का कोई तुक नहीं है। इससे अनावश्यक बेचैनी और अध्यापक पर निर्भरता पैदा होगी।

यदि आप छोटी उम्र से ही स्वतःस्फूर्त नाटक का इस्तेमाल शुरू कर देते हैं तो वह पढ़ने के कौशल के विकास की नींव का काम करेगा। **नाटक करने तथा पढ़ने में सीधा रिश्ता न हो, पर रिश्ता है।** नाटक शब्दों और शरीर की भंगिमाओं (हाव-भाव, झुकना आदि) को सचेत होकर प्रतीकों की तरह उपयोग करने का एक विशिष्ट मौका देता है कहानी सुनने की तरह अभिनय करते समय भी बच्चे दुनिया की दिनचर्या में प्रतीक रूप से हिस्सा लेते हैं— यानी वे घटनाओं में सीधे उपस्थित हुए बगैर उनमें हिस्सा लेते हैं। यही क्षमता एक अच्छे पाठक में होती है। जो चीजें उसकी आँखों के आगे मौजूद नहीं हैं, उन्हें वह 'देखता' चलता है और उस पर इस तरह प्रतिक्रिया करता चलता है मानो वे उसके सामने मौजूद हों।

अभ्यास

-
- बच्चों की बातचीत को प्रोत्साहित करने वाली पाँच विधियों का उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
 - कहानी और नाटक में क्या अन्तर है?
 - रोजमर्रा की जिन्दगी में बच्चे जो नाटक करते हैं और शालाओं या कक्षाओं में जो नाटक करते हैं उन दोनों में क्या-क्या फर्क होते हैं।
-

अध्यापक की प्रतिक्रिया

स्कूल में दाखिल होने तक बच्चे अपनी मातृभाषा की बुनियादी संरचनाओं पर अच्छा-खासा अधिकार पा चुके होते हैं। उन्हें न केवल तमाम तरह के कार्यों के लिए भाषा का प्रयोग करना होता है, बल्कि वे यह भी खूब समझ चुके होते हैं कि भिन्न-भिन्न संदर्भों और श्रोताओं के हिसाब से भाषा को संभालना करना कितना जरूरी है। पाँच वर्ष का बच्चा संदेशों को कार्य में बदलना (जैसे, कहने पर पानी का गिलास लाना और उसे वापस सही जगह रखना) जानता है। वह लोगों की बातचीत की सहायता से उनके चरित्र और आपसी रिश्तों का अनुमान भी कर लेता है। छोटे बच्चे को ये क्षमताएँ किसी के सिखाने से नहीं, रोजाना के जीवन से प्राप्त होती हैं। बच्चे के आस-पास जो कुछ हो रहा होता है, वह उसे अपनी सोच-विचार की छलनी से छानकर अपने भाषा-संयंत्र का हिस्सा बना लेता है।

हमें ये क्षमताएँ स्वयं हासिल करने का श्रेय बच्चे को देना चाहिए। हम बच्चे को कोई बिल्कुल नई चीज नहीं दे सकते। केवल ऐसी परिस्थितियाँ बना सकते हैं जिनमें बच्चा अपनी मौजूदा क्षमताओं का और विकास कर सके। बातचीत के संदर्भ में ऐसी परिस्थितियाँ रचने की मुख्य शर्त है बच्चे की बात पर अपनी प्रतिक्रिया के प्रति सचेत होना। हर बार बच्चे की बात सुनते समय हमें चाहिए कि:

1. उसे पूरी बात कहने दें,
2. वह जो कह रहा है उसमें रुचि लें,
3. मतभेद व्यक्त करने की इच्छा हो तो उस पर काबू करें,
4. बच्चे ने जो कहा है उस पर अपनी, प्रतिक्रिया विस्तार से यानी, अधिक शब्दों में और ज्यादा समृद्ध वाक्य रचना का प्रयोग करते हुए दें। इतना कहना काफी नहीं है कि 'अच्छा' या यह अच्छा है। उदाहरण के लिए यदि बच्चे ने कहा, गिलहरी पेड़ पर तो अध्यापक की प्रतिक्रिया हो सकती है— उसने गिलहरी को पेड़ पर चढ़ते देखा?
5. घटना और जानकारी माँगे या बच्चे का ध्यान विषय के किसी नए पहलू की तरफ खींचें।

बच्चों से इस तरह बात करने के लिए काफी अभ्यास जरूरी है। सबसे जरूरी यह महसूस करना है कि बातचीत बच्चे के लिए सीखने का एक महत्वपूर्ण साधन है और उसका बच्चे के सामाजिक व्यवहार और व्यक्तित्व पर गहरा असर पड़ता है।

अक्सर चुप रहने वाले बच्चे अध्यापक के लिए दिक्कत पेश कर सकते हैं। संभव है कि आपकी कक्षा के कुछ बच्चे बात करने की अपेक्षा खेलने या चीजें बनाने में, ज्यादा दिलचस्पी दिखाएँ। लेकिन यदि कोई बच्चा अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने, सवाल पूछने और दूसरों को यह बताने के लिए कि वह क्या कर रहा है, बिल्कुल उत्सुक न हो तो ऐसे बच्चे की ओर कुछ विशेष ध्यान देना बुद्धिमानी का काम होगा। मुमकिन है कि उसे घर पर नाना प्रकार से हतोत्साहित किया गया हो या उस पर दबाव डाले गए हों। चुप्पी उसके व्यक्तित्व, विशेषतया दूसरों के संदर्भ में उसकी आत्मछवि को पहुँची चोट की एक अभिव्यक्ति हो सकती है। घर के दमघोंटू माहौल का असर काफी गहरा होता है पर उसे दूर करना असंभव नहीं है। एक संवेदनशील अध्यापक, जो समस्या की जड़ को समझता हो, दुनिया के साथ बच्चे के संबंधों में चमत्कारपूर्ण परिवर्तन ला सकता है।

कुछ गतिविधियाँ

यहाँ केवल थोड़ी सी गतिविधियाँ दी गई हैं जिन्हें कोई भी अध्यापक एक साधारण कक्षा में आयोजित कर सकता है। हर बार किसी गतिविधि में थोड़ी सी फेरबदल करने से बच्चे पिछली बार के मुकाबले और ज्यादा उत्साह महसूस करेंगे। इसलिए इन गतिविधियों को बार-बार कीजिए और हर बार इनमें कुछ नया जोड़िए। आप जो चीजें जोड़े उनका ब्यौरा रखिए ताकि आप किसी नए सहयोगी को अपने प्रयोगों की जानकारी दे सकें। यहाँ दी गई लगभग हरेक गतिविधि दर्जनों नई संभावनाओं की शुरुआत बन सकती है।

एक

क्या देखा?

पहला चरण : एक बच्चे से कहिए कि वह बाहर जाए, देखे कि बाहर क्या-क्या हो रहा है और लौटकर दूसरों को बताए। उदाहरण के लिए वह बताएगा कि उसने एक ठेला, दो दुकानें और एक साइकिल देखी।

दूसरा चरण : अब बाकी बच्चे उससे सवाल पूछेंगे। बच्चे गोल घरे में बैठें और एक बच्चा एक ही सवाल पूछे। उदाहरण के लिए एक बच्चा पूछ सकता है, 'साइकिल के हैंडिल से क्या लटका था?' जवाब है, एक टोकरी लटकी थी। अगला सवाल टोकरी का रंग कैसा था?

तीसरा चरण : जब सारे बच्चे एक-एक सवाल पूछ लें तो अध्यापक उस बच्चे से पूछे जो बाहर गया था कि उसे कौन सा प्रश्न सबसे अच्छा लगा। मान लीजिए कि उसका जवाब हो— 'शशि का सवाल सबसे अच्छा था'—तो अगला सवाल पूछिए: वह सवाल क्या था?

चौथा सवाल : अब खेल के अगले दौर की शुरुआत शशि से होगी। उससे कोई ऐसी चीज देखने को कहिए जो पहले बच्चे ने नहीं देखी थीं शशि के वापस आने पर बच्चों से कहें कि वे नए सवाल पूछे ऐसे सवाल जो पहले किसी ने नहीं पूछे।

दो

खोजियों की खबर

पाँच या छह बच्चों की टोली को स्कूल की इमारत के आस-पास या भीतर किसी निश्चित चीज या जगह का अध्ययन करने के लिए भेजिए जैसे वे पेड़ों के एक झुंड, चाय की गुमटी, टूटे हुए पुल या घोंसले का मुआयना करने जा सकते हैं। उनसे कहिए कि वे सावधानी से उस चीज की खोजबीन करें और अपने निरीक्षणों की आपस में चर्चा करें।

जिस समय खोजी दल बाहर गया हो, बाकी बच्चों को उस चीज के बारे में विस्तार से बताएँ। जैसे यदि खोजी-दल चाय की गुमटी का अध्ययन करने गया है तो बच्चों को बताएँ कि वहाँ क्या-क्या चीजें उपलब्ध हैं (बच्चों से पूछें भी), उसे कौन चलाता है, वहाँ उपलब्ध चीजें, कहाँ-कहाँ से आती हैं, आदि।

वापस आने पर खोजी दल कक्षा के सवालों का सामना करे। प्रश्न पूछने में अध्यापक की बारी भी आनी चाहिए।

अगली बार किन्हीं और बच्चों का खोजी-दल बनाइए।

तीन

बूझो, मैंने क्या देखा?

एक बच्चा बाहर जाए, दरवाजों पर या कक्षा से कुछ दूर खड़े होकर आस-पास दिखाई दे रही सैकड़ों चीजों में से कोई एक चुन ले। वह चीज कुछ भी हो सकती है— पेड़, पत्ता, गिलहरी, चिड़िया, तार, खंभा, पत्थर। लौटकर वह उस चीज के बारे में सिर्फ एक वाक्य बोले, जैसे, मैंने एक भूरी चीज देखी।

अब इस बच्चे से एक प्रश्न पूछकर उस चीज का अनुमान लगाने का मौका कक्षा के हर बच्चे को मिलेगा। उदाहरण के लिए —

- पहला बच्चा : 'क्या वह पतली है?'
- उत्तर : 'नहीं'।
- दूसरा बच्चा : 'वह कितनी बड़ी है?'
- उत्तर : 'वह काफी बड़ी है।'
- तीसरा बच्चा : 'क्या वह कुर्सी जितनी बड़ी है?'
- उत्तर : 'नहीं, कुर्सी से छोटी है।'
- चौथा बच्चा : 'क्या वह मुड़ सकती है?'

अंत में सही अनुमान लग चुकने के बाद कुछ बच्चों को अपने प्रश्नों के उत्तरों से आपत्ति हो सकती है। उदाहरण के लिए किसी को यह आपत्ति हो सकती है कि रंग भूरा नहीं, मिट्टी जैसा था। ऐसी स्थिति में बारीक अंतर देख पाने में अध्यापक को बच्चों की मदद करनी होगी।

चार

जो कहा सो करना

बच्चों से कहिए कि वे ध्यान से सुने और जो बताया जाए उसे करें। पहले एकदम सरल निर्देश दीजिए और पूरी कक्षा से निर्देश का एक साथ पालन करने को कहिए।

उदाहरण : 'अपना सिर छुओ।'

'अपनी दाहिनी आँख बंद करो।'

'सिर पर ताली बजाओ।'

कक्षा को दो समूहों में बाँट दीजिए। आप पहले समूह को निर्देश देंगे और इस समूह के बच्चे दूसरे समूह को वही या मिलते-जुलते निर्देश देंगे।

धीरे-धीरे निर्देश को जटिल बनाइए। उदाहरण:

'दोनों हाथों से अपना सिर छुओ, फिर दाहिने हाथ से दाहिना कान छुओ।'

'दोनों आँखें मींचो, अपने पड़ोसी को छुओ, उससे कहो कि अपना बायाँ हाथ तुम्हें दे।' जब एक समूह के बच्चे दूसरे समूह को निर्देश दे रहे हों तो यह जरूरी नहीं कि वे अध्यापक के निर्देशों को ज्यों का त्यों दुहराएँ। उन्हें ताजे निर्देश रचने के लिए प्रोत्साहित कीजिए।

पाँच

तुलना

एक जैसी दिखने वाली चीजों के जोड़े बनाइए, जैसे दो पेड़ों की पत्तियाँ, अलग-अलग पौधों के फूल, पत्थर, अलग अलग आकार में काटे गए कागज के टुकड़े।

बच्चों को बताइए कि आप जोड़े की एक चीज का वर्णन करेंगे और वर्णन ध्यान से सुनकर उन्हें यह अनुमान लगाना है कि आप किस चीज की चर्चा कर रहे थे। उदाहरण : 'मैं जिस पत्ती के बारे में सोच रहा हूँ वह लंबी और चिकनी है और उसकी किनार सीधी है।'

यह गतिविधि आठ-दस बार करने के बाद वर्णन करने का काम बच्चों को सौंप दीजिए। हर बार यह गतिविधि करते वक्त चीजें, बदल दीजिए। हर बार वर्णन के लिए और बारीक बातें चुनिए।

छह

यह कैसे बनाया?

बच्चों को कागज, कपड़े, या अन्य उपलब्ध सामग्री से चीजें बनाना सिखाइए। कागज की नाव, हाथ की कठपुतली, और धागे की आकृतियाँ बढ़िया रहेंगी। इन्हें बनाने का प्रदर्शन करते समय खूब विस्तार से विवरण देते जाइए और बच्चों को कहिए कि वे साथ-साथ खुद भी वहीं चीज बनाते जाएँ। जैसे यदि आप कागज की नाव बना रहे हैं तो एक-एक कदम स्पष्ट करते जाइए— कागज को आधा मोड़ो। अब कोनों को अंदर की तरफ मोड़ दो। बची हुई कागज की पट्टी को उठा दो आदि।

सात

करके दिखाना

पहला चरण : ऐसे दस-पंद्रह क्रियाकलाप चुन लीजिए जिन्हें बच्चे रोज देखते हों। उदाहरण झाड़ू लगाना, केला छीलना, बर्तन माँजना, सब्जी काटना, दो भरी बाल्टियाँ उठाकर चलना। हर बच्चे के कान में फुसफुसा दीजिए कि आपने उसके लिए कौन सा काम चुना है। हर बच्चा बारी से सामने आए और चुपचाप अपना काम करके दिखाए। बाकी बच्चों को यह अनुमान लगाना है कि उसने क्या करके दिखाया।

दूसरा चरण : इस गतिविधि को थोड़ा जटिल बनाइए। ऐसे क्रियाकलाप चुनिए जिनमें पाँच-सात बच्चों की जरूरत हो। बच्चों की टोलियाँ बना दीजिए और प्रत्येक टोली को एक सामूहिक अभिनय करने को दीजिए। बड़े बच्चों के साथ यह गतिविधि करते वक्त कागज के टुकड़ों पर लिख दीजिए कि उन्हें क्या करना है।

आठ

तस्वीर की छानबीन

पाँच-पाँच बच्चों की टोलियाँ बनाइए और हर टोली को एक चित्र दे दीजिए। यह गतिविधि शुरू करने से पहले आपको सारे चित्रों का ध्यान से अध्ययन कर लेना चाहिए और पृष्ठ 90 पर सुझाए गए सभी स्तरों के प्रश्न तैयार कर लेने चाहिए। इस तरह हरेक टोली के लिए पाँच प्रश्न आपके पास होंगे।

तस्वीर का विश्लेषण करने और आपस में चर्चा करने के लिए कम से कम पाँच मिनट बच्चों को दीजिए। टोली के सदस्यों को एक से पांच की क्रम संख्या में रख दीजिए और इस क्रम से पाँचों प्रश्न पूछिए।

ये प्रश्न बच्चों से अलग-अलग, अनौपचारिक बातचीत के लिए भी उपयोगी हैं। इस गतिविधि को दो-चार बार आयोजित करने के बाद आप नए नए प्रश्न आसानी से बना सकेंगे, लेकिन शुरू में पहले से पूरी तैयारी करके रखना ही ठीक रहेगा।

नौ

सही तस्वीर कौन सी है?

यह गतिविधि तभी की जा सकती है जब आपके पास बाल साहित्य की कई किताबें खास तौर से चित्रों वाली किताबें हों।

बच्चों के जोड़े बना दीजिए। वे आमने-सामने दो पंक्तियों में बैठें। एक पंक्ति के बच्चे किताबों को उलट-पुलट कर कोई एक तस्वीर चुन लें। अब इस पंक्ति का हर बच्चा अपने सामने बैठे बच्चे को तस्वीर दिखाए बिना तस्वीर का विवरण देगा। विवरण देकर किताब बंद करके वह सामने वाले बच्चे को दे देगा और अब इस बच्चे को सुने हुए विवरण के आधार पर तस्वीर ढूँढ़नी होगी।

दोनों पंक्तियाँ किताबों की अदला-बदली करती रहें। यह गतिविधि दीवार पर टंगे चित्रों की मदद से भी की जा सकती है।

दस

कहानी बनाना

बोतलों और डिब्बों के ढक्कन, कपड़े के टुकड़े, चूड़ी के टुकड़े, छोटे-छोटे पत्थर, पत्तियाँ, निबें, और इस तरह की तमाम चीजें इकट्ठी कर लीजिए। पाँच-पाँच या छह चीजों की ढेरियाँ बनाकर पाँच-पाँच की हरेक टोली को एक ढेरी दे दीजिए। हर टोली को एक जगह बैठकर चीजों पर चर्चा करनी है और लगभग पंद्रह-बीस मिनट में एक कहानी गढ़नी है। सारी टोलियों के लौटने पर हर टोली में से एक बच्चा कहानी सुनाएगा। यदि टोली के अन्य सदस्य कोई फेरबदल करना चाहें, तो उन्हें खुशी से ऐसा करने दीजिए।

इस गतिविधि की सफलता इस बात पर निर्भर है कि आपके बच्चों को कहानियाँ सुनाने का कितना अनुभव है? साथ ही यह इस बात पर भी निर्भर है कि क्या वे किसी भी घटना को कहानी की तरह सुना सकते हैं? कोई भी घटना या वस्तु एक दिलचस्प कहानी की बुनियाद बन सकती है। यदि आप कल्पना और सूझबूझ से काम लेंगे तो यह आदत शीघ्र ही आपके बच्चों में भी पड़ जाएगी।

ग्यारह

तुम कहाँ रहते हो?

बच्चे दो पंक्तियों में आमने – सामने बैठते हैं। एक पंक्ति 'बताने वालों' की है, दूसरी 'सुनने वालों' की। पहली पंक्ति में बैठे हर बच्चे को अपने सामने बैठे बच्चे को समझाना है कि वह अपने घर कैसे जाता है। रास्ते को अच्छी तरह समझने के लिए सुनने वाला कितने ही सवाल पूछ सकता है। उदाहरण:

बताने वाला : सीधे जाकर मुड़ जाओ।

सुनने वाला : कितनी दूर तक सीधे जाना है?

बताने वाला : कूड़े के ढेर तक। वहाँ से मुड़ना है।

सुनने वाला : दाहिने मुड़ना है कि बाएँ।

बताने वाला : दाहिने ... नहीं, नहीं, बाएँ।

जब सभी बताने वालों की बारी आ चुके तब सुनने वाले बताने वाले बन जाएँ और खेल फिर शुरू।

इस सबसे क्या होगा?

यहाँ दी गई सभी गतिविधियों का लक्ष्य यह है कि अपने आस-पास की दुनिया से संबंध स्थापित करने की बच्चे की क्षमता का विकास हो। यद्यपि इन गतिविधियों का केंद्र बातचीत है, दरअसल बच्चों के विकास की दृष्टि से उनका संदर्भ बहुत व्यापक है। इस व्यापक संदर्भ में ये चीजें शामिल हैं:

- सीमित जानकारी के आधार पर होशियारी से अनुमान लगाना
- चीजों से एक से अधिक स्तर पर संबंध स्थापित करना
- मौलिक व्याख्या करना
- नई जानकारी पाने के लिए प्रश्न पूछना

कुछ गतिविधियाँ ऐसी हैं जो एक से अधिक माध्यम में काम करने का मौका देती हैं— एक माध्यम शब्दों का और दूसरा चित्रों का। यह संभावना अमूर्त और मूर्त प्रतीकों को जोड़ने की सामर्थ्य का विकास करने में सहायक हो सकती है। एक पाठक के रूप में बच्चे के विकास में यह महत्वपूर्ण योगदान होगा।

बातचीत हमेशा दुनिया से रिश्ता जोड़ने का बुनियादी माध्यम रहेगी। इसलिए बच्चे जब पढ़ना—लिखना सीख लें, तब भी बातचीत पर आधारित गतिविधियाँ जारी रहनी चाहिए।

पढ़ना यानि एक सृजनात्मक अनुभव

पाठ की रूपरेखा

- परिचय
- उद्देश्य
- शीर्षक व उपशीर्षक
 - पढ़ना और पाठक
 - पढ़ना और निजी संसार
 - अपरिचित शब्द
 - पढ़ाने के तरीके

परिचय :

प्राथमिक कक्षाओं में जब बच्चा आता है तो यह मुख्य उद्देश्य होता है कि वह पढ़ना सीख जाए। यह उद्देश्य अच्छा है लेकिन सोचने वाली बात यह है कि हम पढ़ने का मतलब क्या समझ रहे हैं और उसके लिए किन तरीकों का इस्तेमाल कर रहे हैं। सामान्यतः शिक्षक यह सोचते हैं कि बच्चा किताब में लिखी बातों को उसी रूप में पढ़ दे चाहे लिखी बातों का अर्थ उसे समझ में आए या नहीं। इसी तरह सिखाने के तरीके भी वर्णमाला याद करने, ध्वनि, अक्षर पहचान तक ही सीमित रहते हैं। लेकिन इससे उलट पढ़ने का क्या मतलब हो सकता है और सिखाने के क्या तरीके हो सकते हैं; इसकी बात इस अध्याय में की गई है साथ ही यह अध्याय यह भी बताता है कि पढ़ना एक सृजनात्मक कार्य है क्योंकि पाठक सामने लिखी बातों को हू-ब-हू उच्चारण नहीं करता है बल्कि अपने अनुभवों से उनका अर्थ भी गढ़ता जाता है।

उद्देश्य :

- सही अर्थों में पढ़ना क्या है? इसे समझ पाएँगे।
- पढ़ाना सिखाने के संभावित कारगर तरीकों का इस्तेमाल कर पाएँगे।
- पढ़ाना सिखाने की कारगर गतिविधियों के बारे में जान पाएँगे व उनका इस्तेमाल कर पाएँगे।
- लिखी हुई बात को पढ़ने का पाठक के निजी अनुभवों से क्या सम्बन्ध है इसे समझ पाएँगे।

हम सब यह अच्छी तरह जानते हैं कि पढ़ना आने का महत्त्व क्या होता है। स्कूल की गतिविधियों में सबसे महत्त्वपूर्ण है— पढ़ना सिखाना और सीखना। हमारे लिए यह जान लेना भी जरूरी है कि बच्चे पढ़ने की शुरुआत स्कूल आने से पहले ही कर लेते हैं। हो सकता है यह उपस्थिति प्रिंट पढ़ने की समझ बनाने में महत्त्वपूर्ण रही हो। समझकर पढ़ना हमारे व्यक्तित्व को सुदृढ़ बनाता है और हमें आत्मविश्वास देता है। पढ़ने की प्रक्रिया में हम न केवल इस सजीव संसार बल्कि उस लोक में भी पहुँच जाते हैं जो हमसे परे है, हमसे कोसों दूर है। साहित्य इसका मुख्य उदाहरण है।

फ्रैंक स्मिथ ने पढ़ने को लेकर किए गए अनुसंधान/सर्वेक्षण इत्यादि द्वारा एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनके विचारों ने पढ़ने के संसार में खलबली ही नहीं मचाई बल्कि शिक्षकों को चौंकाया और उत्साहित भी किया। वे मानते हैं कि पढ़ने की प्रक्रिया उच्चस्तरीय सोचने और सीखने की प्रक्रिया से एक जंजीर की तरह जुड़ी हुई है। स्मिथ मानते हैं कि पढ़ना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है जो पाठक को छपी सामग्री से कहीं आगे ले जाती है।

पढ़ना और पाठक

पढ़ने की प्रक्रिया में पाठक मुख्य भूमिका निभाते हैं या ऐसा कहा जा सकता है कि पढ़ने का सारा दारोमदार पढ़नेवाले पर ही होता है। दूसरी ओर, वर्ण पहचानना ही पढ़ने का महत्वपूर्ण कार्य नहीं है और वर्ण की पहचान एक आसान प्रक्रिया भी नहीं है। ध्वनियों और वर्णों में कई बार पूरा तालमेल नहीं होता है। ऐसे में पढ़ने की प्रक्रिया का पहला कदम काफी जटिल माना जाता है। अंग्रेजी पढ़ने में यह समस्या काफी उभरकर आती है। स्मिथ शिक्षकों और विशेषज्ञों का ध्यान इस समस्या की ओर खींचते हैं जो काफी हद तक सही भी है। पढ़ना केवल वर्ण या शब्दों को पढ़ लेना ही नहीं है, पढ़ना है समझकर पढ़ना, शब्दों में एक ऐसा अर्थ ढूँढ़ना जिसका पाठक के साथ एक आत्मीय रिश्ता हो। वास्तव में पढ़ना बेहद ही सृजनात्मक और संरचनात्मक काम है। पढ़ना एक ऐसी क्षमता है जिसमें पाठक के अपने पूर्व अनुभव भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जो पाठक दी गई पढ़ने की सामग्री को समझ नहीं पाता उसके लिए केवल वर्णों और शब्दों की पहचान एक अर्थहीन क्रिया है।

पढ़ना और निजी संसार

पढ़ने का सीधा संबंध पाठक के साथ होता है। यह कुछ आश्चर्यजनक लग सकता है परन्तु स्मिथ इस तथ्य को बहुत खूबसूरती से प्रस्तुत करते हैं। हम सब अपने अनुभव से जानते हैं कि हम, यहाँ तक कि एक छोटा बच्चा भी, अपनी समझ के अनुसार अपने संसार का ताना-बाना बुनता रहता है। अपने अनुभव, यादें जो नितांत हमारी अपनी हैं, शायद किसी के साथ बाँटी भी नहीं गई हों वे हमारे दिमाग में कहीं-न-कहीं अपनी जगह बनाते हैं। और यही अनुभवों का खट्टा-मीठा भंडार पढ़ते समय पढ़ने की प्रक्रिया में मदद करता है और उसे सुंदर व सजीव भी बनाता है। स्मिथ बताते हैं जो कुछ भी हम जानते हैं तथा जिन तथ्यों और अनुभवों पर हम विश्वास करते हैं, हमारी आशाएँ, और संभावनाएँ, सभी एक सिद्धान्त के रूप में हमारे मस्तिष्क में समाहित हो जाते हैं और पढ़ने की प्रक्रिया में लिखित सामग्री को समझने में हमारी सहायता करते हैं। इसीलिए स्मिथ का कहना है कि पढ़ना केवल लिखित सामग्री को पढ़ लेना मात्र नहीं होता बल्कि उसे समझना होता है और मुख्य बात यह है कि पाठक अपने पूर्व अनुभवों की भरपूर मदद लेता है।

फ्रैंक स्मिथ नए और रोचक तथ्यों को उजागर करते हैं जैसे कि पढ़ने का सम्बन्ध न्यूरो-बायोलॉजिकल पक्ष से भी होता है। हमारी आँखें पठन सामग्री को देखती हैं और हमारा मस्तिष्क उस सामग्री का अवलोकन करता है। यदि पठन सामग्री की संरचना इस तरह की गई हो कि पाठक के पास उसको समझने के लिए पिछले अनुभव ही नहीं हैं, तो ऐसा मानना उचित होगा कि उस विषय में पाठक की रुचि जगाने के लिए हमें कुछ और तरीकों की जरूरत है। ऐसी बहुत सी पठन सामग्री यदि एकत्रित हो जाती है और पाठक उसे समझने में असमर्थ रहता है तो एक किस्म की tunnel vision की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। यह एक ऐसी स्थिति है जिसमें पाठक पढ़कर समझने में असमर्थ रहता है और अँधेरे में ही हाथ-पाँव मार रहा है।

अपरिचित शब्द

हमारे अपने पढ़ने के अनुभव यह बताते हैं कि पढ़ना एक व्यक्तिगत अनुभव है। पाठकों की अपनी रुचियाँ होती हैं। पठन सामग्री को लेकर, पुस्तकों का चुनाव हमारी अपनी पसंद पर निर्भर करता है। फ्रैंक स्मिथ इस चर्चा को आगे बढ़ाते हुए कहते हैं कि हमारे पास पढ़ने के मुख्यतः दो उद्देश्य होते हैं— हम या तो जानकारी के

लिए पढ़ते हैं या फिर अपने ज्ञान के विस्तार के लिए। वर्णों को पहचानना ज्ञान पर आधारित प्रक्रिया है और यह अपने आपमें एक पूर्ण क्रिया है, जबकि पढ़ना होता है समझ के साथ, अपने पूर्व अनुभवों और अनुमान की मदद से पढ़ना और समझना। वे अपनी पुस्तक में पढ़ने की प्रक्रिया में वर्तनी, अर्थ, शब्द पहचान के महत्त्व को भी विस्तार से बताते हैं। इसके साथ स्मिथ इस बात पर भी जोर देते हैं कि एक कुशल पाठक पढ़ते समय अपरिचित शब्दों पर ज्यादा ध्यान नहीं देते और पढ़ने की धारा को टूटने नहीं देते और अपनी एकाग्रता, रुचि को कोई भी बाधा नहीं पहुँचाते। अपरिचित शब्द की समझ या तो संदर्भ से निकाल लेते हैं या अपनी सुविधा से शब्दकोश से उसका सही अर्थ देख लेते हैं। इस सारी प्रक्रिया में यह ध्यान में रखना जरूरी है कि कुशल पाठक पढ़कर समझने में अपना सारा ध्यान लगाते हैं।

पढ़ाने के तरीके

उनका यह कहना बिल्कुल वाजिब है कि कोई भी कृत्रिम तरीके से बनाया गया कार्यक्रम समझकर पढ़ने के कौशल को बढ़ावा नहीं देता। यदि हम अपने आस-पास के स्कूलों की पहली और दूसरी की कक्षाओं को ध्यान से देखें तो पाएँगे कि इस स्तर पर अध्यापक पढ़ना सिखाने के कुछ तरीके इस्तेमाल करते हैं। सही गलत की पहचान किए बिना, आँख मूँदकर उन पर विश्वास कर लिया जाता है, उदाहरण के लिए वर्णमाला का रटना, ध्वनि, अक्षर की पहचान, शुद्ध उच्चारण इत्यादि। ये सब क्रियाएँ यांत्रिक कौशलों के वर्ग में आती हैं। समझना यह है कि यह पढ़ना सीखने की क्रिया का आधार नहीं है। समझ के साथ पढ़ना एक कला है, पाठक के व्यक्तित्व का एक अंग है जिसे संवेदनशील शिक्षक ही समझ सकते हैं। इस तथ्य के सबूत मौजूद हैं कि एक नन्हा बच्चा जब स्कूल में प्रवेश करता है तो वह अपने अनुभवों के भंडार के साथ ही कक्षा में पढ़ना आरम्भ करता है। शिक्षक एवं हमारी शिक्षा प्रणाली को चाहिए कि इस अनुभव के भंडार को व्यर्थ न जाने दें बल्कि समझकर पढ़ने की प्रक्रिया में इसका उपयोग करें। क्योंकि ऐसा करने से पढ़ने की प्रक्रिया सरल हो जाती है और नन्हा पाठक एक नए आत्मविश्वास का अनुभव करता है।

कक्षा में छपे शब्दों से सम्पन्न वातावरण बनाने के लिए निम्नलिखित काम किए जा सकते हैं—

- (1) **शब्द—दीवार :** कक्षा में दीवार पर चार्ट लगाकर शब्द लिखे जाएँ। ये शब्द बच्चे की दृष्टि में रहेंगे तो वे इनसे घुल-मिल जाएँगे। ये शब्द पाठ्यपुस्तक से हो सकते हैं, रोजमर्रा में उपयोग होने वाले शब्द हो सकते हैं, छोटे बच्चों के लिए सरल शब्द हो सकते हैं।
- (2) **पहेली का कोना :** कक्षा में एक कोने में चार्ट पर पहेलियाँ लिखकर लगा सकते हैं और उसके साथ ही एक चार्ट बच्चों के जवाब के लिए लगा दें। बच्चे पहेलियाँ पढ़कर उनके जवाब लिखने की कोशिश करेंगे व कुछ समय बाद खुद भी पहेलियाँ बनाएँगे।
- (3) **कविता का कोना :** बच्चों को कविताएँ, गाना व सबको सुनाना अच्छा लगता है। चार्ट पर कविताएँ लिखकर या फोटो कॉपी को दीवार पर लगा दें। शुरुआत में ये कविताएँ बच्चों को पढ़कर सुनाई जाए व उन्हें साथ में गाने के लिए कहें। ध्यान रहे जब आप कविता पढ़ें तब प्रत्येक शब्द पर उंगली रखते जाए जिससे बच्चों को शब्द आकृति व उसकी ध्वनि में तालमेल बिठाने में आसानी रहेगी। कुछ समय बाद बच्चे स्वयं कविताएँ पढ़ने को प्रेरित होंगे।

गतिविधियाँ

स्मिथ यह सुझाव भी देते हैं कि पढ़ने की संस्कृति बनाने के लिए, बच्चों का पढ़ने को लेकर उत्साह बनाए रखने के लिए कुछ गतिविधियों का होना ज़रूरी है। हमें पढ़ने का एक ऐसा माहौल बनाना होगा जहाँ बच्चे सहज तरीके से पढ़ना सीख पाएँ। ऐसे में बच्चों को एक **छपे शब्दों से सम्पन्न वातावरण** देना बहुत ज़रूरी है। कक्षा में पुस्तकों की मौजूदगी, दीवारों पर सोच-समझकर करीने से लगाई छपी/लिखी सामग्री, बैठने की व्यवस्था में बदलाव और अध्यापक का पाठ्यपुस्तक की सीमाएँ लाँघना भी अति आवश्यक है। हमारे लिए यह मानना ज़रूरी है कि पढ़ने की प्रक्रिया स्कूल आने से पहले और स्कूल के बाद भी चलती रहती है। इससे कक्षा में पढ़ने का माहौल ठोस बनता है। पढ़ने का माहौल स्कूलों या कक्षाओं में पठन क्लब गठित कर बनाया जा सकता है। बच्चों को पढ़ने के लिए उत्साहित करने के लिए शिक्षकों को हर संभव चेष्टा करनी चाहिए।

अभ्यास

-
- एक कुशल पाठक पढ़ते समय अपरिचित शब्द आ जाने पर क्या करता है? और क्यों?
 - पढ़ने का सम्बन्ध न्यूरो-बायोलॉजिकल पक्ष से भी होता है। इस कथन का क्या मतलब है?
 - पढ़ना सीखने में किस प्रकार की गतिविधियाँ मददगार हो सकती हैं?
-

सही मायनों में आखिर 'पढ़ना' है क्या?

पाठ की रूपरेखा

- परिचय
- उद्देश्य
- शीर्षक व उपशीर्षक
 - पढ़ने के नमूने
 - सही मायने में पढ़ना
 - बोझिल तरीके
 - अच्छा पढ़ने में रूकावटें
 - सही पढ़ना सिखाना

परिचय :

“सही मायनों में आखिर ‘पढ़ना’ है क्या” लेख में बच्चों के पढ़ने के तरीकों के अलग-अलग उदाहरण देते हुए चर्चा की गई है कि अक्सर पठनकौशल से शिक्षाप्रणाली और शिक्षकों की क्या समझ होती है, शिक्षाविदों के अनुसार क्या, समझ होती है, इत्यादि के बारे में और गहराई से समझ पाएँगे।

उद्देश्य :

- शिक्षक यह समझ पाएँगे कि पढ़ना यानी हिज्जे करना नहीं है?
- शिक्षक समझ पाएँगे कि आखिर पढ़ने का मतलब क्या है?
- शिक्षक समझ पाएँगे पढ़ना यानी सिर्फ पाठ्यपुस्तक पढ़ना नहीं है।
- शिक्षक कक्षा की विविधता को समझकर तदनुसार पढ़ना सिखाने की गतिविधियाँ कर पाएँगे?

पढ़ने के नमूने

निशि कक्षा 3 की विद्यार्थी है। उसकी अध्यापिका के अनुसार वह पढ़ना अच्छी तरह से सीख रही है। नीचे किसी गद्य खंड की दो पंक्तियाँ दी गई हैं। निशि इन पंक्तियों को किस तरह पढ़ती है, प्रस्तुत है उसकी एक झलक—

“बरसात आने वाली थी। शांति अभी घर नहीं आई थी।”

निशि इन पंक्तियों को कुछ इस तरह से पढ़ती है— “बस का ब रस्सी का र सरौते का स उसमें आ का डंडा फिर तकली का त बना ब... र... सा... त। आम का आ नल का न एड़ी वाली मात्रा। बना आने, वा का व उसमें आ का डंडा फिर लट्ठू का ल और उसमें बड़ी ई की मात्रा। मतलब के वाली फिर थन का थ और बड़ी ई की मात्रा हो गया थी। शरीफ़े का श उसमें पड़े दो डंडे फिर नल का न तकली का का त...।

क्या आप निशि की पठन शैली को पहचान पाए हैं? किसी भी शब्द को पढ़ने के लिए वह रटी हुई वर्णमाला के अक्षरों को सामने लाती है, फिर अक्षर को जिस शब्द से जोड़कर रटवाया गया था,

उसी अक्षर और शब्द को बोलकर कोई नया शब्द पढ़ पाती है। जैसे— बरसात में ब की पहचान के लिए बस का ब रस्सी का र सरौते का स फिर आ का डंडा और तकली का । तभी कहीं जाकर बरसात शब्द से पहचान बन सकी है। अभी केवल शब्द से ही पहचान बन पाई है। इस शब्द के अर्थ से जुड़ने का भी यहाँ कोई भाव है, इसमें संदेह है। क्या हम कह सकते हैं कि निशि पढ़ना सीख गई है या सीख रही है?

मनोज कक्षा चार का विद्यार्थी है। वह कुछ इस तरह से पढ़ता है—

‘ब र स आ त बरसात आ । ने आने वा — ली ई वाली हे ऐ है। यानी कि शब्द के हर अक्षर पर अलग-अलग जोर देकर बोलना फिर शब्द को एक साथ बोलना। क्या इसे भी पढ़ पाने की श्रेणी में रखा जा सकता है?

इमरान पाँचवीं कक्षा का विद्यार्थी है। उसका पठन-कौशल कुछ अलग है। पाठ्यपुस्तक के किसी भी पाठ का नाम लीजिए, तुरत-फुरत उस पाठ को खोलकर फर्फटेदार अंदाज़ में पाठ पढ़ जाएगा, परंतु पाठ्यपुस्तक से बाहर कोई भी पाठ्य सामग्री पढ़ने के लिए दे दी जाए, तो पढ़ना तो दूर की बात अक्षरों की पहचान भी नहीं हो पाती। यह किस तरह का पठन कौशल है?

फिर तीसरी कक्षा में आते हैं। भानु को पढ़ने के लिए एक वाक्य दिया गया है, “वह दौड़कर बस में चढ़ गया।” इस वाक्य के साथ एक चित्र दिया गया था, जिसमें एक छोटा-सा बच्चा भागती हुई मुद्रा में बस पर चढ़ने की कोशिश में था। भानु ने इस वाक्य को पढ़ा, “व ह ब स म च ढ ग या”

यही वाक्य सुनीरा को भी पढ़ने के लिए दिया गया। सुनीरा का ध्यान लिखे हुए पर था या चित्र पर, यह आप तय करें। उसने वाक्य को इस तरह से पढ़ा, “बच्चा भागकर बस में चढ़ गया”।

पीयूष चौथी कक्षा में है। वह भी तस्वीर को देखकर और शायद कुछ अक्षरों/शब्दों को पहचान कर अपना ही ‘टेक्स्ट बना लेता है। जामुनी पढ़ तो लेती है, उसे पढ़े जा रहे अक्षरों, शब्दों और मात्राओं की भी पहचान है, पर पढ़े गए से भाव/अर्थ क्या निकला, यह अभी उसे पता नहीं। इसीलिए कहानी पढ़ने की उत्सुकता होने पर भी वह यही कहेगी, “आप पढ़कर सुनाओ, पहले आप पढ़कर सुनाओ।” जबकि विद्यालयी शिक्षा के इस स्तर (पाँचवीं कक्षा) तक आते-आते उसे स्वयं ही पढ़कर कहानियों का आनंद लेना चाहिए।

आपके सामने बच्चों की पठन-शैलियों की कुछ बानगियाँ यहाँ प्रस्तुत कीं। किस बच्चे के विषय में आप कहेंगे कि वह सही मायनों में पढ़ पा रही/रहा है? या फिर सभी के लिए कहा जा सकता है कि ‘पढ़ तो आखिर सभी रहे हैं।’

अभ्यास

- विद्यार्थियों के पढ़ने के कुछ नमूने अपने अनुभव के आधार पर दीजिए।

सही मायने में पढ़ना

कौन सही मायनों में पढ़ पा रहे हैं या नहीं, यह तय करने से पहले यह समझने का प्रयास करते हैं कि ‘पढ़ने’ का मतलब आखिर है क्या? विचारकों और भाषाविदों ने पढ़ने के संदर्भ में कुछ इस तरह से अपने मत प्रस्तुत किए हैं—

- लिखे हुए से अर्थ गढ़ना ही पढ़ना है।
- पढ़ने का अर्थ है लिखे हुए से धारणाओं को गढ़ना और साथ ही विचारों को आपस में जोड़ पाना और उन्हें अपनी स्मृति में रखना।

- पढ़ना सिर्फ वर्णमाला की पहचान, शब्द तथा वाक्य को बोल भर पाना नहीं है, बल्कि इसके आगे बहुत कुछ और भी है। यानी कि लिखे हुए के अर्थ को समझकर अपना नज़रिया बनाना या फिर अपनी निजी समझ विकसित करना है।
- शब्द के हिज्जे करके बोलना 'पढ़ना' नहीं है। पढ़ने का अर्थ है, लिखे हुए के साथ संवाद करना, अपने अनुभवों एवं समझ के साँचे में लिखे हुए को ढालना।
- पढ़ना एक एकाकी प्रक्रिया नहीं है, इसमें शामिल है अक्षरों की आकृतियाँ और उनसे जुड़ी ध्वनियाँ, वाक्य-विन्यास, शब्दों और वाक्यों के अर्थ और साथ ही अनुमान लगाने का कौशल।
- पढ़ने में महत्वपूर्ण है लिखी हुई जानकारीयों या संकेतों की बानगी ग्रहण करना।

यदि हम पढ़ने से संबंधित उल्लेखित परिभाषाओं के ज़रा भी निकट जा पाते हैं तो खुद ही निर्णय ले पाएँगे कि निशि, मनोज, इमरान, भानु और जामुनी इनमें से कोई भी अभी पढ़ना नहीं जानते। दरअसल, जब हम शब्दों के अलग-अलग हिज्जे करते हैं यानी कि टुकड़े-टुकड़े में किसी शब्द फिर वाक्य को पढ़ते हैं तो हमारा मस्तिष्क लिखी हुई सामग्री की संपूर्ण मात्रा या वज़न पर ध्यान न देकर अलग-अलग शब्द, उसके टुकड़े पर ध्यान देता है। इससे मस्तिष्क की क्षमता पर अत्यधिक बोझ पड़ता है और अर्थ ग्रहण करने की क्षमता तो कहीं खो ही जाती है। एक वाक्य के सारे शब्दों पर फिर शब्दों के अलग-अलग अक्षरों पर ध्यान देना अर्थ से कहीं दूर, बहुत दूर ले जाने की प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में पढ़ने से आनंद पाना तो बहुत दूर की बात है, 'पढ़ना' भी ठीक से नहीं आ पाता है।

अभ्यास

- "सही मायनों में पढ़ने में क्या-क्या शामिल होता है?"

"सही मायनों में पढ़ना" क्या है?

बोझिल तरीके

बच्चों को सही तरीके से पढ़ना सिखाने या 'पढ़ने' की क्षमता विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि बच्चों को 'डीकोडिंग' से दूर रखा जाए। 'डीकोडिंग' से मतलब है शब्द को टुकड़ों में बाँटकर पहचानना फिर उसे बोल पाना या पढ़ पाना। विद्यालयी शिक्षा में भाषा के संदर्भ में 'डीकोडिंग' और उस पर आधारित विधियाँ जैसे- वर्णमाला, उच्चारण या शब्द बोलना जैसी विधियाँ (?) बहुत ही लोकप्रिय हैं।

इनके लोकप्रिय होने के दो मुख्य कारण हो सकते हैं, पहला तो यही कि शायद शिक्षक 'पढ़ने' के सही मतलब को नहीं समझ पाए हैं और तदनुसार पढ़ना सिखाने की सही विधियों की जानकारी हासिल नहीं कर पाए हैं। दूसरा महत्वपूर्ण कारण शायद यही हो कि इस तरह से पढ़ाना उन्हें अधिक सुविधाजनक लगता हो। (जबकि असल मायने में इस तरह से पढ़ना सिखाने में शिक्षक ओर विद्यार्थी दोनों पर ही समय और मेहनत का अतिरिक्त बोझ पड़ता है।) पारंपरिक विधियों से पढ़ना सीखने वाले बच्चे हर शब्द को अक्षरों की छोटी इकाइयों में तोड़ते हैं और इस तरह से शब्दों का अर्थ ग्रहण करने की मस्तिष्क की क्षमता पर बहुत ज़्यादा बोझ डाल देते हैं। सही तरीके से पढ़ने वाले बच्चों की आँखें ऐसा बोझ नहीं डालने देती क्योंकि वे पन्ने पर अंकित ग्राफ़िक सूचनाओं के एक सीमित, चुने हुए अंश से जूझती हैं। वे किसी अक्षर के पूरे आकार पर ध्यान नहीं देते और न ही वे एक शब्द के सारे अक्षरों या एक वाक्य के सारे शब्दों पर ध्यान देते हैं पढ़ते समय उनकी आँखें लिखी हुई सामग्री के छोटे

से अंश पर गौर करती हैं, शेष भाग अनुमान के जरिए ग्रहण किया जाता है। अनुमान का आधार होता है अक्षरों की आकृतियाँ, शब्द, उनके अर्थ और उनके संयोजन तथा दुनिया से उन बच्चों का परिचय।

अभ्यास

- “पढ़ना सीखने में डीकोडिंग की उपयुक्तता समझाइए”
या
डीकोडिंग द्वारा पढ़ना सीखने में आने वाली कठिनाइयों का वर्णन कीजिए।
- “सही तरीके से पढ़ने वाले बच्चों की आँखें पढ़ने पर अंकित ग्राफिक सूचनाओं के एक सीमित, चुने हुए अंश से जुझती हैं” समझाइए।

आपको शायद लगे कि इस तरह से पढ़ना सिखाना तो एक बहुत ही मुश्किल प्रक्रिया होगी। बिल्कुल नहीं, इस सत्य के साथ कि ‘पढ़ना’ सिखाने की कोई एक अचूक विधि नहीं हो सकती और न ही पढ़ना सिखाने के लिए एक अकेली विधि पर ही निर्भर रहा जा सकता है। हर विधि की अपनी सीमाएँ होती हैं, जिन्हें शिक्षक बखूबी पहचान सकते हैं। इससे पहले कि पठन कौशल विकसित करने की विधियों पर चर्चा की जाए, एक अहम सवाल पर बात करना ज़रूरी होगा कि बच्चे पढ़ना क्यों नहीं सीख पा रहे हैं? इस सवाल के उत्तर के रूप में मैं अपने कुछ अनुभव बयान करना ज़रूरी समझती हूँ—

अच्छा पढ़ने में रुकावटें

- अन्य विषयों की तरह भाषा की घंटी भी ‘रटने’ की ही घंटी है और किसी लिखे हुए को रटकर पढ़ना नहीं सीखा जा सकता।
- कक्षाओं में विद्यार्थियों द्वारा बोलने और सवाल करने को एक ‘नकारात्मक मूल्य’ के रूप में देखा जाता है। कक्षाओं के वातावरण में विद्यार्थियों की ‘मुक्त अभिव्यक्ति’ के लिए बहुत ही कम गुंजाइश रखी गई है जो सापेक्ष रूप से उनकी पठन प्रक्रिया के आड़े आती है।
- भाषा के बुनियादी कौशल— बोलना और सुनना दोनों को ही दरकिनार करके अक्षरों/वर्णमाला को रटवाए जाने की अंतहीन कवायदें बच्चों में मौजूद ‘पढ़ना’ सीखने की ललक का शुरु में ही खत्म कर देती है।
- पाठ्यपुस्तकों में पठन कौशल को लेकर कोई सुसंगत नीति नहीं होती।
- पाठ्यपुस्तकों की भाषा और बच्चे की अपनी भाषा और अनुभवों में गहरा अंतर होता है।
- अध्यापक बच्चों की उच्चारण संबंधी गलतियों पर इतना अधिक ध्यान देते हैं कि बच्चे का पढ़ने के प्रति किसी तरह का उत्साह बन ही नहीं पाता।
- सुविधावंचित समूह के बच्चे, विशेषकर प्रथम पीढ़ी के शिक्षार्थी अपने आप को विद्यालय की किसी भी घटना/प्रक्रिया से नहीं जोड़ पाते, चाहे वह पाठ्यपुस्तक में छपी सामग्री हो या फिर शिक्षण विधियाँ, अथवा अध्यापकों का व्यवहार। कहीं भी वे स्वयं को ढूँढ़ नहीं पाते। पाठक शायद सवाल करें कि इन सबसे ‘पढ़ना सीखने’ का क्या लेना-देना, थोड़ा नहीं, बहुत लेना-देना है। दरअसल अपनी सांस्कृतिक-सामाजिक पहचान खोकर किसी भी प्रक्रिया से जुड़ पाना बहुत ही कठिन है और फिर पढ़ा क्या जाए? क्या वह जिसमें न तो ‘हम’ हैं और न ही ‘हमारे अनुभव’? इस सवाल का उत्तर ढूँढ़ने की प्रक्रिया के दौरान ही आप समझ लेंगे कि उक्त बिन्दु का ‘पढ़ने’ से कोई सरोकार है या नहीं।
- हमारे विद्यार्थी पढ़ना इसलिए भी नहीं सीख पाते, क्योंकि विद्यालय और घर दोनों ही जगहों पर पढ़ने योग्य रोचक सामग्री उन्हें मिल ही नहीं पाती। जिन बच्चों को मनचाही पठन सामग्री मिल भी जाती है, उन्हें पढ़ने

की आजादी नहीं है क्योंकि पाठ्यपुस्तक इतर सामग्री पढ़ने से परीक्षा में अच्छे अंक न ला पाने का भय अभिभावकों को हमेशा घेरे रहता है। मेरे स्मृत कोष में ऐसे बहुत से दृश्य टँके हुए हैं, सिर्फ इस वजह से कि “इन्हें पढ़कर क्या खाक नंबर ला पाओगे?”

अभ्यास

- क्या पढ़ना सीखने के लिए रुचि होना आवश्यक है, विद्यार्थियों में पढ़ने की रुचि जागृत करने के कुछ उपाय सुझाइए।
- हमारे अधिकतर विद्यालय बच्चों में मौजूद ‘पढ़ना’ सीखने की ललक को कत्तल करने वाले हैं, स्पष्ट कीजिए।

सही पढ़ना सिखाना

बच्चों को सही मायनों में पढ़ना सिखाने के लिए सबसे पहले तो ज़रूरी है कि मेरे इन अनुभवों पर गौर किया जाए। शायद फिर नए-से-नए तरीके खुद-ब-खुद सामने आ जाएँ।

दूसरी ज़रूरी बात कि अध्यापक इस बात की अहमियत समझें कि पढ़ने का अर्थ मात्र शब्दों तथा अक्षरों की पहचान से नहीं है बल्कि उनमें से अर्थ ढूँढ़ने से है और अर्थ हिज्जे करके, शब्द पढ़ने से नहीं आते बल्कि लिखे हुए में अपने अनुभव और अनुमान जोड़ने से आते हैं।

तीसरी महत्वपूर्ण बात ‘पढ़ने’ का मतलब सिर्फ पाठ्यपुस्तकों के पाठों को पढ़ पाना नहीं बल्कि अपने चारों ओर बिखरी अथाह लिखित और मुद्रित सामग्री को पढ़ पाना और उसमें से अपने लिए कुछ निकाल पाना असल मायनों में ‘पढ़ना’ है। भाषा के उच्चस्तरीय कौशल तो ‘पढ़ने’ की परिभाषा को कहीं और दूर ले जाते हैं। उनके अनुसार पढ़ने के प्रति सदैव एक ललक लिए रहना, साहित्य का रसास्वादन करना, अपने सामाजिक परिवेश को समझकर उसके प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित करना ही ‘पढ़ना’ है।

क्या हम निशि, मनोज, भानु, जामुनी आदि को इन उच्चस्तरीय कौशलों तक ले जा पाएँगे? बेशक, बशर्ते ‘सही मायनों में पढ़ना क्या है?’ को हम समझ पाए और तदनुसार भाषा के सत्र में कक्षा की विविधता के अनुसार वैज्ञानिक विधियों के प्रयोग को स्थान दे पाएँ।

अभ्यास

- पढ़ने का मतलब सिर्फ अपने पाठ्यपुस्तकों के पाठों को ही पढ़ पाना नहीं है, समझाइए।
- “हाँ” या “नहीं” में उत्तर दीजिए—
 - पढ़ने की आजादी न होना, पढ़ना न सीख पाने का प्रमुख कारण है। ()
 - साहित्य का रसास्वादन कर पाना भी पढ़ना है। ()
 - “पढ़ना” सिखाने की कोई एक अचूक विधि नहीं हो सकती। ()
 - हमारे विद्यालयों में पढ़ना सीखने की बुरी स्थिति की जिम्मेदार शिक्षकों की इस क्षेत्र में अज्ञानता भी है। ()
 - डीकोडिंग पढ़ना सिखाने में कारगर एवं उपयुक्त है। ()
 - पढ़ते समय पाठक अनुमान से भी पढ़ते हैं। ()
 - शब्दों को टुकड़ों में पढ़ने से अर्थ ग्रहण की क्षमता बढ़ती है। ()
 - पढ़ना सिर्फ वर्णमाला की पहचान, शब्द तथा वाक्य बोल पाना भर नहीं है। ()
 - बाल साहित्य के अधिक वाचन से भाषायी क्षमताओं का विकास नहीं होता है। ()
 - बच्चों के पढ़ना न सीखने में वे स्वयं जिम्मेदार होते हैं। ()

पढ़वाना किस चिड़िया का नाम?

अध्याय : 16. बच्चे पढ़ क्यों नहीं पाते? : पढ़ना मुश्किल बनाइए — स्कूली कवायद — अक्षरवार पढ़ना? — शब्दों से अर्थों का रास्ता — सक्षम पाठक कैसे पढ़ते हैं? — अपनी गलतियों से सीख — नतीजे।

अध्याय : 17. पढ़ना कैसे सिखाया जाए : मौजूदा स्कूलों की हालत — किताब से शुरुआत — पढ़ने की पहली — कविताओं और गानों से सिखाना — किताबें बनाना — गतिविधियाँ।

अध्याय : 18. पढ़ने का आकलन कैसे करें? : ठीक से पढ़ना क्या होता है? — पढ़ने का मकसद — पढ़ने का आकलन — पढ़ने के आकलन की गतिविधियाँ — पढ़ने की उत्सुकता।

अध्याय : 19. पढ़ाई पहली कक्षा की : पहली कक्षा का महत्व इस पाठ में एक शिक्षक के अनुभव — सफल तरीके — कक्षा में आनन्द।

अध्याय : 20. पढ़ना सिखाना : पढ़ना सिखाने के तरीकों का इतिहास — शुरुआती तरीके — खास खास शोध के नतीजे — शब्द पहचान के ज़रिए — वर्ण — आधारित तरीके — पढ़ने से समझने का रास्ता — आगे की दिशा।

कुछ बड़े-बूढ़े टीचर मिल बैठकर गुज़रे ज़माने को बड़ी हसरत से याद करते हैं। भई, क्या ज़माना था। क्लास में मास्टर राजा होता था। एक बार ब्लैक बोर्ड में लिखकर रटने को कह दिया, बस, फिर बेंत लेकर बैठ जाना होता था। दम साध के बैठे रहते थे। परीक्षा में सुलेख लिखकर पास हो जाते थे— मैट्रिक तक। बाद में भी वो ही रोब रहता था— रास्ते में गुज़रते हुए मिलते थे तो झुककर बोलते थे नमस्ते, मास्साब। सब हवा हो गया है आजकल। अब तो शिक्षाविद् छा गए हैं। बच्चे नाजुक हैं, कोमल हैं, संवेदनशील हैं। उनको कहानी सुनाओ, गाना सुनाओ, नाटक करवाओ, सैर करवाओ। टीचर ना हुए, नौटंकी के ज़मूरे हो गए। कलियुग है, भाईसाहब, कलियुग।

एक और किस्सा है : एकलव्य की कहानी। रजवाड़ों का टीचर था, द्रोणाचार्य नाम का। राजमहलों में राजकुमारों को पढ़ाता था। पढ़ाई में धनुर्विद्या शामिल थी, जंगलों में सिखाई जाती थी। राजकुमारों की पार्टी के पीछे-पीछे एक कबीलाई लड़का घूमता रहता था, देखता रहता था धनुर्विद्या। वो द्रोणाचार्य के पास आकर बोला मुझे भी सिखाइए। द्रोणाचार्य ने देखा, समझा। कहाँ राजकुमार, कहाँ ये जंगली लड़का। टालने के लिए कह दिया कि अलग से अकेले-अकेले सीखो। एकलव्य गुरुमंत्र मानकर चला गया। एक द्रोणाचार्य की मूर्ति बनायी, और मूर्ति के सामने जंगल में अकेला धनुर्विद्या के अभ्यास करता गया। साल बीते। राजकुमारों के खेल में एक गेंद कुएँ में गिर गई। कोई निकाल नहीं सका। एकलव्य ने तीर-पर-तीर मारकर निकाल दी। कुछ दिन बाद तीर मारकर एक कुत्ते का मुँह बाँध दिया। द्रोणाचार्य आसमान से टपका। लगा मेरी तो नौकरी गई, साख गई — इस लड़के को किसने शिक्षा दी? चालाकी से गुरुदक्षिणा माँगी — एकलव्य का अँगूठा। सब जानते हैं यह कहानी।

ये दो किस्से पढ़ना सिखाने के तरीकों के दो विपरीत छोर हैं। पहले में बच्चों को मार-डॉट कर पढ़ने की काबिलियत को ही कुचल दिया जाता है। दूसरे में बच्चे को अपनी लगन के बूते पर ही पढ़ना सीखने के लिए छोड़ दिया जाता है। दोनों ही बच्चों के लिए नाकाफी हैं। सब एकलव्य नहीं हो सकते। एकलव्य एक ही था।

जब से आम जनता के बच्चों की शिक्षा का चलन शुरु हुआ है— यानि लगभग पिछले डेढ़-दो सौ सालों से — तब से पढ़ाना बेहतर ढंग से सिखाने के लिए वैज्ञानिक नज़रियों की खोज चल रही है। इधर-उधर गलतियों के बावजूद पढ़ाने के तरीकों में बेशक बेहतरी आई है। पढ़ाने के तरीकों में पढ़ाई की परीक्षाओं का आतंक घटाने की कोशिश शामिल है— ताकि बच्चों का हौसला हमेशा के लिए न टूट जाए। फिर आगे मंजिलें और भी चलकर तय करनी हैं। पढ़ के सीखो।

अध्याय – 16

बच्चे पढ़ क्यों नहीं पाते?

पाठ की रूपरेखा

- परिचय
- उद्देश्य
- शीर्षक व उपशीर्षक
 - एक दर्जन आसान तरीके अपनाइए और पढ़ना मुश्किल बनाइए
 - स्कूली कवायद
 - अक्षरवार पढ़ना
 - शब्दों से अर्थ तक का रास्ता
 - सक्षम पाठक
 - अपनी गलतियों की सीख
 - नतीजे

परिचय :

आमतौर पर यह माना जाता है कि लिखित ध्वनि प्रतीकों का उच्चारण कर पाना ही पढ़ना है। इसके लिए प्रायः चरणबद्ध तरीके से पढ़ना सिखाने का प्रयास करते हैं यानी पहले वर्णमाला के अक्षरों की पहचान फिर बिना मात्रावाले शब्द, फिर मात्रावाले शब्द, फिर वाक्य। इतनी लम्बी कवायद से भी बच्चे पढ़ना नहीं सीख पा रहे हैं। इसके पीछे क्या कारण हो सकते हैं? क्या हमारी पढ़ाने की शैली में परिवर्तन की जरूरत है? पढ़ना सिखाने के आसान तरीके, पढ़ना सीखना मुश्किल क्यों बनाते हैं? इन सभी प्रश्नों का जवाब ढूँढ़ने की कोशिश हम इस अध्याय में करेंगे और अपने लिए पढ़ना सिखाने की रणनीतियाँ बना सकेंगे।

उद्देश्य :

- पढ़ने का मतलब समझ पाएँगे।
- बच्चों के नहीं पढ़ पाने के कारण को समझ सकेंगे।
- पढ़ाने को लेकर स्कूलों में प्रचलित पद्धतियों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- भाषा समग्रता में सीखी जा सकती है टुकड़ों में नहीं इस विचार पर अपनी समझ बना सकेंगे।
- पढ़ने की प्रक्रिया को समझ सकेंगे।
- शिक्षक कक्षा-कक्ष में बच्चों को पढ़ाना सिखाने के लिए रणनीतियाँ बना सकेंगे।

आजकल बहुत सारे शिक्षक और पालक यह शिकायत करते मिलते हैं कि बच्चे पढ़ना तक नहीं जानते। पाँचवी पास करके आ गए पर पढ़ तक नहीं सकते। यह बात बहुत सुनने को मिलती है और फिर आदतन, पुराना जमाना या हमारा जमाना याद आ जाता है। उस समय कैसे पहली क्लास के बच्चे पता नहीं क्या-क्या कर लेते थे। आखिर पढ़ना अचानक इतना दुर्गम हुनर कैसे हो गया?

चूँकि बात पढ़ने की चली है तो पहले पाठकों की जाँच हो जाए, कागज कलम लेकर तैयार हो जाइए नीचे कुछ अक्षर लिखे

हैं, इन्हें ध्यान से देख लीजिए। अब इन्हें एक तरफ करके याददाश्त के आधार पर लिख डालिए कि कौन-कौन से अक्षर देखे थे:

ल ए फू जो क की म

च ल क है ड में ता खि है ल

अब जाँच कीजिए कि आप कितने अक्षर लिख पाए? एक बार फिर करके देखें, नीचे कुछ अक्षर लिखे हैं, इनके साथ ऊपर वाली क्रिया दोहराइए:

क म ल ए क फू ल

है जो की च ड में खि ल ता है

कौन-सा वाला ज्यादा आसान रहा? परंतु यदि आप ध्यान से देखें तो दोनों बार अक्षर वही थे फिर क्या अंतर पड़ा?

इसी तरह के कई प्रयोगों के माध्यम से भाषा वैज्ञानिक यह समझने का प्रयास करते हैं कि आखिर पढ़ने की क्रिया होती कैसे है। क्या इसी समझ के आधार पर पढ़ना सिखाने के और तरीके बनाए जा सकते हैं?

बहरहाल, जरा देखें कि आज हमारे स्कूलों में जिस तरीके से पढ़ना सिखाया जाता है उसके मूल सिद्धांत क्या हैं?

एक दर्जन आसान तरीके अपनाइए और पढ़ना मुश्किल बनाइए

1. पढ़ने के नियम यथा शीघ्र सिखाएँ— ताकि पढ़ने का मूल उद्देश्य गुम हो जाए।
2. उच्चारण सीखने पर जोर दें— ताकि बच्चे अर्थ न समझ सकें।
3. एक बार में एक अक्षर या शब्द सिखाएँ और इसे पूरी तरह सिखाकर ही आगे बढ़ें— ताकि संदर्भ स्पष्ट न हो और मज़ा न आए।
4. शब्द को सही पढ़ने का प्रमुख उद्देश्य बनाएँ— ताकि अर्थ पर ध्यान न जाए।
5. अनुमान को निरुत्साहित करें— ताकि बच्चे हमेशा हिज्जे करके पढ़ते रहें।
6. सटीकता पर जोर दें— ताकि पढ़ना उबाऊ हो जाए।
7. तुरंत टीका-टिप्पणी करें— ताकि बच्चा अपनी गलतियों को खुद न सुधारे।
8. आँखों की गति यदि गलत हो तो पकड़ें और ठीक करें— ताकि पढ़ना मात्र अक्षरों को पहचानना बन जाए।
9. पिछड़े विद्यार्थियों को यथाशीघ्र पहचानकर उन पर खास ध्यान दें— ताकि वे अपनी गलतियों से न सीख सकें और कक्षा में उनका मखौल हो।
10. बच्चों को पढ़ने का महत्त्व अवश्य समझाएँ— जैसे कि पढ़कर पढ़ने का महत्त्व मालूम नहीं होगा।
11. पढ़ते समय हिज्जे और सुलेख जरूर सुधरवाएँ— ताकि बच्चे तकनीक में उलझे रहें।
12. और यदि आपकी विधि असंतोषजनक हो, तो कोई दूसरी तकनीक लागू करने में देर न करें— ताकि आप खुद भी तकनीक में उलझे रहें।

अभ्यास

- एक शिक्षक पढ़ना सीखने की कक्षा में कुछ ऐसी पद्धतियों को प्रयोग में लाता है, जो पढ़ना मुश्किल बना देते हैं, उन रुढ़िगत पद्धतियों पर प्रकाश डालिए।

या

शिक्षक की उन गतिविधियों का उल्लेख करें जिससे बच्चे के पढ़ने की गति अथवा क्रिया में अवरोध उत्पन्न होता है।

- हाँ या नहीं में उत्तर दो
 - प्रारम्भिक स्तर पर बच्चों को पढ़ने के दौरान सही उच्चारण के लिए टोकना चाहिए। ()
 - बच्चे द्वारा अनुमान आधारित पठन को प्रोत्साहित करना चाहिए। ()
 - पठन में कमजोर विद्यार्थियों को शिक्षक द्वारा अलग से चिह्नित किया जाना चाहिए। ()
 - प्रारम्भिक स्तर पर ही बच्चों को सुलेख लिखने के लिए दबाव देना चाहिए। ()

स्कूली कवायद

सबसे पहला काम यह किया जाता है बच्चे वर्णमाला के सारे अक्षर पहचान सकें। उसके बाद इन अक्षरों को जोड़कर आसान शब्द बनाए जाते हैं। आसान शब्दों से मतलब है वे शब्द जिनमें मात्रा का उपयोग न हुआ हो, मात्राविहीन शब्दों के चक्कर में कई बेमतलब शब्द भी बन जाते हैं। इन शब्दों को मिलाकर अमर घर चल, जल घर पर रख, आदि जैसे वाक्य सिखाए जाते हैं। इसके बाद मुश्किल शब्द, संयुक्ताक्षर, मुश्किल शब्दों में वाक्य, व्याकरण सहित, आदि इसी क्रम में आते हैं। इस पूरी कवायद ने कई वैज्ञानिकों को अपने संस्थान में स्थायी पद का निमंत्रण दिया। कवायद में काफी समय तक विद्यार्थियों को उद्देश्य या प्रयोजन मालूम नहीं होता। वे तो बस कोर्स पूरा करने में जोत दिए जाते हैं। इनमें से किसी भी मुकाम पर अक्षर पहचान की गलती को दंडित किया जाता है। परीक्षा में अंक भी काटे जाते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि पढ़ने की पूरी क्रिया में अक्षर पहचान को महत्वपूर्ण माना गया है। इसके पीछे मान्यता यह है कि लिखित भाषा अक्षरों का समूह है जिसमें प्रत्येक अक्षर एक ध्वनि का प्रतिनिधित्व करता है अक्षर को देखकर उससे जुड़ी ध्वनि का उच्चारण कर देना पढ़ना माना जाता है यह बुनियादी गलतफहमी है।

भाषा वैज्ञानिकों ने ऐसे कई प्रयोग किए हैं जिनसे पता चलता है कि सक्षम पाठक, दरअसल, अक्षर—दर—अक्षर नहीं चलते, इनमें से एक प्रयोग का हवाला लेख के शुरुआत में दिया गया है।

अक्षरवार पढ़ना?

ऐसे कई प्रयोगों के आधार पर कई भाषा वैज्ञानिकों का विचार है कि अक्षर पहचान और पढ़ने में जमीन आसमान का अंतर है। दरअसल, पढ़ने का मतलब अक्षरों से जुड़ी ध्वनियाँ पैदा करना न होकर लिखी हुई चीज का अर्थ निकालना है। पढ़ने को हम जब इस व्यापक अर्थ में लेते हैं तो स्पष्ट है कि कई विद्यार्थी जो उच्चारण शायद कर भी लेते हों, सही अर्थों में पढ़ नहीं पाते। अक्सर हम कहते हैं कि अमुक बच्चा पढ़कर समझ नहीं पाता। इससे ऐसा लगता है कि पढ़ना और समझना दो अलग—अलग चीजें हैं जबकि पढ़ने की व्यापक परिभाषा में समझना तो पढ़ने का उद्देश्य ही है। इसलिए बिना समझे पढ़ना वास्तव में निरुद्देश्य ही कहा जाएगा।

दरअसल यदि आम पाठक अक्षर—दर—अक्षर पढ़ें तो पढ़ने की गति बहुत कम होगी जबकि हम आमतौर पर काफी तेज गति से पढ़ते हैं। अंग्रेजी भाषा के लिए भाषा वैज्ञानिक पॉल कोलर्स द्वारा की गई एक गणना के

मुताबिक अक्षरवार पढ़ने पर अधिकतम 35 शब्द प्रति मिनट पढ़े जा सकते हैं जबकि आम अंग्रेजी पाठक 300 शब्द प्रति मिनट पढ़ता है। इससे स्पष्ट है कि पढ़ने का तरीका यह नहीं हो सकता। हिन्दी भाषियों के मामले में, शायद इस तरह के प्रयोग नहीं हुए हैं। पढ़ने के अक्षरवार सिद्धांत के हिमायती यह कहते हैं कि सक्षम पाठक अक्सर दो-तीन शब्द एक साथ देख लेते हैं और इस प्रकार से उनकी पढ़ने की गति काफी तेज हो जाती है। इस संबंध में एक दिलचस्प प्रयोग किया गया था। कॉलेज के कुछ विद्यार्थियों को दो शब्दों के अक्षर क्रमवार सिखाए गए। एक बार में दोनों शब्दों का एक-एक अक्षर दिखाया गया, मान लीजिए शब्द REVEAL और CANVAS है तो पहले RC फिर EA, VN, EV, AA और LS दिखाए गए, अब अंत में उनसे इनमें एक ही शब्द बताने को कहा गया तो 57 प्रतिशत सही उत्तर आए, परंतु जब दोनों शब्द बताने की बात आई तो सही उत्तर मात्र 0.2 प्रतिशत रहा (420 में से 1 बार) इससे निष्कर्ष यह निकलता है कि दो शब्द एक साथ देखकर समझ पाना असंभव है।

इस संदर्भ में एक और तथ्य महत्वपूर्ण है। पढ़ते समय हमारे दिमाग की लघु अवधि याददाश्त का उपयोग होता है। इसमें एक समय में अधिक-से-अधिक 4-5 असंबंधित चीजें संग्रह की जा सकती हैं। अब यदि हम अक्षरों को याद रखें तो जब तक शब्द पूरा होगा, तब तक शुरु का अक्षर भूल जाएंगे। इसी प्रकार से जब तक वाक्य पूरा होगा तब तक पहला शब्द भूल जाएंगे। और वास्तव में होता भी यही है जो लोग हिज्जे कर, अक्षर जोड़-जोड़कर पढ़ते हैं वे अंत में कई बार मतलब नहीं समझ पाते। दूसरी बात यह है कि ये लोग अपने दिमाग पर अनावश्यक अतिरिक्त दबाव डालते हैं। हर लिखित अक्षर हमारी आँखों को एक प्रकाश संकेत भेजता है। आँखों के जरिए यह संकेत दिमाग में पहुँचता है। दिमाग में इसे प्रोसेस करके समझा जाता है। यह तो कोई भी मानेगा कि अ का संकेत मिलने से अनार नहीं समझा जा सकता। मतलब अक्षर से मिलने वाले संकेत में कोई अर्थ नहीं होता। यही बात शब्द के बारे में भी कही जा सकती है। यदि देवनागरी से अपरिचित किसी व्यक्ति को अनार शब्द दिखाया जाए या अनार से नावाकिफ व्यक्ति को यह शब्द दिखाया जाए, तो क्या इससे कोई मतलब निकलेगा? पहला व्यक्ति अनार तो जानता है पर यह वही लिखा है उसे क्या मालूम। दूसरा व्यक्ति अ-ना-र पढ़ तो लेगा पर इन सबसे उसे कोई अर्थ नहीं मिलेगा। फिर अर्थ आता कहाँ से है?

अभ्यास

-
- “अक्षर पहचान और पढ़ने में जमीन आसमान का फर्क है” समझाइए।
 - “एक विद्यार्थी स्पष्ट उच्चारण के साथ शब्दों को पढ़ लेता है” आप विद्यार्थी के पढ़ना सीखने के पक्ष में इससे क्या निष्कर्ष निकालते हैं,? कारण सहित बतलाइए।
 - लिखावट का कोई अर्थ नहीं होता, प्रमाणित कीजिए।
 - “बिना समझे पढ़ना व्यर्थ है” “इस कथन को स्पष्ट कीजिए।”
 - पठन क्रिया में याददाश्त की क्या भूमिका है? उदाहरण सहित समझाइए।
-

शब्दों से अर्थ तक का रास्ता

यह अर्थ हमारे अंदर होता है। जब कोई व्यक्ति कुछ लिखता है तो उसके दिमाग में कोई अर्थ होता है, जिसे लिखित संकेतों में कागज पर उतारा जाता है। जब हम इन संकेतों को देखते हैं तो अपने पूर्व अनुभवों, भाषा के ज्ञान व सामूहिक समझ के आधार पर अर्थ का पुनर्निर्माण करते हैं। यदि कोई शब्द हमारे अनुभव के बाहर का होता है तो पहले तो संदर्भ के आधार पर समझने की कोशिश करते हैं। जब संदर्भ से अर्थ स्पष्ट नहीं होता तो कहीं और से मदद लेते हैं— किसी से पूछकर या शब्द कोष के जरिए।

परंतु यदि संकेतों की प्रोसेसिंग अक्षरवार नहीं होती तो फिर कैसी होती है? पिछले कुछ वर्षों में इस संबंध में हमारी समझ में काफी इजाफा हुआ है।

पहली बात तो यह स्पष्ट हुई कि पढ़ते वक्त हम सारी चित्रित जानकारी का उपयोग नहीं करते। हम बहुत चुनावपसंदगी का परिचय देते हुए मात्र कुछ चुनिंदा संकेतों पर ध्यान देते हैं। जैसा कि हमने देखा कि अक्षरों के एक विशेष क्रम (शब्द) को पहचानना ज्यादा आसान होता है बजाय बेतरतीब अक्षरों के, उसी प्रकार से यह भी प्रदर्शित किया जा सकता है कि शब्दों के विशेष क्रम (वाक्य) को पहचानना ज्यादा आसान होगा बजाय बेतरतीब शब्दों के, यह कैसे संभव होता है? कुछ भाषा वैज्ञानिकों का मत है कि जब यह लिपिबद्ध भाषा सार्थक होती है तो इसे ग्रहण करना बहुत आसान होता है। परंतु दिक्कत यह है कि जो व्यक्ति हिज्जे कर करके पढ़ेगा उस तक यह अर्थ कभी नहीं पहुँच पाएगा और पढ़ना एक दुष्कर कार्य बना रहेगा। आखिर इस दुष्कर को कैसे तोड़ा जाए?

फ्रैंक स्मिथ ने अपनी पुस्तक में इस सवाल का जवाब दो तरह से दिया है एक तो वे बताते हैं कि वे कौन से अच्छे व आसान तरीके हैं जिनके उपयोग से पढ़ना सीखना लगभग असंभव हो जाएगा (देखें बॉक्स) दूसरा वे बताते हैं कि वह कौन सा मुश्किल तरीका है जिससे पढ़ना सीखना आसान हो सकता है। उनका एवं अन्य कई भाषा वैज्ञानिकों का मानना है कि पढ़ना सीखने का सर्वोत्तम तरीका पढ़ना ही है— पढ़कर ही पढ़ना सीखा जा सकता है। साइकिल और उसे चलाने के बारे में बारीक जानकारी हासिल करने का यह अर्थ नहीं कि उक्त व्यक्ति साइकिल चला भी लेगा। साइकिल चलाना तो उस पर चढ़कर ही सीखा जा सकता है। प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री प्रो. कृष्णकुमार ने इस संबंध में बहुत महत्वपूर्ण बात उठाई है— यदि एक बच्चे को पढ़ना शुरू करने से पहले या कोई रोचक कहानी पढ़ने से पहले, इतना सारा अर्थहीन, निरुद्देश्य परिश्रम करना पड़े, तो कोई अचरज नहीं कि अधिकांश धीरज खो बैठेंगे। उनका कहना है कि स्कूल छोड़ने के अन्य कारणों के अलावा उबाऊ व निरर्थक कवायद भी एक कारण है।

अभ्यास

- पढ़ते समय हम अर्थ का पुनर्निर्माण करते हैं', समझाइए।
- "साइकिल और उसे चलाने के बारे में बारीक जानकारी रखने का अर्थ यह नहीं है कि वह साइकिल चला ही लेगा"। इस कथन को स्पष्ट कीजिए।
- पढ़ते समय अर्थ कहाँ से और कैसे आता है? स्पष्ट कीजिए।

सक्षम पाठक

अब इस प्रश्न पर आते हैं कि आखिर सक्षम पाठक इतनी तेजी से कैसे पढ़ते हैं? दरअसल समस्या यह है कि पढ़ने का काम इतनी तेज गति से और अचेतन रूप से होता है कि यह पक्के तौर पर बताना मुश्किल है कि इस दौरान क्या कुछ घट जाता है। इसे जान पाने का एक ही तरीका बच जाता है— कि पाठकों को देखें व पता लगाएँ कि वे किस तरह की गलतियाँ करते हैं और इन गलतियों की व्याख्या से कुछ समझने की कोशिश करें। वैसे एक और भी तरीका अपनाया गया है कि लिखित भाषा में कुछ इस तरह से बदलाव कर दिया जाए कि सक्षम पाठक को भी धीमा होना पड़े और इस स्थिति में उनका अध्ययन किया जाए। बच्चों द्वारा पढ़ते समय की गई गलतियों का भी काफी अध्ययन किया गया है।



इतनी जल्दी हम पूरा
अखबार कैसे पढ़ लेते हैं?

मसलन पॉल कोलर्स ने अपने अध्ययन में अंग्रेजी भाषा में ही शब्दों को उल्टा लिखकर या हरेक अक्षर को सिर के बल लिखकर या वाक्य को उल्टा लिखकर प्रयोग किए, उन्होंने पाया कि जब कोई व्यक्ति किसी शब्द को गलत

पढ़ता है तो उसकी जगह वह किसी अन्य शब्द का इस्तेमाल इस तरह करता है कि प्रायः संज्ञा की जगह संज्ञा, क्रिया की जगह क्रिया, ही रखता है। इससे उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि पढ़ते समय हम सिर्फ अक्षर नहीं देखते। क्योंकि यदि अक्षरों को देख-देखकर पढ़ने की बात होती तो ये व्यक्ति मूल शब्द के जैसा दिखने वाला दूसरा शब्द रख देते। **कोलर्स का कहना है कि पढ़ते समय हम आने वाले शब्दों का अनुमान लगाते चलते हैं।** व्याकरण के अपने कामकाजी ज्ञान के आधार पर हम जानते हैं कि कहाँ संज्ञा की अपेक्षा करनी चाहिए और कहाँ क्रिया की। यदि हम संज्ञा को गलत पढ़ते हैं तो यह जानते हुए कि वाक्य में उस जगह संज्ञा आनी चाहिए हम उसके स्थान पर किसी दूसरी संज्ञा का उपयोग कर देते हैं और आगे बढ़ जाते हैं। इस तरह से अनुमान लगाते हुए चलने में हमें पूरी लिपि को ध्यान से नहीं देखना होता। फिर हमें पढ़ते हुए पूरी बात का संदर्भ मालूम होता है। हमें अंदाज होता है कि क्या-क्या हो सकता है। इस प्रकार से व्याकरण की दृष्टि से और संदर्भ की दृष्टि से अगले शब्द या वाक्यांश को लेकर हमारी कुछ अपेक्षाएँ होती हैं। इन अपेक्षाओं के आधार पर हम अटकल लगाते हैं। हिंदी भाषा में 2 लाख शब्द हो सकते हैं पर वहाँ उस स्थान पर इनमें से कोई भी शब्द अचानक नहीं टपक सकता। इस तरह से हमारी अपेक्षा में जो दो-चार संभावनाएँ होती हैं उनमें से हमें चुनाव करना होता है कि कौन सी सही है। इस चुनाव के लिए अक्षरवार देखने की जरूरत नहीं। आंशिक जानकारी मिलते ही हम तय कर सकते हैं कि हमारा अनुमान सही था या गलत! यदि सही था, तो आगे के अनुमान को ठीक करके, अर्थ में यथोचित परिवर्तन करके आगे बढ़ते हैं। अतः मात्र कुछ संकेतों के आधार पर अपने पूर्व अनुभव, भाषा ज्ञान व संदर्भ के तहत हम अर्थ समझते चलते हैं।

अपनी गलतियों की सीख

यदि कोई शब्द गलत पढ़ लिया गया और इससे अर्थ नहीं बनता तो? या गलत शब्द के कारण अर्थ का अनर्थ हो जाए तो?

पहली स्थिति में पाठक वाक्य या उस हिस्से का पुनरावलोकन करता है ताकि अर्थ ग्रहण कर सके। दूसरी स्थिति में पाठक आगे बढ़ जाता पर जब यह अनर्थ आगे की बातों से मेल नहीं खाता, तो उसे अपने आप समझ में आ जाता है कि कुछ गलती हुई है। उदाहरण के लिए यह वाक्य देखें, 'वह तेज धूप में भागता हुआ घर गया।' यदि कोई व्यक्ति गलती से इसे यों पढ़ दे वह तेज धूप में भागता हुआ मर गया तो उसके पास फिलहाल यह समझने का कोई तरीका नहीं है कि उसने गलती की है। पर अगला वाक्य, 'थोड़ी देर सुस्ताकर उसने एक गिलास ठंडा पानी पिया,' उसे बता देगा कि कहीं कुछ गलती हुई है। बशर्ते कि उसने पिछले वाक्य का अर्थ ग्रहण किया हो।

अर्थ समझने के उद्देश्य से पढ़ने का यह एक महत्वपूर्ण पहलू है कि इसमें खुद की गलतियाँ पकड़ने का तरीका यह फीडबैक निहित है।

बच्चे भी इस तरीके का उपयोग करते हैं, बशर्ते कि उनको रोका न जाए। दरअसल जब अक्षर-दर-अक्षर पढ़ने को कहा जाता है, तो अर्थ पर से जोर हट जाता है। बच्चे को अनुमान लगाने व अपने अनुमानों की सत्यता जाँच करने, उसे सुधारने की महत्वपूर्ण क्रियाओं से वंचित कर दिया जाता है। बच्चे का सारा ध्यान अक्षरों के उच्चारण पर लगा रहता है और पढ़ने की वास्तविक क्रिया टलती रहती है और कई मामलों में हमेशा के लिए टल जाता है।

नतीजे

इससे हम क्या सबक लें? पहला सबक तो यह है कि पहले दिन से ही पढ़ने की सामग्री सार्थक होना जरूरी है और यह सार्थकता उस विद्यार्थी के संदर्भ में आँकी जानी चाहिए जो उक्त सामग्री का पाठक है। इस

संदर्भ में यह तथ्य महत्वपूर्ण हो जाता है कि जो सामग्री पढ़ने के लिए दी जा रही है वह किस भाषा में है? क्या बच्चे उस भाषा से परिचित हैं? या कहीं यह भाषा एकदम अपरिचित तो नहीं? तीसरी बात यह है कि भाषा को एक समग्र रूप में देखने पर ही वह सार्थकता पाती है। उसे अक्षर, उच्चारण, व्याकरण आदि में बाँट देने से यह सार्थकता नष्ट होती है। वास्तव में इन अलग-अलग चीजों का कोई क्रम भी नहीं है, जिसके अनुसार इनका अध्ययन किया जाए। दरअसल भाषा का समग्र रूप तो उसके इस्तेमाल में उभरता है चाहे वह लिखने में हो, बोलने में हो या पढ़ने में, भाषा अधिकाधिक उपयोग का अवसर बनाना ही एकमात्र रणनीति होगी।

अभ्यास

- भाषा की सार्थकता कब नष्ट हो जाती है?
 - नवप्रवेशी बच्चों के भाषागत विकास की शुरुआत कहाँ से होनी चाहिए? एक शिक्षक होने के नाते आपकी क्या भूमिका होगी?
 - पढ़ने का मतलब क्या है?
 - पढ़ने में भाषा का अधिकाधिक उपयोग का अवसर बनाना ही एक मात्र रणनीति है। कैसे?
 - कक्षा पहली का एक छात्र साइकिल चलाते लड़के के चित्र के नीचे लिखे वाक्य को देखकर पढ़ता है। “लड़का साइकिल चला रहा है”, जबकि उसके नीचे लिखा है, “लड़का साइकिल पर सवार है आप इससे क्या अनुमान लगाते हैं? अपनी आगामी गतिविधि का भी उल्लेख करें।
-

पढ़ना कैसे सिखाया जाए?

पाठ की रूपरेखा

- परिचय
- उद्देश्य
- शीर्षक व उपशीर्षक
 - स्थिति फिलहाल यह है
 - शुरुआत किताबों से
 - किताब पढ़कर सुनाना
 - पढ़ना क्या है?
 - कविता सुनाना व गाना
 - किताबें बनाना
 - कुछ गतिविधियाँ
 - शुरुआत के बाद

परिचय :

पढ़ना सिखाना एक चुनौतीपूर्ण काम है। कई बच्चे हर साल पढ़ना सीखते हैं, लेकिन अधिकांश बच्चे पढ़ने का टिकाऊ कौशल प्राप्त नहीं कर पाते। पढ़ना सिखाने की कोई एक अच्छी विधि नहीं है। इस पाठ में हम वर्तमान स्थिति के बारे में नज़र दौड़ाएँगे और उसका विश्लेषण करके पढ़ना सिखाने के नए तरीके के बारे में विचार करेंगे। पढ़ने की शुरुआत की सामग्री क्या होगी? शिक्षक की भूमिका क्या होगी, पढ़ाना सिखाने के संदर्भ में शिक्षक बच्चों के लिए नई-नई गतिविधियाँ क्या होगी? बच्चों की सामग्री का उपयोग कक्षा-कक्ष में कैसे करें? इन सारी बातों पर हम इस अध्याय में विचार करेंगे।

उद्देश्य :

- पढ़ने की परिभाषा गढ़ सकेंगे।
- वर्तमान पठन-प्रक्रिया पर टीका टिप्पणी कर सकेंगे।
- पढ़ना सिखाने की शुरुआत किताबों से करने के फायदे बता सकेंगे।
- पढ़ना सिखाने के समय अपनी और बच्चों की भूमिका समझ सकेंगे।
- पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त बच्चों के लिए पठन सामग्री का निर्माण करके उसका उपयोग कर सकेंगे।
- पढ़ना सिखाने से संबंधित नई-नई गतिविधियाँ बना सकेंगे।
- पढ़ने की ललक और रुचि विकसित कर सकेंगे।
- पठन से संबंधित विविध क्रियाकलापों से परिचित हो सकेंगे।

छोटे बच्चों के अध्यापक को जो तमाम चुनौतियाँ झेलनी पड़ती हैं, पढ़ना सिखाना शायद उनमें सबसे बड़ी और कठिन चुनौती है। वह सबसे कठिन इसलिए है क्योंकि पढ़ना एक सहज कौशल नहीं है। उसमें कई कौशल और बोध-क्षमताएँ शामिल हैं। पढ़ना सिखाने की कोई एक अच्छी विधि नहीं है। हर विधि की अपनी सीमाएँ हैं और अध्यापक को यह कोई नहीं सुझा सकता कि उसकी परिस्थिति

में सही उपाय क्या है। फिर भी, पढ़ने का शिक्षण एक स्फूर्तिवान काम है क्योंकि बच्चे के जीवन का बहुत कुछ उस पर निर्भर है। यदि एक बार आप बच्चे को पढ़ने और पुस्तकों से सफलतापूर्वक जोड़ सकें तो फिर उसके लिए संभावित उपलब्धियों का कोई अंत नहीं है।

तो असली बात यह है कि पढ़ने का शिक्षण 'सफलतापूर्वक' कैसे किया जाए? यहाँ हमें दो क्षण रुक कर अपने इर्द-गिर्द फैली भीषण विफलता पर विचार करना चाहिए। लाखों बच्चे हर साल पढ़ना सीखते हैं, लेकिन, इनमें से बहुतेरे पढ़ने का टिकाऊ कौशल प्राप्त नहीं कर पाते। बहुत से स्कूल की परीक्षा पास कर लेते हैं, लेकिन पढ़ने में रुचि का विकास नहीं कर पाते। कई बच्चे आराम-से पढ़ते दिखते हैं, पर वास्तव में पढ़े हुए को ज्यादा समझ नहीं पाते। काफी हद तक विफलताओं का दोष हम पढ़ने के कमजोर शिक्षण को दे सकते हैं।

पढ़ने का स्वस्थ कौशल बच्चे के समग्र विकास में क्या भूमिका निभाता है, यह किसी अध्यापक को याद दिलाने की जरूरत नहीं। लेकिन ऐसा लगता है कि बहुत कम अध्यापक यह जानते हैं कि 'पढ़ने का स्वस्थ कौशल' किसे कहेंगे और उसका विकास कैसे किया जा सकता है? इस अध्याय में पढ़ने का स्वस्थ कौशल हम उन कौशलों के समूह को मानेंगे जो लिखी या छपी भाषा को अर्थ से जोड़ने में बच्चे की मदद करते हैं। जब तक एक बच्चा पढ़ी हुई सामग्री को समझने या पहले से ज्ञात किसी चीज से जोड़ने में असमर्थ रहता है तब तक हम उसकी पढ़ने की क्षमता को स्वस्थ नहीं कह सकते। पढ़ने की परिभाषा हम 'लिखे हुए शब्दों में अर्थ ढूँढ़ने की प्रक्रिया' के रूप में कहेंगे।

अभ्यास

-
- बच्चे के समग्र विकास में पठन कौशल किस प्रकार सहायक है?
-

स्थिति फिलहाल यह है

यदि हम यह परिभाषा मंजूर कर लें तो जल्दी ही यह देख सकेंगे कि ऑगनवाड़ियों (या किंडरगार्टनों) और प्राइमरी स्कूलों में हो रही अनेक चीजें उचित नहीं हैं। उदाहरण के लिए वर्णमाला को रटना या कहानी को शब्दशः जोर से दुहराना, हमारी परिभाषा के हिसाब से सही गतिविधियाँ नहीं हैं। ऐसा करते समय बच्चे लिखित भाषा को किसी अर्थ से नहीं जोड़ पाते। वर्णमाला के अक्षरों का अलग से कोई अर्थ नहीं होता। कई स्कूलों में अक्षरों को 'कमल' और 'खरगोश' जैसे रूढ़ शब्दों से इस तरह बाँध दिया जाता है कि फिर बच्चे इन अक्षरों को किसी भी शब्द में पाकर 'कमल' का 'क' कहकर पहचान पाते हैं। यदि कहानी हरेक शब्द को तोड़कर पढ़ी जाए तो उसका कोई खास अर्थ नहीं निकलेगा— इस तरह कहानी से संबंध बनाना भी संभव नहीं है। कुछ लोग यह दलील दे सकते हैं कि ये गतिविधियाँ भले तत्काल सार्थक न हों पर आगे चलकर अर्थग्रहण के साथ पढ़ने की बुनियाद बन सकती है। शायद इस दलील में थोड़ी-बहुत सच्चाई हो, पर यह सच्चाई तभी लागू हो सकती है जब सारे बच्चे स्कूल में इतने वर्ष टिकें कि वे सार्थक रूप से पढ़ना सीख लेने का अवसर पा सकें। उन बच्चों के बारे में भी सोचना ज़रूरी है जो एक ध्वनि को दर्जनों बार दुहराने, अक्षर की नकल उतारने, शब्दों को अलग करके जोर-जोर से बोलने की कवायद से बुरी तरह निराश और कुंठित हो जाते हैं। हम सब जानते हैं कि बच्चों को ऐसी गतिविधियाँ भाती हैं, जिनका फल तुरंत मिलता हो। बहुत आगे चलकर लाभ मिलने की उम्मीद थोड़े ही बच्चों को प्रेरित कर सकती है। और कई बच्चों के लिए तो भविष्य स्कूल में रहने की भी गारंटी नहीं देता। तमाम अन्य कारणों के साथ-साथ शुरू से मिली विफलता और निराशा स्कूल से इन बच्चों को विदा कर देती है।

अतः हमें इन बुनियादी सवालों का सामना करना ही पड़ेगा कि पढ़ने की आरंभिक शिक्षा को सार्थक कैसे बनाएँ? आगे के पृष्ठों में अध्यापकों के करने लायक कुछ चीजें सुझाई गई हैं। जो लोग पुरानी विधियों के आदी हैं, उन्हें ये चीजें एकदम चकरा देने वाली या असंभव लग सकती हैं। पर यदि पुरानी विधियाँ ठीक-ठाक होंगी

तो हमें नई विधियों की जरूरत ही न पड़ती। हमें न केवल नई विधियों की बल्कि संपूर्णतया नए परिप्रेक्ष्य की जरूरत इसलिए है क्योंकि पुरानी विधियाँ ठीक से काम नहीं दे रही हैं।

शुरुआत किताबों से

‘लैश कार्ड’, चार्ट या लकड़ी के अक्षरों जैसी प्रचलित सामग्री की तुलना में पढ़ने की शुरुआत किताबों से करना कहीं अच्छा और जरूरी है। हमारा उद्देश्य तो आखिर यही है न कि बच्चे आगे चलकर किताबें पढ़ सकें! चार्टों और कार्डों जैसी चीजें कभी-कभी काम आ सकती हैं पर वे पढ़ना सीखने की वैसी तेज और स्थायी इच्छा पैदा नहीं कर सकती जैसी किताबें कर सकती हैं। न की उन्हें पढ़कर बच्चे को अपनी उपलब्धि का वैसा आभास मिल सकता है जैसा कोई किताब दे सकती है। लेकिन पहले हमें यह स्पष्ट समझ लेना चाहिए कि हम किस तरह की किताबों की चर्चा कर रहे हैं और उन्हें किस तरह इस्तेमाल करना है?

पढ़ना सिखाने के लिए उपयोगी पुस्तकें वे ही हैं जिनकी चर्चा पिछले अध्याय ‘बातें करना’ के अंतर्गत हो चुकी है। किताबें आप खुद भी बना सकते हैं। साफ अक्षरों में हाथ से लिखी और रेखाचित्रों या तस्वीरों (जिन्हें बच्चे बना सकते हैं) से सजाई गई कोई भी कहानी आपके संग्रह में स्थायी रूप से शामिल हो सकती है। इसी तरह आप कविताओं, गीतों और बच्चों के अपने खेलगीतों के संग्रह बना सकते हैं।

किताब पढ़कर सुनाना

इस बात का हमेशा ध्यान रखिए कि बच्चे दस से ज्यादा न हों और फर्श पर आपके गिर्द बैठे हों। बाकी बच्चों को इस वक्त कोई अन्य काम देना जरूरी है। आपके गिर्द बैठे बच्चों में से हरेक को किताब के पन्ने आसानी से नज़र आने चाहिए। किताब में जो लिखा है उसे पढ़ते वक्त आप उसमें अपना पुट अवश्य देते जाइए। कुछ किताबों में कहानी या कोई सामग्री खूब विस्तार से प्रस्तुत की गई होती है। एक लंबी कहानी को ज्यों-ज्यों पढ़ देने से काम नहीं चलेगा। कहानी आपको इतनी अच्छी तरह आनी चाहिए कि आप उसे छोटा करके अपने शब्दों में सुना सकें। इसके विपरीत यदि हर पृष्ठ पर एक या दो पंक्तियाँ ही लिखी हैं तो आप कुछ विवरण जोड़ सकते हैं। यह भी आवश्यक है कि आप चित्र में दिए गए विवरण बच्चों को दिखाइए और उन पर इत्मीनान से बात कीजिए।

‘पढ़ना’ क्या है?

जो लोग पढ़ नहीं सकते उनके लिए पढ़ना एक पहेली है। तीस साल पहले विशेषज्ञों को भी यह नहीं मालूम था कि जब बच्चा पढ़ना सीखता है तो वह दरअसल करता क्या है? अपने अनुभव और परंपरा के आधार पर अध्यापकों ने कुछ ‘विधियाँ’ खोज रखी थीं, जैसे ‘वर्णमाला’ विधि, ‘उच्चारण’ विधि, ‘शब्द’ विधि आदि। इनमें से कोई ‘विधि’ पढ़ने की प्रक्रिया की जानकारी पर आधारित नहीं थी। ये ‘विधियाँ’ आज तक लोकप्रिय बनी हुई हैं।

अब यह माना जाता है कि पढ़ने की प्रक्रिया में अंकित सूचना की बानगी ग्रहण करना महत्वपूर्ण है। हमारी आँखें जब अक्षरों, विराम चिह्नों, शब्दों और शब्दों के बीच छोड़ी गई जगहों का मुआयना करती हैं तो हमारा मस्तिष्क इस ग्राफिक (हाथ से लिखी गई या छपी हुई) सामग्री की संपूर्ण मात्रा पर नहीं देता यदि ऐसा होता तो छोटी-छोटी सूचना पर गौर करने की मस्तिष्क की क्षमता पर अत्यधिक बोझ पड़ता और अधिकांश लोग जिस रफ्तार से पढ़ते हैं वह असंभव हो जाती। पारंपरिक विधियों से पढ़ना सीखने वाले कई बच्चों के साथ यही होता है। वे हर शब्द को अक्षरों की छोटी इकाइयों में तोड़ते हैं और इस तरह शब्दों का अर्थ ग्रहण करने की मस्तिष्क की क्षमता पर बहुत ज्यादा बोझ डाल देते हैं। एक प्रवीण पाठक की आँखें ऐसा बोझ नहीं पड़ने देती क्योंकि वे पन्ने पर अंकित ग्राफिक सूचनाओं के एक सीमित, चुने हुए अंश से जूझती हैं। प्रवीण पाठक किसी अक्षर के पूरे

आकार पर ध्यान नहीं देता है, न ही वह एक शब्द के सारे अक्षरों या एक वाक्य के सारे शब्दों पर ध्यान देता है। पढ़ते समय उसकी आँखें अंकित सामग्री के एक छोटे-से अंश पर गौर करती हैं। शेष भाग वह समझदार अनुमान के जरिए ग्रहण करता है। अनुमान का आधार होता है अक्षरों की आकृतियाँ, शब्द, उनके अर्थ उनके संयोजन और आम दुनिया से पाठक का पहले से मौजूद परिचय।

पढ़ना एक एकाकी प्रक्रिया नहीं है, उसमें कई प्रक्रियाएँ शामिल हैं। पढ़ते वक्त भाषा के उपयोग से जुड़े तीन तरह के संकेत हमारे ध्यान में आते हैं

1. अक्षरों की आकृतियाँ और उनसे जुड़ी ध्वनियाँ;
2. वाक्य विन्यास (जैसे विशेषण का संज्ञा से पहले आना);
3. शब्दों के अर्थ।

भाषा का इस्तेमाल करते-करते हम इन तीनों तरह के संकेतों से जुड़ी कुछ अपेक्षाओं के आदी हो जाते हैं। ये अपेक्षाएँ ही अनुमान या भविष्यवाणी के आधार पर छपी हुई सामग्री का वह अंश पूरा करने में हमारी मदद करती हैं जिसे हमारी तेज रफ्तार आँखों ने छोड़ दिया था।

इस तरह किताब पढ़ते वक्त प्रश्न पूछना या किसी दूसरी तरह से परीक्षा लेना ठीक नहीं है। कहानी पूरी हुई तो हुई, अब कोई और गतिविधि शुरू कीजिए। बच्चे स्वयं कुछ कहना या पूछना चाहें तो दूसरी बात है, लेकिन एक अध्यापक के तौर पर आप किताब पढ़कर सुनाने के अवसरों को प्रश्नों से दूर रखें।

यदि हर बच्चे को हर हफ्ते तीन बार इस तरह किताब सुनने को मिले तो आप पाएँगे कि बच्चे जल्दी ही आपकी पढ़ी किताबों पर बात करना शुरू कर देंगे। कुछ ही समय में वे चित्रों और कहानी से इतने परिचित हो जाएँगे कि वे आपके पढ़ने का अनुमान लगा सकेंगे। इसी अनुमान के सहारे वे एक दिन किताब को स्वयं पढ़ सकेंगे तब तक उन्हें किताब की सारी बातें ज्ञात हो चुकी होगी और वे चीजों से तरह-तरह के संबंध बना चुके होंगे। जब वे किताब को पढ़ेंगे— एक पृष्ठ पर दिए गए सारे शब्द या शब्दों के सारे अक्षर जाने बगैर—तो वे उससे अर्थ के कई स्तरों पर जुड़ सकेंगे।

कविता सुनाना और गाना

यदि आपने पिछले पृष्ठ पर दिया गया छोटा सा लेख 'पढ़ना क्या है?' पढ़ा है, तो आपने यह समझ लिया होगा कि पढ़ने की कुंजी अनुमान लगाने का कौशल है। इस कौशल के विकास में कविता आश्चर्यजनक योगदान कर सकती है। नियमित रूप से कविताएँ सुनकर छोटे बच्चे भाषा की बुनियादी संरचनाएँ ग्रहण कर लेते हैं। कविता इसके लिए विशेष रूप से उपयोगी इसलिए है क्योंकि उसे याद रखना आसान होता है। कविता याद रखने के लिए छोटे बच्चों को कोई विशेष प्रयास नहीं करना पड़ता। बार-बार सुनने, मजा लेने और दुहराने से कविता अपने आप याद हो जाती है।

अध्यापक के लिए महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि अच्छी कविताओं का चुनाव कैसे करें और उन्हें कहाँ तलाश करें। अधिकांश पाठ्यपुस्तकों में दी गई कविताएँ प्रायः बच्चों के स्तर की नहीं होती हैं और भाषा के विकास की दृष्टि से उनकी उपयोगिता बहुत कम होती है। इसी तरह हिंदी की मासिक पत्रिकाओं में छपने वाली अधिकांश कविताएँ कठिन होती हैं। पाठ्यपुस्तकों और पत्रिकाओं की ज्यादातर कविताएँ उबाऊ और एक सतही अर्थ में आदर्शवादी होती हैं। उनकी वाक्य रचना और शब्दावली कृत्रिम होती है। उनमें रोजमर्रा की भाषा का पुट नहीं होता। यही कारण है कि वे भाषा सीखने के साधन के रूप में विशेष उपयोगी नहीं होतीं।

बच्चों में पढ़ने के कौशल की नींव डालने के लिए एकदम अलग किस्म की कविताएँ चाहिए। ऐसी कुछ कविताएँ अगले पृष्ठों पर दी गई हैं। निश्चय ही अध्यापक स्वयं ऐसी अन्य कविताएँ तलाश सकते हैं पर इसके लिए उन्हें काफी मेहनत करनी होगी। भाषा के स्वाभाविक और खेल जैसे प्रयोग के लिए अपनी दृष्टि दौड़ानी होगी। महज नैतिक सीख देने वाली कविताओं से दूर रहना होगा।

एक काम कोई भी अध्यापक आसानी से कर सकता है— यह है बच्चों के उन गीतों को लिखकर रखना जिन्हें वे कूदते, फाँदते, रस्सी कूदते और गेंद से खेलते समय गाते हैं ये खेलगीत पारंपरिक हैं और इन्हें शहर में ढूँढ़ना कुछ कठिन होगा, पर थोड़ा प्रयास करके हम ऐसे गीतों का संग्रह तैयार कर सकते हैं। संग्रह एक या कई छोटी किताबों की शक्ल ले सकता है जिनमें हर पृष्ठ पर एक गीत सुंदर अक्षरों में लिखा हो और साथ में हाथ से बनाई या पत्रिका से काटी गई कोई तस्वीर हो। यह जरूरी नहीं कि तस्वीर गीत में कही गई बात को हू—ब—हू पेश करती हो। इतना काफी है कि तस्वीर में गीत का भाव या उससे किसी प्रकार जुड़ा दृश्य प्रकट होता हो। आप इस तरह की कई पुस्तकें तैयार कर सकते हैं। लगभग 16 पेज की ये पुस्तकें सादे कागज से बन सकती हैं। यदि आप खर्चा उठा सकें तो ड्राइंग के कागज से बनी किताब ज्यादा चलेगी और आपको हर साल वही किताब फिर से नहीं बनानी पड़ेगी।

कविता की किताब पढ़ने का ढंग वही है जो अन्य किताबें पढ़ने का है— यानी बच्चों को अपने चारों ओर बैठाएँ और किताब को बीच में रखें। दो—तीन बार पढ़ने के बाद आप किताब के बगैर कविता गाकर सुनाएँ और बच्चे आपके साथ गाएँ। यदि कविता अच्छे स्तर की हुई तो वे जल्दी ही उसे याद करके गा सकेंगे। बाद में जब वे उसे किताब से पढ़ेंगे तो शब्दों का आसानी से अनुमान लगा सकेंगे। छह वर्ष के बच्चे एक पूरी कविता कागज या स्लेट पर मजे से उतार सकते हैं, अगर तब तक वह उन्हें याद हो चुकी हो तो कुछ ही दिनों में कविता के शब्द पहचानने में कोई खास कठिनाई नहीं होगी।

अभ्यास

2. बच्चों को कविताओं के माध्यम से सिखाना क्यों आसान है?

1. ईलम डील खेलो
आओ खेलो ईलम डील।
गेंद जो उछाली ले के
भाग गई चील।
रस्ते में पड़ी एक
बहुत बड़ी झील।
जिसके बीचों बीच में थी
ऊँची सी कील।
चील ज्यों ही बैठी उस पर
टूट गई कील।
औंधे मुँह पानी में
जाके गिरी चील।
गेंद रही तैरती और
डूब गई चील।
ईलम डील खेलो आओ
खेलो ईलम डील।

— इस कविता में डील, चील झील जैसे समान ध्वनियाँ प्रयुक्त हैं। बच्चों की कविता में समान ध्वनियों का अधिकता क्यों होती है?

—निरंकार देव सेवक

2. बहुत जुकाम हुआ नन्दू को
एक रोज वह इतना छींका
इतना छींका इतना छींका
इतना छींका इतना छींका
सब पत्ते गिर गए पेड़ के
धोखा हुआ उन्हें आँधी का

— नंदू क्यों छींका?
— पेड़ के पत्ते क्यों
गिर पड़े?
— राम नरेश त्रिपाठी



3. नारंगी रंग की नारंगी
बेच रहा फलवाला गाकर
और बजाता है सारंगी

चमक रहा है छिलका पीला
सुंदर फल है बड़ा रसीला
प्यास बुझे मन खुश हो जाता
ढीली तबियत होती चंगी

— सुधा चौहान

4. कितनी लंबी है सड़क
कितना ऊँचा है पहाड़
कितनी छोटी है चिड़िया
पेड़ है कितना बड़ा
तेज कितनी है नदी
पत्थर कितना गोल है
घास है कितनी हरी
फूल कितना लाल है

कविता देखकर जोड़ी बनाओ—

पहाड़	छोटी
चिड़िया	बड़ा
सड़क	ऊँचा
पेड़	लंबी
नदी	लाल
पत्थर	हरी
घास	गोल
फूल	तेज

—कृष्ण कुमार

5. लड़कों इस झाड़ी के भीतर
छिपा हुआ है जोड़ा तीतर
फिरते थे यह अभी यहीं पर
चारा चुगते हुए जमीं पर
एक तीतरी है इक तीतर
हमें देख कर भागे भीतर
आओ इनको जरा डरा कर
हा, हूँ करके निकालें बाहर

तीतर से संबंधित कोई अन्य कविता लिखिए—

यह देखो वह दोनों भागे
खड़े रहो चुप बड़ो न आगे

अब सुन लो इनकी गिटकारी
एक अनोखे ढंग की प्यारी
तीइत्तड़ तीइत्तड़ तीइत्तड़ तीइत्तड़
नाम इसी से इनका तीतर

—श्रीधर पाठक

6. लाल टमाटर लाल टमाटर, मैं तो तुमको खाऊँगा।
अभी न खाओ मैं कुछ दिन में और अधिक पक जाऊँगा

लाल टमाटर लाल टमाटर, मुझको भूख लगी
भूख लगी है तो तुम खा लो यह गाजर, मूली सारी।।
लाल टमाटर लाल टमाटर, मुझको तो तुम भाते हो।
तुमको जो अच्छा लगता है उसको तुम क्यों खाते हो।।

लाल टमाटर लाल टमाटर, अच्छा तुम्हें न खाऊँगा।
मगर तोड़ कर डाली पर से अपने घर ले जाऊँगा।।

—निरंकार देव सेवक

7. एक, दो तीन चार।

आओ चलें कृतुबमीनार।

पाँच, छ सात, आठ

देखें चल के राजघाट

नौ, दस, ग्यारा, बारा

चलें चाँदनी चौक फव्वारा।

तेरा चौदा, पन्द्रा, सोला

कनाट प्लेस में मुर्गा बोला।

संख्यावाची शब्दों वाले कविताओं की उपयोग
शिक्षण में आप कैसे करेंगे।

—सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

8. आओ एक बनाएँ चक्कर

फिर उस चक्कर में इक चक्कर

फिर उस चक्कर में इक चक्कर

फिर उस चक्कर में इक चक्कर

और बनाते जाएँ जब तक

ऊब न जाएँ थककर

फिर सबसे छोटे चक्कर में

म्याऊँ एक बिठाएँ

और बाहरी हर चक्कर में

चूहों को दौड़ाएँ।

दौड़-दौड़कर सभी थकें

हम बैठे मारे मक्कर,

नींद लगे हम सो जाएँ

वे देखें उझक-उझककर।

आओ एक बनाएँ चक्कर

—सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

9. कितनी बड़ी दीखती होंगी मक्खी को चीजें छोटी
सागर—सा प्याला भर जल, पर्वत—सी एक कौर रोटी।

खिला फूल गुलदस्ते जैसा काँटा भारी भाला—सा
तालों का सूराख उसे होगा बैरगिया नाला—सा

इस तरह की बाल कविताओं का
शिक्षण में उपादेयता पर अपना
अभिमत दीजिए।

हरे—भरे मैदान की तरह होगा एक पीपल का पात
पेड़ों के समूह—सा होगा बचा खुचा थाली का भात।
ओस बूँद दरपन—सी होगी सरसों होगी बेल समान
साँस मनुज की आँधी—सी करती होगी उसको हैरान

—ठाकुर श्रीनाथ सिंह

10. गोलू के मामा, आए
सब देख रहे मुँह बाए

मुँह उनका है गुब्बारा
था किसने उन्हें पुकारा,
नारंगी उनको भाए
गोलू के मामा आए।
वे पूरब से हैं आते
गोलू से गप्प लड़ाते

हौले से उसे सुलाकर
फिर पच्छिम को उड़ जाते।
सच बात अगर मैं बोलूँ
तो पोल पुरानी खोलूँ
सूरज का फटा पजामा
सिलते गोलू के मामा।

पर जाने क्या जादू है
रहते हैं सब पर छाए,
सब देख रहे मुँह बाए
गोलू के मामा आए

ये बड़े दिनों में आए
झोले में हैं कुछ लाए
हमको तो पता चले तब
जब गोलू हमें खिलाए।

लो दिखा—दिखा नारंगी
बन जाते एक बताशा,
यूँ सबको देते झाँसा
करते ये खूब तमाशा।

हर पंद्रह दिन में कैसे
आ जाते बिना बुलाए
मैं देख रहा मुँह बाए
गोलू के मामा आए।

—रमेश चन्द्र शाह

अभ्यास

- कविताओं से बच्चों में किन-किन कौशलों का विकास होता है?
 - कविताओं में आए पशु-पक्षियों, पेड़-पौधे, फल-सब्जियाँ, रंग संबंध एवं वस्तुओं की सूची बनाए।
 - इसी तरह के व्यंग्य बाल गीतों का संग्रह करें।
-

यहाँ दी गई सभी कविताएँ और इनकी तरह की कई और कविताएँ नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'महके सारी गली-गली' में संकलित हैं।

किताबें बनाना

कक्षा में (स्कूल में ही नहीं) किताबें रखना अच्छी बात है पर किताबें 'बनाना' भी जरूरी है। बच्चों को पढ़ना सिखाने के लिए सबसे अच्छी सामग्री अध्यापक ही बना सकता है। यह सामग्री हर बच्चे के लिए अलग से भी बनाई जा सकती है और सामूहिक रूप से भी। इस सामग्री का मुख्य स्रोत वे तमाम गतिविधियाँ हैं जिनकी चर्चा हम कर चुके हैं, जैसे कहानियाँ सुनाना व पढ़ना, चित्रों पर चर्चा करना, कविता गाकर सुनाना आदि। कागज कैसा भी हो सकता है। यदि बच्चों के पास कापियाँ हैं तो उन्हें ही नीचे समझाए गए तरीके से किताबों में बदला जा सकता है। यदि अध्यापक या स्कूल कागज खरीदने की स्थिति में हों— सादा भी और ड्राइंग का भी—तो कई और चीजें संभव हैं।

शुरुआत पाँच वर्ष के आसपास कभी भी हो सकती है। यह याद रखना जरूरी है कि 'कक्षा के सारे बच्चे कभी एक साथ या एक रपतार से पढ़ना शुरू नहीं कर सकते।' अंतर काफी बड़ा हो सकता है। कुछ बच्चों में पाँच वर्ष की आयु में ही बहुत रुचि और सामर्थ्य हो सकती है। ये बच्चे सात वर्ष की आयु तक पढ़ने के कौशल अच्छी तरह प्राप्त कर लेंगे। दूसरी ओर कुछ बच्चों को आठ वर्ष की आयु में भी दिक्कत महसूस हो सकती है। इन पृथक रपतारों की चिंता ऐसे अध्यापक को नहीं सताएगी जो अपने बच्चों को निकट से जानता हो। उसे इतना भर करना होगा कि हर बच्चे की प्रगति पर विचार करे और कुछ बच्चों की विशेष कठिनाइयों का ध्यान रखे। **यह एक चुनौती भरा काम है और जहाँ बच्चों की संख्या अधिक हो, वहाँ तो यह असंभव है।** वहाँ केवल सीमित सफलता की उम्मीद की जा सकती है।

कहानियों, कविताओं और तस्वीरों आदि से संबंधित गतिविधियों से उपजी बातचीत से हरेक बच्चे के लिए एक शब्द या वाक्य चुन लीजिए और उसे बच्चे की कापी या एक कागज पर साफ—साफ लिख दीजिए। यह जरूरी है कि शब्द या वाक्य उस कहानी या चित्र का प्रतिनिधित्व करता हो जिसके संदर्भ में बातचीत हुई थी। तभी उसका बच्चों के लिए कोई तात्कालिक अर्थ होगा। आपने हर बच्चे के लिए जो लिखा है उसे पढ़ कर सुनाएँ। फिर बच्चे से कहें कि वह आपकी लिखावट को नीचे उतारे या उसी पर लिखे।

रोज जब आप बच्चे को एक नया शब्द या वाक्य लिख कर दें तो पिछली सामग्री को जरूर दुहराएँ। बच्चे से कहिए कि पिछले शब्दों या वाक्यों को पढ़कर सुनाए और जब उसे दिक्कत हो तो आप पढ़कर सुनाइए। साथ ही जब 'रोज नया वाक्य लिखने और पुराने वाक्य सुनने के लिए बच्चे के साथ बैठें तो वाक्यों को थोड़ा विस्तार देकर उन पर बातचीत करना ना भूलें।' उदाहरण के लिए यदि एक पिछला वाक्य कुत्ते के बारे में है तो इस तरह के एक—दो प्रश्न और पूछिए कि वह कहाँ गया था, आज सुबह वह कहाँ है? आखिरी बात यह है कि बच्चे के पढ़ने में छोटी—छोटी गलतियाँ न निकालिए। यदि वाक्य है 'बारिश आई' और बच्चे ने पढ़ा, 'बारिश हुई' तो इस गलती को ठीक करने की जरूरत नहीं है क्योंकि उससे वाक्य के अर्थ का कोई नुकसान नहीं हुआ।

कक्षा की हर कापी धीरे—धीरे कहानियों या सोच—विचार की एक किताब बन जाएगी आप जब बच्चे की लिखाई रोज देखेंगे तो पाएँगे कि अलग—अलग अक्षरों में उसे एक बराबर कठिनाई नहीं होती। कुछ अक्षर या चिह्न ज्यादा अभ्यास माँगते हैं और उनका अभ्यास उसी पृष्ठ पर जितनी बार चाहे किया जा सकता है। लक्ष्य यह है कि जो भी भाषा आप सिखा रहे हैं उसकी वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर को लिखने और पहचानने में बच्चा प्रवीण हो जाए।

कुछ लोग सोचते हैं, और शायद उन्होंने आपको बताया भी हो, कि हिन्दी वर्णमाला अंग्रेजी से एकदम भिन्न है। वे कहते हैं कि हिन्दी की मात्राएँ अलग से सीखना जरूरी है और शुरू में बच्चों को केवल ऐसे थोड़े—से शब्द दिए जाने चाहिए जिनमें कोई मात्रा नहीं लगती। यह दृष्टिकोण एक मान्यता पर आधारित है और यह कतई जरूरी नहीं कि हर अध्यापक इस मान्यता से सहमत हो। इस मान्यता के कारण प्रवेशिकाओं के लेखक मात्राओं

से परहेज करते हुए प्रायः बड़ी अजीबोगरीब रचना कर बैठते हैं। उदाहरण के तौर पर ये दो वाक्य जिनमें अर्थ की तलाश करना व्यर्थ है, हिन्दी की प्रवेशिकाओं में बहुत लोकप्रिय रहे हैं :

थप रतन। घर थप । घर थप रतन।

मगर इधर मत रख। खबर उधर मत रख।

‘इस बात का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है कि छोटे बच्चों को मात्राओं से दूर रखा जाए।’ पढ़ने की सार्थक सामग्री में मात्राएँ हो तो इसका बच्चों की प्रगति पर कोई बुरा असर नहीं पड़ेगा। हाँ, मात्राओं को लिखने या आगे चलकर लेखन में मात्राओं के इस्तेमाल का विशेष अभ्यास कराना दूसरी बात है।

अभ्यास

- बच्चों द्वारा खेल-खेल में गाए जाने वाले गीतों, कविताओं का एक संकलन तैयार कीजिए। साथ-ही-साथ यह भी बताइए कि इस सामग्री का उपयोग पढ़ना सिखाने के लिए कैसे करेंगे?

कुछ गतिविधियाँ

फिर से कहना जरूरी है कि ये गतिविधियाँ सुझाव मात्र हैं। पढ़ना सीखने की प्रक्रिया को मजेदार बनाने के लिए आप क्या-क्या चीजें कर सकते हैं, इसकी ओर संकेत करने के लिए ये गतिविधियाँ यहाँ दी गई हैं। इनकी उपयोगिता बच्चों की प्रगति के भिन्न-भिन्न स्तरों के हिसाब से आपको तय करनी होगी उनमें थोड़ा-सा परिवर्तन करके उन्हें किसी भी आयु या क्षमता के अनुरूप बनाया जा सकता है।

एक

फर्श पर नक्शा

अगर आपकी कक्षा में फर्नीचर नहीं है तो अच्छा है, नहीं तो बच्चों को बरामदे, पिछवाड़े या किसी और खुली जगह में ले जाइए जहाँ वे आसानी से घूम-फिर सकें।

दौड़ने, चलने, एक पैर से कूदने, एक कदम छोड़कर कूदने, घोड़े की तरह कूदने, लंबे डग भरने, आधे कदम लेने, उल्टे चलते, और बगल चाल के लिए अलग-अलग प्रतीक चुन लीजिए। ध्यान रखें कि प्रतीक बहुत सरल हों और आसानी से याद किए जा सकें। जैसे दौड़ने के लिए :  एक कदम छोड़कर कूदने के लिए:

अब जिस जगह आप यह गतिविधि कर रहे हैं उसके हर कोने के लिए प्रतीक नियत कर दीजिए। बच्चों को समझा दीजिए कि किस प्रतीक का क्या अर्थ है। पहली बार यह गतिविधि करते वक्त तीन या चार से ज्यादा प्रतीक न लीजिए, वरना बच्चे कुछ दिक्कत महसूस करेंगे।

शुरू करने के लिए कोई सा कोना चुन लीजिए। बच्चों को बताइए कि उस कोने में पहुँचकर उन्हें फर्श पर बने प्रतीक के अनुसार काम करना है। प्रतीक मिट्टी में हाथ से बनाए जा सकते हैं या वहाँ गत्ते या पत्थर का टुकड़ा रखकर रंग से बनाए जा सकते हैं।

जब हर बच्चे को तीन-चार बार भाग लेने का मौका मिल चुका हो तब प्रतीक की जगह उस गतिविधि का नाम साफ अक्षरों में लिख दीजिए— ‘दौड़ो’। इसके बाद गतिविधि पहले की तरह चालू रखिए।

धीरे-धीरे प्रतीकों की संख्या बढ़ाते जाइए। कक्षा में वापस आकर बाहर की जगह का नक्शा ब्लैकबोर्ड पर बनाइए और उसमें सही जगहों पर गतिविधियों के नाम लिखिए।

दो

वर्णमाला के टुकड़े

वर्णमाला को तीन भागों में बाँटिए और हर भाग के अक्षर बड़े आकार में कागज की एक लंबी पट्टी पर लिख दीजिए। तीनों भागों को दीवार पर कुछ-कुछ दूरी पर चिपका दीजिए— ऐसी जगह जहाँ वह सब बच्चों को साफ व आसानी से दिखाई दे। मात्राओं को एक चौथी पट्टी पर लिखिए।

अब बोर्ड पर एक शब्द लिखिए। बच्चों से कहिए कि उस शब्द के अक्षर और मात्राएँ ध्यान से देखकर उन्हें दीवार पर चिपकी पट्टियों में पहचानें।

तीन

विज्ञान की शुरुआत

रोजमर्रा की चीजों की चर्चा के लिए उनका वर्गीकरण कीजिए। उदाहरणतया 'उड़ने वाली चीजें,' 'गोल चीजें,' 'चपटी चीजें,' और 'तैरने वाली चीजें'।

इस तरह बनाए गए किसी एक समूह का नाम बोर्ड पर लिखिए, फिर उसे पढ़कर सुनाइए और बच्चों से कहिए कि वे उस समूह में शामिल की जा सकने वाली तीन चीजों के नाम सुझाएँ। जैसे, 'उड़ने वाली चीजों,' में बच्चे पतंग, हवाई जहाज और बादल सुझा सकते हैं। इन्हें बोर्ड पर साफ-साफ लिखिए।

बच्चों से कहिए कि चीजों के नाम अपनी कापी पर उतारें और इन चीजों के छोटे-छोटे चित्र भी बनाएँ।

चार

शब्दों का नागिन टापू

जमीन पर एक या कई नागिन टापू के खेल जैसे चौखाने बनाइए। हरेक घर में रोजमर्रा की चीजों जैसे गिलास, चम्मच, घर, पेड़ के नाम लिख दीजिए और साथ में उस चीज का एक छोटा-सा प्रतीक बना दीजिए।

बच्चों को पाँच-पाँच के समूह में बाँटकर हर समूह में एक रैफरी नियुक्त कर दीजिए। रैफरी का काम है गप्पी फेंकना और हर बच्चे की चाल का निरीक्षण करना। खेलने वालों को हर घर में पैर रखते समय उस पर लिखी चीज का नाम पढ़कर सुनाना है और गप्पी वाले घर के ऊपर से गुजर जाना है।

यह खेल खिलाते वक्त रैफरी का काम हर बार किसी नए बच्चे को दीजिए।

पाँच

जो पढ़ा वह करो

जो बच्चे सीख चुके हैं उन्हें यह भी सीखना जरूरी है कि पढ़ने का संबंध करने से है। इस गतिविधि में अध्यापक बोर्ड के पास चुपचाप खड़ा रहता है और बोलने के स्थान पर छोटे-छोटे निर्देश बोर्ड पर लिखता जाता है।

हरेक बच्चे को उसकी क्रम संख्या पता होनी चाहिए। बोर्ड पर निर्देश लिखते समय साथ में किसी बच्चे की क्रम संख्या भी लिख दें। जैसे— 'उठकर बाहर जाओ, एक पत्थर लाओ—10'। इस निर्देश का मतलब है कि 10 नंबर के बच्चे को उठकर बाहर जाना है और एक पत्थर लाना है। अब अगला निर्देश हो सकता है—'10 नंबर पत्थर लेकर उसे अपने दाहिने घुटने पर रखो—5'।

धीरे-धीरे निर्देशों को और जटिल बनाते जाएँ। जटिल निर्देश इस तरह के हो सकते हैं कि बच्चा दीवार पर टंगा पोस्टर देखकर कोई खास चीज ढूँढ़े या अस्पताल का रास्ता बताए, या स्कूल के बाहर लगे पेड़ों की संख्या गिनकर बताए, आदि।

छह

पिछला शब्द, अगला शब्द

इस गतिविधि के लिए बाल साहित्य की किताबें पर्याप्त संख्या में होना जरूरी हैं। किताबें बच्चों में इस तरह बाँटिए कि हर बच्चे को कोई ऐसी किताब मिले जिसे वह आसानी से पढ़ सके। बच्चों से कहिए कि वे किताब के किसी भी पन्ने को खोलें और दाहिना पेज देखें। क्या इस पेज के अंत में पूर्ण विराम आता है? यदि हाँ तो कोई और पन्ना खोलें।

अब पूरा दाहिना पन्ना चुपचाप पढ़ डालें। अंत तक पहुँचकर रुक जाएँ और अगला पन्ना न पलटें।

प्रत्येक बच्चे से पूछिए कि वह अंदाज से बताए कि अगले पृष्ठ का पहला शब्द क्या होगा? जब वह अपना अनुमान बता दे तब उससे पन्ना पलटकर यह देखने के लिए कहिए कि अनुमान सही था कि नहीं? सही अनुमान पर बाकी बच्चे ताली बजाने की परंपरा डाल सकते हैं।

जब सबकी बारी आ चुके और सब बच्चे अगला पन्ना पलट चुके हों तो फिर पहले बच्चे से शुरू कीजिए। इस बार हर बच्चे को याददाश्त के आधार पर यह बताना है कि पिछले पेज का आखिरी शब्द क्या था?

सात

तीन प्रश्न

बच्चों को दो पंक्तियों में आमने-सामने बैठाएँ। हर बच्चे को एक किताब देकर उसे कहीं से भी खोलने को कहिए। दाहिना पेज पूरा पढ़कर बच्चा अपने सामने बैठे बच्चे को किताब दे। अब इस बच्चे को वही पेज पढ़ना है। पढ़कर वह अपने सामने बैठे बच्चे से, जो पहले ही यह पेज पढ़ चुका है, तीन प्रश्न पूछे।

शुरू-शुरू में बच्चे कुछ पूछने में दिक्कत या झिझक महसूस करें तो उन्हें प्रश्नों के उदाहरण बताइए।

आठ

गड़बड़ कविता

यह बहुत जटिल गतिविधि है, इसकी तैयारी बहुत ध्यान से और काफी पहले से करनी होगी। पर एक बार तैयारी करके आप उसी सामग्री को बार-बार प्रयोग में ला सकते हैं। यह भरोसा रखिए कि इस गतिविधि में अपार आनंद आता है।

चार-चार पंक्तियों की कई कविताएँ चुनिए। कोशिश यह कीजिए कि चारों पंक्तियों की तुक मिलती हो। जितने बच्चे हैं उतनी ही कविताएँ चाहिए। अब मान लीजिए कि आप 20 बच्चों में यह गतिविधि करने वाले हैं तो 20 कविताओं की पहली पंक्ति अलग-अलग कागज पर लिख लीजिए। अब हर कागज पर दूसरी पंक्ति किसी और कविता की लिखिए और इसी तरह तीसरी और चौथी पंक्ति अलग-अलग कविताओं की लिखिए। अंततः आपके पास 20 कागज होंगे जिन पर अलग-अलग कविताओं से ली गई चारों पंक्तियाँ इस तरह लिखी हुई होंगी:

1. दूध जलेबी रक्खी है।
2. तू लगता है बिल्कुल भालू
3. तब मैं खाना खाऊँगा
4. पानी में ही सोती मछली

बच्चे गोल घेरे में बैठेंगे। बच्चों को बताइए कि उनके कागज पर लिखी कविता की पंक्तियाँ गड़मगड़ हो गई हैं। हर बच्चे को तीन पंक्तियाँ ढूँढ़नी है जो उसके कागज पर दी गई पहली पंक्ति से मेल खाती हैं।

पहले बच्चे से कहिए कि वह अपने कागज पर लिखी दूसरी पंक्ति पढ़कर सुनाए। बाकी बच्चे ध्यान से सुनें और सोचें कि क्या यह पंक्ति उनके कागज पर दी गई पहली पंक्ति से मेल खाती है। जिस बच्चे को ऐसा लगे वह अपना हाथ खड़ा करे और पंक्ति माँगे। यदि अध्यापक को लगे कि माँग सही है तो बच्चा यह पंक्ति लिख ले और जिस बच्चे ने यह पंक्ति दी है वह अपने कागज पर यह पंक्ति काट दे। अब अगला बच्चा अपनी दूसरी पंक्ति पढ़े। इस तरह यह क्रम तब तक चलता रहे जब तक हर बच्चे को सही दूसरी पंक्ति नहीं मिल जाती। इसके बाद तीसरी पंक्ति की खोज शुरू हो।

नौ

प्रतिक्रिया

चित्र देखकर पैदा होने वाली प्रतिक्रिया के स्तर और इन स्तरों से जुड़े हुए सवाल, जिनकी चर्चा 'बातें करना' लेख में हो चुकी है, कहानियों और कविताओं जैसी साहित्यिक सामग्री पर भी लागू होते हैं।

जब आप बच्चों को कहानियाँ, पत्रिकाएँ या किताबें पढ़ने को दें, इन सामग्रियों के आधार पर प्रश्न भी बना लें। जब बच्चे आपकी दी हुई सामग्री पढ़ चुकें तो आप इन प्रश्नों की मदद से बच्चों की प्रतिक्रियाओं पर आधारित एक बहस आयोजित कर सकते हैं। पर हर बार कोई चीज पढ़ने के लिए देते समय ऐसा न करें। संभवतया हफ्ते में एक दिन ऐसा रखा जा सकता है जब उस हफ्ते में पढ़ी गई सामग्री पर चर्चा हो।

बच्चों की प्रतिक्रियाओं का माप-जोख न कीजिए। न ही कभी यह आभास दीजिए कि कोई प्रतिक्रिया गलत थी। हर प्रतिक्रिया अपनी जगह सही है। ऐसी प्रतिक्रिया भी सार्थक हो सकती है जो विषयवस्तु से खींचतान करती हो। प्रतिक्रिया कैसी भी हो, वह पढ़ी हुई सामग्री से सामंजस्य स्थापित करने की चेष्टा दिखाती है। एक ही चीज को बार-बार पढ़कर बच्चा उस पर हर बार अलग प्रतिक्रिया देना चाहे तो इसकी पूरी छूट रहनी चाहिए।

शुरुआत के बाद

यहाँ प्रस्तुत गतिविधियों के आधार पर आप कई और नई गतिविधियाँ और नई सामग्री गढ़ सकते हैं। आप पाएँगे कि जिन बच्चों ने यहाँ दिए गए तरीकों से पढ़ना सीखा है वे हर तरह की सामग्री में दिलचस्पी लेंगे और उसे समझने की कोशिश करने के योग्य पाएँगे। यहाँ तक कि अखबार का एक पुराना फटा हुआ टुकड़ा भी एक पहली की तरह इस्तेमाल किया जा सकता है। उसे छोटे-छोटे टुकड़ों में फाड़कर और बच्चों से यह कहकर कि इन टुकड़ों में दिए अधूरे वाक्य पढ़कर सारे टुकड़ों को जोड़ें, आप पुराने अखबार का इस्तेमाल पढ़ने के कौशल का विकास करने के लिए कर सकते हैं। इस कौशल में होशियारी से अनुमान करना, छुपे हुए शब्द को अर्थ से जोड़ना और अपने अनुमान का परीक्षण करना शामिल है।

बच्चे के पढ़ना सीख लेने के बाद अध्यापक का काम यह है कि बच्चे को अपने इस नए कौशल का इस्तेमाल अलग-अलग किस्म के कामों को करने की प्रेरणा दे। हमारे कई प्राइमरी स्कूलों में पढ़ने के कौशल का

प्रयोग विविध उद्देश्यों के लिए करने को प्रोत्साहित नहीं किया जाता। पढ़ने का रिश्ता सिर्फ पाठ्यपुस्तकों और परीक्षा से जुड़कर रह जाता है। नई जानकारी ढूँढ़ने के लिए पढ़ने, निजी रुचियों के विकास के लिए पढ़ने, और आनंद की खातिर पढ़ने की ओर ध्यान नहीं दिया जाता। पढ़ना बच्चे के व्यक्तित्व के समग्र विकास का हिस्सा नहीं बन पाता। परिणाम स्वरूप बच्चे पढ़ना सीखकर भी पाठक नहीं बन पाते। यह एक बड़ी विफलता है और अध्यापक चाहे तो इसका निवारण कर सकता है।

यह लेख कृष्ण कुमार की पुस्तक 'बच्चे की भाषा और अध्यापक : एक निर्देशिका' से संकलित है।

अभ्यास

- पढ़ना सिखाने का शिक्षण सफलतापूर्वक कैसे किया जाए? तर्क दीजिए।
 - पढ़ने की आरम्भिक शिक्षा को सार्थक कैसे बनाया जावे।
 - पढ़ना क्या है स्पष्ट कीजिए और हम कब कहेंगे कि बच्चे को पढ़ना आ गया?
 - पढ़ना सिखाने के लिए एक गतिविधि बनाइए।
 - पढ़ने को आनन्ददायी बनाने के लिए क्या-क्या प्रयास किया जाना चाहिए?
 - पढ़ना व्यक्तित्व विकास में किस तरह सहायक होता है?
-

अध्याय – 18

पढ़ने का आकलन कैसे करें

पाठ की रूपरेखा

- परिचय
- उद्देश्य
- शीर्षक व उप-शीर्षक
 - आकलन
 - पढ़ने का मकसद
 - आकलन
 - गतिविधियाँ
 - पढ़ने की उत्सुकता

परिचय :

पढ़ने का कौशल आ जाने पर हम परी लोक की सैर कर सकते हैं, किस्से-कहानियों की दुनिया से अपने को जोड़ सकते हैं, इतिहास से रू-ब-रू हो सकते हैं लेकिन हमें सही तरीके से पढ़ना आना चाहिये। अक्षर-दर-अक्षर जोड़कर शब्द पढ़ने की क्षमता से क्या हम किस्से-कहानियों का आनन्द उठा पाएँगे? नहीं न, इसलिए हम पढ़ने में कितने कुशल हैं इसका आकलन जरूरी है और तदनुसार बच्चे के लिए गतिविधियाँ बनाकर उसे पढ़ने में कुशल बनाने के तरीके पर हम इस अध्याय में पढ़ेंगे।

उद्देश्य :

- किस तरह के पढ़ने को पढ़ने का कौशल मानेंगे इसकी समझ विकसित कर सकेंगे।
- पढ़ने का आकलन कैसे करेंगे इसके बारे में अपनी राय दे सकेंगे।
- पढ़ने का मकसद बता सकेंगे।
- पढ़ने के आकलन का पैमाना सोच सकेंगे।
- दी गयी चित्रित सामग्री का उपयोग पढ़ने का कौशल विकसित करने में कर सकेंगे।
- पाठ्यपुस्तकों से इतर पसंद की पुस्तकों, चित्र कक्षाओं आदि पढ़ने की ललक पैदा कर सकेंगे।
- बच्चे भी अपनी प्रगति का आकलन कर सकेंगे।

दुनिया के किसी भी कोने में रहने वाले किसी भी उम्र के व्यक्ति के पास अगर कोई सबसे रोमांचकारी और अनोखी चीज़ है तो वह है 'पढ़ने' का कौशल। यह वह तिलस्मी दरवाज़ा है जिसे खोल कभी हम परी लोक हो आते हैं, न जाने कितने किस्से-कहानियों का मज़ा लूटते हैं तो कभी ज्ञान की अतुल अपार संपदा समेटे रहस्यमयी दुनिया की सैर कर आते हैं, और तो और इतिहास बन चुके नज़ारों से भी रू-ब-रू हो लेते हैं। स्कूली दुनिया में तो उस करिश्मे के बिना किसी की कोई बिसात ही नहीं। गणित हो या

विज्ञान या फिर भाषा सभी विषयों की नैया का खेवनहार 'पढ़ना' ही

- बच्चे को हर अक्षर की पहचान बहुत अच्छे से है। वे अक्षरों को जोड़-जोड़ कर शब्द पढ़ पा रहे हैं। क्या इसी तरह का 'पढ़ना' उन्हें किस्से-कहानियों की दुनिया में ले जाएगा?
- बच्चे लिखित या मुद्रित सामग्री के एक-एक शब्द को पढ़कर आगे बढ़ रहे हैं। क्या इसी तरह से 'पढ़ना' उन्हें उस सामग्री से रोमांचित होने के मौके दे पाएगा?
- बच्चे केवल वही सामग्री पढ़ पा रहे हैं जिसे शिक्षक या अभिभावक द्वारा बच्चे के सामने कई बार पढ़ा गया है। ज़ाहिर सी बात है पाठ्यपुस्तक के पाठ ही होंगे और वह भी भाषा की पुस्तक के, पर जब पाठ्यपुस्तक से बाहर कोई पठन सामग्री उनके सामने आती है, वे उसका आनंद नहीं उठा पाते। क्या हम इसी तरह के 'पढ़ने' की बात कर रहे थे? बिल्कुल नहीं।

हम 'पढ़ने' को करिश्माई कौशल तभी मान सकेंगे, जब हम लिखे हुए में से अर्थ ढूँढ़ सकें।

शब्दों, अक्षरों की पहचान मात्र 'पढ़ना' नहीं है। बहुत से बच्चे गणित के तमाम जटिल से जटिल सवाल चुटकियों में हल कर लेते हैं बशर्ते सवाल की इबारत ज़बानी बोली जाए या सिर्फ संख्याएँ दे दी जाएँ। वे अपने इर्द-गिर्द हो रही हर घटना की जानकारी रखते हैं, अपने से बड़ों को उन घटनाओं से अवगत करवाते रहते हैं। पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों, चाँद-सूरज, दिन-रात आदि से जुड़ी उनके पास अपनी जानकारी का खज़ाना है, जिसे उन्होंने अपनी अद्भुत अवलोकन क्षमता से हासिल किया है पर विज्ञान की पुस्तक में लिखे खज़ाने से वे कुछ भी नहीं ले पाते। दोनों जगह उन्हें एक ही चीज़ मात दे रही है वह है 'ठीक से न पढ़ पाना'। यह 'ठीक से न पढ़ पाना' सिर्फ भाषा की घंटी से ही सरोकार नहीं रखता बल्कि पूरी विद्यालयी गतिविधियों जैसे— दूसरे विषयों की पढ़ाई, बुलेटिन बोर्ड तैयार करना, परियोजना कार्यों की रिपोर्ट तैयार करने के लिए सामग्री का चयन करना, यह सब 'पढ़ना आने' पर ही निर्भर करता है। और अब तो ऐसा दौर आ गया है कि विद्यालय से बाहर की दुनिया को समझने के लिए भी 'पढ़ना आना' जरूरी है।

अभ्यास

-
- पढ़ने के करिश्माई कौशल कौन-कौन से हो सकते हैं?
 - पढ़ने में हमारे आस-पास का वातावरण किस प्रकार सहायक होता है?
-

आकलन

इस 'पढ़ने' का आकलन कैसे किया जाए। असल बात हमें इसी पर करनी है। हम सभी जानते हैं कि 'पढ़ना' भाषा का अर्जित किया जाने वाला कौशल (Acquired skill) है। इस आधार पर यह तथ्य उभरकर सामने आता है कि 'पठन कौशल' यानी कि 'पढ़ने' का आकलन करने के लिए समझना बहुत जरूरी है कि यह कौशल अर्जित कैसे किया जा रहा है, अर्थात् बच्चे किस तरह से 'पढ़ना' सीख रहे हैं। 'पढ़ना सीखने' के प्रति समझ बनना इसलिए भी जरूरी है क्योंकि 'पढ़ना सीखना' और उसका 'आकलन करना' ये अलग-अलग घटने वाली प्रक्रियाएँ नहीं हैं बल्कि दोनों ही साथ-साथ चलने वाली प्रक्रियाएँ हैं। इस संदर्भ में कुछ और भी बिन्दु हैं जिन पर ध्यान देना जरूरी होगा जैसे—

- आकलन सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का हिस्सा है। यह एक सतत प्रक्रिया है।
- आकलन से मतलब है तरह-तरह के तरीकों का इस्तेमाल करते हुए बच्चों के सीखने की प्रगति संबंधी सूचनाएँ हासिल करते रहना और उस आधार पर उन्हें रचनात्मक पृष्ठपोषण देना।

- आकलन सिर्फ इसलिए नहीं किया जाता कि हम पता लगाएँ कि बच्चों ने क्या किया और कितना सीखा है बल्कि 'कैसे' सीख रहे हैं, इसे भी समझा जाता है। उनकी सफलताओं या कठिनाइयों और आत्मविश्वास के स्तर को पहचानना भी जरूरी होता है।
- आकलन बच्चों की जरूरतों, रुचियों और पूर्व अनुभवों का पता लगाने के लिए भी किया जाता है। वे पहले से क्या जानते हैं और क्या कर सकते हैं, आकलन की प्रक्रिया हमें यह जानने में भी मदद मिलती है।
- गतिविधियों और पद्धतियों की प्रभावशीलता मापने तथा अपनी अध्यापन पद्धतियों को परखने में भी आकलन मदद करता है।
- आखिरकार, आकलन द्वारा बच्चे के सीखने की गुणवत्ता सुनिश्चित करना भी अनिवार्य है।
- आकलन सम्बन्धी पद्धतियाँ एवं दृष्टिकोण पिछड़े बच्चों की जरूरतों का भी ख्याल रखने वाला हो और निश्चित रूप से पूर्वाग्रहों से दूर हो।
- एक बात और। आकलन चाहे पढ़ने की क्षमता का हो या फिर किसी अन्य कौशल का, आकलन करना अकेले शिक्षक/अध्यापक की एकाधिकार नहीं, इस प्रक्रिया में सामुदायिक सहभागिता भी जरूरी है। 'स्व' और 'साथी आकलन' के लिए भी तमाम गुंजाइशें हैं।
- आकलन के माध्यम से किसी प्रविधि की सफलता अथवा असफलता का ज्ञान होता है ताकि असफलता की स्थिति में शिक्षक अन्य प्रविधियों का भी उपयोग करे।

अभ्यास

- आकलन सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का हिस्सा है। कैसे?
- निम्नलिखित वाक्यों को पढ़कर सही अथवा गलत का चिह्न लगाएँ—
 - सीखना एवं सिखाना एक सतत प्रक्रिया है। ()
 - आकलन से आशय बच्चे के सीखने की प्रगति की सूचना हासिल करना है। ()
 - आकलन से सिर्फ बच्चा क्या नहीं जानता इसका पता लगाया जाता है। ()
 - आकलन को सभी प्रकार के पूर्वाग्रहों से मुक्त होना चाहिए। ()
 - आकलन से बच्चे की गुणवत्ता बाधित होती है। ()
- आकलन की प्रक्रिया में किन-किन लोगों की भागीदारी ली जा सकती है?
- आकलन से बच्चे की गुणवत्ता किस प्रकार प्रभावित होती है।
- आकलन में समुदाय की सहभागिता बच्चों के सीखने की प्रगति में सहायक है, कैसे?

पढ़ने का मकसद

उपर्युक्त बिन्दुओं के प्रति समझ और सहमति बनने के बाद अगले पायदान पर चढ़ने से पहले एक छोटा-सा पड़ाव और पड़ता है, वह है भाषायी कौशलों के सन्दर्भ में 'पठन कौशल के उद्देश्य'। जब तक हमें यह ही नहीं पता कि प्राथमिक स्तर पर 'पढ़ने' से जुड़े क्या-क्या उद्देश्य हैं तो हम आकलन किस आधार पर करेंगे? इसलिए हम उद्देश्यों पर भी निगाह डाल लेते हैं—

- परिवेश में उपलब्ध संदर्भों, चित्रों एवं अन्य मुद्रित/लिखी सामग्री से परिचित होना और अनुमान से पढ़ने का प्रयास करना।
- 'पढ़ने' को दैनिक जीवन की जरूरतों से जोड़ना, घर और बाहर दोनों ही।
- लिपि चिह्नों को देखकर और उनकी ध्वनियाँ सुन और समझकर उनमें सहसम्बन्ध बनाते हुए पढ़ने की कोशिश करना।
- सुनी हुई कहानियों, कविताओं को लिखित/मुद्रित रूप में देखने पर उनसे अपने अनुभव जोड़ पाना।
- विषय सामग्री के माध्यम से नए शब्दों के अर्थ जानने की कोशिश करना।
- मुख्य बिन्दु/विचार को ढूँढ़ने के लिए विषय सामग्री की बारीकी से जाँच करना।
- पाठ्यपुस्तक की विधाओं से परिचित होना और उन विधाओं की दूसरी पुस्तकें/रचनाएँ पढ़ने के लिए प्रोत्साहित होना।
- दूसरों के विचारों को पढ़कर समझने की योग्यता का विकास करना।
- पुस्तकों के प्रति रुचि जाग्रत करना/पढ़ने के प्रति एक ललक पैदा करना।
- पढ़कर ज्ञानार्जन और आनंद पाना।

हाँ, इन उद्देश्यों के साथ-साथ कक्षा में विराजी भाषायी सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता के प्रति सहिष्णुता होना तो शामिल है ही।

आकलन

अब बात करते हैं कि आकलन कैसे करें? मान लीजिए कि हमने बच्चों के सामने एक चित्र प्रस्तुत किया। चित्र में एक बस है। उस बस से कुछ दूरी पर बच्चे हैं। उनकी मुद्रा दौड़ने की सी है और बस पर चढ़ने की है।

चित्र के साथ मोटे अक्षरों में लिखा है— “बच्चे दौड़कर बस में चढ़ गए।” जिन बच्चों के सामने हमने चित्र प्रस्तुत किया उन्हें लिपि चिह्नों, अक्षरों, शब्दों, वर्णों की पहचान है यानी कि आम भाषा में कहें तो वे ‘पढ़ना’ जानते हैं। हमने इन बच्चों से कहा कि चित्र देखें और लिखा हुआ वाक्य पढ़कर बताएँ। कुछ बच्चे पढ़ते हैं— “बच्चे दौड़कर बस पर चढ़ गए।” कुछ बच्चों ने वाक्य को इस तरह से पढ़ा — “ब-च्-चे द औ की मात्रा ड, दौड़ कर ब-स म ए की मात्रा मस्ते में, च-ढ़ ग-ए।”

कुछ बच्चों ने वाक्य को इस तरह से पढ़ा— “बच्चे द ड़ क र ब स में च ढ ग ए।” कुछ बच्चों ने वाक्य को इस तरह से पढ़ा— “बच्चे भागकर बस में चढ़ गए।” यहाँ पर ‘पढ़ने’ की चार बानगियाँ प्रस्तुत हैं।

- पहली बानगी में बच्चों ने ‘में’ की जगह ‘पर’ बोला है या ऐसे भी कह सकते हैं पढ़ा है।
- दूसरे से साफ़ जाहिर है कि बच्चे हर अक्षर को अलग-अलग पढ़ रहे हैं यानी कि तोड़-तोड़ कर पढ़ रहे हैं और निश्चित रूप से उनका आपस में कोई सम्बन्ध नहीं जोड़ पा रहे हैं।
- तीसरी शैली से पता चलता है कि वाक्य के कुछ शब्द तो सही-तरीके से पढ़ लिए गए हैं पर ‘दौड़’ में औ की मात्रा एक व्यवधान बन गई और उसे ‘द ड़’ पढ़ा गया।

- चौथे में तो 'दौड़ कर' उड़ा ही दिया गया और पढ़ा गया 'भागकर' आपको क्या लगता है – यह शब्द 'भागकर' कहाँ से आया होगा? निश्चित रूप से उस सामग्री में तो कहीं भी नहीं लिखा या छपा जो उन्हें पढ़ने के लिए दिया गया है। उस पर सिर्फ एक ही वाक्य लिखा है— "बच्चे दौड़कर बस में चढ़ गए।" और साथ में एक चित्र है जिसमें बस है और दौड़कर बस पकड़ते बच्चे।

अब यदि आपके पास पाँच बिन्दुओं वाली मापनी है—

1. बहुत मदद चाहिए।
2. मदद चाहिए।
3. औसत
4. उत्तम/अच्छा
5. उत्कृष्ट

और 'पढ़ने' के संदर्भ में आपकी परिभाषा है— "लिखे हुए में से अर्थ ग्रहण करना।" तो आप चारों में किसको किस श्रेणी में रखेंगे?

आपका उत्तर 'पढ़ने' का आकलन करने की दिशा तय करेगा।

अभ्यास

- नीचे एक वाक्य दिया गया है। "बच्चे फूटबॉल खेल रहे हैं?" इस वाक्य को पूरी कक्षा को पढ़ने को दें फिर उनकी प्रतिक्रियाओं को ऊपर दी गई मापनी के आधार वर्गीकृत करें।
- प्राथमिक स्तर पर पढ़ने के क्या उद्देश्य हैं?

गतिविधियाँ

अब 'पढ़ने का आकलन' से जुड़ी कुछ गतिविधियाँ प्रस्तुत हैं जो यह समझ बनाने में सहायता करेंगी कि 'पढ़ने' का आकलन कैसे करें, किस तकनीक का इस्तेमाल करें, सूचनाएँ दर्ज कैसे की जाएँ और पीठ किसकी और की जाए। पहले 'चित्र पढ़ने' की बात करते हैं।

शुरुआती तैयारी

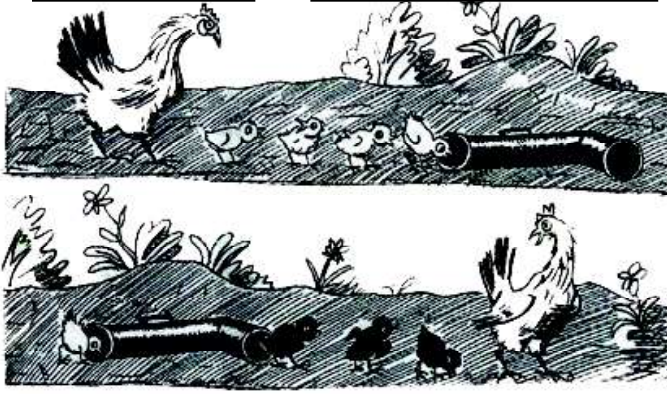
पूर्व तैयार — हमारे पास बच्चों को दिखाने के लिए चित्र है। (क) चित्र का आकार इतना तो जरूर है कि बच्चे ध्यान से देख सकें, पढ़ सकें, अनुमान लगा सकें। संभवतः उस चित्र की 6–7 प्रतिलिपियाँ हैं और पाँच-पाँच बच्चों (स्थिति के अनुसार) के समूह बनाकर चित्र को देखने के लिए भी दिया जा सकता है। (ख) चित्र का चयन बच्चों के पूर्व अनुभवों, स्थानीय सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों के अनुसार ही किया गया है।

- हमारे पास एक रजिस्टर है जिसमें सभी बच्चों के नाम लिखे हैं और हम उसमें हर बच्चे के संबंध में विवरणात्मक टिप्पणियाँ लिखने के लिए मानसिक रूप से तैयार हैं।

भरी हुई कक्षाओं (एक कक्षा में अधिक संख्या में बच्चे होना) के साथ निर्वाह करने वाले शिक्षक भी इस तैयारी का हिस्सा हो सकते हैं। जरूरी नहीं है कि साठ से सत्तर सभी बच्चों का अवलोकन और टीपें दर्ज होना 'आज एक ही दिन' में किया जाए। आज समूह-1 के सात बच्चे तो कल समूह-2 के। इस तरह 15 दिन में हर बच्चे के कौशल का स्तर हमारी मापनी पर अंकित हो सकता है। पूर्व तैयारी में ही शामिल होगा चित्र सम्बन्धी प्रश्नों का निर्माण। ऐसे प्रश्न जो ये पता लगा सकें कि बच्चे चित्र को पढ़ पा रहे हैं या नहीं।

मेरे बच्चे गए कहाँ?

Where Are My Children?



प्रस्तुत चित्र के सम्बन्ध में प्रश्न हो सकते हैं —

1. इस चित्र में क्या-क्या चीज़ें दिखाई दे रही हैं?
2. आगे-आगे कौन चल रहा है?
3. चूज़ों के पीछे कौन चल रहा है?
4. सभी चूज़ों के अपनी पसंद से नाम रखो।
5. उनकी माँ मुर्गी का भी नाम रखो।
6. चूज़े उस पाइप के अंदर से क्यों जाना चाहते हैं?
7. माँ उन्हें मना करे या नहीं?
8. जब चूज़े पाइप के रास्ते बाहर आए तो उनकी माँ हैरान क्यों हुई?
9. कितने चूज़े पहले बाहर निकले। कितने चूज़े पीछे रह गए।
10. यह चूज़ा पीछे क्यों रह गया होगा?
11. पाइप के अन्दर क्या चीज़ हो सकती है, जिससे चूज़ों का रंग बदल गया?
12. इसे देखकर कोई कहानी सूझती होगी, सुनाओ?
13. पहले क्या हुआ, फिर क्या हुआ?
14. अब चूज़े क्या करेंगे?
15. इनकी माँ उन्हें क्या कहेगी?
16. इस चित्र को कोई नाम दे सकते हो?
17. इससे मिलता-जुलता कोई चित्र पहले भी देखा था?
18. अगर चूज़े पाइप के अंदर ही फँस जाते तो?
19. ये पाइप रास्ते में किसने रखे होंगे?

20. तुम्हारे घर के आस-पास भी ऐसे ही चीजें पड़ी होती हैं क्या?

21. तुम इस मुर्गी और चूजों से कोई सवाल करना चाहोगे, कोई भी सवाल इनसे पूछो।

निश्चित रूप से इतने सवाल नहीं पूछे जाएँगे। ये केवल उदाहरण के लिए हैं कि कल्पना को विस्तार देने वाले, अनुमान लगाने वाले, विश्लेषण करने का मौका देने वाले और तार्किक क्षमता का विकास करने में मदद देने वाले ही सवाल पूछना बेहतर होगा। मात्र कौन हैं? क्या-क्या है? जैसे प्रश्न पूरी तरह से चित्र पढ़ने में मदद नहीं करते।

अब तक हमने क्या किया? तस्वीर का चयन, संबंधित प्रश्नों का निर्माण, एकल या समूह में बच्चों को चित्र दिया गया और अब प्रश्न पूछने की बारी है और टीपें दर्ज करने का समय। (इस समय टीपें रजिस्टर में नहीं हमारे मस्तिष्क/स्मृति में दर्ज हो रही हैं। सवाल-जवाब करते समय रजिस्टर में टिप्पणियाँ लिखना बच्चों को व्याकुल कर सकता है। उनकी सहजता के आड़े आ सकता है।) यहाँ हमें एक बहुत ही अहम बात ध्यान में रखनी होगी –

“सभी बच्चे अपने-आप में अद्वितीय हैं। उनके सीखने-समझने की गति भिन्न-भिन्न है।” यानी हर बच्चे को अलग-अलग समय दिया जाना चाहिए।

एक बहुत ही सहज से माहौल में बच्चों से प्रश्न पूछे गए। उत्तर पाने में शीघ्रता का भाव नहीं दिखाया गया। सवाल की भाषा सरल थी। ज़रूरत पड़ने पर सवाल दोहराया भी गया। बच्चों के उत्तर स्वीकार किए गए। जिस बच्चे ने जवाब देने में झिझक/कठिनाई प्रदर्शित की, उसे विवश नहीं किया गया बल्कि कहा गया— “चलो, कोई बात नहीं। बाद में बता देना।”

एक बार में पाँच बच्चों के पढ़ने के बारे में ही याद रह पाया। उनकी टिप्पणियाँ कैसी होंगी, नमूना प्रस्तुत है—

1. अनुश्री – उत्कृष्ट

पिछली बार की तुलना में कहीं अधिक सहज और सजग है। चित्र देखते हुए मुस्कुरा रही थी और अंत में तो हँस ही पड़ी। फटाफट बच्चों के नाम रख दिए पर मुर्गी का नाम नहीं रखा यह कहकर कि यह तो ‘मम्मी’ है। मम्मी का नाम नहीं होता। (घर पर कभी मम्मी का नाम लिया जाता होगा।)

पूछे गए प्रश्नों की जगह अपने ही प्रश्न बना डाले और उनके उत्तर भी दे दिए। जैसे— चारों चूजे आपस में क्या कह रहे हैं? ये एक लाइन में क्यों चल रहे हैं? ये आपस में कब-कब लड़ते होंगे?

2. शांतनु – मदद की ज़रूरत है

चित्र को देखने में कुछ अधिक समय लिया। क्या है? कितने हैं? कौन हैं? के उत्तर फटाफट दे दिए। पिछली बार से तुलना करें तो कोई विशेष प्रगति नहीं है। “मुर्गी कैसी है” का वर्णन अच्छे से किया पर अनुमान वाली बात में हिचकिचाहट थी। सवालों का जवाब एक या दो शब्दों में दे पा रहा था। बिना उतार-चढ़ाव के पाँच वाक्यों की कहानी सुनाई।

3. आयुष – औसत

पिछली बार की तुलना में इस बार अधिक ऊर्जावान और प्रफुल्लित नज़र आ रहा है। उत्तर देने के लिए तत्पर है। घटनाक्रम बहुत सहजता से बता पाया है परन्तु कल्पना तथा अनुमान लगाने वाले सवालों का उत्तर देने में हिचकिचाहट थी। प्रोत्साहित करने पर एक दो वाक्य रूक-रूक कर कह पाया है।

इसी तरह से बाकी बच्चों के सम्बन्ध में भी टीपें दर्ज की गईं।

अभ्यास

- उपर्युक्त चित्र पर जो प्रश्न पूछे गए हैं क्या आप इससे सहमत हैं या असहमत हैं और क्यों?
- “प्रत्येक बच्चे के सोचने व समझने की गति भिन्न-भिन्न होती है” इस कथन की पुष्टि में अपना अनुभव और उदाहरण प्रस्तुत करें।

‘पठन कौशल’ के आकलन के संदर्भ में अभी हमने ‘चित्र पढ़ने’ का आकलन किया था। चित्र के बाद छोटी-छोटी कविताओं, कहानियों और पाँच-छह वाक्यों वाले रुचिकर अनुच्छेदों को पढ़ने की बात आती है। धीरे-धीरे स्तर बढ़ता जाएगा और हम बच्चे को भिन्न-भिन्न विधाओं के पठन की ओर ले जाएँगे। यहाँ पर आकलन के लिए हमें कुछ सुरागों को ध्यान में रखना होगा। पठन सम्बन्धी मुख्य सुराग इस प्रकार हो सकते हैं—

1. आनंद लेते हुए कविता को पढ़ना।
2. आवश्यकतानुसार शब्दों पर बल देना।
3. पढ़ी गई कविता को अनुमान से आगे बढ़ाना।
4. कविता-कहानी का अर्थ समझते हुए पढ़ पाना।
5. कविता या कहानी के घटनाक्रम को अपनी कल्पना से आगे बढ़ाना और आगे-पीछे होने वाली घटनाओं में अंतर कर पाना।
6. पढ़ी जा रही सामग्री में आए अपरिचित शब्दों का संदर्भ के आधार पर मतलब ढूँढ़ना।
7. पढ़ी गई सामग्री को अपनी तरह से प्रस्तुत कर पाना।
8. परिवेश में उपलब्ध पठन सामग्री जैसे पोस्टर, विज्ञापन बोर्ड, सड़क संकेतों, स्कूल, सड़क, दुकानों के नाम, स्कूल में लिखी इबारतों आदि को पढ़ पाना और उनके प्रति समझ बनाना।
9. आवश्यक सूचनाओं और संदेशों को समझकर पढ़ पाना।
10. चित्रों को लिखित सामग्री से जोड़ते हुए घटनाओं के बारे में अनुमान लगाना और अपने अनुमान के लिए तर्क भी सुझाना।
11. पोस्टर, विज्ञापन, साइन बोर्डों से अब पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ने की तरफ प्रोत्साहित होना।
12. पाठ्यपुस्तकों से इतर अपनी पसंद की पुस्तकों, चित्रकथाओं, कॉमिक्स आदि पढ़ना और उन्हें पढ़ने के लिए ललक पैदा होना।
13. नए तथा अपरिचित शब्दों के अर्थ ढूँढ़ने के लिए सिर्फ अनुमानों पर या फिर बड़ों की मदद पर ही निर्भर नहीं रहते अपितु शब्दकोश की सहायता भी लेते हैं।
14. भिन्न-भिन्न विधाओं को पढ़ने में रुचि दिखाना और किसी खास विधा के प्रति आकर्षण प्रदर्शित करना।
15. तरह-तरह की पठन सामग्री का संकलन करना और उन्हें पढ़ने के लिए लालायित रहना।

इन सभी संकेतकों के आधार पर बच्चों के पठन कौशल एवं क्षमता का आकलन किया जा सकता है। यद्यपि ये सभी संकेत एक बढ़ते हुए क्रम में हैं पर यह दावा नहीं किया जा सकता कि सभी बच्चे क्रमानुसार ही

इन्हें प्रदर्शित करेंगे। हो सकता है कोई बच्ची अभी पूरी तरह से पढ़ना नहीं सीख पाई है, पर वह तरह-तरह की पठन सामग्री का संकलन करने में रुचि रखती हो और अनुमान के आधार पर उन्हें पढ़ती हो। यह भी हो सकता है कि किसी बच्चे ने अभी प्रवाह के साथ पढ़ना नहीं सीखा पर घर में या विद्यालय में देखकर शब्दकोश के प्रति रुचि जाग्रत हो आई हो और उसका इस्तेमाल करना शुरू कर दिया हो।

उपर्युक्त सुरागों को आधार बनाकर तरह-तरह की विधियों के माध्यम से जिनमें अवलोकन सर्वोपरि है, बच्चों के पढ़ने की प्रगति से जुड़ी सूचनाएँ और प्रमाण संग्रहित किए जा सकते हैं। ध्यान यह रखना है कि इन सूचनाओं के आधार पर हम प्रत्येक बच्चे की प्रगति की तुलना उसकी अपनी पिछली स्थिति से करेंगे, दूसरे बच्चों की प्रगति से नहीं। इनका इस्तेमाल बच्चों के अधिगम और निष्पादन को उन्नत करने के लिए करेंगे न कि निर्णयात्मक टिप्पणी देने के लिए कि अमुक बच्ची पढ़ने में तेज़ है और अमुक कमजोर या असफल। ये सूचनाएँ हमें अपनी शिक्षण विधियों, सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं को उन्नत करने में भी मददगार होंगी। इन सूचनाओं को दूसरे साथी शिक्षकों तथा अभिभावकों से साँझा करना भी जरूरी होगा। आकलन संबंधी पृष्ठपोषण बच्चों को भी देना बहुत जरूरी है। बच्चों को यह आभास होता रहे कि अधिगम प्रक्रिया के कौन-से हिस्से पर वे अभी हैं और किन क्षेत्रों में अधिक ध्यान देने की ज़रूरत है।

पढ़ने की उत्सुकता

‘पढ़ने’ का आकलन करने से जुड़े बहुत से मुद्दों की बात की गई। चलते-चलते एक और बात। वह यह कि पठन कौशल को अगर वास्तव में ‘निपुणता’ के स्तर पर लाना है तो पढ़ने का माहौल तो बनाना ही होगा। कक्षा में, कक्षा के बाहर, यहाँ तक कि अभिभावकों से संवाद स्थापित कर उनके घर में भी अपेक्षित माहौल बनाया जा सकता है। यह माहौल बनेगा रुचिकर पठन सामग्री की उपलब्धता से। आपने जरूर गौर किया होगा कि उन बच्चों पर जिन्होंने अभी-अभी पढ़ना सीखा है, कोई भी कागज़ उनके हाथ लगता है जिस पर कुछ लिखा या छपा हो चाहे वह कोई लिफाफा हो या चने-मूँगफली को लपेटे कोई पुराना सा कागज़, वे उसे उलट-पुलट कर पढ़ते ज़रूर हैं। सड़कों के किनारे लगे इशतहार पर भी उनकी नज़रें घूमती रहती हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि वे पढ़ने के लिए उत्सुक हैं। इस उत्सुकता को बरकरार रखना या खत्म कर देना, दोनों बहुत कुछ हमारे हाथ में है।

अभ्यास

- इस लेख में “चित्र पठन” पर जिस तरह से काम हुआ है, ऐसा ही काम आप कहानी या कविता के साथ करें और अपने अनुभवों को लिखें।

अध्याय — 19

पढ़ाई पहली कक्षा की

पाठ की रूपरेखा

- परिचय
- उद्देश्य

परिचय :

आमतौर पर सरकारी स्कूलों में बच्चों पर कई लेबल चिपका दिए जाते हैं। लेकिन यदि हमें इन बच्चों को पढ़ाना हो तो क्या हमें इन मान्यताओं की जाँच करनी चाहिए या उसी में ढल जाना चाहिए। पहली कक्षा में पढ़ना लिखना सिखाने के लिए बच्चों के संबंध में बनी मान्यताओं को लेखक ने तोड़ा है। कई सारी गतिविधियों के माध्यम से पढ़ना लिखना बच्चों के लिए रोचक बनाया है। इस पाठ में हम इन गतिविधियों के माध्यम से पढ़ना लिखना सिखाने के बारे में पढ़ेंगे जो बच्चों के लिए सार्थक है।

उद्देश्य :

- बच्चों के बारे में अपनी मान्यताओं को बदल सकना।
- बच्चों की पसंद के आधार पर शिक्षण कर सकना।
- पहली कक्षा में शिक्षण का उद्देश्य जान सकना।
- पढ़ना लिखना सिखाने के लिए ऐसी गतिविधियाँ सोचना और खोजना जो बच्चों के लिए आनंददायी तथा सार्थक हों।
- बच्चों को अभिव्यक्ति के मौके देने के लिए उपयुक्त माहौल का निर्माण कर सकना।
- जवाब पता नहीं होने पर बच्चों की मदद करना ताकि पढ़ना लिखना सिखाने में उनकी रुचि बढ़ सके।

जब मुझे पहली कक्षा के बच्चों को पढ़ाने का अवसर मिला तो मुझे विशेष प्रसन्नता का एहसास हुआ। वर्षों से मैं सरकारी स्कूलों के बच्चों को विभिन्न 'लेबलों' में बाँटे जाने की प्रवृत्ति का सामना करता रहा हूँ। "सरकारी स्कूलों में तो ऐसे ही बच्चे आते हैं", "इन्हें पढ़ना सिखाना तो लोहे के चने चबाना है", "साल भर इन्हें क ख ग घ ही आ जाए, यही गनीमत है" इस तरह के जुमले कई बार मैं सुन चुका था। मुझे पहली कक्षा को पढ़ाना इन्हीं मायनों में चुनौतीपूर्ण भी लगा।

मैंने सोचना-विचारना शुरू किया कि पहली कक्षा को पढ़ना-लिखना कैसे सिखाया जाना चाहिए। सदियों पुराना जाना-पहचाना रास्ता मेरे सामने था। मैंने भी शायद इसी तरीके से

पढ़ना—लिखना सीखा था। पहले वर्णमाला, फिर बारहखड़ी, बिना मात्राओं वाले शब्द, मात्रा सहित शब्द, और ढेर सारा अभ्यास। पर मुझे एहसास था कि यह रास्ता बच्चों के लिए बहुत नीरस और कठिन रहेगा।

केवल पढ़ना—लिखना सिखा देना पहली कक्षा के शिक्षण का उद्देश्य नहीं हो सकता। पहली कक्षा तो बच्चे के स्कूली जीवन की बुनियाद है। यहीं से बच्चे स्कूली पढ़ाई तथा अनुभवों के बारे में अपनी पसंद या राय बनाते हैं। यदि कोई काम बच्चों की पसंद या उनके लिए महत्वपूर्ण नहीं है, तो वह निरर्थक है। बस, मुझे समझ में आ गया कि मुझे कैसे आगे बढ़ना है। मुझे वे गतिविधियाँ या काम सोचने या खोजने होंगे जो मेरे लिए ही नहीं, बच्चों के लिए भी आनंददायक तथा सार्थक हों, तभी बच्चों की जिज्ञासा को संतुष्ट किया जा सकेगा।

अभ्यास

-
- आप कक्षा में पहली बार गए तो आपने क्या महसूस किया? विस्तारपूर्वक लिखें।
 - केवल पढ़ना लिखना सिखा देना ही पहली कक्षा का शिक्षण उद्देश्य नहीं हो सकता है बल्कि बच्चों की पसंद उनके अनुभव के आधार पर स्कूल की पढ़ाई हो तो बच्चे नवीन गतिविधियों से ज्यादा आनन्दपूर्वक पढ़ना सीख सकते हैं इसका विश्लेषण करें?
-

आखिर वह दिन आ पहुँचा जब मुझे पहली कक्षा के बच्चों से रू—ब—रू होने का सौभाग्य मिला। कुछ बच्चे उदासीन से लगे। कुछ उत्सुकता से मेरी ओर देख रहे थे। कुछ की आँखों में डर भी रहा होगा शायद। मैंने बच्चों से बातचीत शुरू की। अपना परिचय दिया, बच्चों से परिचय लिया। धीरे—धीरे बातचीत को उनकी पसंद/नापसंद की ओर मोड़ दिया। अवसर मिलते ही एक सवाल मैंने हवा में छोड़ दिया, “अच्छा ये तो बताओ, खाने में कौन—सा फल सबसे अच्छा लगता है?”

तुरन्त जवाबों की रिमझिम होने लगी। “आम, केला, अमरुद, सेब,” आदि। कुछ ने हलवा, आइसक्रीम आदि का नाम भी लिया। जो बच्चे चुप थे, उनसे मैंने स्वयं पूछ लिया। आखिरकार यह बात उभरकर आई कि ‘आम’ सबसे अधिक बच्चों को अच्छा लगता है। मैंने सुझाव दिया, “चलो, आम का चित्र बनाते हैं।” जब मैंने ब्लैकबोर्ड पर आम बनाने का प्रस्ताव रखा तो कुछ बच्चे तुरन्त तैयार हो गए। ब्लैकबोर्ड पर तरह—तरह के आम बन गए। फिर मैंने अगला सुझाव दिया, “जब आप सब लोग आम बना लो, तो आम के नीचे उसका नाम भी लिख देना।”

“हमें तो लिखना नहीं आता,” एक—दो बच्चों ने बताया। “कोई बात नहीं। मैं बता देता हूँ,” यह कहकर मैंने ब्लैकबोर्ड पर बने आमों के नीचे ‘आम’ लिखा और कहा कि ब्लैकबोर्ड पर से देखकर आम का नाम लिखा जा सकता है। सभी बच्चों के चेहरों का तनाव गायब हो गया।

मेरा उद्देश्य केवल ‘आम’ शब्द लिखवाना नहीं था। इस काम से यह अपेक्षा बिलकुल नहीं थी कि बच्चे बिलकुल सुडौल अक्षरों में सही—सही ‘आम’ लिख देंगे। पर इसके पीछे मेरी मंशा यह थी कि बच्चों को इस बात का एहसास हो कि लिखे हुए शब्द का एक अर्थ होता है और बोले जाने वाले तथा लिखे जाने वाले ‘चित्र’ में कुछ संबंध होता है। जो शब्द या चित्र बच्चा पहली बार लिखे या बनाए, वह बच्चों की पसंद का हो, उनके लिए उसका अस्तित्व तथा महत्व हो।

जब बच्चे चित्र बनाकर मुझे दिखाने लगे, तो मैंने उनके सामने एक ‘जटिल’ समस्या रख दी।

“मुझे तुम्हारा नाम तो पता ही नहीं है। तुम जब अपना—अपना चित्र मुझे दिखाओगे, तो मुझे कैसे पता चलेगा कि यह किसका चित्र है? ऐसा करो, अपने चित्र के ऊपर अपना नाम भी लिख दो।”

दो-चार बच्चों को अपना नाम लिखना आता था, वे तुरन्त खुश हो गए, उन्हें समस्या का बड़ा आसान हल मिल गया था। पर कुछ बच्चों ने कह दिया “मुझे अपना नाम लिखना नहीं आता” जो बच्चे चुपचाप बैठे थे, संभवतः उन्हें भी अपना नाम लिखना नहीं आता था। मैंने तुरन्त आश्वासन दिया, “कोई बात नहीं, जिन बच्चों को अपना नाम लिखना नहीं आता, उनके चित्र पर उनका नाम मैं लिख दूँगा, पर देखो, अगली बार मैं नाम नहीं लिखूँगा। अपना नाम याद कर लेना।”

इस तरह मैंने लगभग सभी बच्चों को उनके नाम लिखकर दे दिए। बच्चे खुश थे और एक-दूसरे को अपने-अपने चित्र और नाम दिखा रहे थे। मैंने उनके सामने जो समस्या रखी थी, वह शायद बड़ों के लिए बहुत हलकी या छोटी समस्या हो—“मुझे कैसे पता चलेगा कि यह चित्र किसने बनाया है?” पर बच्चों के लिए यह एक गंभीर और वास्तविक समस्या थी। अतः उसका हल खोजने में उनकी दिलचस्पी भी गंभीर थी। इस बात के दो प्रमाण मुझे बाद में देखने को मिले। पहला, अगले दिन जब मैंने यहीं गतिविधि फिर करवाई तो मुझे केवल तीन-चार बच्चों के नाम उनके चित्र पर लिखने पड़े। अधिकतर बच्चों ने अपने नाम याद कर लिए थे। जिन बच्चों ने याद नहीं किए थे, उन्होंने पिछले चित्र से देखकर अपना नाम लिख लिया था अर्थात् उन्हें अपने नाम के अस्तित्व तथा उसे उचित रूप से इस्तेमाल करने की समझ थी।

दूसरा प्रमाण मुझे काफी समय बाद तक मिलता रहा। कई बच्चे बाद में अनेक महीनों तक जब भी कुछ लिखते या चित्र बनाते, उस पर अपना नाम लिख देते ताकि मुझे पता चल जाए कि वह कार्य किसने किया है। अंत में मुझे कहना पड़ा “अब तो मुझे तुम सबके नाम याद हो गए हैं। अब तुम्हें हर बार अपना नाम लिखने की जरूरत नहीं है।”

अभ्यास

- विद्यालय में अपने द्वारा की गई कोई ऐसी गतिविधि बताएँ जिससे बच्चों की पढ़ने की इच्छा बलवती हुई हो?

इन सब गतिविधियों और समस्या-समाधानों के द्वारा अनेक उद्देश्य पूरे हुए परन्तु सबसे बड़ा लाभ मुझे अगले चरण की गतिविधि में हुआ। उसमें इस बात की आवश्यकता थी कि प्रत्येक बच्चे को उसका नाम लिखना आता हो। मैंने उस गतिविधि का नाम रखा, “आज का राजा या रानी।” इस दौरान मैंने बच्चों को रोज़ कहानी सुनाना, नए-नए खेल खिलवाना भी जारी रखा। हर रोज़ बच्चे नए-नए शब्दों का इस्तेमाल करते, नए शब्द गढ़ते, खोजते और लिखते।

एक दिन मैंने एक मजेदार खेल खेलने का प्रस्ताव रखा। उस खेल का नाम बता दिया। हर बच्चे को एक-एक पर्ची दे दी गई। मैंने बताया, “इस पर्ची पर हर बच्चे को अपना-अपना नाम लिखना है।” नाम लिखने के बाद एक बच्चे ने सबकी पर्चियाँ एक थैली में इकट्ठी कर लीं। इसके बाद सबकी सहमति के बाद कक्षा की सबसे छोटी लड़की से एक पर्ची का चुनाव करवाया गया। मैंने पर्ची पर लिखा नाम पढ़ा और उसे “आज का राजा” घोषित कर दिया। ब्लैकबोर्ड पर उसका नाम लिख दिया और पढ़ दिया। उस बच्चे को आमंत्रित किया गया और सबके सामने उसे कुर्सी पर बैठने को कहा गया। उसके सिर पर कागज़ का बना मुकुट भी रख दिया गया। मैंने सबको बताया, “सुमित जी आज हमारी कक्षा के राजा हैं। तुम सुमित जी से कोई भी सवाल पूछ सकते हो। शिकायत कर सकते हो। सुमित जी उसका जवाब देंगे।” मैंने यह भी स्पष्ट कर दिया कि यदि किसी सवाल का जवाब मालूम न हो तो राजा कह सकते हैं, “मुझे नहीं पता।”

सब बहुत उत्साहित थे। शुरु में तो राजा जी कुछ शर्माए पर बाद में बहुत तत्परता से सवालों के जवाब देने लगे। कुछ सवाल और शिकायतें मैंने भी कीं। बीच-बीच में ब्लैकबोर्ड पर लिखे नाम की ओर भी मैं सबका ध्यान आकर्षित करता रहा। सबको बहुत मज़ा आया।

अब तो रोज़ कोई न कोई बच्चा “आज का राजा” या “रानी” बनता। मैं ब्लैकबोर्ड पर उनके नाम लिखता। साथ-साथ पिछले “राजा” या “रानियों” के नाम भी लिखता। कुछ हफ्तों के बाद मैंने इस गतिविधि को कुछ विस्तार देने का प्रयास किया। मैंने कुछ ‘राजा-रानियों’ के नाम ब्लैकबोर्ड पर लिख दिए जिनमें ‘स’ वर्ण स्वाभाविक रूप से आ रहा था। सुरेश, सुमित, संतोष, असलम, मानसी आदि मैंने उन सब नामों को पढ़ा। जिन बच्चों के नाम ब्लैकबोर्ड पर लिखे थे, उन्हें आमंत्रित किया कि वे सब बच्चों को दिखाएँ कि उनका नाम कहाँ लिखा है। इसके बाद अन्य बच्चों को मौका दिया कि वे बताएँ कि उनके मित्र या सहेली का नाम कहाँ लिखा है। उद्देश्य यह था कि सब बच्चों को उनके या उनके मित्र के नामों की पहचान हो जाए।

इसके बाद मैंने उस ध्वनि की ओर बच्चों का ध्यान आकर्षित किया जो सभी नामों में मौजूद थी। मैंने शुरुआत इस तरह की थी। “कौन सी चीज़ इन सब नामों में एक जैसी है?” कई जवाब आए पर अंत में हम ‘स’ पर पहुँच ही गए। फिर मैंने ‘स’ से शुरु होने वाली व ‘स’ अक्षर वाली अन्य चीज़ों के नामों की ओर बच्चों का ध्यान आकर्षित करवाया और जैसे-जैसे वे नाम लेते गए, मैं ब्लैकबोर्ड पर लिखता गया—पेंसिल, बस, सड़क, स्कूल, सब्जी और भी न जाने क्या-क्या।

अभ्यास

- स, प, ब, ह, ल से शुरु होने वाले 5 शब्दों के नाम लिखो।
- पहली कक्षा के बच्चों को नाम लिखने की कला का ज्ञान जल्दी एवं आनन्ददायी विधि से कैसे हो सकता है?

मेरा उद्देश्य था सार्थक संदर्भों द्वारा बच्चों को उनके परिचित व्यक्तियों और वस्तुओं के नामों से परिचित करवाना। कुछ समय ध्वनियों की पहचान में भी लगाया। अब यह हमारा नियमित कार्यक्रम हो गया। कुछ ही समय में बच्चों का शब्द भंडार आश्चर्यजनक रूप से बढ़ गया। अनेक अक्षरों की पहचान और उनके सार्थक उपयोग की क्षमता भी लगभग सभी बच्चों में उपस्थित थी। इस कार्य में पाठ्यपुस्तक में मौजूद रोचक तथा बालसुलभ कविताओं ने मेरी बहुत मदद की। हम सब मिलकर कविताएँ गाते। मैं बच्चों से उनकी राय पूछता। जो कविता बच्चों को बहुत अच्छी लगती, बच्चे बार-बार उसे गाना चाहते। एक बार गा लेने भर से उनका मन नहीं भरता, वे कह उठते “सर, एक बार और।” कुछ बच्चे कविता गाते-गाते अपने को रोक न पाते और खड़े होकर कविता के हिसाब से अभिनय तक करने लगते। कई बार मैं मजे-मजे में सुझाव देता, “मैं कविता की एक पंक्ति बोलूँगा, तुम दूसरी बोलना।” मैं बाद में क्रम उलट देता, “पहली पंक्ति तुम बोलो, दूसरी मैं बोलूँगा।” कभी-कभी बच्चे कविता की एक पंक्ति बोलते, मैं उनके पीछे-पीछे दुहराता।

मैं आज भी यही करता हूँ। बच्चों को बहुत आनंद आता है जब उनके ‘सर’ उनके पीछे-पीछे कविता दोहराते हैं। कविता उन्हें स्वतः याद हो जाती है। यह सब कार्य उनके लिए सार्थक बन जाता है। उनके अंदर नया उत्साह तथा आत्मविश्वास जाग्रत हो जाता है कि वे बड़ों का ‘मार्गदर्शन’ करने में समर्थ हैं। इससे पता चलता है कि ज़रा-सी सूझ से किस प्रकार एक नीरस काम सरस बन जाता है। कविता अनेक बार गाने के बाद हम जब उसको “पढ़ते” तो यह काम लगभग सभी बच्चों के बाएँ हाथ का खेल बन चुका होता था। कई बच्चे स्वयं पुस्तक खोलकर अपने साथी को ‘पढ़ाते’ दिखाई पड़ते : “देख, यहाँ लिखी है यह कविता...” वे अँगुली रखकर अपने साथी को बताते। कई बार कुछ समझ न आने पर या भूल जाने पर पंक्ति को अपने मन से शब्द जोड़कर पूरा कर देते, ठीक उसी तरह जिस तरह हम कोई गाना भूल जाने पर अपने मन से शब्द जोड़कर गाना पूरा कर लेते हैं। मैंने गौर किया, यह बदलाव हमेशा ठीक-ठीक या सटीक होता। उदाहरण के लिए, एक बार एक बच्चा अपने साथी को कविता दिखा रहा था,

“पत्ता बोले खड़-खड़-खड़।

कहें पटाखे भड़-भड़-भड़।

छुर-छुर-छुर बोलें – फुलझड़ियाँ।

रॉकेट बोले – तड़-तड़-तड़

बच्चे ने पूरी कविता अपने आप-अपने साथी को पढ़कर बताई और फुलझड़ियाँ की जगह “छुरछुरियाँ” बदल दिया। स्वाभाविक-सी बात है कि उसके परिवेश या घर में फुलझड़ी को छुरछुरी बोलते होंगे। मैं चुपचाप यह सब देख रहा था। मैंने उसे टोकने या ‘ठीक करने’ की जरूरत महसूस ही नहीं की क्योंकि उसने कोई गलती की ही नहीं थी। बल्कि मुझे अवसर मिला एक नया शब्द और संदर्भ अगली गतिविधि के लिए। हमने अगली गतिविधि में “छुरछुरी” शब्द के बारे में ही बातचीत की।

अभ्यास

- पहली कक्षा के बच्चों की पढ़ाई को आनन्ददायी बनाने के लिए अपनी तरफ से एक गतिविधि सोचकर बनाइए।
 - यदि कक्षा में बच्चे गीत, कविता आदि बोलते समय आम बोलचाल के शब्दों का काफी इस्तेमाल करते हैं तो उस समय आपकी रणनीति उन्हें मना करने की होगी या ज्यादा-से-ज्यादा आम बोलचाल के शब्दों के इस्तेमाल की छूट देने वाली होगी? अपने विचार कारण सहित लिखिए।
 - बच्चा जब पहली बार विद्यालय आता है तब वह घर से क्या-क्या सीखकर आता है, सूची बनाएँ।
-

पढ़ना सिखाना

पाठ की रूपरेखा

- परिचय
- उद्देश्य
- शीर्षक व उपशीर्षक
 - शुरुआती तरीके
 - महत्वपूर्ण योगदान व कार्य
 - शब्द पहचान
 - वर्ण आधारित शिक्षण का सिद्धान्त
 - पढ़कर समझना
 - आगे की दिशा

परिचय :

अलग-अलग समय में पढ़ना सिखाने के अलग-अलग तरीकों को काम में लिया जा रहा है। सर्वप्रथम पढ़ना सिखाने में वर्ण विधि का प्रचलन रहा है इस विधि में सारे अक्षरों को सिखाया जाता है, उनकी सही ध्वनियाँ बिना मात्रा व मात्रा वाले शब्दों से पढ़ना सिखाया जाता है। इसके बाद शब्द विधि व अन्त में वाक्य विधि से पढ़ना सिखाने का काम शुरू हुआ। सिखाने का क्या मतलब है अभी वर्तमान में समझ के साथ सन्दर्भ में पढ़ने या फिर अर्थ ग्रहण करने के लिए पढ़ना सिखाने पर ज्यादा जोर है। इस लेख में हम अलग-अलग समय पर पढ़ना सिखाने की किन-किन विधियाँ और तरीकों को काम में लिया जाता रहा है उनमें कौन सी बच्चों के लिए कारगर हैं और कौन सा नहीं यह समझने का प्रयास करेंगे।

उद्देश्य :

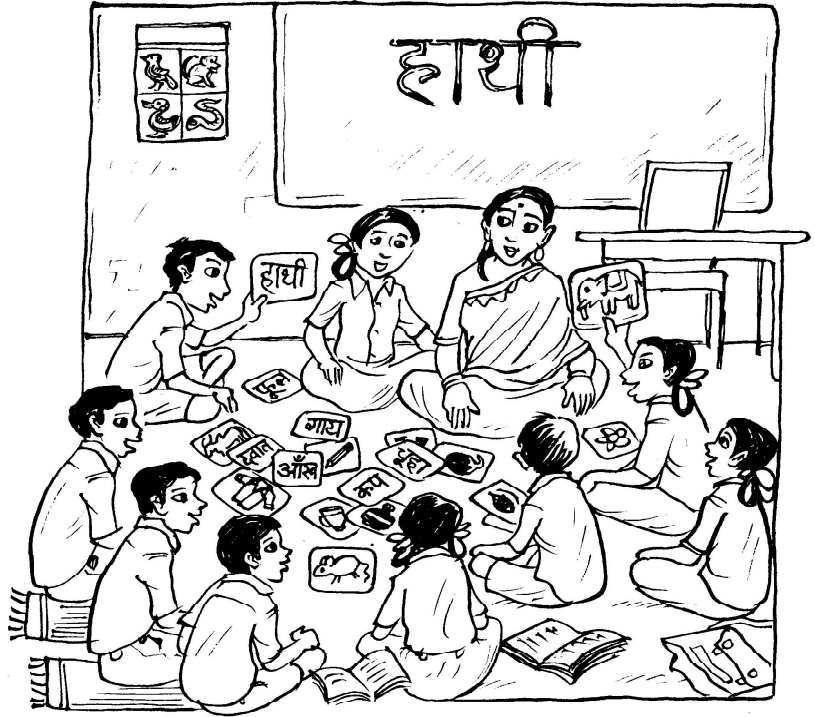
- शिक्षक यह समझ पाएँगे कि पढ़ना सिखाने की कोई एक विधि नहीं होती है।
- शिक्षक यह समझ पाएँगे कि पढ़ना सिखाने में साहित्यिक संदर्भों (कहानी, कविता, गीत, इत्यादि) की क्या भूमिका होती है।
- शिक्षक यह समझ पाएँगे कि पढ़ना यानी समझ के साथ पढ़ना या अर्थ ग्रहण के लिए होता है।

पढ़ाने के दो प्रमुख पहलू होते हैं— प्रेरणा वाला और जानकारी वाला। प्रेरणा वाला पहलू सीखने वाले में सुरक्षा की भावना व सीखने की प्रतिबद्धता से जुड़ा है। जानकारी का पहलू सीखने वाले के ज्ञान व कौशल से। इस लेख में हम चुने हुए शोधों पर ऐतिहासिक और अंतरराष्ट्रीय नज़रिया प्रस्तुत करेंगे। जोर शुरुआती समय में पढ़ने में सामान्य प्रगति और बच्चों को पढ़ने में आने वाली दिक्कतों पर है।

शुरुआती तरीके

बहुत पहले से अक्षरों से शुरु करके पढ़ाने वाला तरीका ही उपयोग में आता रहा है। लगभग 3000 वर्ष से लगभग पिछली शताब्दी तक यही तरीका उपयोग होता था। इस तरीके में अक्षर माला के एक-एक अक्षर पहले बच्चे को सिखाए जाते थे – फिर दो अक्षर वाले ध्वनि टुकड़े (Syllable जैसे ab, ed, ib, ob, ub, ba, be, bi, bo, bu ac)। पहले हर अक्षर ध्वनि को अलग-अलग बोलते थे और फिर ध्वनि टुकड़े को। धीरे-धीरे बच्चा इसी तरीके से छोटे-छोटे शब्दों तक पहुँचता था, और फिर छोटे-छोटे पाठों तक जो उस समय के शिक्षा के उद्देश्यों के अनुसार चुने जाते थे। जैसे भगवान की प्रार्थना या कैसे व्यवहार करें। अगर बच्चे शब्द नहीं जानते थे तो वह पहले अक्षर-अक्षरों को जोर से बोलते थे और फिर पूरा शब्द बोलने का, प्रयास करते थे। (Daries, 1973)

19 वीं शताब्दी के दूसरे हिस्से तक आते-आते वर्ण आधारित पद्धति अपना दबदबा दिखाने लगी थी (Smith, 1965)। उस शताब्दी के आखिरी दशक में न्यूजीलैंड में, एक देश जो कि पढ़े-लिखे समाज के केन्द्र से दूर था, पढ़ाने के एक तरीके पर एक किताब छपी (फर्नी 1895)। इस किताब में वर्ण से पढ़ाने के तरीके के तीन विकल्प दिए गए थे। पहला: ध्वनि आधारित (phonic) तरीका था, जिसमें बच्चों को हर अक्षर के लिए सबसे ज्यादा उपयोग होने वाली ध्वनि सिखाई जाती थी, जैसे /b...../for b। अगर उनको कोई लिखा हुआ शब्द नहीं आता था तो उन्हें हर अन्तर की ध्वनि क्रम से उच्चारित करने को कहा जाता था और फिर यह देखना होता था कि इन ध्वनियों को जोड़कर कौन से पहचाने हुए शब्द के करीब की आवाज़ बनती है। दूसरा बताया गया तरीका : देखो और बोलो का तरीका था। इसमें बच्चों को शब्द को पूरा देखना होता था और उससे क्या दिखा यह बताना होता था और उसमें शामिल अक्षरों को नहीं पहचानना होता था। तीसरा विकल्प : जो फर्नी शिक्षकों को इस्तेमाल करने को प्रोत्साहित करता था, वह इन तीनों तरीकों के सबसे अच्छे बिन्दुओं को एक साथ इस्तेमाल करने का था। इसमें वर्ण पहले सिखाए जाते थे, फिर देखो और बताओ और फिर ध्वनि व अक्षरों को सिखाना (phonic) जब जरूरी लगे (फर्नी 1895)।



19 वीं शताब्दी से ज्यादा विश्लेषण वाले ध्वनि आधारित तरीकों और ज्यादा सम्पूर्णता वाले 'देखो और बोलो' तरीकों के महत्त्व के बीच काफी अदला बदली हुई है। 16 वीं शताब्दी में इकेलस्मार ने जर्मन भाषा पढ़ना सिखाने के लिए ध्वनि आधारित तरीके को वर्ण आधारित तरीके से ज्यादा स्वाभाविक बताया और हार्ट ने इसे अंग्रेजी पढ़ना सीखने के लिए ज्यादा उपयुक्त बताया। लेकिन ध्वनि आधारित तरीके 19 वीं शताब्दी तक ज्यादा व्यापक रूप से नहीं उपयोग हुए। ऐसी ही बात 'देखो और कहो' तरीके के साथ भी थी जिसकी जर्मनी में सत्रहवीं

शताब्दी की शुरुआत में ल्यूबिनस ने वकालत की और बाद में कोमिनस ने उपयोग किया (डेविस 1973, हलाडकजुक व एलर 1992 चैप्टर 24)।

19 वीं शताब्दी के बाद के हिस्से में अमेरिका में वाक्य पढ़ने का तरीका, जो कि 'देखो और बोलो' से भी ज्यादा व्यापक था (व्यापक याने जिसमें बड़ी इकाई को पहचानने का प्रयास हो) की वकालत की गई। इसके पीछे तर्क यह था कि भाषा ऐसी पूरी इकाइयों में पहचानी जाती है जो पूरे विचार को व्यक्त करे। इसलिए पढ़ना सिखाने की शुरुआत सार्थक सम्पूर्ण इकाइयों से की गई और ये इकाइयाँ न तो वर्ण हैं और न ही शब्द बल्कि वाक्य हैं।

महत्वपूर्ण योगदान व कार्य

साक्षरता गतिविधियों के जुड़ने से, उन्नीसवीं शताब्दी के अंत से लेकर 1920 तक 'कहानी का तरीका' काफी लोकप्रिय हुआ। यह अमेरिका के वाक्य तरीके से भी ज्यादा व्यापक था। बच्चा पढ़ना सीखने की शुरुआत अच्छे साहित्य से ली गई पूरी कहानियों से करता था और उसी छपी सामग्री को पढ़ने का प्रयास करता था, जिसके मौखिक रूप से वह परिचित होता था (स्मिथ 1965)। 1960 और 1970 के दशकों में भाषायी अनुभव विधि का कई अंग्रेजी बोलने वाले देशों में प्रभाव था। इसमें पढ़ने को उन भाषायी क्षमताओं को आगे बढ़ाना माना (समझा) था जो बच्चा हासिल कर चुका था। पढ़ाने में जोर पढ़ने को सार्थक संप्रेषण का माध्यम समझने पर था।

आजकल का पूर्ण भाषा तरीका कुछ हद तक भाषा अनुभव तरीके से विकसित हुआ है। सम्पूर्ण भाषायी तरीके में जिन साहित्यिक गतिविधियों में बच्चे शामिल होते हैं, उनकी सम्पूर्णता व अखंडता के साथ-साथ सार्थक संप्रेषण पर ज्यादा जोर है। सिखाने के लिए शुरुआती पठन सामग्री में भी अच्छे साहित्य के उपयोग को प्रोत्साहित किया गया है (गोल्डमैन 1989)। इस विधि में अच्छे साहित्य पर इतना जोर है कि 'पूर्ण साहित्य' कहना इस पद्धति के लिए ज्यादा उपयुक्त नाम होगा। इस तरीके के कई स्वरूप इंग्लैण्ड, अमेरिका, कनाडा और न्यूजीलैंड में उपयोगी माने जाते हैं (हलादकजुक व एलर 1992)। अमेरिका के परिप्रेक्ष्य से हेरिस (1993) ने उन मुद्दों का परीक्षण किया है, जो पढ़ना सिखाने की साहित्य-आधारित पद्धतियों में उठते हैं। स्थाल और मिलर (1989) ने अमेरिका में हुए बहुत से अध्ययनों का विश्लेषण किया जिनमें पढ़ना सीखने में अलग-अलग तरीकों से हासिल क्षमता का अध्ययन हुआ था। इसमें भाषायी अनुभव और सम्पूर्ण भाषा कार्यक्रमों की तुलना, बेसल पढ़ने के कार्यक्रमों से की गई। इन बेसल कार्यक्रमों में अच्छे साहित्य का उपयोग कम प्रतीत होता है और इनमें पठन सामग्री क्रम में व्यवस्थित करके बनाई जाती है, और पढ़ाने के तरीके भी टुकड़े-टुकड़े का विश्लेषण करके बने हैं। इनमें ध्वनि या एक-एक शब्द लेकर पाठ शामिल हैं। इसमें सबसे रोचक बात यह थी कि ज्यादा ध्यान से किए गए अध्ययनों में किसी भी तरीके के पक्ष में निष्कर्ष नहीं दिखा। किन्तु इन अध्ययनों में पाठक की पाठ सामग्री की आलोचना व मूल्यांकन और साहित्य को कला के रूप में देख पाने की क्षमता का आकलन शामिल नहीं था।

एक प्रमुख मसला यह भी है कि क्या प्राथमिक शाला के बच्चे अपने द्वारा पठित सामग्री के बारे में अपनी राय को प्रमाणित करने के लिए पढ़ने के अनुभवों के संदर्भ में कुछ कसौटियाँ विकसित कर पाएँगे? क्या उनमें अपने पढ़ने के अनुभव को निरपेक्ष ढंग से (objectify) आकलन करने की क्षमता है, और क्या वे अपने अनुभव के बारे में अलग-अलग नजरिये स्वीकार कर सकते हैं? पिनसेन्ट ने अपने पठन अनुभव के बारे में बच्चों की राय पर हुए शोध का विश्लेषण किया है। इसमें पठित सामग्री के नजरिये, लेखक और अन्य पाठकों के नजरिये शामिल किए गए थे। अवलोकन ये दिखाते हैं कि 10 साल की उम्र से बच्चे साहित्यिक सामग्री का आकलन करने लग सकते हैं। इस उम्र से ही उन्हें ऐसे शिक्षण से फायदा होगा जो साहित्य को कला के रूप में स्पष्ट रूप से देखे और उसके उस दृष्टि से आकलन की अपेक्षा रखे व बच्चों को इस बारे में अपना मत विकसित करने में मदद करे।

शब्द पहचान

बीसवीं शताब्दी में बच्चों में शब्द पहचानने की क्षमता लाने की दोनों पद्धतियों यथा टुकड़ों को अलग पहचान कर (विश्लेषण तथा analytic method) और सम्पूर्ण के साथ अंतःक्रिया कर (global method), के बीच बहस लगातार हो रही है। बहस का यह मुद्दा सभी लिपि — ध्वनि तंत्रों चाहे वह काफी अधिक सामान्य व व्यवस्थित (सर्वा-करोशियन और हॉगुल दक्षिण कोरिया) का हो, चाहे वह लगभग सामान्य व व्यवस्थित जर्मन हो या रूसी लिपि का हो या फिर अंग्रेजी का जिसमें अक्षरों व ध्वनि इकाइयों के संबंध काफी जटिल हैं। यह मुद्दा चीनी भाषा पढ़ना सिखाने के संदर्भ में उठता रहा है कि क्या हम पढ़ना सिखाने में विश्लेषणात्मक पद्धति अपनाएँ जिसमें संकेतों को जैसे वे दिखते हैं उसके आधार पर इकट्ठे रखकर सिखाया जाएगा या फिर संपूर्णता व अर्थ पद्धति अपनाएँ जिनमें संकेतों को सार्थक भाषायी संदर्भों जैसे लिखित कहानी के संदर्भ में ही पढ़ाया जाएगा। (हलादक्जुक व ऐलर, 1992 अध्याय 4)।

बच्चों को लिखित सामग्री पढ़ना सिखाने के कई वैकल्पिक ध्वनि तरीके सोचे गए हैं। 1920 तक आते-आते अमरीका में लिखित अक्षर व उनकी आवाज़ के संबंध को अलग-अलग शब्दों में आए उसी अक्षर व उसकी ध्वनि की तरफ ध्यान दिला कर सिखाया जाता था।

उदाहरण के लिए शब्दों सन, सॉ, सैट के लिखित रूप sun, saw, sat प्रस्तुत किए जाते थे और शिक्षक इन्हें ऐसे उच्चारित करता था, जिसमें शुरुआती 'स' की आवाज़ लम्बी हो। साथ-साथ ऐसे वर्तनी क्रम (पैटर्न) जो एक संपूर्ण ध्वनि टुकड़े (phoneme) से ज़्यादा बड़े थे का भी उपयोग किया जाने लगा था। शिक्षक 'एट' (at) जैसे ध्वनि समूह (phonogram) प्रस्तुत करते थे और बताते थे कि और अक्षर जोड़ने से यह कैसे सैट, बैट, फैट (sat, bat, fat) बन जाता है। ध्वन्यात्मक विश्लेषण (analytical phonics) के इस तरीके का अध्ययन गेट्स (Gates, 1928) के अध्ययनों में किया गया है।

पढ़ना सीख पाने की दर के संदर्भ में ऐसे शिक्षण कार्यक्रमों (जिनमें ध्वनि विश्लेषण पर जोर है) की तुलना ऐसे संपूर्ण भाषायी कार्यक्रमों, जिनमें ऐसा जोर नहीं है या बहुत कम है से की जाती रही है (जैसे फुरमैन, फ्रांसिस, नोवी और लिबरमेन, 1991)। दिक्कत यह है कि यह सब अध्ययन सभी कारकों (variable), जिनका अगर कक्षा व सीखने पर पड़ सकता है उनका ध्यान नहीं रख पाते जिससे निष्कर्ष अस्पष्ट हो जाते हैं। इसमें यह स्पष्ट नहीं है कि इन कारकों का असर होगा या नहीं। फिर भी असर नहीं होगा यह स्पष्टता न होने से भ्रम की स्थिति बनती है। इन कारकों में अलग-अलग कार्यक्रमों में लिखित शब्दों की अलग-अलग शब्दावलियों का उपयोग, उनकी बच्चों के सामने रखने की दर शिक्षकों में अंतर का प्रभाव, पढ़ाने के समय में अंतर और पढ़ने वालों के शुरुआती स्तर में पृष्ठभूमि आदि में अंतर शामिल हैं।

हाल के कुछ अध्ययन सीखने का स्तर छोड़कर इस बात को जानने की कोशिश करते हैं कि अगर हम ऐसे बच्चे ले लें जो अलग-अलग कार्यक्रमों में होने के बावजूद स्तर हासिल कर पाए हैं तो क्या उनके सीखने की प्रक्रिया अथवा तरीके में कोई फर्क है? (जोनसन, थोम्पसन, लेचर-सिन्न और हौलिग्न 1995, थोम्पसन, समर और निकोलसन, 1993)। उदाहरण के लिए कौनोली, जोहस्टन व कोम्पसन ने पाया कि 5-6 साल के बच्चे जिन्हें ध्वनि आधारित तरीके को कहानी पढ़ने के साथ जोड़कर सिखाया गया था, की तुलना जब सम्पूर्ण भाषा कार्यक्रम के बच्चों से की गई तो ध्वनि आधारित पद्धति वाले बच्चे नए किन्तु सामान्य नियमों का पालन करने वाले शब्दों और ऐसे संकेतों (blum), जिन्हें नकली शब्द कहा जा सकता है, को पढ़ पाते थे किन्तु असामान्य अक्षर — उच्चारण वाले साधारण शब्द (जैसे sword) को नहीं। जिन बच्चों को ध्वनि आधारित तरीकों से सिखाया गया था, वे सामग्री को ज़्यादा समझ पाते थे, शायद शब्दों की रचना को बारीकी से देखने के कारण, जो उनके पढ़ने की धीमी गति से भी प्रतीत होता है।

शब्दों को पहचानना सिखाने के लिए सम्पूर्ण भाषा पद्धति वाले अक्सर कहते हैं कि शिक्षक पठित सामग्री को पढ़कर उस संदर्भ में शब्दों के अर्थ का अनुमान लगाने की प्राथमिकता दें। बच्चों को प्रोत्साहित करें कि वे इसे कई बार करें। इसके विपरीत काफी शोध हैं जो दिखाते हैं कि पढ़ने वाले संदर्भ का ज्ञात शब्दों को पहचानने के लिए उपयोग नहीं करते (पेरफेटी 1995)। अज्ञात शब्दों को पढ़ने का प्रयास करने में संदर्भ कुछ उपयोगी जानकारी दे सकता है, खास तौर पर पढ़ना शुरू कर रहे पाठकों के लिए (निकलसन 1991)। परन्तु यह भी पाठक द्वारा अक्षर को ध्वनि के साथ जोड़ने की जानकारी को साथ उपयोग करके ही होता है। प्रमाण हैं कि यही बात न्यूजीलैण्ड में पूर्ण भाषायी पद्धति से पढ़ाए जा रहे बच्चों के संदर्भ में है (हनमर व चैपमैन, 1997)। पढ़ना को पढ़ाने के तरीकों के बारे में दी गई सिफारिशों को पढ़ने पर हुए शोध में इकट्ठे हुए अवलोकनों से फायदा हो सकता है (एहरी, 1994)। इनमें उन प्रक्रियाओं के बारे में अवलोकन है जो पढ़ने की क्षमता विकसित करते समय बच्चे शब्द पहचानने के लिए उपयोग करते हैं।

वर्ण आधारित शिक्षण का सिद्धान्त

पढ़ना सिखाने की शुरुआत के लिए 16 वीं शताब्दी में ही जर्मनी में इकस्लेनर ने शिक्षकों को इस बात पर ध्यान देने को कहा कि इन्सानों ने सबसे पहले पढ़ना कैसे सीखा। उन्होंने कहा कि आप बच्चों को बोले गए शब्दों को उनको बनाने वाली ध्वनि इकाइयों के टुकड़ों को मन ही मन बाँटकर पहचान पाना सिखाए और फिर उन्हें अक्षर सिखाएँ (डेविस 1973)। पिछली शताब्दी के मध्य में रूस में उश्निस्की ने ऐतिहासिक तरीके की वकालत की, यह तरीका अक्षर-ध्वनियों में लिखने की पद्धति का विकास किस प्रकार हुआ होगा, उन पर आधारित था (डौब्लिंग 1988, बर्नबेय का विश्लेषण लूमर में भी देखें)। चूँकि यह आविष्कार (invention) अमूर्त ध्वनि-टुकड़ों के समूह को पहचानने पर निर्भर थी जो हमारी भाषा की रचना करते हैं, इसलिए बोले गए शब्दों के इन पहलुओं पर जाना बच्चे को पढ़ना सिखाने का पहला कदम है। उदाहरण के लिए, बच्चे को एक ध्वनि इकाई को पहचानना सिखाने के लिए बहुत से बोले गए शब्दों को चुनते हैं, जो एक ही ध्वनि से शुरू होते हैं जैसे /क/ और फिर किसी बोले गए शब्द के पहली ध्वनि और आखिरी ध्वनि टुकड़े को पहचानने का प्रयास करवाते हैं। इस तरीके को कभी भी ठीक से इस्तेमाल करने का मौका नहीं मिला। हालाँकि पढ़ना सीखना शुरू करने के कुछ इसी तरह के तरीके 1960 व 70 के दशक के दौरान रूस से में खोजे गए। इनका अध्ययन एल्कोनिन ने किया (डौब्लिंग 1973 व 1988 Chapter, 22)।

ध्वनि सिद्धान्त का ज्ञान याने कि यह जानना कि किसी शब्द के अक्षरों का संबंध उस शब्द की अलग-अलग ध्वनियों से है (और यह एक के साथ एक के जुड़ाव का संबंध है) इस ज्ञान से अधिक है जो कि अक्षरों को स्थाई ध्वनि के चिह्न रूप में देखता है। बच्चे यह सीख सकते हैं कि /but/ ध्वनि विवरण के रूप में अक्षर b के लिए उपयुक्त है। किन्तु, अगर वह /job/ और /crab/ जैसे शब्दों में समान phoneme नहीं पहचान सकते तो उन्होंने अक्षर नियम (alphabetic principle) अख्तियार नहीं किया। सामान्य गति से आगे बढ़ने के लिए यदि हम यह मान लें कि पढ़ना सीखना शुरू करते समय इस सिद्धान्त को जान लेना (implicit knowledge) व उसका मतलब समझ पाना जरूरी है, तो शिक्षक को सुनिश्चित करना होगा कि उसके छात्र इसे जल्दी सीख जाएँ। यह सवाल उठेगा कि क्या यह ज्ञान अपने-आप बच्चे में बनता रहता है और इसके अचानक अपने-आप उभरने का इन्तजार करना चाहिए या इसे भी खास तौर से पढ़ाकर सिखाया जा सकता है।

आस्ट्रेलिया में काम कर रहे बायर्ने व फिल्लिंग (बार्नस्ले 1995) ने यह दिखाया है कि 4 साल के बच्चों को स्कूल में पढ़ना सिखाने का कार्यक्रम शुरू होने से पहले ही, 12 हफ्ते ध्वनि इकाइयों का (phoneme identities) ज्ञान सिखाया जा सकता है। लेकिन इन बच्चों व अन्य बच्चों के साथ, दो-तीन साल स्कूल में रहने के बाद,

जिसमें अक्षर/ध्वनि के बीच संबंध पर भी थोड़ा बहुत सिखाया गया था, किए गए अध्ययनों ने दिखाया कि इस समय के बाद ये बच्चे सामान्य शब्दों को पढ़ने में अन्य बच्चों से बेहतर नहीं कर पाते। इस अध्ययन ने लेकिन यह ठीक वर्तनी में लिखे अर्थहीन खेल-खेल में बने शब्दों को ये बच्चे ज्यादा बेहतर पढ़ पाते हैं। इसके विपरीत बॉल व क्लैकमैन (1991) का अध्ययन है। अपने इस अध्ययन में उन्होंने दिखाया कि सात हफ्ते तक ध्वनि संकेत टुकड़ों की पहचान व अक्षरों के साथ उनके ध्वनि चिह्नों को जोड़ने का अभ्यास करने से 5 साल के बच्चे सरल व सामान्य वर्तनी वाले शब्दों को बेहतर ढंग से पढ़ पाते हैं। शब्द उन अक्षरों के नहीं होने चाहिए जिन्हें पढ़ना उन्होंने सीखा है। जिन बच्चों पर यह अध्ययन किया गया वे अमेरिका के एक किन्डरगार्टन (पूर्व प्राथमिक) के ऐसे कार्यक्रम में सम्मिलित थे जिसमें पढ़ना सिखाने का कोई व्यवस्थित कार्यक्रम नहीं था। यह आश्चर्य की बात है कि पढ़ने में यह अतिरिक्त क्षमता बच्चों को अक्षर सिद्धान्त का अपरिचित शब्दों पर इस्तेमाल सिखाए बिना हासिल हो गई। इन तरीकों के उपयोग को सिखाने से शायद पढ़ने की क्षमता में और ज्यादा बढ़ोतरी हो पाती। टर्नर और चैपमैन ने एक ऐसी (meta-cognitive) तरीके के बारे में चर्चा की है जो किसी बच्चे में अपरिचित शब्दों को, पहचानने के लिए उपयोगी (strategic) ज्ञान पर विचार करती है।

पढ़कर समझना

बहुत सी वे क्षमताएँ जो समझकर पढ़ने की क्षमताओं में वर्गीकृत की जाती हैं, वास्तव में भाषा को समझने की क्षमताएँ हैं। ये सिर्फ पढ़ने से विशेष रूप से जुड़ी नहीं हैं। (थोम्पसन, टर्नर व निकोलसर, 1993)। मुख्य बात यह है कि क्या छपी सामग्री को पढ़कर समझने की क्षमता का विकास सीधे-सीधे पढ़ना सिखाने की प्रक्रिया पर कक्षा में कार्य कर किया जा सकता है। यह कई देशों में चर्चा का विषय रहा है। जैसे जापान में ही पढ़ाना सिखाने के कुछ तरीके स्पष्ट रूप से ध्वनियों व अक्षरों के टुकड़ों का उपयोग करते हैं और कुछ ज्यादा सम्पूर्ण भाषाई इकाइयों को लेते हैं (डॉवनिंग, 1973)। 1980 के दशक से ही अमेरिका में पढ़ना सिखाने के एक ऐसे मॉडल (पद्धति) में बहुत रुचि बनी है, जिसमें बच्चों को बहुत सी अक्षर वर्णित पद्धतियों को मिला-जुलाकर पढ़ना सिखाया जाता है। इसमें मॉडल में यह भी समझ है कि कौन सी पद्धति कब और क्यों उपयोग की जानी चाहिए (डोल, डफी, टोहेलर और पियरसन 1991; पियरसन व फिल्लिंग, 1991)। अमेरिका के कई शोधकर्ताओं ने यह भी पता करने का प्रयास किया है कि ऐसे तरीकों को क्या वास्तव में सिखाया भी जा सकता है और क्या सीखने वाला उन्हें सफलतापूर्वक ज्ञात विषय से सम्बन्धित परन्तु नई व अज्ञात पठन सामग्री पर उपयोग कर सकता है।

लेकिन इनमें से बहुत थोड़े से ही अध्ययन ऐसे हैं जो रिसर्च के सही व मान्य तरीकों के स्तर के हैं (प्रेसले व अन्य 1989)। राफनेल व वोम्नाकोट (1985) ने पाया है कि 9 साल के बच्चों को यह सिखाया जा सकता है कि पढ़कर समझने से संबंधी प्रश्नों (बोध प्रश्नों) के संदर्भ में कुछ सवालों के उत्तर तो दी गई सामग्री में सीधे ही मिल जाएँगे, कुछ के हल दी गई सामग्री तक हम विचार कर पहुँच सकते हैं और इसमें पठन सामग्री में अलग-अलग जगह व्यक्त बातों का उपयोग होने की आवश्यकता पड़ सकती है, या फिर यह भी है कि समझकर उत्तर देने के कुछ प्रश्नों के संदर्भ में पाठक को अपने पहले ज्ञान का भी उपयोग करना होता है। डवाइटज़ कार व पैटबर्ग 1987 ने पाया कि 10 साल के बच्चों को अपने ज्ञान को पठन सामग्री के साथ जोड़कर समझना सिखाया जा सकता है। उन्हें पाठ की सामग्री में निहित व्यवस्था को समझना भी कुछ हद तक सिखाया जा सकता है।

पढ़ना सिखाने के इस ढंग पर कई सवाल हैं और कई लोग इसे ठीक नहीं मानते। एक विरोध तो यह कि पढ़ना सिखाने के इस तरह के तरीकों की कोई ज़रूरत नहीं, यदि बच्चे पढ़ने को प्रेरित हैं और वे ऐसे पाठों को पढ़ने का प्रयास नहीं कर रहे हैं, जो उनके स्तर से ऊपर हैं (कार्वर 1987)। एक और विरोध यह है कि यह समझना व ध्यान रखना कि कब और कहाँ कौन सी विधि (strategy) उपयोग करनी है, बहुत मुश्किल है और

पढ़कर समझने के कार्य से भी ज्यादा ध्यान व मेहनत की माँग करती हैं (पियरसन व फिल्लिंग, 1991)। एक और समस्यात्मक पहलू यह है कि पढ़ने का ढंग सिखाने के प्रयास में कक्षा बिल्कुल एक तरफा हो जाती है। इसमें सिर्फ शिक्षक बताता है और बच्चे सुनते हैं, न तो बच्चों की तरफ से ही कक्षा में कुछ आता है और न ही शिक्षक बच्चों के व्यवहार में व्यक्त बातों के मददेनज़र कुछ कर पाता है। प्रेसले आदि (1992) पढ़ाने के एक ऐसे अनुभव के बारे में बताते हैं जिसमें इस समस्या का सामना करने का प्रयास है और जिसमें सिर्फ दिए गए विचारों को निकलवाने के स्थान पर पढ़ने वाले के विविध अर्थों, भावनात्मक व कलात्मक प्रतिक्रियाओं को विमर्श में शामिल किया जाता है।

आगे की दिशा — अब यह समझ धीरे-धीरे साफ हो रही है कि अक्षर-ध्वनि संबंध के सिद्धान्त (alphabetic principle) का उपयोग पढ़ना शुरू करने वाली कई तरह से कर सकते हैं। बच्ची पढ़ाई गई निश्चित ध्वनियों को अक्षरों के स्थान पर उपयोग करके अपरिचित शब्दों को ध्वनि के आधार पर पहचानने का प्रयास कर सकती है। याने वह ज्ञात अक्षरों के स्थान पर सिखाई गई ध्वनि निकालेगी और पहचानने का प्रयास करेगी कि इससे क्या शब्द बनता है।

एक और तरीका यह है कि बच्ची अपने आप अपनी शब्दावली जो वह पढ़ पाती है में से नये, यानी जो उसे सिखाए नहीं गए हैं, अक्षर-ध्वनि संबंध के पैटर्न खोज ले। ध्वनि-अक्षर नियम के बहुत से हिस्से हमारी ज्ञात शब्दावली में निहित हैं। जैसे कि छपे शब्द sit, cat और not की अंतिम आवाज़ व अक्षर एक जैसे ही हैं। इसी तरह ball, fall, wall में भी एक ही तरह के अक्षर व ध्वनि अंत में हैं। इस तरह के खुद बनाए व सीखे गए नियमों का उपयोग अपरिचित शब्दों को पहचानने के लिए कर सकते हैं (थाम्पसन, काट्टरल और फ्लेचर-फिन्न 1996; थोम्पसन व निकलसन)।

ध्वनि-शब्द नियम को इस्तेमाल करने का एक और तरीका भी है। बच्चा उससे मिलता-जुलता शब्द जैसे जंप (jump) का उपयोग hump जैसे किसी अपरिचित शब्द को पहचानने के लिए कर सकता है। नए शब्दों को समान ध्वनि व अंतिम अक्षर वाले शब्दों को पढ़ने के संदर्भ में नए शोध के निष्कर्षों ने इस बात की वकालत को पुख्ता किया है कि पढ़ना शुरू करने वालों को ऐसे पढ़ना सिखाना चाहिए। लेकिन दुर्भाग्य है कि ऐसा पढ़ने की वकालत करने वाले लोगों ने शोधों को नज़रअन्दाज़ किया है जो यह दिखाते हैं कि अक्षर की ध्वनि के साथ मिलाकर पढ़ना सिखाने वाले तरीके के शुरुआती पढ़ने वालों के लिए परिणाम इससे ज्यादा अच्छे होते हैं (सुलिवन, ओकाडा व न्यादीमेयर, 1971)। समान शब्द तरीके का अपरिचित शब्दों को पढ़ने में सक्षम व स्वतः प्रयोग, यह माँग करता है कि बच्ची अपने उस शब्दकोश, जिसे वह पढ़ सकती है, में से उस शब्द के समान शब्द को ढूँढ़ पाए। जब तक कि यह पढ़ पाने वाला शब्दकोश काफी बड़ा नहीं होगा तब तक समान शब्द इस्तेमाल कर नया शब्द पढ़ना आसानी से संभव नहीं होगा और इसका बहुत कम उपयोग हो जाएगा। ध्वनि विज्ञान (phonics) बच्ची को सीमित संख्या में ही ध्वनि-अक्षर संबंध सीखने के मौके देती है। यह स्पष्ट नहीं कि इस तरह का पढ़ाना बच्ची को न सिखाए गए नियमों को स्वयं सीखने में कितना सक्षम बनाता है। भाषा व लिपि जिनमें संबंध जटिल है, में अक्षर-ध्वनि संबंध के बहुत सारे पैटर्न होते हैं। इनमें से प्रत्येक पर बच्चे व शिक्षक अलग-अलग विशेष ध्यान देकर अभ्यास नहीं कर सकते। कुछ ऐसे नियमों का शायद स्वयं सीखना कुदरती होता है।

इसके बिना पढ़ने की क्षमता हासिल करना मुश्किल है। बाद का विमर्श इस पर ही होगा कि शिक्षकों की ज़िम्मेदारी यह देखना है कि कब बच्चों को शब्दों की ध्वनियों का विश्लेषण करना ज़रूरी है और कब इस तरह के संपूर्ण विश्लेषण की आवश्यकता नहीं है। उन्हें यह भी तय करना है कि किस बच्चे के लिए इस तरह के विश्लेषण का कितना अनुभव पर्याप्त है। आगे के अध्ययन को यह भी दिखाना होगा कि विश्लेषणात्मक तरीकों पर किए गए अध्ययनों से आने वाले निष्कर्षों को बच्चों को अधिक सक्षमता से पढ़ना सीखना सिखाने में कैसे उपयोग किया जाएगा।

अभ्यास

-
- इस लेख में पढ़ना सिखाने के कौन-कौन से तरीकों के बारे में बात की गई है। उन सभी तरीकों के एक-एक उदाहरण भी दीजिए।
 - इस लेख में पढ़ना सिखाने में आपको कौन-सा तरीका बेहतर लगा और क्यों?
 - (क) पढ़ना सिखाने में आप कौन-सा तरीका काम में लाते हैं?
(ख) अपनी कक्षा का एक उदाहरण दीजिए जिसमें आप क्या कर रही है और बच्चे क्या कर रहे हैं?
 - आपको क्या लगता है कि बच्चों को पढ़ना सिखाने में कहानियों का उपयोग करना चाहिए यदि हाँ तो एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए।
 - इस लेख में पढ़ना सिखाने के बारे आपको कौन-सी बातें मुख्य लगी?
 - इस लेख में पढ़ना सिखाने के बारे में हुए शोध हमें क्या-क्या बताते हैं?
 - ये सभी शोध हमें पढ़ना सिखाने के बारे आगे क्या दिशाएँ सुझाती हैं?
-

अब लिखना किस चिड़िया का नाम है?

अध्याय : 21. लिखना—क्या और कैसे? : उभरता हुआ कौशल है छात्रों की आँखों से लेखन के अंग सामाजिक प्रभाव — बेहतर लेखन के लिए।

अध्याय : 22. लिखना सिखाने के उभरते आयाम : लेखन क्या है? लेखन कौशल क्या है? लेखन सिखाया जा सकता है? समस्याएँ, लिखना सिखाने के अलग-अलग तरीके, लिखना सिखाने के नमूने।

अध्याय : 23. लेखन के विविध प्रकार : लिखने की अलग-अलग किस्में, इनमें फर्क कहाँ-कहाँ है? विभिन्न प्रकारों को सिखाने के अभ्यास।

अध्याय : 24. लिखना — बातचीत : लिखना एक तरह की बातचीत, लिखने की शुरुआत शुरुआत, के बाद का कदम टीचर की प्रतिक्रिया कुछ गतिविधियाँ।

अगर बोलने से बात हो जाती है तो लिखने की ज़रूरत क्या है? हज़ारों सालों से वेद लिखे नहीं गए, सिर्फ याद करके गाए गए। इनको लिखने की ज़रूरत क्यों नहीं समझ गया? ऐसा नहीं है कि भारत में लिखने की कला ही नहीं थी, या फिर लिखने के साधन नहीं थे।

वेदों की बात फिलहाल छोड़कर, ज़रा देखते हैं कि हमारे इतिहास में लिखना क्यों शुरू किया गया। सबसे पुराने लिखने के निशान पाए जाते हैं, हड़प्पा सभ्यता के खंडहरों में। उसके बाद के काल में फिर आते हैं सम्राट अशोक के शिलालेख। इन सब में क्या लिखा गया है?

हड़प्पा की भाषा तो अब तक नहीं पहचानी गई है, लेकिन वहाँ की लिखाई जिस-जिस चीज़ों पर की गई है उनसे यह बात साफ है कि लिखाई का इस्तेमाल खासकर व्यापार के लिए किया जाता था। जैसे इस बोरे/कलश में कितना सामान रखा है? जैसे पिछले महीने कितने बोरे या डब्बे माल भेजा गया या मिला? जैसे लेन-देन का हिसाब क्या है? साफ है, व्यापार में बोलना काफी नहीं जिससे बात करनी है वह कोसों दूर है। या फिर, जो बात है उसका परमानेंट सुबूत रखना है ताकि बाद में कोई मुकर न जाए। अब कुछ कुछ समझ आती है लिखने की ज़रूरत।

आगे देखें। सम्राट अशोक ने अपने शिलालेख कहाँ-कहाँ लगवाए थे? अपने साम्राज्य की सरहदों पर, ताकि बाहर से आने वाला हर इंसान इनको पढ़े। शिलालेख अन्दरूनी विशाल साम्राज्य के खास खास चौरास्तों, शहरों, और तीर्थों में भी लगवाये गये थे। खैर, इन शिलालेखों पर सम्राट ने लिखा क्या था? क्या वे साम्राज्य के नियम-कानून थे? जैसे क्या-क्या शिकार करना जायज़ या नाजायज़ है, जैसे क्या-क्या करना अपराध है, अलग-अलग जुर्मों की सज़ा क्या है, टैक्स कितना देना है, और किसको देना है, विदेशियों से कैसे बर्ताव करना है, वगैरह।

जाहिर है : चूँकि इंसान का सामाजिक फैलाव जब बड़ा हो जाता है और दूर-दूर तक फैल जाता है, तब समाज को ठीक से बाँधे रखने के लिए लिखाई की ज़रूरत पड़ती है।

इन सब से बाद में उपजती है लिखने की अन्य ज़रूरतें — कथा-कहानी, पत्र, विज्ञान, इतिहास, आदि।

सुनने की दूसरी ओर है बोलना। और पढ़ने की दूसरी ओर है लिखना। पूरी इमारत कुछ ऐसी है:

सुनना	बोलना
पढ़ना	लिखना

लिखना कैसे सिखाया जाए, सिखाने में क्या दिक्कतें आती हैं, उनको कैसे आसान किया जाए, लिखने का कौशल कैसे बेहतर बनाया जाए, लिखने की शुरुआत के बाद का क्या काम होगा? शिक्षक की प्रतिक्रियाएँ क्या व कैसी हो? आदि पर हम इस इकाई में पढ़कर देखेंगे।

लिखना – क्या और कैसे?

पाठ की रूपरेखा

- परिचय
- उद्देश्य
- शीर्षक व उप-शीर्षक
 - विकासशील बदलाव
 - गलतियाँ
 - छात्रों की आँखों से
 - ज्ञान बोधक तरीके
 - योजना बनाने के अन्तर्गत
 - समस्या को सुलझाना
 - पुनर्निरीक्षण
 - लेखन पूर्व की प्रक्रिया
 - मेटाकोग्निशन
 - सामाजिक रचनात्मक तरीके
 - लिखने का सामाजिक परिवेश
 - प्रभावी लेख और छात्र-शिक्षक चर्चा
 - सहकर्मियों से सहयोग
 - विद्यालय/परिवार/आपसी मित्रों से संबंध
 - अध्ययन की व्यूह रचना
 - बेहतर लिखने के लिए

परिचय :

लिखने की कला भी शिक्षण का एक प्रमुख अंग है। इस लेख में लिखने की कला कैसे विकसित होती है? उसमें ऐसे कौन से ज्ञानवर्धक और सामाजिक रचनात्मक तरीके हैं? अभ्यास कैसे हो? आदि पर बातचीत की गई है। लिखने वालों के लिए मौके ऐसे हो जहाँ व अपने विचार दूसरों तक पहुँचा पाने व दूसरे के विचार समझ पाने की व्यापक संदर्भों व अनुभवों के साथ विभिन्न प्रकार की किताबों से जुड़ा पाने की एक सार्थक कोशिश कर सके। लिखने की गलतियाँ भी बच्चों के सीखने की प्रक्रिया का एक हिस्सा है। इनको नजर अन्दाज करना लिखने के कौशल की वृद्धि करता है। साथ ही लेखन के पूर्व की प्रक्रिया क्या होनी चाहिए इस पर भी बात करेंगे।

उद्देश्य :

- यह समझ पाएँगे कि लिखना सिखाने में सामाजिक, रचनात्मक तरीकों का क्या मतलब है।
- यह समझ पाएँगे कि लिखना सिखाने के बेहतर तरीके क्या हो सकते हैं।

विकासशील बदलाव :

बच्चों में लिखने की क्षमता दो से तीन वर्ष की उम्र में घसीटों (आड़ी तिरछी रेखाएँ) द्वारा आरम्भ होती है।

बचपन में motor skills अच्छी तरह विकसित हो जाती है और वे अपना नाम अथवा अक्षरों को छाप सकते हैं। अमरीका में अधिकतर चार वर्ष के बच्चे अपना पहला नाम लिख सकते हैं। पाँच वर्ष के बच्चे अक्षरों और छोटे शब्दों का भी पुनर्निर्माण कर सकते हैं। जैसे-जैसे वे अपने लिखने की कला विकसित करते हैं, वैसे ही वे यह पहचानना भी सीख जाते हैं कि अलग-अलग अक्षर किस प्रकार बनते हैं एवं इसके विशेष गुण जानने लगते हैं। जैसे विभिन्न अक्षरों में रेखाएँ किस प्रकार से बनती हैं, अगर घुमावदार है तो कैसी है, बन्द है या खुले आकार की है इत्यादि। प्रारम्भिक कक्षाओं में कई बच्चे b और d तथा p और q में गड़बड़ी करते हैं (टेम्पल और अन्य, 1993) परन्तु विकास के इस पायदान पर अगर उनका

अन्य आयामों में विकास सही चल रहा हो तो इस तरह की अक्षरों की गड़बड़ियाँ उनकी समझ शक्ति का आकलन करने की भविष्यवाणी नहीं मानी जा सकती।

जब बच्चे लिखना शुरू करते हैं तो कई बार वे अपने खुद के हिज्जे (Spellings) बनाते हैं, वे ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि वे शब्दों के उच्चारण को उसके बनावट का आधार मानते हैं।

शिक्षकों और अभिभावकों को चाहिए कि वे इनके लिखने की आदत को प्रोत्साहन दें बिना इस बात की ज्यादा चिंता करे कि उनकी अक्षरों की बनावट या उनके शब्दों को लिखने में अशुद्धियाँ हो रही हैं। इसी संदर्भ में मैंने (आपका लेखक) अपनी सबसे छोटी बेटी जेनिफर की पहली कक्षा की शिक्षिका से चर्चा की क्योंकि उन्होंने उसके गृहकार्य के लिखे हुए कई कागज़ लौटा दिए तथा उन पर उन्होंने उसकी गलती पर कई टिप्पणियाँ और रोते हुए चेहरे बना दिए थे। मैंने उन्हें समझाया कि ऐसा करना उसके (जेनिफर) लिए लाभदायक नहीं रहेगा। भाग्यवश शिक्षिका ने इस तरह की टिप्पणियाँ देना बन्द किया।

अभ्यास

- बच्चों के शुरुआती लेखन के बारे में क्या कहा गया है?

गलतियाँ

इस तरह लिखने की गलतियाँ बच्चों के सीखने का एक प्राकृतिक हिस्सा माना गया है और हर पल उस पर सूक्ष्म निरीक्षण कर लताड़ना नहीं चाहिए। हिज्जे और लिखने की गलतियों को सुधारने के लिए कई सकारात्मक और न्यायसंगत तरीके हैं जो लिखने की स्वच्छन्दता और आनन्द रोके बिना अपनाये जा सकते हैं, जिससे लिखने की कला उत्साहहीन न बने (ह्यूले और स्लॉक, 2001)। जैसे अच्छा पाठक बनने के लिए बहुत अभ्यास की आवश्यकता होती है वैसे ही अच्छा लेखक बनने के लिए भी उसी प्रकार कड़ी मेहनत की आवश्यकता होती है (ब्रूनीज और होर्न 2001, स्पेन्डन 2005)। बच्चों के प्राथमिक और सेकेण्डरी स्तर पर लिखने के बहुत से अवसर देने की आवश्यकता है। जैसे-जैसे उनकी भाषा तथा ज्ञान (cognitive) बोध सही मार्गदर्शन से बढ़ेगा है वैसे-वैसे उनकी लिखने की कुशलता भी बढ़ेगी।

उदाहरण के तौर पर सही वाक्य रचना तथा व्याकरण की उच्च स्तरीय समझ असरदार और उम्दा लेखन के लिए आधार बनती है।

उसी तरह से तार्किक सोच का निर्माण करने जैसी ज्ञानवर्धक कलाएँ भी इसमें मददगार होती हैं। बच्चे अपने प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालय में विचारों के संगठन के कई अच्छे तरीके सीखते हैं। प्राथमिक स्तर में वे कई छोटी कविताओं का उच्चारण समझाने और लिखने का काम करते हैं। प्राथमिक से माध्यमिक स्तर में वे किताबों के बारे में वृत्तान्त उपस्थित करना—जिसमें वर्णन के साथ निक्षेप तथा विश्लेषण का समावेश होता है— तथा उच्च माध्यमिक स्तर में वे विवरण के और अच्छे तरीकों का उपयोग करना सीखते हैं जो केवल वर्णन को आधार नहीं बनाते।

और मुझे लिखना बहुत अच्छा लगने लगा है पर कभी-कभी मेरे बुरे हिज्जों पर मुझे गुस्सा आता है। मुझे एक चीज़ मेरे लिखने के बारे में अच्छी लगती है कि मैं हमेशा एक उत्साह से लिखती हूँ इसलिए उनमें खूब चंचलता होती है। मुझे लगता है कि अगर मैं अपना लेख बिना सही कराए पढ़ने दूँ तो कोई पढ़ ही नहीं पाएँगा। और अगर सही करके पढ़ने दिया जाए तो पढ़ने में मेरी कहानी अच्छी लगेगी।

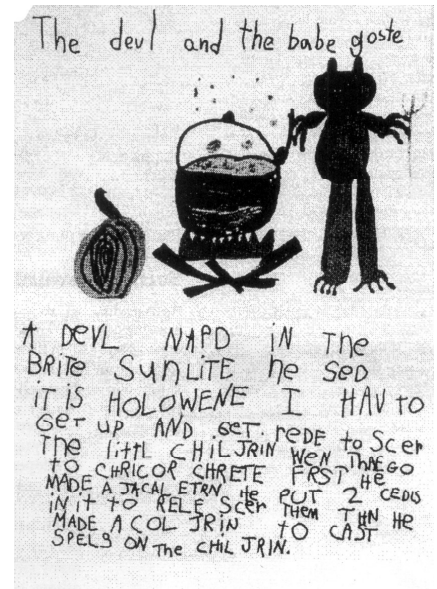
— जेनिफर

The Devil and the Babe Goste

वह छह साल की है और वह दो साल से कहानियाँ लिख रही है। उसकी कहानियों में कविताई की छटाएँ, उच्च स्तर की वाक्य रचनाएँ, और शब्दावली का समावेश होता है जो एक अच्छे भाषा वृद्धि का आभास देते हैं।

छात्रों की आँखों से — (स्वमूल्यांकन लिखना)

सॅन फ्रान्सिस्को की पाँचवीं कक्षा की शिक्षिका करेन एब्रा समय-समय पर अपने छात्रों को अपने लिखने के संगठन में अपना खुद का मूल्यांकन खुद करने को कहती है। साल के अन्त में कुछ बच्चों ने जो समालोचना की वह नीचे दी गई है —



मैं पाँचवी कक्षा में हूँ और मुझे लिखना बहुत अच्छा लगता है। जब भी मौका मिले मैं लिखूँगी और जहाँ तक मुझे याद है मुझे लिखना बहुत पसंद है। मुझे लगता है कि मेरे लिखने में वृद्धि हुई है चौथी कक्षा से और मैं अपने लेखन से बहुत खुश हूँ। कुछ लेखकों को अपना लेख अच्छा नहीं लगता होगा पर मुझे नहीं, मैंने अपना कोई भी लेख आज तक फेंका नहीं है। मुझे अपना लिखा लेख दूसरे लेखकों को दिखाना तथा उनको नए सुझाव देना या उनसे सुझाव लेना अच्छा लगता है। अगर मुझे अपने खुद की लिखाई पर कहना हो तो मैं कहूँगी कि मेरा लिखना विस्तृत, कल्पनापूर्वक और और लुभावना होता है (मैं अपनी बड़ाई खुद नहीं कर रही)।

— मिशेल

मुझे लगता है कि कहानी लिखना बहुत आसान है क्योंकि इतना कुछ लिखने के लिए है और अगर मुझे किसी एक चीज़ के बारे में लिखना हो तो भी बहुत कुछ किया जा सकता है। कोई अगर मेरा लेख पढ़े तो वे अनुमान लगाएँगे कि मैं बहुत खुश और स्फूर्त हूँ। उन्हें ऐसा लगेगा क्योंकि मेरा लेख हमेशा उत्साहित करता है।

— सारा

जब भी मैं लिखती हूँ, मुझे लगता है कि मैं और अच्छा कर सकती हूँ। खास तौर पर मेरे हिज्जों में। जब मैं किन्डर गार्डन में थी तब हम बहुत लिखते नहीं थे। तीसरी कक्षा में तो मुझे लिखना अच्छा भी नहीं लगता था। लिखने के बारे में नई चीज़ें सीखने में मुझे डर लगता था। अब मैं पाँचवी कक्षा में हूँ।

ज्ञान बोध के तरीके

ज्ञान बोध के तरीकों में लेखन में भी उन्हीं बातों पर चर्चा करते हैं जो पढ़ने के साथ जुड़े हुए हैं, जैसे शब्दार्थ जानकर विस्तार करने की व्यूह रचना करना। (Kellogg 2000, D Olson 2001) योजना बनाना, प्रश्नों को सुलझाना (सवाल का हल निकालना), पुनर्निरीक्षण करना और Meta-cognitive व्यूहरचना बनाना छात्रों के लिखने में अत्यन्त महत्व के तरीके पाए गए हैं।

योजना बनाने के अन्तर्गत

योजना बनाना — इनमें समावेश होता है, रूपरेखा बनाना और विषयवस्तु की सही ढंग से जानकारी प्राप्त

कर संगठित करना। यह लेखन लिखने का बहुत महत्वपूर्ण अंग है। (Levy & Randsel 1996, Mayer 2004)

छात्रों को यह मार्गदर्शन देना जरूरी है कि कैसे लेख की रूपरेखा बनाई जाए और उसे कैसे संगठित किया जाए। तथा उनके लेख की गुणवत्ता की जानकारी भी इन्हें देना जरूरी है (Houston, 2004)। एक अध्ययन में यह पता चला कि लिखने से पहले की गतिविधियों का लिखने पर क्या असर होता है। (Kallogg, 1994) जैसे – आकृति 1 से स्पष्ट है कि रूपरेखा बनाने से सबसे अधिक प्रभाव लेखन पर होता है। आकृति 2 दर्शाती है कि शिक्षक छात्रों की लेखन की योजना बनाने में कैसे मददगार साबित हो सकते हैं? जब कि उन्हें एक सीमा रेखा तय करनी है।

समस्या को सुलझाना

जो निर्देश विद्यालयों में लिखना सिखाने के लिए दिए जाते हैं वे उन्हें सही वाक्य निर्माण तथा परिच्छेद लिखने में मदद करते हैं। परन्तु लेखन कोई माँग करने वाले वाक्यों को लिखना या इस बात पर ध्यान देना कि परिच्छेद विषय से जुड़ा हुआ है या नहीं? माँग यही नहीं है। (Mayer 1999) अधिक मूल रूप से लिखना एक विस्तृत प्रश्न या समस्या को सुलझाना माना गया है। एक मानस शास्त्री ने लिखने में प्रश्न सुलझाने की प्रक्रिया को 'शब्दार्थ बनाना' बताया है (Kellogg, 1994)।

प्रश्नों को सुलझाने वालों के रूप में लेखकों को एक लक्ष्य रखकर उस तक पहुँचने के लिए सतत कार्य करना पड़ता है। यह सोचा जा सकता है कि जब एक लेखक पर दबाव रहता है तो वह उस विषय के बारे में पूर्ण ज्ञान रखता है तथा यह ज्ञात भी रखे कि भाषा कैसे काम आती है? तथा लेखन में आने वाली समस्याओं के बारे में विचार करे। लिखने के प्रश्न में समावेश होता है कि यह लेख क्यों लिखा जा रहा है? उसे सुनने या पढ़ने वाले कौन हैं? और लेखक की इस लेख बनाने में भूमिका क्या है? (Flower and Hayes, 1981)।

पुनर्निरीक्षण

पुनर्निरीक्षण अच्छे लेखन का एक महत्वपूर्ण अंग है। (Mayer, 1999) पुनर्निरीक्षण का मतलब होता है कि लेख के दो या तीन पुर्जे बने, उस पर लेखन में जानकार लोगों की प्रतिक्रियाएँ मिले और फिर इस समालोचना से भरी प्रतिक्रिया का उपयोग अपने लेख के सुधार के लिए करें। इसको गलतियों को पहचानने और उनका सुधार करने को एक जरूरी हिस्सा माना गया है। अनुसंधान करने वालों ने पाया है कि वयस्क और ज्यादा कुशल लेखक अपने लेखों का पुनर्निरीक्षण छोटी उम्र से और कम कुशल लेखकों से ज्यादा करते हैं। (Bailett, 19, Hayes and Flower 1986)।

लेखन पूर्व की प्रक्रिया

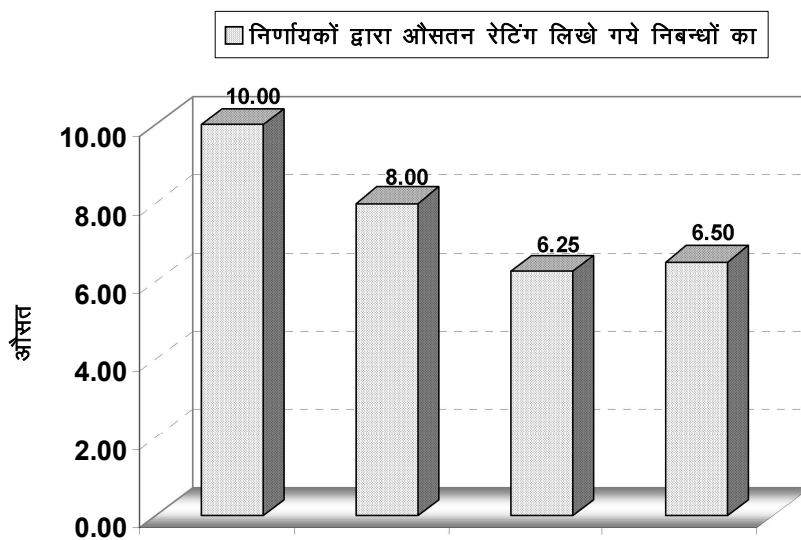
लेखन पूर्व की प्रक्रिया और लेख की गुणवत्ता से संबंधित, एक अभ्यास किया गया जिसमें कुछ कॉलेज के छात्रों के चार समूह बनाए गए और उन्हें इस प्रकार की प्रक्रिया सौंपी –

- (1) पहले समूह को जिस बारे में लिखना था, उससे संबंधित विचारों को क्रमबद्ध करना तथा उसकी रूपरेखा बनानी थी।
- (2) दूसरे समूह को उससे संबंधित जो अनुरूप विचार हैं उनकी एक सूची बनाना।
- (3) तीसरे समूह को केवल इससे संबंधित विचार एकत्रित करते थे बगैर किसी मूल्यांकन या क्रम के।
- (4) चौथे समूह को लेखन पूर्व की कोई भी गतिविधि नहीं दी गई।

फिर उनके लिखे लेखों का आकलन किया गया जिसमें 1 (सबसे निचला स्तर) से 10 तक (सबसे उत्कृष्ट स्तर) (केल्लोग, 1994) के अंक दिए जाने का निर्णय लिया।

निर्णायकों के दिए गए अंकों से यह निष्कर्ष निकला कि जिनको रूपरेखा बनाकर विचारों को संगठित करने को दिया गया था, उनके लेख सबसे अच्छे रहे। इससे यह सिद्ध होता है कि जब छात्रों को अपने लिखने से पूर्व एक रूपरेखा बनाने को कहा जाए। तो वे उसे बनाने के लिए एक सूचीबद्ध और रचनात्मक तरीका अपनाते हैं।

इसलिए लिखने से पहले रूपरेखा बनवा लेना एक अच्छी गतिविधि मानी गई है।



आकृति 1. रूपरेखा बनाना सूची बनाना विचार निर्माण कुछ भी नहीं

मेटाकोग्निशन (ज्ञान बोध की विधि अथवा प्रक्रिया)

जब हम लेखन बोध की व्यूह रचना पर प्रकाश डालते हैं तो हम मेटाकोग्निशन के क्षेत्र में प्रवेश करते हैं। एक अध्ययन में दस से चौदह साल के बच्चों को ऐसा कुछ लिखने को कहा गया जो उनकी उम्र के बच्चों को अच्छा लगे। (Scardam, 1981)। इसे पूरा करने में अवरोध यह रहा कि वे योजना नहीं बना पाए, उनके विचारों को कहीं नहीं लिख पाए और न ही उन्होंने कार्य किस तरह से हो रहा है उसकी सही जानकारी रखी – फलस्वरूप उनको अपने लेखों को दुबारा पढ़कर सुधार कर सकते ऐसा मौका नहीं उपलब्ध हो पाया। इन बातों से यह निष्कर्ष निकला कि ज्यादातर माध्यमिक स्तर के बच्चों में योजना बनाना तथा ज्ञान संगठित करने का कौशल कम होता है जो एक अच्छे लेखक बनने में काम आते हैं और ये कौशल उन्हें सिखाए जाने चाहिए।

स्वयं के काम का निरीक्षण करना एक अच्छे लेखक के लिए अतिआवश्यक है (ग्रहाम और हेठिस, 2001) – इसमें सम्मिलित है कि वह उसे मिली प्रतिक्रियाओं को सकारात्मक रूप से देखें और अलग लेख लिखते समय जो सुधार बनाए उनको भी ध्यान में रखें ताकि उसका अगला लेख सही हो।

अभ्यास

- बेहतर ढंग से लिख पाएँ इसके लिए क्या प्रक्रिया बताई गई है?
- किसी भी एक विषय पर लिखने के लिए रूपरेखा बनाइए और विचारों को लिखिए—
 - (1) प्यारा दोस्त
 - (2) मेरा प्रिय शिक्षक
 - (3) अगर पाँच रुपए का नोट मिलता

सामाजिक रचनात्मक तरीके (Social Constructive Approaches)

जिस प्रकार सामाजिक रचनात्मक तरीके का प्रभाव पढ़ने में पाया गया है, उसी प्रकार लिखने की कला तभी बढ़ती है जब वह समाज एवं संस्कृति द्वारा निर्मित हो और अपने से उत्पन्न हुई हो न कि मनगढ़ंत हो।

पढ़ने के इस तरीके में शिक्षक की मुख्य भूमिका ज्ञान देना नहीं बल्कि बच्चों के अपने ज्ञान को सही दिशा देना है। इस सम्बन्ध में शिक्षक और छात्र दोनों ही ज्यादा विद्वान माने गए हैं।

यही सामाजिक रचनात्मक तरीका लिखने में भी अपनाया जा सकता है (Dauite 2001, Schultz and Fecho 2001)।

	विषय को चुनना
एक या दो महीने पूर्व की तैयारी	● विचारों का खाका तैयार करना। ● लिखने के लिए एक योजना बनाना। ● एक पूर्व पक्ष के लिए कथन का निर्माण करना। ● अनुसंधान आरम्भ करना।
समय सीमा के दो हफ्ते पूर्व तक	● अलग-अलग खाके बनाना। ● उत्साहपूर्वक पुनर्निरीक्षण करना। ● अनुसंधान पूरा करना। ● पूर्व पक्ष के कथन को अन्तिम रूप देना।
समय सीमा से एक हफ्ता पूर्व	● अलग-अलग पेपर के हिस्सों को अन्तिम रूप देना। ● एक रोचक शीर्षक देना। ● उसकी सच्चाई को जाँचने के लिए उसके संदर्भ साहित्य को देखना। ● किसी से पढ़वाकर उनसे समालोचना करवाना।
समय सीमा से एक रात पूर्व	● पेपर के अलग-अलग हिस्सों को जोड़ना। ● अन्तिम खाका तैयार करना। ● उसमें पाई गई त्रुटियाँ हटाना। ● पेपर को एक साथ प्रस्तुत करना।

आकृति 2. समयबद्ध समय विभाजन का नमूना।

लिखने का सामाजिक परिवेश

लेखन का सामाजिक रचनात्मक तरीका उस सामाजिक हिस्से पर अधिक ध्यान देता है जिस परिवेश में यह लेख लिखा गया है। यह महत्वपूर्ण है कि छात्र इस समाज के पाठक व लेखकों से मिले तथा जानकारी ले और पहचाने कि उनकी समझ किस प्रकार औरों की समझ से अलग हो सकती है (Hicbat 1996)।

इसका महत्व समझने के लिए दो उदाहरण प्रस्तुत है —

पहला — एन्थनी, एक नौ साल का बच्चा जो अपनी पूरी जिन्दगी न्यूयार्क के मेन्हेट्टन क्षेत्र में गुजार चुका है (McCarthy, 1994)। वह खूब पढ़ता और लिखता है, वह विज्ञान के समाचार पत्र रखता है और अनेक प्रतियोगिताओं में भाग ले चुका है, जिसमें लिखने पर जोर दिया गया था। उसे अपने विषय में बहुत रुचि है, क्योंकि वह अपनी दादी के बारे में लिख रहा है जिनकी हाल ही में मौत हुई है।

शिक्षिका उसे प्रोत्साहन देती है कि वह दादी के बारे में, किस वजह से उनकी मौत हुई उनके बारे में लिखे और उसे पेश करने के अलग-अलग तरीकों पर वे दोनों चर्चा करते हैं और उसे लिखने के सबसे अच्छे तरीके की एक योजना बनाते हैं।

उसका अन्तिम लेख उसकी दादी के जीवन और मरण का एक बहुत ही प्रभावपूर्ण लेख बनता है।

एन्थनी की शिक्षिका का मानना है कि लिखने की कला शिक्षण का एक महत्वपूर्ण अंग है और वह इसको बच्चों में उत्साहपूर्वक देने की कोशिश करती है। इसके विपरीत अनुभव है एक लेटिनों के छात्र कार्लोस का, जिसके अभिभावक हाल ही न्यूयार्क के ब्रॉन्क्स क्षेत्र में रहने आए हैं।

इसके बावजूद कि कार्लोस की अंग्रेजी में पकड़ अच्छी है, उसे अपनी कक्षा के बाहर के अपने अनुभवों के बारे में अपने आप लिखने का अनुभव बिलकुल नहीं है। छात्र-शिक्षक चर्चा से वह अपने भावों को व्यक्त करने में संकोच करता है। कार्लोस की शिक्षिका को जिले में विभिन्न विषयों पर लिखवा लेने का जिम्मा सौंपा गया। उसे ऐसा करने में उत्साह नहीं है और इसलिए वह कार्लोस का लेख सुधारने में बहुत कम समय दे पाती है।

जैसे इन दो छात्रों के अनुभवों से पाया गया कि सामाजिक परिवेश लिखने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कुछ छात्र अपने परिपूर्ण वातावरण से अनेक अनुभवों का भण्डार लिये लिखने का सही मार्गदर्शन पाकर उसे प्रभावी ढंग से लिख पाते हैं, जबकि कुछ को कोई भी प्रोत्साहन और सही मार्गदर्शन नहीं मिलने से उनका लिखना उतना प्रभावी नहीं हो पाता।

कुछ कक्षाओं में लिखने की कला को अधिक महत्व मिलता है जबकि कुछ कक्षाओं में इन्हें इतना ज़रूरी नहीं माना जाता है।

अभ्यास

- सामाजिक परिवेश किस तरह लेखन को प्रभावित करता है।

प्रभावी लेख और छात्र-शिक्षक चर्चा

सामाजिक रचनात्मक तरीके के अनुसार छात्रों के लिखने में ऐसे विषयों को चुनना ज़रूरी है, जिनमें उनके आसपास के अनुभवों का समावेश होता हो।

उदाहरणार्थ— एन्थोनी की शिक्षिका ने उसे अपनी दादी के जीवन और मरण पर लिखने के लिए प्रेरित किया और इसे लिखने में उसकी मदद भी की। इसमें छात्र-शिक्षक चर्चा अच्छे लेखक बनने का एक असरदार माध्यम है।

सहकर्मियों से सहयोग (Peer collaboration)

समूह में काम करते समय लेखकों को कई अलग-अलग अनुभव होते हैं, जैसे पूछताछ करना, जानकारी या सत्यापन करना, किसी विषय का विस्तार करवाना जो अच्छे लेखक बनने में आवश्यक है (Webb & Palincsar)। जब एक से अधिक बच्चे मिलकर पेपर लिखते हैं तो वे अपने विभिन्न अनुभव एक-दूसरे के साथ बाँटकर अपने ज्ञान का विस्तार करते हैं। सही सहयोग से ही इस परिज्ञान का निर्माण होता है कि हमें क्या लिखना है? और कैसे लिखना है?



इसके विपरीत अगर लेख केवल अपने शिक्षक की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिखे गये हो तो वह तनावपूर्ण तथा अप्रभावी लेख होगा। जब छात्र आपस में मिलकर लिखते हैं तो शिक्षक की अपेक्षाओं की झलक उनमें कम होती है (Kearney, 1991)।

विद्यालय/परिवार/आपसी मित्रों से सम्बन्ध

एक प्रायोजना में शिक्षकों को प्रोत्साहित किया गया कि वे लेटिनो समाज की विविधता और अस्तित्व को पहचानने और अपने विद्यालय के पाठ्यक्रम में उसका समावेश करे (Moll, Tapia & Whitmore, 1993)। इसके अन्तर्गत —

1. इसका विश्लेषण हो कि— ज्ञान अर्जन इन परिवारों में कैसे होता है।
2. विद्यालय समय के बाद एक प्रयोगशाला (लेबोरेट्री) जिसमें शिक्षक और छात्र उस भाषा का प्रयोग करते हैं जो उनके आसपास के समाज में अपनाई जाती हो और उसको लिखते भी हैं।
3. प्रयोगशाला में किए गए प्रयोगों को कक्षा के परिप्रेक्ष्य में कुछ गतिविधियों द्वारा लाना।

मुख्य लक्ष्य था इन तीन अंगों को किसी तरह से जोड़ना।

उदाहरण के लिए बच्चों ने समाज में लिखने के तौर तरीकों का उपयोग किया जैसे वे अन्य परिवारजनों से पत्र व्यवहार द्वारा कैसे सम्पर्क रखते हैं और अपने हिसाब—किताब कैसे रखते हैं। फिर आपस में मिलकर उन्होंने ऐसे विषयों पर प्रोजेक्ट बनाए जो उन समाज के लोगों की विशेषताएँ दिखाते हैं। जैसे यन्त्र विद्या में निपुणता या किसी चीज़ को ठीक करने में निपुणता, कागज़ों का रख—रखाव। इसके लिए उन्होंने लेटिनो समाज के लोगों के साक्षात्कार लिए और जो लोग यू.एस.ए. में दूसरी जगह जा बसे थे, उनसे भी ई—मेल द्वारा सम्पर्क साधा।

आप भी कक्षा के साथ लेखकों को मिलाओ, अपने आसपास समाज में जो भी अच्छे लेखक हो उन्हें अपनी कक्षा में आमन्त्रित करके उनके कार्य के विषय में बातचीत कर सकते हो। कई समाजों में ऐसे कुशल लेखक या सम्पादक या पत्रकार होते हैं। जोन लिपिड्ज़ (1984) ने यू.एस.ए. में चार में से एक सबसे सफल माध्यमिक पाठशाला को पहचाना जिसमें उन्होंने लेखक सप्ताह को अपने पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया हुआ था। छात्रों के अलग—अलग रुचि, प्राप्ति तथा विविधता के आधार पर लेखक उनकी कला के बारे में उनसे बात करते हैं। छात्रों को अलग—अलग लेखक के साथ अकेले काम करने का मौका मिलता है। पर इनसे मिलने से पहले उन्हें उस लेखक की लिखी हुई कम से कम एक पुस्तक पढ़ना जरूरी होता है। लेखकों को पूछने के लिए छात्रों को कुछ प्रश्नों की तैयारी करनी पड़ती है। कभी—कभी लेखक कक्षा में आकर कुछ दिनों तक उनके साथ काम करते हैं और उन्हें लिखने में मदद करते हैं। जैसे देखा गया है कि लिखने की कला कई तरीकों से विकसित होती है।

पढ़ने और लिखने के बारे में बात करते समय हमने कई विचार दिए हैं कि कक्षा में क्या किया जा सकता है।

अध्ययन की व्यूह रचना

लेखन को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने के लिए अध्ययन की व्यूह रचना :

लिखने को पाठ्यक्रम में जोड़ने के आपको कई मौके मिलेंगे, यहाँ पर कुछ उदाहरण दिये हैं, (Bruning & Holn 2001, Halonen, 2002) मेरे पढ़ने और लिखने के अनुभवों का आकलन — स्वआकलन इसको न देखते

हुए कि आप किस विषय या किस कक्षा को पढ़ा रहे हैं, आपका एक ध्येय यह होना चाहिए कि आपके छात्र न केवल कुशलता से पढ़ें या लिखें बल्कि उनमें उन्हें आनन्द भी प्राप्त हो। अपने खुद के लिखने या पढ़ने के अनुभवों के बारे में सोचिये।

1. पढ़ने में आनन्द आने का क्या कारण रहा?

2. ऐसा क्या हुआ कि पढ़ना आपके लिए मुश्किल या आनन्ददायी नहीं रहा?

3. अब आपके पढ़ने के बारे में क्या विचार है?

4. आपको पुस्तकालय अच्छा लगता है या नहीं?

5. क्या आपको लगता है कि आपके पढ़ने के कौशल को सुधारना जरूरी है?

6. आपको लिखने में रुचि कैसे उत्पन्न हुई?

7. ऐसा क्या हुआ कि आपको लिखना मुश्किल या मजेदार नहीं लगता?

8. अब आपका लिखने के बारे में क्या विचार है?

9. क्या ऐसा कुछ है जो आपके लिखने में सुधार कर सकते हैं?

अनुभवों के आधार पर आप अपने छात्रों के लिए पढ़ना और लिखना कैसे अधिक सफल तथा आनंद से पूर्ण बना सकते हैं?

बेहतर लिखने के लिए

1. लिखने के बारे में सकारात्मक विचार पैदा कीजिए – ऐसा करने के लिए छात्रों को कई मौके लिखने के देने चाहिए जिससे छात्रों को सफलता प्राप्त हो लिखने के कई विकल्प देना भी जरूरी है।
2. छात्रों को लिखने से बाँधे रखने के लिए, उनको लिखने के ऐसे मौके देने चाहिये जो उनके जीवन से जुड़े हुए हो। छात्रों को प्रोत्साहित कीजिए, लिखने के लिये उन विषयों पर जिनमें इनको अभिरुचि हो। उन्हें अलग-अलग लोगों के लिये लिखने पर विवश करना चाहिये जो दूसरे क्षेत्रों से जुड़े हो जैसे विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान आदि।

3. लिखते वक्त उनके लिए एक आधार बने ऐसा माहौल बनाइए — इन्हें प्रोत्साहित कीजिए कि वे अपने लक्ष्य निर्धारित करें और फिर योजनाबद्ध उस तक पहुँचे तथा उनके वहाँ पहुँचने में जो मदद चाहिये वो प्रदान करें। उनके लक्ष्य बहुत मुश्किल भी न हो और बहुत आसान भी न हो। उन्हें लिखने के कुछ गुर बतायें और वे उन्हें कैसे काम में लेते हैं, उस पर निगरानी रखें। उन्हें उनकी प्रगति पर प्रतिक्रियाएँ भी दें। उन्हें साथ में काम करने के लिए प्रेरित करें।
4. सीखने के लिए छात्रों से लिखवा लें — यह आप किसी भी विषय में कर सकते हैं। उदाहरणतः जीव विज्ञान में जब वे पढ़ते हैं कि कैसे अलग प्रजातियाँ अपने वातावरण से अनुकूलित होती हैं। उन्हें उसके बारे में संक्षेप में लिखने तथा अपने आप कुछ उदाहरण बताने को कहा जाए जो उन्होंने देखा हो।
5. स्वतंत्र रूप से लिखने के अवसर देना — स्वतंत्र प्रकार से उन्हें किसी भी विषय में लिखने की आज़ादी दें। ऐसे कार्यों का कोई आकार नहीं होता परन्तु उनकी समय सीमा होती है। उदाहरणतः एक कार्य अमेरिकन इतिहास में ऐसा हो सकता है कि 'अमेरिकन क्रान्ति के बारे में पाँच मिनट में कुछ लिखिए।' स्वतंत्र लेखन से उन्हें कई नए विचार मिलते हैं, नए संबंध और प्रश्न उत्पन्न होते हैं जो दूसरे तरीकों से नहीं हो पाते।
6. छात्रों को रचनात्मक लेखन कार्य दें — ऐसे कार्य उन्हें अपने जीवन और अपने आप के नये आयाम ढूँढ़ने में मददगार साबित होते हैं। इनको करने के लिए वे रचनात्मक और परिज्ञानात्मक तरीकों को अपनाते हैं। जिनमें समाविष्ट हो कविताएँ, लघु कहानियाँ या अपने खुद के अनुभवों पर लेख।
7. कुछ विधिवत लिखने के कार्य भी दें — इसके अन्तर्गत छात्रों को ऐसे मौके दें जिनमें वे अपने आपको एक लक्ष्य के साथ व्यक्त कर सकें, लिखने में सही तरीका हो तथा उनके लेख के तथ्यों का कोई ठोस आधार हो। ऐसे विधिवत लेख से उन्हें विधिवत तर्क—वितर्क करना आता है। उदाहरणतः उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों को ऐसे विषयों पर लिखने को दिया जा सकता है जैसे ग्लोबल वॉर्मिंग — भय उचित या बढ़ा-चढ़ा हुआ; 'एक निरीक्षण—फाल्कनर के लिखने के तरीके पर; या 'क्यों अधिकतर लोग पक्षपात करते हैं' ऐसे लेख छात्रों को विश्लेषण करना सिखाते हैं तथा उससे जुड़ी सामग्री का सही उपयोग और उससे जुड़े लेख या साहित्य भी बता सकते हैं।

छात्रों के साथ मिलकर उनको विषय पर किस प्रकार से लिखना है? कैसे योजना बनानी है? और समय का उपयोग कैसे करना है? ताकि ये अपना कार्य समय से पूरा कर सकें तथा उसका खाका बनाकर उसे दुबारा पढ़ें और उसकी हिज्जे और व्याकरण सम्बन्धी त्रुटियों को हटा सकें।

अभ्यास

-
- प्रभावी लेखन के लिए क्या-क्या सुझाव दिए गए हैं?
 - लिखने के बारे में सामाजिक रचनात्मक तरीके के मूलभूत विचार क्या हैं?
 - प्राथमिक व माध्यमिक कक्षाओं के बच्चों में लिखने के कौशल को विकसित करने हेतु क्या-क्या गतिविधियाँ करवायी जा सकती हैं? दो गतिविधियों के बारे में विस्तार से बताइए?
 - स्वतंत्र लेखन का क्या महत्त्व है?
 - लिखने के दौरान समूह कार्य की क्या महत्ता है?
 - अपने पुस्तकालय में उपलब्ध अच्छे लेखकों की पुस्तकें पढ़िए व बताइए उनके लेखन में आपको क्या अच्छा लगा?
-

अध्याय – 22

लिखना सिखाने के उभरते आयाम

पाठ की रूपरेखा

- परिचय
- उद्देश्य
- शीर्षक व उप-शीर्षक
 - लेखन की प्रकृति
 - लेखन के पक्ष
 - लेखन की कला : उत्पादन कौशल
 - लेखन का कौशल
 - लेखन की प्रक्रिया
 - क्या लेखन सिखाया जाना चाहिए
 - लेखन सिखाने में आने वाली समस्याएँ
 - लेखन सिखाने के विभिन्न रास्ते
 - पारंपरिक रास्ते
 - नमूना आधारित रास्ता
 - प्रक्रिया आधारित रास्ता
 - चर्चा आधारित रास्ता,
 - लिखना सिखाने के लिए कारगर अभ्यासों के नमूने

परिचय :

जब हम अपने विद्यालय के बीते हुए दिनों को देखते हैं, हम में से अधिकतर लोग सम्मिलित कक्षाओं की सुखद स्मृतियाँ नहीं रखते। हमने हमेशा उन्हें एक 'आवश्यक बुराई' समझा है या फिर एक ऐसा कार्य जिससे बचा नहीं जा सकता। जैसा कि Tricia Hedge कहती है, "अधिकतर विद्यार्थी व अध्यापक उदासपूर्वक यह स्वीकार करेंगे कि लेखन अवधि की प्रकृति कुछ ऐसी है कि वह दुख भरा, पेन्सिल चबाने वाला, पैर संचालन व पीड़ा का समय बन जाता है। अध्यापक की यादें भी लेखन को लुभावने रंगों में प्रस्तुत नहीं करती। अधिकतर सम्मिश्रण सबसे जूनियर अध्यापक द्वारा पढ़ाया जाता है और स्थायी रूप से सम्मिश्रण कार्य दिन की अंतिम अवधि में कराया जाता है जब बच्चे पूर्ण रूप से थक चुके होते हैं और घर वापस जाने को उतावले हो रहे होते हैं। सम्मिश्रण कक्षाओं को गद्य काव्य अथवा व्याकरण कक्षाओं परिवर्तित कर देने की रीति सी बन गई है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि यह महसूस किया जाता है कि "सम्मिश्रण सिखाने की कोई आवश्यकता नहीं है" एक ओर तो लेखन कौशल को निष्कासित या अनदेखा कर दिया जाता है, दूसरी ओर यह जानकर विरोधाभास होता है कि परीक्षाओं में केवल दो से तीन घंटे तक निरन्तर लिख पाने के कौशल को जाँचा जाता है। आमतौर से यह माना जाता है कि लेखन को 'सिखाया' नहीं जाता बल्कि कुदरती पकड़ा (caught) जाता है। परन्तु यह लगता है कि ऐसा होता नहीं है क्योंकि अध्यापक सदैव सीखने वाले की निम्न स्तरीय क्षमता, विशेष रूप से लेखन कौशल से संबंधित क्षमता को लेकर शिकायत करते हैं।

इस प्रकार की स्थिति अनेक प्रश्न उठाती है, जिनका जल्द-से-जल्द उत्तर देना आवश्यक हो गया है। जैसे – लेखन की प्रकृति क्या है? भाषा पाठ्यचर्या में लेखन की, सुनने, पढ़ने व बोलने के कौशलों के संबंध में क्या भूमिका है? क्या लेखन सिखाया जा सकता है? क्या लेखन सिखाया जाना चाहिए? वह कौनसा सर्वश्रेष्ठ उपागम है, जिससे लेखन कौशल का विकास हो सकता है, इनमें से किसी भी प्रश्न के बिल्कुल सही उत्तर तक पहुँचना शायद संभव नहीं है, परन्तु हम यह आशा करते हैं कि इन उत्तरों को खोजने की प्रक्रिया में हम लेखन को बेहतर रूप से समझ पाएँगे।

उद्देश्य :

- यह समझ पायेंगे कि लिखना सिखाने का कोई आसान या अचूक तरीका नहीं है।
- यह समझ पायेंगे कि लिखना सिखाने के कारगर अभ्यास क्या-क्या हो सकते हैं।
- लिखना सिखाने की नई गतिविधियाँ बना पायेंगे।

लेखन की प्रकृति :

सिंगापोर की तृतीय वर्षीय डिग्री छात्रा ने लेखन को इस प्रकार व्याख्यित किया है :

“लेखन एक संरचनात्मक प्रक्रिया है, जिसमें लेखक स्वयं को जान पाता है... यह अपने विचारों तक पहुँचने व उनके आविष्कार की प्रक्रिया है। लेखन, एक प्रकार से, अर्थ निर्माण की प्रक्रिया है।” लेखन सीखने की प्रक्रिया जीवनपर्यन्त चलती रहती है। लेखन हमें हर्षोन्नाद एवं पीड़ा से भरे, दोनों ही प्रकार के क्षण प्रदान करता है। हम लेखन के प्रति एक प्रेम-घृणा का संबंध विकसित कर लेते हैं क्योंकि लेखन एक कष्टकर सुख है।

प्रायः यह गलत मान्यता प्रचलित है कि ‘एक अच्छा वाचक, एक अच्छा लेखक भी होता है।’ परन्तु यह आवश्यक नहीं क्योंकि बोलना व लिखना सम्प्रेषण की भिन्न विधियाँ हैं। लेखन बोली की नकल से कहीं बढ़कर है। बोली/भाषा प्राकृतिक एवं मूल प्रवृत्तिक होती है। प्रत्येक सामान्य व्यक्ति अपनी मातृभाषा बोलना सीखता है; परन्तु हर कोई अपनी मातृभाषा तक में, लिखने में निपुणता प्राप्त नहीं कर पाता। प्रायः लेखक के पास सम्प्रेषण के वे साधन नहीं होते जो एक वक्ता को प्राप्य होते हैं। हेरॉल्ड रोसेन के अनुसार — लेखक एक अकेला व्यक्ति है.... लिखते समय उसका एक हाथ उसके पीछे रहता है, क्योंकि उससे शारीरिक हाव-भाव छीन लिए जाते हैं। उससे उसकी वाणी की तान भी छीन ली जाती है... उसे एकालाप करने पर मजबूर कर दिया जाता है, उसकी सहायता के लिए कोई नहीं होता जो निशब्दताओं को पूरित करे, जो उसके मुख में शब्द डाल दे या जो प्रोत्साहक आवाजें निकाले।

लेखन की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती हैं :

लेखन के पक्ष

- क्या
 - विषयवस्तु/प्रकार्य
- कैसे
 - संगठन
 - ताल
 - खाका
 - शैली

“अच्छे लेखक कौन से कौशल प्रदर्शित करते हैं?” इस प्रश्न का उत्तर देते वक्त, Tricia Hedge लेखन की ‘कला’ व लेखन के ‘कौशल’ (Craft) के बीच अंतर करती हैं जिसे नीचे विस्तार पूर्वक विवरण दिया गया है :

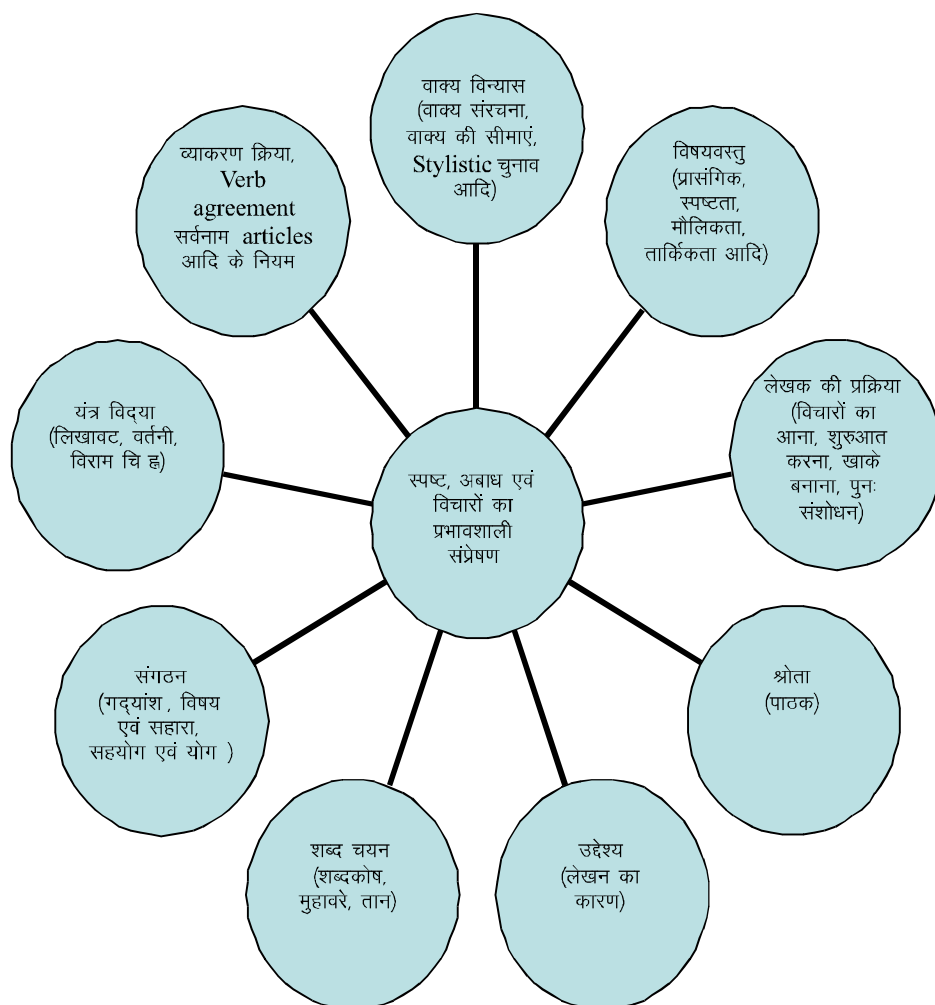
लेखन की कला : उत्पादन कौशल

1. कहने के लिए कुछ होना (उद्देश्य की समझ)
2. पाठक से परिचित होना (श्रोता की समझ)
3. प्रथम से अन्तिम खाका बनाने तक कार्यशील रहना (प्रक्रिया की समझ)
4. विचारों को विकसित करना (दिशा की समझ)

लेखन का कौशल

5. विषयवस्तु को स्पष्ट व तार्किक रूप से संगठित करना।
6. लेख को कुशलतापूर्वक हाथों से लिखना (लिखावट)
7. लेखन की परिपाटियों का प्रयोग करना, वर्तनी, खाका
8. व्याकरण का सही उपयोग
9. वाक्य संरचना का विकास करना
10. विचारों के बीच संबंध स्थापित करना।
11. बड़े हुए शब्दकोष का प्रयोग कर पाना।

Ann Raimes लेखन के विभिन्न पक्षों को रेखाचित्र द्वारा प्रस्तुत करती है :



लेखन का उद्देश्य तीन प्रमुख चरणों से बना है जिन्हें इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है :

लेखन की प्रक्रिया

पूर्व लेखन	लेखन और पुनर्लेखन	लेख का शोध करना
(योजना अवस्था)	(पहला खाका)	(अन्तिम अवस्था)

पूर्व लेखन अथवा योजना अवस्था में, लेखक विषय को पहचानता है, विचारों को उत्पन्न करता है और उनका चयन व संगठन करता है इस प्रक्रिया के दौरान वह दो प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करता/करती है।

मैं यह क्यों लिख रही हूँ? मैं यह किसके लिए लिख रही हूँ? प्रश्नों के उत्तर से वह विषयवस्तु को संगठित कर, श्रोता व उद्देश्य की समझ प्राप्त कर पाती है।

लेखन व पहले खाके के पुनर्लेखन की दूसरी अवस्था बहुत जटिल होती है। यह प्रायः विघ्नपूर्ण होता है। लेखक रुकता है, उसने जो लिखा है उसे फिर पढ़कर देखता है, उसमें संशोधन करता है, नए विचारों को लाता है व उन्हें व्यवस्थित करता है पहले चरण का केन्द्र यह था कि लेखक क्या कहना चाहता है जबकि दूसरे चरण का केन्द्र यह बन जाता है कि उस बात को किस प्रकार प्रभावशाली रूप से कहा जा सकता है।

लेख के शोध के तीसरे चरण में, लेखक अपने लेख का पाठक के परिप्रेक्ष्य से मूल्यांकन करने का प्रयास करता है। वह अन्तिम व्यवस्था करता/करती है और वर्तनी, व्याकरण व punctuation आदि की शुद्धता का संशोधन करता/करती है।

अपनी प्रगति जाँचिए

1. अपने विद्यालय/कॉलेज के किन्हीं पाँच विद्यार्थियों अथवा अध्यापकों से बातचीत कर, उनके लेखन को सीखने/सिखाने की अवधारणा को समझिए?
2. लेखन को परिभाषित करने का प्रयास कीजिए (एक वाक्य में)। आप पुस्तकों से सूचना ले सकते हैं परन्तु नकल न कीजिए।
3. भाषण व लेखन के बीच क्या अन्तर है? सारणी बनाकर, इस अन्तर को स्पष्ट कीजिए।
4. अच्छे लेखक कौन से कौशल प्रदर्शित करते हैं? किसी विद्यार्थी के सम्मिश्रण का नमूना लेकर, उन कौशलों को पहचानने (identify) का प्रयास कीजिए, जिनमें उसने निपुणता प्राप्त नहीं की है।
5. अपने किसी सहकर्मी/मित्र की सम्मिश्रण कक्षा का अवलोकन करें और देखिए यदि सीखने वाले लेखन की तीन अवस्थाओं – पूर्व लेखन, लेखन व पुनर्लेखन व संशोधन, से गुजरते हैं? उनकी कक्षा पर एक संक्षिप्त रपट लिखिए (200 शब्दों में)।

क्या लेखन सिखाया जाना चाहिए?

भाषण व लेखन के बीच के अन्तर की चर्चा करते वक्त, Raines कहते हैं : “हम यह देख सकते हैं कि हमारे विद्यार्थी, लेखन को, English as a Second Language कक्षाओं के अन्य कौशलों की तरह स्वयं नहीं सीख पाते। हमें उन्हें लेखन सिखाना पड़ता है।” असल में, श्रवण भाषा (audio-lingualism) जिसका प्राथमिक केन्द्र भाषण था, के आगमन ने लेखन को पिछले स्थान पर पहुँचा दिया। एक सीखने वाला जो अपने लेखन कौशलों को विकसित करना चाहता है, उसे भी सुनने, बोलने व पढ़ने की परिश्रमपूर्ण प्रक्रियाओं से पहले गुज़रना पड़ता

है। हमारे संदर्भ में अधिकतर अध्यापकों का यह मानना है कि सम्मिश्रण सिखाने की कोई आवश्यकता नहीं। वे हर सप्ताह विद्यार्थियों से कुछ लिखवाते हैं और समझते हैं कि यही उनके लेखन कौशलों के विकास के लिए पर्याप्त है। परन्तु उचित प्रशिक्षण व मार्गदर्शन के अभाव में, विद्यार्थी अंधेरे में ही टटोलते रह जाते हैं और लेखन के कौशल में निपुणता प्राप्त करने में असफल रहते हैं। पर्याप्त मार्गदर्शन व टिप्पणी (feedback) के अभाव में, लेखन का गहन अभ्यास भी कोई उद्देश्य पूरा नहीं करता।

“क्या लेखन सिखाया जा सकता है?” हाँ, सिखाया जा सकता है, परन्तु “कैसे लिखना चाहिए?” इस पर व्याख्यानों की शृंखला द्वारा नहीं; परन्तु कक्षा में ‘लिखना सीखने’ के लिए, अनुकूल परिस्थितियाँ बनाने से।

अधिक महत्वपूर्ण व प्रासंगिक प्रश्न यह है कि “क्या लेखन सिखाया जाना चाहिए?” दूसरे शब्दों में, हम लिखना क्यों सिखाएँ? Raines, लिखना सिखाने के तीन प्रमुख उद्देश्य बताती/बताते हैं:

- अ) लोग अक्सर, लेखन द्वारा, सम्प्रेषण करते हैं।
- ब) लेखन, हमारे विद्यार्थियों की सीखने में दो प्रकार से सहायता करते हैं : वह, विद्यार्थी द्वारा, पहले से ही सीखे हुए व्याकरणिक संरचनाएँ, शब्दकोष व मुहावरों को पुष्ट (reinforce) करता है। (It enables them to be adventurous with language of take risks).
- स) लेखन, सीखने को पुष्ट बनाने में सहायक होता है : लेखन व सोच के बीच का निकट संबंध, इसे किसी भी भाषायी क्रियाविधि का मूल्यांकन भाग बना देता है।

लेखन सिखाने में आने वाली समस्याएँ

लेखन सिखाना बहुत अच्छा लग सकता है परन्तु हमारे संदर्भ में अध्यापक इसकी साध्यता/संभवता के विस्तार पर प्रश्न उठाते हैं। हमारे संदर्भ में अनेक समस्याएँ हैं जो लेखन सिखाने के विरुद्ध कार्य करती हैं। हम इन पर तीन परिप्रेक्ष्यों से नज़र डालते हैं :

सीखने वाले के परिप्रेक्ष्य से, अध्यापक के परिप्रेक्ष्य से, प्रबन्धकर्ता के परिप्रेक्ष्य से सीखने वाले अप्रेरित होते हैं, वे सम्मिश्रण कक्षाओं को अर्थहीन और अप्रासंगिक समझते हैं। उनके अनुसार ये कक्षाएँ उन्हें परीक्षाओं की तैयारी में किसी प्रकार की सहायता प्रदान नहीं करती। यदि उन्हें चुनाव का मौका मिले तो मैं अपने समय को अधिक ‘उपयोगी’ बनाते हुए सहायता-पुस्तकों में दिये गए सारांशों को रटने में प्रयोग करेंगे। वे लिखने में किसी प्रकार के रोमांच का अनुभव नहीं करते। उनके लिए अध्यापक ही एक मात्र उद्देश्यपरक पाठक (intended reader) है, जो पूरी स्वतंत्रता से सीखने वाले की त्रुटियों की रेखांकित करने में संपूर्ण सुख प्राप्त करते हैं। यदि लेखन विनोदहीन हो तो मूल्यांकित लेखों का वापस मिलना अत्यधिक निराशाजनक होता है और बचे खुचे उत्साह को भी दबा देता है।

अधिकतर अध्यापकों को लेखन द्वारा संप्रेषण का कोई प्रशिक्षण नहीं दिया जाता : वे नवीन तकनीकों का प्रयोग करने में असुरक्षित महसूस करते हैं। इसके अलावा पाठ्यक्रम इतना भारी होता है कि वे उसे पूरा कराने की उत्सुकता में प्रायः सम्मिश्रण कक्षाओं को काव्य व गद्य कक्षाओं में परिवर्तन करने पर मजबूर हो जाते हैं। इन सभी समस्याओं को परे रखकर जो अध्यापक सम्मिश्रण सिखाना जारी रखते हैं उनके लिए भी लेखों का समय-समय पर मूल्यांकन करना कठिन हो जाता है। बहुत बड़ी कक्षाओं में, जहाँ लगभग 100 विद्यार्थियों की संख्या आती है, अध्यापकों के लिए न्यायपूर्वक मूल्यांकन करना असंभव हो जाता है। अतः वे बच्चों को न लिखवाने के आसान तरीके को अपनाने पर मजबूर हो जाते हैं।

ये समस्याएँ ऐसी नहीं हैं जिन पर विजय प्राप्त करना असंभव है। लेखन में वर्तमान शोध में सीखने

वाले—केन्द्रित उपागमों का अन्वेषण किया है। अध्यापक—केन्द्रित कार्यक्रमों का आयोजन किया जा सकता है जिससे अध्यापक अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण अपना सके और यदि अध्यापक व बच्चे हाथ मिला ले तो वे बड़ी आसानी से प्रबंधकर्ता को विश्वास में ले सकते हैं।

लेखन सिखाने के विभिन्न रास्ते

पारंपरिक रास्ते

पिछले दशक में सम्मिश्रण सिखाने व विश्लेषण करने के संदर्भ में गंभीर शोध हुए हैं। उससे पहले अधिकतर अध्यापकों का यह मानना था कि लेखन को सिखाने की कोई आवश्यकता नहीं है। असल में वे अध्यापक भी जिन्होंने लेखन सिखाने का प्रयास किया, उनका ध्यान मुख्यतः फारमेट व नियमों पर ही था। आज भी अधिकतर भारतीय स्कूलों में यह नजरिया प्रचलित है। उदाहरण के लिए, यदि एक अध्यापिका पत्र लिखना सिखाती है तो वह विद्यार्थियों को पत्र के खाके के बारे में बताती है — पता कहां लिखना है, अभिवादन, समाप्ति आदि, परन्तु पत्र का प्रमुख भाग किस प्रकार लिखा जाए, इस पर बहुत कम मार्गदर्शन दिया जाता है। इसी प्रकार संक्षिप्त लेखन में, अध्यापक संक्षेप लिखने के नियमों पर व्याख्यान दे देते हैं।

पारंपरिक रास्ते के अन्तर्गत, सीखने वाले पत्र लेखन व संक्षिप्त लेखन के नियमों पर निपुणता प्राप्त करते हैं; परन्तु वे इस ज्ञान का स्वयं के पत्र व सारांश लेखन में प्रयोग रास्ते नहीं कर पाते। वह बहुत उलझन में पड़ जाती है जब उसे निम्न ग्रेड व लाल रंग से रेखांकित अपना सम्मिश्रण वापस मिलता है। वहीं दूसरी ओर, यह रास्ता अध्यापक से बहुत कम परिश्रम की मांग करता है। वह बिना किसी तैयारी के सम्मिश्रण कक्षाओं का प्रबंध कर सकती है। वह कक्षा में सामान्य रूप से चली जाती है और उसी वक्त बच्चों के लिए कोई अभ्यास कार्य तैयार कर लेती है ऐसी स्थिति में, बच्चे, जो कुछ उन्हें आता है या जो कुछ उन्हें नहीं भी आता, सब लिख डालते हैं, और इसी प्रकार निराशा और प्रेरणाहीनता का दुष्चक्र चलता ही रहता है।

नमूना—आधारित रास्ता (The Model Based Approach)

इस रास्ते के अन्तर्गत, बच्चों को एक नमूना लेख दिया जाता है। वे लेख के तत्वों का विश्लेषण करते और फिर एक समानान्तर गद्य लिखते हैं। कुछ सीखने वाले के लिए यह नमूना बहुत सहायक होता है। वे स्वयं से लिखना नहीं जानते और ये प्रतिरूप उन्हें बहुत सहारा प्रदान करते हैं। परन्तु कुछ अन्य बच्चे नमूने से प्रायः नाखुश रहते हैं, क्योंकि इसमें उन्हें अपनी मौलिकता व सृजनात्मकता के प्रदर्शन का अवसर नहीं मिलता। अतः नमूनों का उचित रूप से प्रयोग होना चाहिए। असल में, प्रतिरूपों को पहले प्रस्तुत किया जाता है और इस उपागम को इस प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है :

प्रतिरूप का अध्ययन — तत्वों का विश्लेषण — समरूप लेख की उत्पत्ति

हम इस आगम को, नीचे दी गई रीति को अपनाकर, अधिक चुनौती भरा बना सकते हैं :

कार्य	→	सीखने वाले को वो	→	प्रतिरूप	→	सीखने वाले	→	के संशोधन
स्पष्टीकरण		लिखने देना		का		लेख से		
		जो वे लिख		अध्ययन		तुलना करना		
		सकते हैं						

बच्चों के लिए लेखन में, उसके शुरुआती संघर्ष के पश्चात्, अपने लेखन के संदर्भ में ही प्रतिरूप का प्रस्तुतीकरण अत्यधिक अर्थपूर्ण व उपयोगी होता है।

प्रक्रिया आधारित उपागम (The process-oriented approach)

लेखन को प्रायः एक चिंतन प्रक्रिया माना जाता है। सम्मिश्रण लिखते वक्त, एक लेखक विभिन्न प्रक्रियाओं से गुजरता/गुजरती है : सोचना, विचारों का संगठन, संदर्भ का ध्यान रखना व पुनर्लेखन (redrafting), परन्तु जैसा कि प्रायः माना जाता है, यह एक सीधी रेखा में चलने वाली (Linear) प्रक्रिया नहीं है। यह एक श्रेणीबद्ध प्रक्रिया है जिसमें यह आवश्यक नहीं कि विभिन्न प्रक्रियाएँ क्रमानुसार चले क्योंकि लेखक आगे पीछे जाता रहता है। उदाहरणतः – पुनः खाका बनाने की प्रक्रिया में लेखक को कोई नया विचार आ सकता है। कुशल लेखकों के पास एक लचीली योजना होती है जिसमें लिखते वक्त परिवर्तन आता रहता है।

अन्तिम उत्पादन (Final Product) – “निबन्ध, लेख-तक पहुँचने के लिए कुशल लेखक विभिन्न प्रक्रियाओं का प्रयोग करते हैं। वे योजना बनाते हैं, विचारों की उत्पत्ति करते हैं, खाके बनाते हैं, पढ़ते हैं, संशोधन व पुनर्लेखन करते हैं। हमारे बच्चे बेहतर लिखना सीख सकते हैं यदि हम इन विभिन्न प्रक्रियाएँ को समझते हुए उनका मार्गदर्शन करें। (प्रक्रिया उपागम एक अधिगमकर्ता-केन्द्रित उपागम है। यह लेखन उत्पादन का नहीं बल्कि लेखन प्रक्रिया का साया है।) इसमें शिक्षार्थियों की सक्रिय भागीदारी शामिल है और इस उपागम का केन्द्र यह नहीं है कि क्या लिखा जाए बल्कि यह है कि कैसे लिखा जाए।

चर्चा आधारित रास्ता (The interactive approach)

भाषा सिखाने का एक प्रमुख उद्देश्य यह है कि विद्यार्थी में, सिखाई जाने वाली भाषा में संप्रेषण करने की क्षमता का विकास किया जाए और संप्रेषण के अन्तर्गत चर्चा शामिल है। जब तक अंतःक्रिया न हो, तब तक उचित संप्रेषण नहीं हो सकता। चर्चा को बढ़ावा देने के लिए, हमें यह निश्चित करना होगा कि विद्यार्थी सजीव रूप से ध्यान दें और उनकी सक्रिय भागीदारी हो। चर्चा की गतिविधियाँ युगल कार्य, सामूहिक कार्य आदि का रूप ले सकती हैं। हम ऐसी क्रियाओं का ढाँचा भी तैयार कर सकते हैं, जिसमें अधिगमकर्ता किसी लेख के साथ चर्चा कर स्वयं काम करें। पारंपरिक कक्षाओं में केवल एक प्रकार की चर्चा होती है— जहाँ अध्यापक पूरी कक्षा के साथ चर्चा करता है, जिसमें अध्यापक का अत्यधिक प्रभुत्व होता है, क्योंकि सीखने वालों से यह उम्मीद की जाती है कि वे तभी बोलें जब अध्यापक उन्हें बोलने को कहें। चर्चा की कार्यों से कक्षा में आरामदायक (relaxed) वातावरण बन जाता है और सीखने वाले अपने आपको अकेला व डरा हुआ महसूस नहीं करते। उन्हें सम्मिश्रण कक्षाओं में आनंद आने लगता है। वे एक दूसरे से सीखते हैं और वे बिना किसी रुकावट के काम करते हैं। अंतःक्रिया की प्रक्रिया में, वे संप्रेषण में अबाधता हासिल कर पाते हैं। उन्हें भाषा के विभिन्न कौशलों—सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने में अभ्यास मिलता है या फिर दूसरे शब्दों में वे सुनने—बोलने और पढ़ने से लिखना सीख जाते हैं।

अपनी प्रगति जाँचें – 2

1. लेखन क्यों सिखाया जाना चाहिए?

2. आपके स्कूल के बच्चे लेखन में किन समस्याओं का सामना करते हैं?

3. आप सम्मिश्रण (Composition) कैसे सिखाते हैं? आपका तरीका किस प्रकार पारंपरिक उपागम के समान है? और किस प्रकार उससे भिन्न है?

4. किस प्रकार प्रक्रिया उपागम, प्रतिरूप केन्द्रित उपागम से अच्छा है?

चर्चा –आधारित लेखन (नमूने)

लिखना सिखाने के लिए कारगर अभ्यासों के नमूने (Sample Tasks for Teaching Writing Effectively)

इस इकाई से पहले यह सूचित किया जा चुका है कि लेखन सिखाया जा सकता है और सिखाया जाना चाहिए, हमने लेखन सिखाने के विभिन्न उपागमों पर भी दृष्टि डाली। इस भाग में हमने कक्षा में पढ़ाने के लिए कुछ व्यावहारिक मार्गदर्शन दिए हैं, किस प्रकार से अधिगमकर्ता के लेखन कौशल को विकसित करने में सहायता की जा सके। हम विभिन्न प्रकार के मार्गदर्शकों (guidance) का, जिन्हें विभिन्न स्तरों पर दिया जा सकता है, भाषायी, मनोवैज्ञानिक और संज्ञानात्मक उनका विश्लेषण करेंगे। भाषायी स्तर पर, यह आवश्यक है कि हम सीखने वालों की शब्दकोष वृद्धि में, व्याकरणिक सटीकता प्राप्त करने में व लेख निर्माण में संबंध बनाने में सहायता करें। मनोवैज्ञानिक स्तर पर, हमें सीखने वालों को श्रोता, उद्देश्य व निर्देश की समझ प्रदान कर प्रेरित करना चाहिए। संज्ञानात्मक स्तर पर हमें विचार, संकेत, रूपरेखा आदि का सहारा प्रदान कर सीखाने वालों को सहायता देनी चाहिए। निम्नलिखित भाग में हम, उदाहरण सहित, कक्षा में लेखन सिखाने के कुछ आधारभूत मार्गदर्शकों पर चर्चा करेंगे।

पहला सिद्धान्त (The first Principle)

इसमें लिखने में मदद के लिए शुरुआती तस्वीर के लिए तालिका प्रक्रिया चिह्न आदि दिए जाते हैं। नीचे कुछ अलग-अलग स्तर के लिखने के कार्य दिए गए हैं जो सीखने वाले को एक विवरणात्मक पैराग्राफ लिखने के लिए तैयार करता है।

कार्य 1 (Task 1)

आगे दिए गए प्रश्नों के उत्तर के आधार पर, डाकिए का एक विवरण दीजिए—

- (अ) डाकिया क्या पहनता है?
- (ब) वह पत्र कहाँ रखता है?
- (स) वह यात्रा कैसे करता है?
- (द) वह तुम्हें कैसे सूचित करता है कि तुम्हारे लिए पत्र आया है?
- (य) वह कौन-कौन सी विभिन्न वस्तुएँ लाता है।
- (र) डाकिए का कार्य आसान होता है या कठिन?

कार्य 2 (Task 2)

नीचे दिए गए चित्र को देखकर, चित्र में बने व्यक्ति का विस्तृत विवरण दीजिए। आप निम्नलिखित बातें सम्मिलित कर सकते हैं:

- (अ) कद
- (ब) रंग-ढंग (Complexion)
- (स) पहनावा
- (द) लक्षण (features)

- (य) मुख के भाव
(र) कोई भी ऐसी चीज़ जो आपको strike करें

कार्य 3 (Task 3)

आपके दादाजी पिछले तीन दिनों से गुमशुदा है। इसके संदर्भ में टेलीविज़न के लिए अपने दादाजी का विस्तृत विवरण दीजिए। निम्नलिखित संकेतों का प्रयोग कीजिए:

नाम, आय, Physical appearance, पहचान चिह्न पहनावा, आदतें (Mannerism) आदि।

कार्य 4 (Task 4)

एक प्रसिद्ध व्यक्ति— जो राजनीति, खेल या अभिनय जगत से संबंध रखता हो, उसका विवरण दीजिए—

हम यह देख सकते हैं कि मार्गदर्शन या सहायता प्रदान करने के संदर्भ में ये चार कार्य श्रेणीबद्ध हैं। पहला कार्य सीखने वालों को बहुत अधिक मार्गदर्शन प्रदान करता है, जबकि अंतिम कार्य बहुत चुनौतीपूर्ण क्योंकि इनमें सीखने वालों को बहुत कम सहायता प्रदान की जा रही है।

अभ्यास

-
- आपकी लिखने की कक्षाओं में कौन-सी विभिन्न प्रकार की अंतक्रियाएँ होती हैं? प्रत्येक का एक उदाहरण दें।
-



लेखन के विविध प्रकार

पाठ की रूपरेखा

- परिचय
- उद्देश्य
- शीर्षक व उप-शीर्षक
 - लेखन के विभिन्न प्रकार
 - फार्म भरना
 - सूचना हस्तांतरण
 - सम्मिश्रण
 - डायरियाँ
 - संवाद
 - पत्र
 - गद्यांश/निबंध
 - रिपोर्ट्स
 - सारांश

परिचय :

पिछली इकाई में हमने लेखन प्रक्रिया का सामान्य रूप से अध्ययन किया। अब हम लेखन के विशिष्ट रूपों का अध्ययन करेंगे, जिनकी जरूरत हमें स्कूल में पढ़ाते समय होती है। लेखन के संदर्भ में आज शोध काफी उन्नत है, आए दिन सम्मिश्रण पढ़ाने के नयी रुचिकर सामग्री प्रकाशित होती रहती है। उपयुक्त मार्गदर्शन के साथ इस सामग्री को आप कक्षा में प्रयोग कर सकते हैं। यह निश्चित है कि इनके माध्यम से कक्षाओं को जीवंत व उपयोगी बनाया जा सकता है।

उन दिनों जब मैं स्कूल में पढ़ती थी, सम्मिश्रण कक्षाएँ काफी भयावह (डरा देने वाली) होती थीं। वह सब कुछ जो हमें लिखने को कहा जाता था उनमें मुख्य था निबंध, सार, कविताओं की विस्तृत व्याख्या। यह स्वाभाविक था कि रोजमर्रा के जीवन में हम इनका उपयोग नहीं कर पाते। जो भी हमने कक्षा में सीखा, बाहरी जीवन में उसकी बहुत कम प्रासंगिकता है। और तो और हमारे अध्यापक इस कहावत में विश्वास रखते थे कि “जितना ज्यादा लिखोगे, उतना बेहतर तुम लिख पाओगे।” बहुत कम मार्गदर्शन दिया जाता था, दरअसल किसी ने भी सम्मिश्रणी को गंभीरता से नहीं लिया। “सम्मिश्रण सिखाने” के विचार पर अध्यापक हँसते थे। अन्ततः लिखना कैसे सिखाया जाए? क्या कोई लिखना स्वयं ही सीखता है? परन्तु वर्तमान समय में परिदृश्य (scenario) में बहुत परिवर्तन हुआ है। वर्तमान में ELT विशेषज्ञ मानते हैं कि लिखना सिखाया जा सकता है और लिखना सिखाया जाना चाहिए।

इस इकाई में, हम लेखन के गैर-पारम्परिक शैलियों (प्रकारों) पर चर्चा करेंगे – डायरियाँ, फार्म भरना, सूचना हस्तांतरण आदि के साथ-साथ पारम्परिक शैलियों (प्रकारों) जैसे गद्यांश, निबंध और पत्र आदि के बारे में भी चर्चा करेंगे। सर्वप्रथम हम लेखन के इन प्रकारों या शैलियों के मुख्य अभिलक्षणों की बात करेंगे फिर हम कार्यों के नए प्रकारों के प्रतिरूपों (Sample) को प्रस्तुत कर सकते हैं। बाद में आप इसी प्रकार के (task) कार्यों की रचना स्वयं भी कर सकते हैं। इस इकाई के अंत में दी गयी संबंधित सामग्री का प्रयोग भी आप कर सकते हैं।

उद्देश्य :

- लिखने की अलग-अलग किस्में और इनमें फर्क कहाँ-कहाँ है को समझ पायेंगे।
- लिखना सिखाने के विभिन्न प्रकार के अभ्यासों को समझ पायेंगे।

लेखन के विभिन्न प्रकार**फार्म भरना**

जीवन में विभिन्न अवसरों पर, हमें विभिन्न उद्देश्यों के लिए फार्म भरने की जरूरत पड़ती है। उदाहरण—प्रार्थना पत्र (Application form) फार्म, रेल में आरक्षण के लिए फार्म, मनीआर्डर फार्म, चेक आदि। बहुत से लोग फार्म भरते समय असहज महसूस करते हैं, और सदैव किसी न किसी की मदद की उन्हें जरूरत होती है। अधिकतर हमारा फार्म खारिज कर दिया जाता है, अगर वह उचित रूप से भरा नहीं होता। इसे एक मूलभूत लेखन के कौशल के रूप में देखा जाता है, जिसके अन्तर्गत शब्दकोश भी शामिल है और निपुणता भी जरूरी है।

आपको आश्चर्य होगा कि बच्चों को इस कौशल की स्कूल में आवश्यकता होती है। हाँ, उन्हें होती है। और यदि हम उन्हें कक्षा एक से ही प्रशिक्षित करें, तो वे बहुत ही आत्मविश्वास का अर्जन कर पाएँगे। अब हम कुछ सरल कार्यों (task) को देखेंगे जिसमें इस कौशल की जरूरत पड़ती है।

कार्य 1 : (Task 1)

यहाँ एक लेबल दिया गया है, जिसे आप अपनी इतिहास की कॉपी पर चिपकाना चाहते हैं इसे भरिए।

नाम :

कक्षा :

स्कूल :

विषय :

अब प्राइमरी स्कूल की एक छात्रा के लेबल पर नज़र डालिए।

नाम : सुप्रिया श्रीधर

कक्षा : तीसरी बी

स्कूल : शासकीय प्राथमिक शाला, कचना

विषय : इतिहास

सुप्रिया एक छोटी लड़की है। उसके पिताजी का नाम श्रीधर है वह 'बी' कक्षा में पढ़ती है। इतिहास उसके विषयों में से एक है।

अब अपने पड़ोसी की कॉपी के लेबल पर नज़र डालिए और उसके बारे में चार वाक्य लिखिए।

कार्य 2 : (Task 2)

राकेश सिन्हा 12 वर्ष का है। उसका जन्म 10 मई, 1983 को हुआ था। उसके पिता रमेश सिन्हा एक डॉक्टर हैं। वे मेघराज सेठी मार्ग, नं. 10, बम्बई में रहते हैं। राकेश आदर्श विद्याशरन में पढ़ता है। वह क्रिकेट व शतरंज खेलता है। चित्रकला और टिकट एकत्रित (Stamp collection) करने में उसकी रुचि है। राकेश लोकल चिल्ड्रन क्लब में शामिल होना चाहता है। क्या निम्नलिखित आवेदन पत्र को भरने में आप उसकी सहायता कर

सकते हैं?

दि अन्धेरी चिल्ड्रन्स क्लब

1. नाम
2. उम्र
3. जन्मतिथि
4. पिता का नाम
5. पिता का व्यवसाय
6. घर का पता
7. स्कूल का नाम
8. खेल
9. रुचियाँ

कार्य 3 : (Task 3)

जॉन स्मिथ को उनके जन्मदिन पर निम्नलिखित तार मिला। इसके बारे में तीन वाक्य लिखें।

सेवा में,

जॉन स्मिथ

7, कस्तूरबा मार्ग,

नई दिल्ली – 110028

संदेश : जन्मदिन मुबारक

प्रेषक : अहमद खान

20, जवाहरलाल नेहरू रोड

मद्रास – 600017

1.2.2 सूचना हस्तांतरण

सूचना हस्तांतरण से आपका क्या अर्थ है? सामान्यतः इसका अर्थ है – सूचना का एक रूप से दूसरे रूप में हस्तांतरण उदाहरण के तौर पर ग्राफ के आधार पर गद्यांश लिखना या किसी दिए गए आँकड़ों के आधार पर तालिका या सारिणी बनाना। जीवन के हर स्तर पर हम इस कौशल का प्रयोग करते हैं। जहाँ गैर मौखिक सम्प्रेषण जैसे सारिणी या पार्ट का मौखिक सम्प्रेषण (गद्यांश या रिपोर्ट) में परिवर्तन होने से सम्मिश्रण कौशल विकसित होता है, वहीं इसकी विपरीत प्रक्रिया सीखने वाले की समझ के कौशल को विकसित करने में सहायता प्रदान करती है। यह एक महत्वपूर्ण अध्ययन कौशल है, जो बच्चों के विभिन्न विषयों जैसे मैथैटिक्स (गणित),

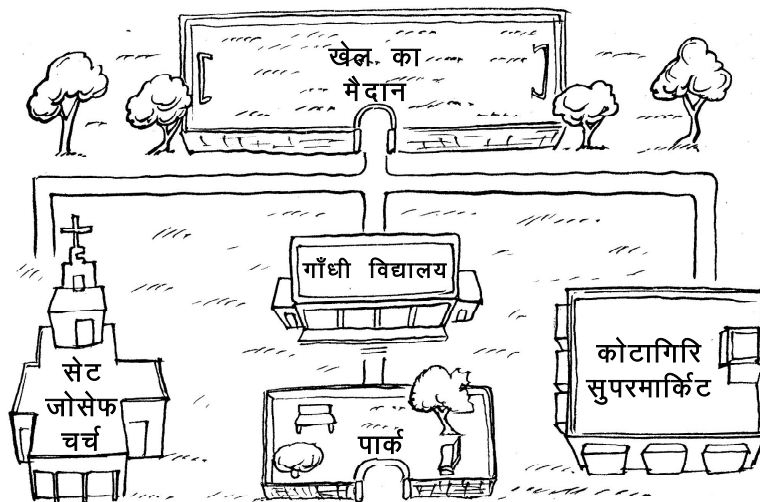
विज्ञान, इतिहास आदि के अध्ययन में उपयोगी सिद्ध होगा। दरअसल, फार्म भरना भी एक प्रकार का सूचना हस्तांतरण है।

कार्य 1 : (Task 1)

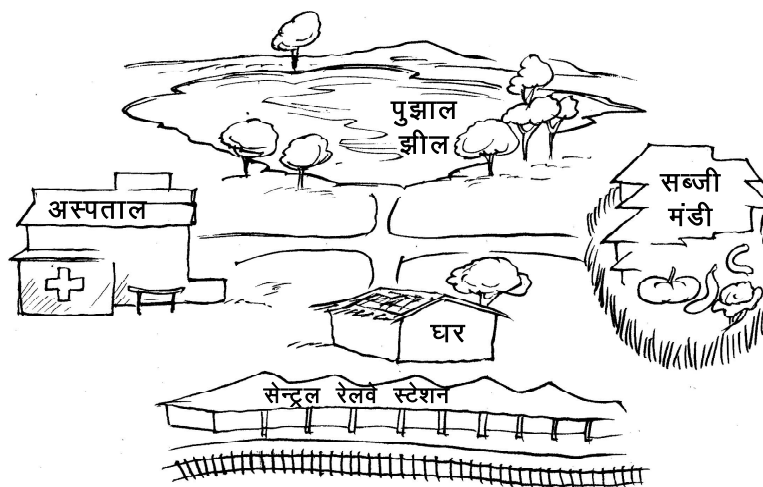
दीपिका के स्कूल का निम्नलिखित विवरण पढ़ें।

मैं गांधी विद्यालय में पढ़ती हूँ। मेरे स्कूल के सामने एक बहुत बड़ा पार्क है मेरे स्कूल के पीछे एक सामूहिक खेल का मैदान है मेरे स्कूल की बाईं तरफ प्रसिद्ध सुपरमार्केट कोटागिरि है, मेरे स्कूल की दाईं तरफ सेंट जोसेफ चर्च है।

अब यहाँ स्कूल का रेखाचित्र दिया गया है।



अब, सुरेश चौधरी के घर के आसपास की व्यवस्था देखिए, और उस पर एक गद्यांश लिखिए।



कार्य 2 : (Task 2)

निम्नलिखित बॉक्स को देखिए और कॉफी बनाने के विधि का वर्णन कीजिए।

एक कप पानी को उबालिए	कॉफी मिलाइए	दूध मिलाइए	स्वादानुसार चीनी मिलाइए
-------------------------	----------------	---------------	----------------------------

कार्य 3 : (Task 3)

होटल द्वारका के मैन्यू कार्ड को पढ़िए –

इडली	—	3.00 रु.
रवा डोसा	—	6.00 रु.
मसाला डोसा	—	7.00 रु.
पुरी पोटैटो	—	5.00 रु.
पोंगल	—	4.00 रु.
समोसा	—	2.50 रु.
बड़ा	—	4.00 रु.
कॉफी	—	3.50 रु.
चाय	—	2.00 रु.

राजीव मेनन ने निम्नलिखित चीजों का आर्डर दिया –

1 प्लेट इडली	:	3.00 रु.
1 प्लेट बड़ा	:	4.00 रु.
1 चाय का कप	:	2.00 रु.

उसके दोस्त किशोर और रहीम कुछ अलग चीजें खाना चाहते हैं, कोई भी नाश्ते के लिए 10 से अधिक रु. खर्च करना नहीं चाहते हैं। क्या आप उनके लिए आर्डर लिख सकते हैं।

अपनी प्रगति को जानिए 1

- उन विभिन्न फार्मों की सूची तैयार कीजिए जो बच्चे अपने स्कूली जीवन में भरते हैं।

- अपने शिष्यों की विज्ञान/इतिहास/गणित की किताब का जिक्र कीजिए। उनमें से किसी भी सारिणी/ग्राफ/चित्र का चयन कीजिए और एक हस्तांतरण अभ्यास की कार्यशैली तैयार कीजिए।

1.2.3 सम्मिश्रण

चित्र हमेशा से ही शिक्षकों के बीच विख्यात रहे हैं, एन्ड्रयू राइट भाषा सिखाने में चित्रों की भूमिका की सूची देते हैं।

1. चित्र बच्चों (विद्यार्थियों) को प्रेरित करते हैं। वे उन्हें ध्यान देने तथा भाग लेने हेतु प्रेरित करते हैं।
2. चित्र वास्तविक जीवन को कक्षा में लेकर आते हैं तथा भाषा सीखने के लिए एक संदर्भ प्रस्तुत करते हैं।
3. चित्रों पर विभिन्न प्रतिक्रियाएँ संभव हैं; उनका वस्तुनिष्ठ रूप में वर्णन किया जा सकता है या आत्मनिष्ठ रूप से/तरीके से प्रतिक्रिया किया अथवा समझा जा सकता है।
4. चित्र उद्दीपन दे सकते हैं और सूचना प्रदान करते हैं, जिनका इस्तेमाल वार्तालाप, कथा वाचन (story-telling) और चर्चा के संदर्भ में किया जा सकता है।

चित्रों को तैयार करना व व्यवस्थित करना आसान है। वे रुचिपरक होती हैं और भाषा के अर्थपूर्ण व विशुद्ध प्रयोग का अवसर प्रदान करती हैं।

चित्र बच्चों के साथ सभी स्तरों पर प्रयोग किए जा सकते हैं – कक्षा एक-दो से लेकर, बच्चों से वयस्क तक। एक बार यदि अध्यापक चित्रों का संग्रह कर लें और समझ ले कि उनका कैसे प्रयोग करना है, तो बाद में तैयारी के लिए बहुत कम समय की आवश्यकता होगी। एक बार यदि अध्यापक चित्रों का एक बैंक (Picture bank) बना ले तो वह आवश्यकतानुसार उनमें वृद्धि कर सकता है। भारत जैसे विकासशील देश जहाँ आधुनिक उच्च तकनीक से बने शैक्षिक उपकरण व्यावहारिक नहीं हैं, वहाँ चित्र एक आर्थिक और रुचिपरक साधन प्रस्तुत करते हैं। अब हम कुछ ऐसे कार्यों पर नज़र डालेंगे जहाँ चित्र, लेखन कौशल को विकसित करने में प्रयोग किए जा सकते हैं।

कार्य 1 : (Task 1)

यह कार्य छोटे बच्चों/नौसिखिए के लिए उपयुक्त है। बच्चों को चित्रों का मिश्रण दिया जा सकता है जो अपने आप में कहानी कहता हो। फिर हम प्रत्येक चित्र से मिलता वाक्य लिख सकते हैं। अब हम बच्चों को चित्रों व शब्दों का मिलान करने को कह सकते हैं और फिर सही क्रम में कहानी का पुनर्निर्माण करने को कह सकते हैं। उदाहरण जैसे—

- (क) चोर कार चलाकर दूर चले गए।
- (ख) वह स्ट्रेचर पर लेटा।
- (ग) एक चोर ने बैंक से 10,000/- रु. चुराए।
- (घ) अस्पताल का वार्ड ब्याय उसे ऑपरेशन थियेटर में लेकर गया।
- (ङ) पुलिस चोर के पीछे भागा।
- (च) वह उसे अस्पताल में ढूँढ़ने गया पर वह ढूँढ़ नहीं पाया।
- (छ) वह अस्पताल के पिछले दरवाजे से भाग गया।

कार्य 2 : (Task 2)

यह कार्य विभिन्न स्तरों पर प्रयुक्त किया जाता है। हमें यहाँ ऐसे चित्रों की जरूरत है जिसमें कई चीज़ें गलत हों।

उदाहरणतः एक आदमी ने एक पैर में जूता पहना और दूसरे पैर में चप्पल पहनी। एक औरत ने कंधे वाला बैग ले रखा है, जिसमें कोई पट्टी नहीं है। वहाँ एक घड़ी है, जिसमें कोई सुई नहीं है। वहाँ एक सूचना है, जो उल्टी लगी है।

बच्चों को चित्रों को ध्यानपूर्वक देखना है और गलतियों को पहचानना है।

कार्य 3 : (Task 3)

आजकल बच्चे (क्यों, यहाँ तक वयस्क भी) कॉमिक्स पढ़ना पसंद करते हैं। हम एक कॉमिक्स की कहानी ले जा सकते हैं और उसमें से शब्द मिटाकर बच्चों को स्वयं से कहानी सुनाने के लिए कह सकते हैं। यदि आप कार्य को सरल रखना चाहते हैं, तो आप शब्दों को लिखा रहने दे सकते हैं और बच्चों को कहानी को कथावाचन रूप में दुबारा लिखने को कह सकते हैं।

कार्य 4 : (Task 4)

एक रुचिपरक चित्र अखबार व पत्रिका से बच्चों को दिया जा सकता है। और उन्हें इससे कहानी बनाने को कहा जा सकता है। बाद में वे अपनी कहानी की तुलना मौलिक रिपोर्ट से कर सकते हैं।

डायरियाँ

डायरी एक निजी लेखा-जोखा होती है। जिस तरह हम सामान्यतः अंग्रेजी लिखते हैं, डायरी लिखने का तरीका उससे भिन्न होता है। हमें पूरे वाक्य लिखने की जरूरत नहीं होती। और न ही हमें वाक्यों की निरन्तरता के प्रति चिंतित होना पड़ता है। विचार एवं भावनाएँ प्रायः असंबंधित रूप से अभिव्यक्त होते हैं, जैसे-जैसे वे मानस से गुजरते हैं।

डायरी की भाषा तार की भाषा के समान होती है।

कार्य 1 : (Task 1)

नीचे एक पन्ना शीला की डायरी से दिया गया है।

7 बजे उठी – मम्मी घर पर नहीं – दादी ने कहा कि वह अस्पताल गई है। मैं चिंतित हूँ। पिताजी 8 बजे घर आते हैं— मुझे स्कूल छोड़ते हैं। मैं अस्पताल जाना चाहती हूँ— पिताजी ना कहते हैं – शाम को पिताजी मुझे स्कूल से लेते हैं— हम दोनों खुश होते हैं— मुझे दो 5 Star देते हैं— हम सीधे अस्पताल जाते हैं— माँ को देखकर कितना अच्छा लगता है— वहाँ मेरा छोटा भाई है। बहुत मुलायम और लाड़ला— बिल्कुल एक गुड़िया की तरह। मैं उसे जो जो कहकर पुकारने वाली हूँ। वो मुझे अक्का पुकारेगा – आज मेरे जीवन का सबसे खुशी का दिन है।

निरन्तर गद्यांश के रूप में इस डायरी को दुबारा लिखे।

कार्य 2 : (Task 2)

जिस दिन आपका परिणाम निकला था और आपको पता चला था कि आप अगली कक्षा में पहुँच गए हैं, उस दिन की डायरी लिखिए।

कार्य 3 : (Task 3)

आपके हेडमास्टर अपने दैनिक क्रियाकलाप के बारे में डायरी लिखते हैं। वे आपके स्कूल के वार्षिक

दिवस समारोह के दिन क्या लिखेंगे।

आप इस तरह शुरू कर सकते हैं

3 pm मेहमानों के लिए चाय

3.30 pm

4 pm

अपनी प्रगति को जानिए 2

1. भाषा की कक्षा में चित्रों का प्रयोग करने का क्या लाभ है?

2. डायरी लिखना तार लिखने से भिन्न कैसे है?

3. किसी भी चित्र का चयन करें और सोचें कि उसे सम्मिश्रण सिखाने हेतु कैसे प्रयोग करें?

4. अपने छात्रों को एक डायरी बनाने को कहें जिसमें वो अपने हिन्दी कक्षा के सम्बन्ध में प्रतिक्रियाएँ व्यक्त करेंगे। उन्हें सप्ताह के अंत में एकत्रित कीजिए। वे आपको आपके बारे में, शिक्षण के बारे में क्या बताते हैं?

संवाद

संवाद अंग्रेजी के मौखिक रूप से सम्बन्धित है। अंग्रेजी के मौखिक रूप का निरीक्षण करना बहुत कठिन है, इसलिए इन्हें अंग्रेजी के सम्मिश्रण पाठ्यक्रम में एक भाग के रूप में सम्मिलित किया जाता है। संवाद इतने सरल हो सकते हैं जितने कि दिन प्रतिदिन की बातचीत। वे बहुत ही कल्पनात्मक व कलात्मक हो सकते हैं। जैसे कि साहित्यिक लेख— मुख्य उपन्यासों में। प्राथमिक व माध्यमिक स्तरों पर सरल संवादों पर ही ध्यान केन्द्रित कर सकते हैं।

संवाद को क्या प्राकृतिक बनाता है – जो हमारे दिन प्रतिदिन की बातचीत के तरीके के समान है।

(क) संवाद में जरूरी नहीं कि पूर्ण वाक्य हो।

(ख) यह बहुत है कि यदि सरल शब्दावली का उपयोग किया जाए।

(ग) इसके बहुत से संक्षिप्त चिह्न प्रयोग किये जाते हैं, उदाहरणतः Can't, don't, etc.

(घ) बातचीत के हाव-भाव शामिल किए जा सकते हैं। उदाहरणतः tummy, oops, wow, dad, etc.

कार्य 1 : (Task 1)

नीचे एक माता और पुत्र के बीच अपूर्ण वार्तालाप दी गई है। रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए व संवाद को पूरा कीजिए।

पुत्र : माँ, मेरी कक्षा घूमने के लिए शिमला जा रही है।

माता :

पुत्र : मई में, गर्मियों की छुट्टियों के दौरान

माता :

पुत्र : दस दिन के लिए। दो अध्यापक हमारे साथ जा रहे हैं।

माता :

पुत्र : ज्यादा नहीं – सिर्फ 500 रु. प्रति व्यक्ति। माँ, क्या मैं जा सकता हूँ?

माता :

पुत्र : धन्यवाद माँ। तुम कितनी प्यारी हो, है ना माँ।

कार्य 2 : (Task 2)

नीचे अहमद और शरीफ के बीच की गई टेलीफोनिक वार्तालाप दी गई है। पूरे वार्तालाप की पुनर्रचना कीजिए।

अहमद :

शरीफ :

अहमद : और तुम्हें पता है, आज गणित के अध्यापक भी छुट्टी पर थे।

शरीफ : तुम्हें दो पीरियड खाली मिले? इसका मतलब यह कि मेरा ज्यादा नहीं छूटा।

अहमद : ओह, हमारा समय बहुत अच्छा बीता। मैंने कितना चाहा था कि तुम आज स्कूल आते। तुम और तुम्हारा बुखार।

शरीफ :

अहमद :

कार्य 3 : (Task 3)

कल्पना कीजिए कि आप अपने स्कूल की ओर जा रहे हैं। एक अनजान व्यक्ति आप से रेलवे स्टेशन का रास्ता पूछता है। अपने व अनजान व्यक्ति के बीच हुए संवाद को लिखिए।

कार्य 4 : (Task 4)

सामूहिक सम्मिश्रण – एक चित्र को इस तरह से प्रदर्शित किया जाए ताकि पूरी कक्षा उसे देख सके। प्रत्येक समूह इसका अध्ययन करे और फिर 5 मिनट का नाटक बनाए जो कि चित्र के साथ समाप्त हो। फिर वे नाटक को पूरी कक्षा के सामने प्रस्तुत करे। दूसरे अन्य समूह नाटक देखें और क्योंकि उसी चित्र का निरूपण किया जाता है, बच्चों की रुचि नाटक में बनी रहती है।

पत्र

हम सभी विभिन्न कारणवश पत्र लिखते हैं। पत्र हमें उन लोगों से सम्प्रेषण करने का सामर्थ्य प्रदान करते हैं, जो हमसे दूर हैं। कुछ उद्देश्य जिनके लिए हम पत्र लिखते हैं, वे हैं : सूचना देने हेतु, निमंत्रण देने हेतु, जाँच करने हेतु, शिकायत करने हेतु, बधाई देने हेतु, सहानुभूति जताने हेतु आदि प्रत्येक पत्र में एक लेखक, एक पाठक व एक परिस्थिति होती है। पत्र दो प्रकार के होते हैं : औपचारिक पत्र मुख्यतः अपरिचितों के बीच व्यावसायिक उद्देश्य से लिखे जाते हैं। अनौपचारिक पत्र के अन्तर्गत सभी दोस्तों परिवार के सदस्यों और सम्बन्धियों के बीच पत्र व्यवहार आता है।

पत्र के महत्वपूर्ण भाग :

लेखक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता का पता, सेल्युटेशन (प्रणाम), पत्र का प्रधान अंश (body of the letter), भेजने वाले का नाम, हस्ताक्षर और लेखक का पूरा नाम हस्ताक्षर के नीचे।

एक अनौपचारिक पत्र के मुख्य भाग :

लेखक का पता, दिनांक, सेल्युटेशन (प्रणाम), पत्र का प्रधान अंश, (subscription) भेजने वाले का नाम, हस्ताक्षर।

अब हम पत्र लेखन के कुछ रुचिपूर्ण कार्यों पर नज़र डालेंगे।

कार्य 1 : (Task 1)

एक पेन फ्रेंड को चित्र पोस्ट कार्ड पर पत्र

दिनांक :	
प्रिय जेनी, मेरा नाम रानी है, क्या तुम मेरी पेन फ्रेंड बनोगी? मेरी आयु 10 वर्ष है। मैं कक्षा 5 में पढ़ती हूँ। मेरा एक भाई है। मेरे पिताजी एक इंजीनियर है और मेरी माँ एक शिक्षिका है। मुझे तैराकी व साइकिल चलाना पसंद है। कृपया मुझे अपने बारे में लिखें। तुम्हारी स्नेही रानी	सुश्री जेनी गिलपिन 7, मेफिल्ड रोड, इडिनबर्ग, ग्रेट ब्रिटेन

यह रानी का उसकी पेन फ्रेंड जेनी को पहला पत्र है। अब ऐसा ही पत्र अपने पेन फ्रेंड को लिखिए।

कार्य 2 : (Task 2)**पत्रों का मिश्रण**

आशा के द्वारा अपनी माँ को लिखे गए इस पत्र को पढ़िए। आशा अपने हॉस्टल के जीवन का विवरण लिख रही है। पर गद्यांश मिश्रित रूप में है। उन्हें सही क्रम में लगाइए।

- रात को हमें खाने में चपाती और दूध का एक गिलास मिलता है। हम रात को दस बजे तक पढ़ते हैं। फिर लाइट बंद करनी होती है। आप जानते हैं न, ये मेरे लिए कितना कठिन है। मैं घर पर देर रात तक कितनी सारी फिल्में देखती थी।
- हम चार हॉस्टल में एक ही कमरे में साथ रहते हैं। सबके पास एक चारपाई, एक मेज़, एक डेस्क और एक अलमारी है। शर्मीला (कलकता से), सपना (दिल्ली से) और नंदिता (केरल से) मेरे साथ कमरे में रहती है। मैं कुछ बंगाली और मलयालम भी सीख रही हूँ। हम रात को देर तक बैठते हैं, और बातें करते हैं। हम सब कुछ एक साथ ही करते हैं।
- प्रिय, माँ, उम्मीद करती हूँ कि आपके साथ सब कुछ ठीक है। आपने मेरे हॉस्टल के बारे में पूछा था। अब मैं आपको अपने विवरण से बोर करूँगी (उबाऊ)।
- क्या आप विश्वास कर सकती हैं, आपकी प्रिय बेटी सुबह पाँच बजे उठती है? हाँ, हॉस्टल ने मुझे बहुत बदल दिया है। अब 6 बजे तक बिस्तर पर कॉफी नहीं मिलती, पर पागलों की तरह स्नानघर की तरफ भागती हूँ। अगर हम 8 बजे तक भोजनकक्ष में नहीं पहुँचते, तो कोई नाश्ता नहीं। ऐसा मत सोचना कि आपकी बेटी पीड़ा से गुज़र रही है। मुझे आपको अपने दोस्तों के बारे में जरूर बताना चाहिए।

कार्य 3 : (Task 3)

सुरेश ने अपने हेडमास्टर को एक पत्र लिखा। जब उसके हेडमास्टर ने वह पत्र पढ़ा तो बहुत गुस्सा हुआ। क्यों? क्या आप इसको सही करने में सुरेश की मदद कर सकते हैं?

मेरे प्रिय हेडमास्टर,

आशा है आप ठीक होंगे। मैं बहुत अच्छा महसूस नहीं कर रहा हूँ। मुझे बुखार है। माफ कीजिए, मैं आज स्कूल नहीं आ सकता। कृपा करके मुझे माफ करें। क्या, मैं आज एक छुट्टी ले सकता हूँ।

कार्य 4 : (Task 4)**अंतरिक्ष से एक पत्र**

यह पत्र मार्स की एक लड़की का अपने पृथ्वी के दोस्त राजेश को लिखा गया है।

5, सेन्टर स्ट्रीट
रेड कॉलोनी
मार्स (मंगल)

प्रिय राजेश,

आपके पत्रों और तस्वीरों के लिए धन्यवाद। उन्हें देखकर बहुत अच्छा लगा। आप कितने अलग दिखते हैं। आप मेरे बारे में जानना चाहते थे। मेरा पूरा नाम बीपेनटेनिया है। मेरे बाल लाल रंग के हैं और चेहरा हरे रंग का। क्या आपको पता है कि मुझे अपने स्कूल की सौंदर्य प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार मिला है।

आप अपने दो हाथों से कार्य को कैसे संभालते हैं? हम सबके पास चार हाथ और चार आँखें होती हैं—हम चारों दिशाओं में एक ही समय पर देख सकते हैं। हम प्रचुर मात्रा में फल और फूल खाते हैं। हम सिर्फ दूध पीते हैं।

हम मार्टिना बोलते हैं। हमारे गाने सुन्दर हैं। नववर्ष के दिन, हम सारे दिन गाते और नाचते हैं। हम उपहारों का भी आदान-प्रदान करते हैं।

कृपा करके जल्द ही दुबारा लिखना और अपने बारे में और भी बताना।

प्यार के साथ
बीपेनटेनिया

अपनी प्रगति को जाँचिए – 3

1. कम से कम पाँच संदर्भ सोचिए जिनका स्कूलों में मुख्यतः सम्प्रेषण हेतु प्रयोग किया जाता है, उदाहरणतः एक अध्यापक एक बच्चे की प्रगति के बारे में चर्चा कर रहा है।

2. कम से कम, पाँच ऐसे अवसर ढूँढ़िए जिनमें विद्यार्थियों को पत्र लिखने की जरूरत होती है, उदाहरणतः छुट्टी के लिए एक पत्र।

3. प्रत्येक पर एक कार्य की रूपरेखा तैयार कीजिए –

(क) संवाद सिखाना

(ख) पत्र लेखन सिखाना

गद्यांश/निबंध

गद्यांश पत्र, निबंध, रिपोर्ट आदि के निरन्तर लेखन का एक भाग है। इसलिए यह आवश्यक है कि हम अपने शिष्यों को अच्छा गद्यांश लिखना सिखाएँ। अच्छे लिखे हुए गद्यांश की निम्न विशेषताएँ हैं—

- (क) इसमें एकबद्धता होती है : प्रत्येक गद्यांश एक निश्चित विचार से सम्बन्धित होता है। सामान्यतः प्रत्येक गद्यांश का एक विषय-वाक्य होता है, उदाहरणतः वह वाक्य जिसमें गद्यांश का मुख्य विचार होता है।
- (ख) गद्यांश पूर्णतः व्यवस्थित होता है : उसकी निश्चित योजना होती है, गद्यांश को संगठित करने के विभिन्न प्रकार होते हैं, उदाहरणतः — किसी विचार को उदाहरणीकृत करना, वाचन अर्थात् घटनाओं का क्रमानुसार संगठन करना, तुलना करना — अन्तर बतलाना आदि।

(ग) गद्यांश में संयुक्तता होती है : प्रत्येक वाक्य तार्किक रूप से अपने पहले वाले वाक्य से सम्बन्धित होता है और अगले वाक्य का अदांजा देता है।

जब हम बच्चों को गद्यांश लेखन सिखाते हैं, तब इनके बारे में उनसे जरूर बातचीत करनी चाहिए।

कार्य 1 : (Task 1)

शुरुआती स्तर पर गद्यांश का एक प्रारूप प्रदान कर बच्चों को लगभग उसके जैसा लिखने को कहा जा सकता है।

किरन का पेन्सिल का डिब्बा खो गया है और उसने निम्नलिखित नोटिस लगाया—

मेरा पेन्सिल का डिब्बा लाल रंग का है। इसके ऊपर मिक्की माऊस का चित्र है। इसमें दो पेन्सिलें रखी हुई हैं। एक पेन्सिल का रंग काला है और दूसरी का नीला। उसके अन्दर एक गुलाबी रंग की रबड़ भी है। सुपरमैन का एक चित्र डिब्बे के अन्दर है। मैंने दो रुपये का सिक्का भी उसमें रखा था।

अब एक ऐसा ही गद्यांश अपने स्कूल बैग के बारे में लिखिए —

कार्य 2 : (Task 2)

नीचे दिए गए गद्य (passage) में, दो गद्यांशों (Paragraph) का मिश्रण दिया गया है। क्या आप उनको अलग कर सकते हैं?

एक बार एक शहर में एक सियार रहता था। एक दिन एक राजा ने एक बूढ़े आदमी को छोटा सा आम का पेड़ लगाते हुए देखा। उसने उससे पूछा — “तुम्हें इस पेड़ से कोई फल कब मिलेगा?” सेन्ट (संत) फ्रांसिस शहर का अवलोकन करने आए और वे सियार को देखना चाहते थे। राजा हँसा और बोला “जितने में उस पेड़ पर फल लगेंगे उससे पहले तुम मर जाओगे।”

लोगों ने उसे बताया कि वो मारा जाएगा। लेकिन संत ने नहीं सुना। बूढ़ा आदमी हँसा और बोला “हाँ, पर दूसरे लोग तो फल खा लें। अभी मैं उन पेड़ों के फल खाता हूँ जो मेरे परदादा ने उगाए थे। वह वन में चला गया। जब सियार उसकी तरफ भागा, उसने बोला “इधर आओ—सियार भाई।” राजा बहुत शर्मिदा हुआ। क्रूर सियार ने अपना मुँह बंद किया और उसके पैरों में बैठ गया।

कार्य 3 : (Task 3)

निम्नलिखित संकेतों का एक गद्यांश लिखने हेतु प्रयोग कीजिए।

मोहनदास कर्मचन्द गाँधी — जन्म 1869 पोरबन्दर — पिता कर्मचन्द गाँधी — माता पुतली बाई — वकालत पढ़ने इंग्लैंड गए — वकील के रूप में साऊथ अफ्रीका में काम किया — भारत आए — स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लिया — सत्याग्रह व अहिंसा में विश्वास रखते थे — भारत के लिए 1947 में स्वतन्त्रता जीती — हमेशा सत्य बोलते थे — सादा जीवन जीने का प्रयास किया — हिन्दू—मुस्लिम एकता के लिए लड़े — 1947 में गोडसे द्वारा मारे गए — राष्ट्रपिता व महात्मा के रूप में याद रखे गये।

कार्य 4 : (Task 4)

एक पत्रिका से कोई भी रुचिपरक चित्र चुनिए। बच्चों से कहिए कि चित्र का वर्णन करते हुए एक गद्यांश लिखिए।

रिपोर्ट्स

एक रिपोर्ट एक घटना या अनुभव का वर्णन देती है। रिपोर्ट विभिन्न प्रकार की होती है : समाचार पत्र रिपोर्ट, वैज्ञानिक रिपोर्ट, या व्यापारिक रिपोर्ट। नीचे रिपोर्ट की मुख्य विशेषताएँ दी गयी हैं—

1. रिपोर्ट एक सार होता है।
2. यह अधिकतर तृतीय पुरुष में लिखी जाती है।
3. इसके अन्तर्गत महत्वपूर्ण जानकारी ही सम्मिलित होती है— कोई भी विषयान्तरगमन नहीं होता।
4. इसमें भावनाओं की अत्यधिक प्रबलता नहीं होती।
5. विचार तार्किक रूप से व्यवस्थित होते हैं।

कार्य 1 : (Task 1)

मान लीजिए कि आप अपने स्कूल के समाचार पत्र “स्कूल टाइम्स” के संपादक हैं। आपको स्वतन्त्रता दिवस समारोह की रिपोर्ट देनी है। निम्नलिखित संकेतों का प्रयोग करके रिपोर्ट लिखिए—

15 अगस्त, 1995 — सुबह 7 बजे — ध्वजारोहरण स्थान के नीचे सभी बच्चे सफेद वर्दी पहनकर इकट्ठे हुए — मुख्य अतिथि, पुलिस कमिश्नर सुबह 7 बजे पहुँचे — झण्डा फहराया गया — सबने ध्वजगान गाया —

“युवकों का भारतमाता के प्रति कर्तव्य” — स्कूल के प्रधानाचार्य द्वारा धन्यवाद प्रस्तुत किया गया — सभी शिष्यों के लिए चाय।

कार्य 2 : (Task 2)

नितिन ने बेन को टेलिफोन किया पर बेन घर पर नहीं था। उसकी बहन रीटा ने फोन उठाया नितिन और रीटा के बीच निम्नलिखित बातचीत हुई—

रीटा : हैलो, यह 8265279 है।

नितिन : हैलो, रीटा मैं नितिन हूँ। क्या मैं बेन से बात कर सकता हूँ?

रीटा : माफ कीजिए, वह बाहर गया हुआ है। क्या मैं उसके लिए संदेश ले सकती हूँ?

नितिन : हाँ। हम आज रात को साथ में पढ़ने की योजना बना रहे थे आपके घर पर, पर मेरी माँ को बुखार है और और मुझे उन्हें डॉ. के पास ले जाना है। क्या आप बेन को बता देंगी कि मैं आज रात को नहीं आ पाऊँगा? उससे कहना कि मैं बहुत सॉरी महसूस कर रहा हूँ।

रीटा : ठीक है, मैं यह उसे बता दूँगी।

नितिन : धन्यवाद, बाय।

अब रीटा बेन के लिए एक संदेश लिखती है। वह नितिन के साथ अपने वार्तालाप का विवरण प्रस्तुत करती है। यह निम्नलिखित रूप से शुरू हुई “तुम्हारे दोस्त नितिन ने यह कहने के लिए फोन किया था.....

कार्य 3 : (Task 3)

विद्यार्थीगण अपने वरिष्ठ विद्यार्थियों (seniors) के लिए विदाई समारोह के बारे में चर्चा करने के लिए

मिले। सम्मेलन में निम्नलिखित विषयों से संबंधित चर्चा की गई—

1. दिनांक और स्थान
2. बजट
3. मैन्यू के चीजें
4. वरिष्ठ विद्यार्थियों के लिए उपहार
5. भाषण
6. मनोरंजन

इस बाहरी रूपरेखा का प्रयोग करके, समारोह की एक रिपोर्ट बनाइए, जो कि प्रधानाचार्य के समक्ष प्रस्तुत की जाएगी।

अपनी प्रगति जाँचिए 4

सारांश

1. लिखना सिखाया जा सकता है, सिखाया जाना चाहिए।
2. अपने शिष्यों को यह सिखाना चाहिए कि जीवन में क्या प्रासंगिक है।
3. हमें लेखन के पारंपरिक प्रकारों को सिखाना चाहिए, जैसे कि गद्यांश, निबंध, पत्र, रिपोर्ट आदि।
4. हमें लेखन के गैर पारम्परिक प्रकारों को सिखाना चाहिए, जैसे—डायरी, फार्म भरना, सूचना हस्तांतरण आदि।
5. फार्म भरना एक मूलभूत लेखन कौशल है जो निपुणता की माँग करता है और बच्चों में आत्मविश्वास का विकास करता है।
6. सूचना हस्तांतरण का कौशल बच्चों को अंग्रेजी के अलावा अन्य विषयों का अध्ययन करने में मदद करता है।
7. चित्र विभिन्न प्रकार के लेखन कौशलों का विकास करने हेतु रुचिपूर्ण उद्दीपन प्रस्तुत करते हैं।
8. डायरी लेखन बच्चों को व्याकरणिक निपुणता की चिंता न करते हुए अपनी भावनाओं को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने में मदद करता है।
9. संवाद मौखिक भाषा के परीक्षण का अप्रत्यक्ष तरीका प्रस्तुत करता है।
10. पत्र औपचारिक और अनौपचारिक जीवन में विभिन्न उद्देश्यों हेतु उपयोग होते हैं, प्रत्येक की एक निश्चित रूपरेखा होती है।

लिखना-बातचीत

पाठ की रूपरेखा

- परिचय
- उद्देश्य
- शीर्षक व उप-शीर्षक
 - बात और लेखन के बीच
 - लिखने की शुरुआत
 - शुरुआत के बाद
 - अध्यापक की प्रतिक्रिया
 - कुछ गतिविधियाँ

परिचय :

भाषा की कक्षा में अध्यापक के लिए सबसे कठिन मोड़ तब आता है जब उसे बच्चों को लिखने का अभ्यास कराना होता है। लिखने के अभ्यास के साथ शुरू हो जाता है एक ही अक्षर को बार-बार लिखने का दुश्चक्र, एक अक्षर को बार-बार घोटना, उसे तब तक मिटा-मिटा के लिखना जब तक वो मानक स्तर तक ना पहुँच जाए, और ये सब बच्चे के मन में लिखने के प्रति एक घृणा को जन्म देता है। इसका परिणाम ये होता है कि बच्चे को पूरी लेखन क्रिया एक बेहद ही नीरस, यांत्रिक गतिविधि मालूम होती है।

मगर अगर ऐसा होता तो आज कविताएँ और उपन्यास अस्तित्व में न आते जिन्हें पढ़ व्यक्ति खो जाता है। संभवतः लेखन इतनी नीरस गतिविधि नहीं हो सकती।

इस पर्चे के ज़रिये हम ये जानने की कोशिश करेंगे कि किस तरह हम कक्षा में लेखन गतिविधि को संवादात्मक और सार्थक बना सकते हैं। कक्षा में बच्चे लेखन क्रिया के अंतर्गत सफेद कागज़ पर काली लाइनों से जूझते हुए नहीं अपितु लेखन को भी संवाद का माध्यम समझते हुए, बातचीत की तरह लेखन को भी इस्तेमाल कर पायें।

उद्देश्य :

- लेखन क्रिया को शुरू करने से पहले की तैयारियों पर एक समझ बनाना।
- लेखन को कक्षा में एक सार्थक गतिविधि कैसे बनाए, इस पर एक समझ बनाना।
- लेखन क्रिया को रुचि पूर्ण बनाने के लिए कुछ गतिविधियों पर चर्चा करना।

लिखना एक तरह की बातचीत ही है। लिखते वक्त हम किसी से संवाद कर रहे होते हैं, हालाँकि प्रायः वह व्यक्ति हमारे सामने नहीं होता। बहुत-सी बातें हम किसी सूचना, विचार या याद को सुरक्षित रखने के लिए लिखते हैं। यदि मैं अपने आज के

अनुभव एक डायरी में लिखूँ तो मैं इन अनुभवों को किसी और दिन पढ़ने की आशा में सुरक्षित रख सकूँगा।

अध्यापक की हैसियत से हमें बच्चों को लेखन का परिचय बातचीत के एक रूप में देना चाहिए। स्कूल में दाखिला लेने तक बच्चे कई तरह के लोगों से कई तरह के विषयों पर बात करने की सामर्थ्य हासिल कर चुके होते हैं। उनमें 'श्रोता बुद्धि' (यानी किससे क्या बात करनी है, कैसी करनी है?) का बीज पड़ चुका होता है। यह बुद्धि लिखना सीखने के लिए बहुत उपयोगी है पर इसका प्रयोग बच्चों को अब किसी दूर बैठे 'श्रोता' (या पाठक) के लिए करना होगा। कुछ किस्म के 'श्रोता' (जैसे अध्यापक या दूसरे बच्चे या स्वयं) पास में उपस्थित भी हो सकते हैं। यह अध्यापक पर निर्भर है कि बच्चे लिखने को संबोधन या किसी से कुछ कहने की तरह ले पाते हैं या नहीं।

यह साफ कर देना जरूरी है कि आज लिखना सिखाने के नाम पर जो कुछ हो रहा है हम उससे किसी एकदम भिन्न चीज की चर्चा कर रहे हैं।

लाखों बच्चों को लिखना एक यांत्रिक कौशल की तरह सिखाया जा रहा है। शुरू में उनसे अक्षरों की आकृतियों को दर्जनों बार नकल करने के लिए कहा जाता है और अध्यापक उन उतारी हुई आकृतियों को बारीकी से देखता है। इस रीति से पूरी वर्णमाला से निपटने में कई हफ्ते लग जाते हैं। इस लंबी अवधि में लिखना सीखने का कैसा भी उद्देश्य बच्चों की दृष्टि में नहीं रह जाता। बाद में जब उनसे शब्द लिखने या और कुछ दिनों बाद वाक्य बनाने के लिए कहा जाता है तो वे अध्यापक का मुँह यह जानने के लिए ताकते हैं कि वे लिखें क्या? वे लिखने को अपनी कोई बात कहने के माध्यम के रूप में नहीं ले पाते। वे उसे एक कवायद या कर्मकांड के रूप में देखते हैं जिसे उन्होंने अध्यापक से सीखा है।

अब यदि हम इस स्थिति से हटना चाहते हैं तो हमें लेखन को बात के विस्तार की तरह प्रस्तुत करना होगा। अतः अध्यापक के अंतर्गत दी गई गतिविधियाँ लिखने की गतिविधियाँ आयोजित करने के लिए बहुत उपयोगी होंगी। बातचीत हमें किसी श्रोता के सामने चीजों को व्यवस्थित करके सुनाने का मौका देती है। इसी कारण वह लिखना सिखाने के लिए इतनी उपयोगी है।

अभ्यास

- बातचीत व लेखन के संबंध के बारे में क्या कहा गया है?
- वर्तमान में कक्षाओं में किस तरह लिखना सिखाने की शुरुआत की जाती है? इस तरह से सिखाने में क्या समस्याएँ हैं?

बात और लेखन के बीच

बच्चों को लिखना सिखाने की शुरुआत करने के पूर्व यह पक्का कर लीजिए कि वे सब अपनी जिंदगी और आसपास हो रही चीजों के बारे में आत्मविश्वास के साथ बात करने लगे हों। इसका मतलब यह है कि:

1. उनमें अपने अनुभव और विचार दूसरों को बताने की इच्छा हो, और
2. अपना अनुभव या दृष्टिकोण क्रमबद्ध पेश करने की सामर्थ्य हो।

ये बच्चे लिखना सीखने के लिए तैयार हैं। लेकिन शब्द और वाक्य लिखने के पहले उन्हें और बहुत कुछ करना होगा।

किसी भी भाषा को लिपिबद्ध करने के लिए कागज़ पर जटिल आकृतियाँ बनानी होती हैं। अक्षरों की छोटी-छोटी आकृतियों के बारीक भेद देख पाना और याद रखना जरूरी होता है। लिखने के लिए यह भी जरूरी

है कि अमूर्त प्रतीकों के जरिए अपने विचार और भाव व्यक्त करना आता हो। वर्णमाला के अक्षर अमूर्त प्रतीक होते हैं। वे अमूर्त इसलिए हैं कि उनकी आकृति और उनसे जुड़ी ध्वनियों के बीच कोई समरूपता नहीं है। उदाहरण के लिए 'अ' अक्षर की आकृति का 'अ' की ध्वनि से कोई तार्किक संबंध नहीं है। बस हम उसे 'अ' के रूप में स्वीकार करके चलते हैं। जो बच्चा हिंदी लिखना सीखना चाहता है उसे 'अ' को 'अ' रूप में स्वीकार करना होगा और उसका उपयोग उचित जगह पर करना सीखना होगा। उसे इस तरह के कई प्रतीकों का आदी बनना पड़ेगा। अमूर्त प्रतीकों के जरिए अपनी बात कहना ही तो लिखने का कौशल है।

ऊपर दी गई क्षमताओं का विकास एक दिन में नहीं हो सकता। इनका विकास करने का सबसे अच्छा तरीका बच्चों को ड्राइंग और रंगीन चित्र बनाने का नियमित अवसर देना है। सारे बच्चों के लिए ड्राइंग का कागज और रंग खरीदने लायक पैसा कम ही स्कूलों के पास होगा। यदि नीचे दी गई सामग्री का उपयोग किया जाए तो शायद बहुत सारे स्कूल चित्रकला का इंतजाम कर सकें।

- कोयले के टुकड़े, चाक, बत्ती, गेरु और गौरा पत्थर;
- रंगों के अन्य स्रोत जो स्थानीय रूप से उपलब्ध हों (जैसे नवरात्र के अवसर पर लड़कियाँ ईंट को पीसकर लाल रंग बनाती हैं, पलाश के फूलों से पीला रंग बनाया जा सकता है।);
- पुराने अखबार, इस्तेमाल किया हुआ कागज, पुरानी कॉपियाँ या कोई अन्य कागज;
- प्लास्टिक के कप या डिब्बे।

इनमें से अधिकांश चीजों का संग्रह अध्यापक धीरे-धीरे कुछ वर्षों के दौरान कर सकता है। इस सूची में जो एक चीज शामिल नहीं की गई है वह है ब्रश। यदि बच्चे सूखे रंगों का प्रयोग करें तो ब्रश की कोई जरूरत नहीं है। पर यदि अध्यापक चाहता है कि बच्चे रंगों को पानी की मदद से मिलाएँ तो उसे मोटे ब्रश प्राप्त करने होंगे। बहुत छोटे बच्चों के लिए रूई की सहायता से ब्रश बनाए जा सकते हैं, पर ऐसे ब्रशों को चलाना और उनकी देखरेख करना कठिन है। दूसरी तरफ यदि ठीक तरह के ब्रश एक बार खरीद लिए जाएँ और उन्हें हर बार इस्तेमाल करके सावधानी से धो लिया जाए तो वे लंबे समय तक चलेंगे।

तस्वीरें बनाने के लिए तमाम व्यवस्था कौन करेगा?

बच्चों को कागज कौन देगा, रंग कौन मिलाएगा, जब रंगीन पानी से भरा गिलास लुढ़क जाए तो फर्श कौन साफ करेगा? ये सारे काम खुद करने वाला और बच्चों से कोई मदद न लेने वाला अध्यापक संभव है, जल्दी ही थक जाए और कुछ निराशा महसूस करने लगे। हो सकता है, वह चित्रकला को बंद कर देने का दुखद निर्णय ले बैठे। इस संभावना को दूर करने के लिए हरेक अध्यापक को यह निश्चय कर लेना चाहिए कि कागज फैलाने, रंगों में पानी मिलाने, चित्र बन जाने पर उन्हें इकट्ठा करने और सारे ब्रश धो के रखने के काम में वह हरेक बच्चे की मदद लेगा। यह प्रशिक्षण बच्चों की शिक्षा का ही एक अंग है।

बच्चे अपने चित्रों में बनाएँगे क्या? संवाद और अभिव्यक्ति की इच्छा के विकास में इस प्रश्न का केन्द्रीय महत्व है। इस मामले में भी आज की स्थिति को समझकर उससे हटना है। ऐसे अधिकांश स्कूलों में जहाँ चित्रकारी होती है, बच्चों को कमल का फूल, पतंग, केला या ऐसा ही कोई अन्य रूढ़ विषय चित्र बनाने के लिए दे दिया जाता है। कमल का फूल बनाना कोई गलत काम नहीं है, गलत यह है कि पाँच वर्ष के बच्चे को अध्यापक बताए कि उसे क्या बनाना चाहिए।

अध्यापक को अच्छी तरह मालूम होता है कि कक्षा में हर समय उसी की चलती है। वह जो भी कहेगा, बच्चे उसे एक आदेश की तरह लेंगे (चाहे वे आदेश का पालन करें या न करें)। इसलिए यदि वह बच्चे से एक निश्चित चीज, जैसे केला, बनाने को कहे तो बच्चा इसे एक आदेश मानेगा। इस आदेश से वह समझेगा कि :

- अध्यापक को यह मालूम है कि मुझे अपने चित्रों में क्या बनाना है;
- चित्रकारी मेरे लिए स्वयं की अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं है;
- मेरा बनाया केला अध्यापक को भी केले के रूप में मान्य हो, तभी मेरी सफलता है।

नर्सरी और प्राइमरी स्कूलों में यह एक आम दृश्य होता है कि बच्चे पतली पेंसिलों को बड़ी मुश्किल से पकड़कर अध्यापक के आदेश का पालन करने के लिए कमल का फूल या केला बना रहे हैं और उसे संतोषपूर्वक बना पाने की असमर्थता के कारण बुरी तरह निराश हो रहे हैं। प्राइमरी स्कूलों में ब्रश भले न हों, पर बहुतेरे स्कूलों की यह माँग रहती है कि उनमें रबड़ अवश्य होने चाहिए। रबड़ को बच्चे परिपूर्णता हासिल करने के औजार की तरह इस्तेमाल करते हैं, वे एक बार केला बनाते हैं, फिर उसे मिटाते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि वह ठीक नहीं बना उसे वे फिर बनाते हैं और फिर मिटाते हैं— जब तक कागज फट नहीं जाता और अध्यापक झुँझला नहीं जाता। इस प्रक्रिया में उँगलियों के संचालन का अभ्यास हो जाता है (जो निश्चय ही लिखने की दिशा में एक कदम है) पर अपनी कोई बात दूसरों तक पहुँचाने का संतोष नहीं मिल पाता। इस कारण पूरी गतिविधि फिजूल और नुकसानदेह बन जाती है।

चित्रकारी बच्चों के समग्र विकास में, और विशेषकर भाषा के प्रयोग और लेखन में, योग दे सकती है, बशर्ते कि बच्चे को चित्र माध्यम में पैठने को पूरी तरह आजाद छोड़ दिया जाए। यदि आप तीन-चार वर्ष के बच्चों के साथ काम कर रहे हैं तो एक अध्यापक के रूप में आपका मुख्य जिम्मा कागज और रंग उपलब्ध कराना और फिर बच्चे का काम पूरा होने तक धीरज रखना है। हमारे देश में अध्यापक से निर्देश लेने की परंपरा रही है, इसलिए बहुत से बच्चे आपसे पूछेंगे कि वे क्या बनाएँ या कैसे बनाएँ। **अध्यापक से निर्देश माँगने की जगह स्वयं अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए चित्र माध्यम का आनंदपूर्वक उपयोग करने की आदत आसानी से नहीं पड़ेगी।** ऐसी आदत तभी पड़ सकती है जब अध्यापक सब्र रखे, प्रोत्साहन दे और अपना लक्ष्य जानता हो।

रंगों के साथ चित्रकारी हाथों का संचालन विकसित करने का एकमात्र साधन नहीं है। कई अन्य गतिविधियाँ इस उद्देश्य में सहयोग दे सकती हैं, जैसे एक बर्तन से दूसरे बर्तन में पानी उँडेलना, बीजों (खासकर दानों, जैसे राजमा, चना, लोबिया) को अलग-अलग करना, चीजें उठाना, उन्हें वापस रखना, चीजों को छूकर उनके आकार का अनुभव करना। कई लोग सोचते हैं कि ऐसी गतिविधियाँ तो अधिकांश घरों में प्रायः होती ही होंगी। दुर्भाग्यवश यह सब घरों में होता है। कई घरों में (और इनमें गरीब और मध्यवर्गीय दोनों किस्म के घर शामिल हैं) बच्चों को चीजें छूने की मनाही रहती है। ऐसी चीज जो टूट सकती है, बच्चों की पहुँच से दूर रखी जाती है। इस तरह बच्चे किसी चीज को सावधानीपूर्वक उठाने, रखने के अनुभव से वंचित रह जाते हैं। बहुत बड़ी संख्या में बच्चे ऐसे बुनियादी अनुभव नहीं कर पाते जो उनके हाथों को हो चुकने चाहिए थे। इस अभाव का असर लिखने के कौशल पर भले ही अप्रत्यक्ष रूप से पड़े, पड़ता अवश्य है। जो अध्यापक इस अभाव को दूर कर सकने वाली गतिविधियाँ आयोजित करने की जहमत नहीं उठाता, उसे लिखने का कौशल सिखाने में गंभीर दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। चित्रकारी इन दिक्कतों को दूर करने का एक उम्दा साधन है।

अभ्यास

- लिखने सिखाने की शुरुआत में चित्र बनाना कैसे मदद करता है?

- हाथों का संचालन विकसित करने के लिए और क्या-क्या गतिविधियाँ बताई गई है?

लिखने की शुरुआत

यह निर्णय हर अध्यापक को स्वयं लेना होगा कि वह किस उम्र या अवसर से लिखना सिखाने की शुरुआत करे। निर्णय का आधार बच्चों की प्रगति की समीक्षा ही हो सकती है। यह भी देख लीजिए कि बच्चों ने चित्रकारी के जरिए हाथों और उँगलियों के संचालन में पर्याप्त लचीलापन और नियंत्रण हासिल कर लिया है या नहीं। जो बच्चे किताबों या पढ़ने की अन्य किसी सामग्री के संपर्क में रहे हैं, संभव है, वे खुद ही लिखने के अवसरों की माँग करें। इससे अध्यापक का काम आसान हो जाएगा। **जब बच्चे स्वयं कोई माँग करते हैं तो यह इस बात का पक्का संकेत है कि वे उस काम को करना चाहते हैं।** हो सकता है कि वह काम बहुत कठिन सिद्ध हो और इसलिए वे अपनी माँग कुछ समय बाद वापस ले लें, पर वह फिर कुछ दिन बाद अवश्य उठेगी। बच्चे कई कौशलों पर ठीक इसी तरह अधिकार प्राप्त करते हैं। और लिखना कोई अलग चीज नहीं है।

जब आप लिखने का शिक्षण शुरू करने का निर्णय लें तो सबसे पहले बच्चों से पूछें कि वे आपसे क्या लिखवाना चाहेंगे? यदि आप 'लिखना' क्रिया का इस्तेमाल अपनी बातचीत में करते रहे हैं तो उन्हें आपकी बात समझने में कोई दिक्कत नहीं होगी। पर यदि उन्हें यह नहीं मालूम है कि आप क्या चाहते हैं तो आपको कुछ अलग ढंग अपनाना पड़ेगा। आप उनसे कुछ चीजों के नाम बताने को कहें— जैसे उनकी पसंद के जानवर, या उनकी पसंद की खाने की चीजें, चलने वाली चीजें, ऐसी चीजे जिनसे उन्हें डर लगता है, आदि। बच्चों को बताइए कि आप हर बच्चे की कापी में या फर्श पर एक शब्द लिखेंगे, अतः हर बच्चा आपको कोई भिन्न शब्द बताए। बच्चों से कहिए कि वे इस शब्द को उसके ठीक नीचे उतारें या उसी पर ट्रेस करें।

लिखना सीखने के लिए फर्श एक बढ़िया साधन है। आप उस पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिख सकते हैं। फर्श पर लिखना सस्ता भी है क्योंकि आपको सिर्फ चाक या कोयला या कोई स्थानीय रंग खरीदना होगा। परेशानी सिर्फ यह है कि फर्श को बाद में धोना पड़ेगा। इस काम में यदि आप बच्चों को भागीदार बना सकें तो लिखना सीखने के लिए उनकी प्रेरणा दूनी हो जाएगी। कुछ माता-पिता फर्श की धुलाई में बच्चों की साझेदारी से नाराज हो सकते हैं। यह अध्यापक को ही सोचना है कि वो उनकी नाराजगी से कैसे पेश आए।

लिखना शुरू करने के लिए ये एकमात्र तरीके नहीं हैं। बच्चों के साथ काम करने वाले लोगों ने कई अन्य विधियों के बारे में सुना होगा। सबसे प्रचलित विधि वर्णमाला के अक्षर लिखना सिखाने की है। चाहे हम ब्लैकबोर्ड पर बड़े आकार में वर्णमाला लिखें या गत्ते के अक्षर काटें या बच्चों से प्राइमर की नकल करने को कहें, एक बात हमें अवश्य याद रखनी चाहिए— यह कि **वर्णमाला में कोई अर्थ नहीं होता।** इसलिए वर्णमाला पर अत्यधिक जोर देना लेखन को सार्थक संवाद का माध्यम समझने से बच्चों को निरुत्साहित कर सकता है। पर जब एक बार अध्यापक शब्दों और अर्थ के बीच कई मजबूत पुल बना चुका हो तो वर्णमाला का परिचय बहुत उपयोगी हो सकता है। वर्णमाला कक्षा की एक दीवार पर लटकी रहे या एक लंबी पट्टी के रूप में चिपका दी गई हो तो वह पढ़ना लिखना सीखने की प्रक्रिया में सहायक स्रोत की भूमिका निभा सकती है। **यांत्रिक ढंग से वर्णमाला सिखाने के कई विकल्प हैं।** उदाहरण के लिए आप शब्दों की एक लंबी सूची बनाकर रख लीजिए और उनमें से उन थोड़े से शब्दों को बच्चों के सामने रखिए जिनका शुरु का अक्षर एक हो। बच्चों का ध्यान इस बात की ओर खींचकर उनसे कहिए कि वे ऐसे अन्य अक्षर ढूँढ़ें जो दिए गए शब्दों में एक से अधिक बार आए हों। हर बार इस गतिविधि के समय पिछली बार के शब्दों को दुहराइए। धीरे-धीरे सामान्य व्यवहार के शब्दों का भंडार इस तरह बढ़ने पर आप उन्हें विभिन्न विशेषताओं (जैसे लंबाई, अर्थ आदि) के आधार पर वर्गीकृत कीजिए और एक-एक वर्ग के शब्दों को बड़े कागज पर लिखकर दीवार पर चिपका दीजिए। कागज ऐसी जगह चिपकाइए जहाँ से वे सबको साफ दिख सके। यह बात मैं कहने लायक भी न समझता यदि मैं ऐसे कई स्कूलों में न गया होता जहाँ तस्वीरें या चार्ट बच्चों की पहुँच से बहुत ऊपर टंगे रहते हैं ऐसी सामग्री जो बच्चों से बहुत ऊँचे पर

टाँगी गई हो, न केवल व्यर्थ जाती है बल्कि बच्चों का अपमान भी करती है।

शुरुआत के बाद

लिखने के शिक्षण की असली चुनौती तब शुरू होती है जब बच्चे लिखने के बुनियादी कौशल में दक्ष हो चुके हों। चुनौती इन दो बातों का विकास करने की है:

1. श्रोता बुद्धि
2. अपनी बात पहुँचाने यानी संप्रेषण की इच्छा

इन दो उद्देश्यों को पाने के लिए अध्यापक को हर छोटी गतिविधि का आयोजन करते समय दूरगामी परिप्रेक्ष्य सामने रखना होगा। यहाँ एक बार फिर याद रखना जरूरी है कि श्रोता-बुद्धि और संप्रेषण की इच्छा का संबंध लिखने और बातचीत दोनों से है। इसलिए बातचीत की गतिविधियों का लाभ लेखन को मिलेगा और लेखन की गतिविधियों का लाभ बातचीत को।

श्रोता बुद्धि के लिए जरूरी है कि लिखते वक्त हमारे मन में कोई निश्चित व्यक्ति हो। संप्रेषण की इच्छा के लिए जरूरी है कि लिखने का कोई निश्चित उद्देश्य हमारे सामने हो। बच्चों का लेखन—चाहे वह शब्दों में हो, वाक्यों या छोटी कहानी में हो— प्रायः अध्यापक के लिए होता है। श्रोता बुद्धि के विस्तार के लिए अध्यापक अलग अलग गतिविधियों में अलग अलग 'श्रोता' (या पाठक) सुझा सकता है, जैसे अगली सीट पर बैठा बच्चा, कक्षा का कोई अन्य सदस्य, किसी दूसरी कक्षा के बच्चे माता-पिता। आधी छुट्टी में स्कूल आने वाला कुत्ता, बस, पड़ोसी गाँव या शहर के बच्चे— इस तरह की कल्पनाशील संभावनाएँ लिखने के अभ्यास में जान डाल सकती हैं। बच्चे जैसे-जैसे बड़े होंगे, उनकी श्रोता-बुद्धि का विस्तार होगा और उसमें समाज के विभिन्न काम धंधों में लगे लोग शामिल होते जाएँगे।

अध्यापक को भाषा के उन विशेष विन्यासों को पहचानने की कोशिश करनी चाहिए जिनका प्रयोग बच्चा किसी निश्चित पाठक तक पहुँचने के लिए कर रहा है। इस तरह के प्रयोगों को बढ़ावा देना अध्यापक की एक विशेष जिम्मेदारी है। उदाहरण के लिए यदि हम बच्चों से यह बताने को कहें कि फलों कुत्ता उन्हें क्यों अच्छा लगता है तो उन्हें कोई ऐसी बात कहने के लिए प्रोत्साहित करना जरूरी है जो कुत्ते की समझ में आ सके। कुत्ते से कहीं जाने वाली बात की विषयवस्तु और शैली किसी दोस्त से कही जा सकने वाली बात से भिन्न होगी। कुत्ते से हम कह सकते हैं, 'रोटी खा लो।' दोस्त से हम कहेंगे, चलो, अब खाना खा लें। किसी निश्चित श्रोता या पाठक के लिए विषयवस्तु का चुनाव शब्दों, मुहावरों और वाक्य की संरचना पर असर डालता है। पर हमें शब्दों और संरचनाओं को अलग से सिखाने की जरूरत नहीं है। जब बच्चों को तरह-तरह के पाठकों के लिए लिखने का मौका मिलेगा तो वे अपने शब्दों और संरचनाओं की अर्थवत्ता स्वयं समझने लगेंगे। कहने के लिए बच्चे के पास कुछ है या नहीं, यह बात बच्चे के व्यक्तित्व के कई पहलुओं पर निर्भर है। सबसे महत्वपूर्ण पहलू है अपने दृष्टिकोण में विश्वास के विकास की संभावना बहुत कम है। ऐसा बच्चा कुछ कहने के लिए उत्साहित महसूस करे यह भी जरा मुश्किल है। जब ऐसे बच्चे से कुछ कहने या लिखने के लिए कहा जाता है तो प्रायः उसका उत्तर होगा कि 'मुझे कुछ नहीं कहना है।' बच्चा ठीक ये शब्द भले न कहे, पर वह इस बात को व्यक्त कर देगा कि उसके पास कहने को कुछ नहीं है। यदि आप ऐसे बच्चों के साथ काम कर रहे हों तो आपके सामने दोगुनी चुनौती है क्योंकि आपको सबसे पहले उनके आत्मविश्वास की—दुनिया के प्रति अपने नजरिए की वैधता की पुनर्चना करनी होगी।

अध्यापक की प्रतिक्रिया

एक बार बच्चे लिखना सीख लें, इसके बाद उनकी प्रगति बहुत कुछ अध्यापक की प्रतिक्रियाओं पर निर्भर होती है। हमारे देश के बहुत-से प्राइमरी स्कूलों में अध्यापक की प्रतिक्रिया के तौर पर बच्चे को सिर्फ अपनी व्याकरण या हिज्जे की गलतियों के सुधार मिलते हैं। बच्चों की कापियाँ लाल स्याही से किए गए सुधारों से रंगी रहती हैं। दूसरी तरफ जब बच्चा हर चीज ठीक लिखकर लाता है तो अध्यापक केवल सही या चिह्न बनाकर दस्तखत कर देता है। ये दोनों ही प्रतिक्रियाएँ अधूरी और हानिप्रद हैं। बच्चे की गलतियाँ सुधारने या सही का चिह्न लगाने के अलावा अध्यापक को बच्चे के लेखन की प्रतिक्रिया में कुछ न कुछ स्वयं भी लिखना चाहिए। उसे पढ़कर क्या आपको किसी बात की याद आई? यदि बच्चे का लिखा अच्छा है तो क्या? इस विषय पर और कुछ क्या लिखा जा सकता था? क्या किसी ने एकदम भिन्न ढंग से लिखा है? लेखन पर अपनी प्रतिक्रिया देने के ऐसे सैकड़ों तरीके हो सकते हैं। जिस तरह बच्चे से बात करते समय आप उसकी बात को विस्तार देते हैं, इसी तरह बच्चे का लेखन पढ़कर आपको उसे विस्तार देना है। बच्चे की कापी पर एक-दो वाक्य लिखकर आप उसे इस बात का प्रमाण देंगे कि आप लेखन को एक यांत्रिक क्रिया नहीं, एक तरह का संवाद मानते हैं। आप भले व्याकरण का अभ्यास देख रहे हों (और यह तो आपको अक्सर करना होगा), आप कोई न कोई दिलचस्प और व्यक्तिगत बात संक्षेप में लिख सकते हैं। यह बात बच्चे के लिए आपके हस्ताक्षर से ज्यादा महत्वपूर्ण होगी।

गलतियाँ सुधारने के लिए उन पर चिह्न लगाना काफी नहीं है। यदि आप गलतियों को सिर्फ पहचान कर उन पर लाल स्याही से निशान बना देते हैं तो आप बच्चे की कमजोरी के उदाहरणों को ही उजागर करते हैं। ज्यादा आवश्यक यह है कि जहाँ बच्चे को सफलता मिली है वहाँ उसे पहचानें और जहाँ गलती हुई है उसका विकल्प दें। गलती को पहचानने और ठीक करने में आप बच्चे की सक्रिय मदद भी ले सकते हैं। यदि आपको किसी शब्द के हिज्जे ठीक करने हैं तो सही हिज्जे लिखकर उस शब्द को तीन तरह के हिज्जों में लिख दीजिए और बच्चे से कहिए कि सही हिज्जे पहचानें यदि आप गलतियाँ पकड़ने में बच्चे को सक्रिय बनाते हैं तो उसमें अपने लेखन को समीक्षा की दृष्टि से देखने की क्षमता विकसित होगी।

कुछ गतिविधियाँ

एक

जानी-पहचानी चीजें

घर में रोज काम आने वाली चीजों और अन्य जानी-पहचानी चीजों की चर्चा बच्चों से कीजिए। बच्चों से कहिए कि बर्तन, कपड़े और गाड़ियाँ जैसे समूह-नामों के अंतर्गत आने वाली अलग-अलग चीजों के नाम बताएँ, जैसे बर्तन के अन्तर्गत चम्मच, देगची, पतीली आदि। एक समूह में आने वाली चीजों की सूची बोर्ड पर बनाइए।

बच्चों को दो समूहों में बैठाइए। पहले समूह का हर बच्चा बोर्ड पर लिखी सूची में से कोई एक नाम अपनी कापी पर उतारेगा, जैसे कोई बच्चा लिखेगा-चम्मच, कोई लिखेगा-कड़ाही। दूसरे समूह के बच्चे एक-एक करके कोई एक चीज, जिसका नाम बोर्ड पर दिया है, पहले समूह से माँगेंगे। जिस भी बच्चे ने उस चीज का नाम अपनी कापी में नोट किया है, वह उसे माँगने वाले बच्चे के पास जाकर चीज का नाम लिखने में मदद करेगा।

दो

नामों का संग्रह

आप जहाँ कहीं भी रहते हैं वहाँ तरह-तरह के नाम आपको दुकानों, बसों या मील के पत्थरों और दीवारों पर मिल जाएँगे। गाँवों में दीवारों पर लिखे नारे या पोस्टर और विज्ञापनों में लिखी जानकारी भी काम आ सकती है।

बच्चों से कहिए कि वे घर से स्कूल के रास्ते में दिखने वाले नामों या संदेशों की सूची बनाएँ। सारे नामों को ब्लैकबोर्ड पर लिख कर एक-एक कर बच्चों से उनकी व्याख्या (यानी वह कहाँ लिखा है, उसका अर्थ क्या है) करवाइए।

तीन शब्दपूर्ति

बच्चों के जोड़े बना दीजिए। एक बच्चा कोई शब्द लिखना शुरू करेगा, और दूसरा बच्चा उसे पूरा करेगा। वे तब तक अपनी बारी लेते जाएँगे जब तक दोनों 10 शब्द सफलतापूर्वक पूरे नहीं लिख लेते।

चार सिर्फ एक शब्द

पाँच-पाँच बच्चों के समूह बना दीजिए। हर समूह के पास एक कागज या कापी और एक पेंसिल होगी। हर टोली में एक बच्चे को 'नेता', यानी शुरू करने वाला नियुक्त कर दीजिए।

नेता अपने मन में कोई वाक्य सोचेगा पर कागज पर वह सिर्फ एक शब्द लिख कर कागज और पेंसिल अगले बच्चे को थमा देगा। यह बच्चा भी सिर्फ एक शब्द जोड़ेगा। यह शब्द ऐसा होना चाहिए जो पिछले शब्द से शुरू हुए वाक्य को आगे बढ़ाता हो। इस तरह कागज टोली में घूमता रहेगा जब तक वाक्य पूरा न हो जाए।

टोली का कोई भी सदस्य यह दावा कर सकता है कि वाक्य बीमार पड़ गया है, अतः उसे छोड़ दिया जाए। यदि बाकी बच्चे इस दावे से सहमत हो तो कागज नेता को वापस दे दिया जाएगा और वह एक नए वाक्य का पहला शब्द लिखेगा।

पाँच नक्शा बनाना

बच्चों से पूछिए कि वे घर कैसे पहुँचते हैं पहले उन्हें यह बताइए कि आप स्वयं कैसे घर पहुँचते हैं—रास्ते में पड़ने वाली जगहों और चीजों का संक्षेप में विवरण दीजिए।

जब सभी बच्चों को अपने घर का रास्ता बताने का मौका मिल चुका हो तब उनसे कहिए कि जो रास्ता उन्होंने अभी बताया है उसे एक नक्शा बनाकर दिखाएँ। स्वयं अपने घर का रास्ता ब्लैकबोर्ड पर बनाकर दिखाइए। बच्चे जब अपने नक्शे बनाने में व्यस्त हो तो उनके पास जाकर नक्शे में दिखाई गई किसी एक चीज जैसे पेड़, दुकान, डाक का डिब्बा, का नाम नक्शे में लिख दीजिए। बच्चों से यह नाम नक्शे के नीचे उतारने के लिए कहिए।

अगली बार यह गतिविधि किसी और जगह जाने के रास्ते को लेकर कीजिए, जैसे मेरे दोस्त का घर, सब्जी मंडी, अस्पताल।

हर बार नक्शे में लिखने के लिए शब्दों की संख्या बढ़ाइए।

छह इर्दगिर्द की जगहें

यह पिछली गतिविधि का विस्तार है लेकिन इसमें बच्चे अपने आसपास की जगहों के नक्शे बनाएँगे, न कि वहाँ जाने के रास्ते के।

उदाहरणतया

स्कूल का पिछवाड़ा

कक्षा का कमरा

पास स्थित तालाब या नदी

नक्शे में दिखाई गई किसी एक चीज का नाम उचित जगह पर लिख दीजिए। बच्चे से यही नक्शा फिर बनाने को कहिए और इस बार उसी से कहिए कि वह उस चीज को दिखाने की जगह उसका नाम नक्शे में लिखे।

सात वहाँ पहुँचना

बच्चों से कहिए कि अपने बड़ों से आसपास के गाँवों और शहरों के नाम पूछ कर आँ। इन नामों की सूची बोर्ड पर बनाइए और बच्चों से कहिए कि ये नाम उतार लें।

अब इन नामों को दिशा के अनुसार रखकर बोर्ड पर एक सरल नक्शा बनाइए। नाम बच्चों में बाँटकर बच्चों को नक्शे के अनुसार बैठाइए। दिशा और दूरी को लेकर एक संक्षिप्त संवाद रचिए।

उदाहरणतया

‘मैं झाँसी जा रहा हूँ।’

‘झाँसी कहाँ है?’

‘उत्तर में।’

‘कितनी दूर...’

दूरी और दिशा से संबंधित शब्द लिखना सिखाइए।

आठ तस्वीर का वर्णन

‘बाते करना’ अध्याय में दी गई आठवीं गतिविधि देखिए और उसे कुछ बड़े बच्चों के बीच आयोजित कीजिए। प्रश्नों के जवाब बताने की जगह लिखने को कहिए।

विज्ञापनों, पत्रिकाओं आदि के साथ साथ बच्चों द्वारा स्वयं बनाई गई तस्वीरें इस्तेमाल कीजिए। पहले पूछिए कि चित्र में क्या दिखाया गया है, फिर और जटिल प्रश्नों की तरफ़ जाइए।

नौ आवाजों की सूची

पहली बार इस गतिविधि को आयोजित करते समय चार-पाँच बड़े बच्चों को शामिल कर लीजिए। ये बच्चे ‘रिकार्डर’ का काम करेंगे।

बच्चों को पाँच या छह-छह की टोलियों में बाँट दीजिए। हर टोली को अपने सदस्यों द्वारा पहचानी गई सारी आवाजों की सूची बनानी है। हर टोली थोड़ा चल-फिर सकती है और बारी बारी से कुछ मिनट के लिए दरवाजे पर खड़े होकर या स्कूल के पीछे जाकर वहाँ होती हुई आवाजें सुन सकती है। जैसे ही कोई सदस्य एक नई आवाज पहचाने, वह रिकार्डर से उसे दर्ज करने को कहे। आवाजें कुछ भी हो सकती हैं, जैसे दरवाजे की चूँ, पत्तियों का हिलना आदि।

सारी टोलियों के वापस आने पर हर टोली का रिकार्डर अपनी सूची पढ़कर सुनाएगा। जिस सदस्य ने जो आवाजें सूची में शामिल कराई हो, उन्हें वह सूची में पहचाने और अलग कागज पर उतारे।

दस

कविता बनाना

पाँच पाँच की टोलियाँ बनाइए। हर टोली को एक कविता की चार पंक्तियाँ दे दीजिए और कहिए कि टोली के सदस्य चार पंक्तियाँ और जोड़ें। हर टोली सोचने-बहस करने को पंद्रह बीस मिनट के लिए कुछ दूर एकांत में जा सकती है।

अभ्यास

- लिखना सिखाने से पूर्व की क्या तैयारियाँ हैं? और क्यों?
- गतिविधि नौ किस तरह से लिखने में मदद करेगी?
- एक स्कूल का शिक्षक बच्चों को क अक्षर लिखना सिखाने के लिए कहता है कि क दस बार सभी लिखो। दूसरा स्कूल का शिक्षक बच्चों को क से बनने वाले शब्दों को बच्चों से पूछता है। फिर उन्हें बोर्ड पर लिखता है। अब बच्चों को क पहचान कर गोला लगाने के लिए कहता है। फिर किसी चार्ट पर लिखी कविता में से क पहचानने को कहता है। फिर उनसे क लिखने को कहता है।

आप किस शिक्षक के सिखाने के प्रयास को सही मानते हैं और क्यों?

- बच्चों के लेखन पर अपनी प्रतिक्रिया देते समय किन दो मुख्य बातों का ख्याल रखेंगे?
 - बच्चों का लेखन क्रिया का शुरुआत ड्राइंग अथवा रंगकरण, चित्रकारी आदि के करना क्यों आवश्यक है?
-

इकाई—VII

इम्तहान / आकलन

अध्याय : 25. आकलन (NCERT Handbook) : किस बारे में आकलन – आकलन कब किया जाना चाहिए – आकलन कैसे (आकलन के चरण) – प्राथमिक कक्षाओं में आकलन – आकलन के बिंदु – आकलन के तरीके – कुछ गतिविधियाँ – आकलन रिपोर्ट का नमूना।

अध्याय : 26. मूल्यांकन (एन.सी.एफ.) : मूल्यांकन का प्रयोजन क्या नहीं है – आकलन का मकसद – शिक्षण के क्रम में ही आकलन – क्या अंकों में नहीं जाँचा जा सकता – आकलन की रूपरेखा और उसका संचालन – स्वआकलन और पृष्ठपोषण – नयी सोच की ज़रूरत।

अध्याय : 27. प्राथमिक स्तर पर आकलन की मौजूदा प्रक्रिया : शब्द था परीक्षा – इसका जवाब हासिल करने के लिए ज़रूरी है कि हम परीक्षा की मौजूदा आकलन प्रक्रिया को टटोलें।

अध्याय : 28. आकलन के तरीके : आकलन संबंधी युक्तियाँ – मौखिक परीक्षण – अवलोकन – लिखित परीक्षण – पोर्टफोलियो।

शादी तय करने के लिए आए दो परिवार उदास बैठे थे। एक मित्र ने आकर यह देखा, और पूछा क्या बात हुई? यह शादी नहीं हो सकती, बताया गया। क्यों? लड़का-लड़की में कोई नुक्स है? जन्म-पत्री नहीं मिलती? जवाब आया, नहीं वो सब ठीक ठाक है। फिर क्या? क्या दान-दहेज में कोई अड़चन है? जवाब आया, नहीं, दोनों परिवार दहेज के खिलाफ हैं। फिर बात क्या है? जवाब आया, दोनों बी.ए. पास है, मगर लड़की फर्स्ट डिविज़न है, लड़का थर्ड।

बात असल में मज़ाक की नहीं है। पास, फेल कम्पार्टमेंट, फर्स्ट, सेकंड, थर्ड डिविज़न, ये पूरे जीवन भर के लिए छापे लग जाते हैं। दस या बारह साल की पढ़ाई के बाद एक बच्चा तीन घंटे के लिए एक परीक्षा में कुछ प्रश्नों के जवाब लिखता है, और उन जवाबों पर उसे कुछ नम्बर दिए जाते हैं— जो जीवन भर के उसका दिमागी दर्जा तय कर देते हैं। जाहिर है, किसी बच्चे की काबिलियत मापने का यह एक भयानक तरीका है, और लगभग सभी इसकी भयानकता के खिलाफ हैं। हाल में ऐसी बातचीत है कि नम्बर के बजाए 5 या 7 ग्रेड दिए जाएँगे। ठीक है। इससे भयानकता कुछ कम ज़रूर होगी। मगर खत्म नहीं होगी – तीन डिविज़नों की जगह, पाँच या सात डिविज़न हो जाएँगे।

इस भयानकता से घबराकर कुछ शिक्षाविद् इस बात की वकालत करने लगे हैं कि परीक्षाएँ ही नहीं ली जाएँ, जाँच का कोई दर्जेवार पैमाना ही न हो। यह बात दिल को ज़रूर अच्छी लगती है, मगर कुछ सोचने के बाद दिमाग इसे मानने से हिचकिचाता है। इतनी भयानकता के बावजूद, लगभग हजार वर्षों से, धरती के लगभग सभी मुल्कों में, इंसान अपने प्यारे बच्चों को इस भयानकता में झोंकने के लिए मजबूर पाते हैं— इस बात की कोई गहरी वजह ज़रूर होगी।

क्या वजह है? जाँच/परीक्षाएँ क्यों होनी चाहिए? परीक्षा किसकी होती है— बच्चों की, टीचरों की, हेडमास्टर्स की, एन.सी.ई.आर.टी./एस.सी.ई.आर.टी. की, शिक्षा बोर्डों की, शिक्षा मंत्री की, प्रदेश की जनता की, देश की?

इन सब की? समाज शिक्षा में अपना पैसा लगाता है, जैसा चिकित्सा में, यातायात में, सेना में, खेलों में, आदि। बेशक, समाज चाहेगा कि यह पैसे बेहतर से बेहतर तरीके से इस्तेमाल किये जाएँ। इसमें किसको एतराज़ हो सकता है? लेकिन, क्या मौजूदा परीक्षण/आकलन यह जाँच ठीक से कर रहा है? लगभग सभी मानेंगे कि सुधार की गुँजाइश है। शिक्षा प्रणाली को थर्ड-डिविज़न दिया जाएगा।

तो क्या होने चाहिए बेहतर इम्तहान/आकलन के तरीके? जिससे बच्चे बेहतर तरीके से पढ़-लिख पाएँ और जीवन भर के बदनामी के बोझ से भी निजात पाएँ? इन सवालों के कुछ जवाब हासिल हैं। पढ़ के देखो।

अध्याय — 25

आकलन (NCERT Handbook)

पाठ की रूपरेखा

- परिचय
- उद्देश्य
- शीर्षक व उप-शीर्षक
 - आकलन किसके लिए
 - बच्चों और उनके सीखने के बारे में समझ बनाना
 - विद्यालय और कक्षा की समझ
 - बच्चों का आकलन क्यों किया जाना चाहिए
 - किसका/किस बारे में आकलन किया जाना चाहिए
 - आकलन कब किया जाना चाहिए
 - आकलन कैसे किया जाए
 - आकलन के तरीके
 - सूचना दर्ज करने की प्रक्रिया को और अधिक प्रभावशाली कैसे बनाए जाए
 - आकलन संबंधी सूचनाओं का इस्तेमाल कैसे किया जा सकता है—
 - रिपोर्टिंग और पृष्ठपोषण देना
 - अध्यापक द्वारा
 - रिपोर्ट बच्चे द्वारा की जा रही प्रगति को मापना
 - बच्चे को सम्प्रेषित करना
 - अभिभावकों के साथ बाँटना
 - टीचर्स रिलेक्शन बच्चों के अधिगम को सुमन्नत करना
 - यह संभव है—आप ऐसा कर सकते हैं

परिचय :

हम सभी बच्चों के बारे में चिंतित हैं और इसीलिए हम सबका सरोकार इस बात से है कि हर स्कूल एक ऐसी जगह बने जहाँ हर बच्चे को सीखने के मौके मिलें। बच्चों की शिक्षा से जुड़े सभी लोग, विशेषकर अध्यापक इस संबंध में अपने आपको बहुत ही जिम्मेदार मानते हैं। ऐसा उनकी इच्छाओं से जाहिर होता है कि वे सभी बच्चों को उनके गुण और रुचियों के विकास में मदद करने के लिए तत्पर हैं। वे उन्हें विश्वास के साथ अपनी जिंदगी का सामना करने के लिए तैयार करना चाहते हैं। अध्यापकों का काफी समय तो इसी बात का पता लगाने में निकल जाता है कि बच्चे स्कूल में कैसा कर पा रहे हैं। बहुत से अध्यापक आकलन को अपने स्कूल की रोजमर्रा की महत्वपूर्ण गतिविधि के रूप में देखते हैं। अध्यापक विद्यालय में दैनिक आधार पर जो कुछ भी करते हैं, बच्चों का आकलन उनका एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। ऐसा क्यों है?

अध्यापक इसके लिए बहुत से कारण बताते हैं— एक महत्वपूर्ण कारण यह जानना है कि बच्चों को जो कुछ भी सीखना चाहिए, क्या वे सीख पा रहे हैं? दूसरी वजह एक अवधि विशेष में बच्चों की प्रगति के बारे में भी जानकारी प्राप्त करना है। जो भी हो तीसरी वजह, जिसको सिर्फ अध्यापक ही नहीं बल्कि हम सभी बहुत ही महत्वपूर्ण मानते हैं, वह यह पता लगाना है कि बच्चे की भिन्न-भिन्न विषय/क्षेत्रों में क्या उपलब्धियाँ रहीं। ऐसा शायद इसलिए कि हम बच्चों को 'अच्छी क्वालिटी' (गुणवत्ता) वाली शिक्षा देना चाहते हैं और महसूस करते हैं कि ऐसा तभी संभव हो सकता है जब टेस्ट और परीक्षाओं के ज़रिए पढ़ाए गए विषयों में बच्चों की उपलब्धियों का मूल्यांकन किया जाए। परीक्षणों (टेस्टों) का अपना एक उद्देश्य है पर यदि हम वास्तव में बच्चों को बेहतर तरीके से सीखने में मदद करना चाहते हैं तो हमें यह बात खास तौर से समझने की ज़रूरत है कि टेस्ट/परीक्षाओं में बच्चे द्वारा प्राप्त किए गए अंक और ग्रेड बच्चों की प्रगति या सीखने के बारे में क्या कुछ विशेष बता पाते हैं।

उद्देश्य :

- हम बच्चों का आकलन क्यों कर रहे, तथा वास्तव में आकलन किसका किया जाना चाहिए इस बात की समझ बना पाएँगे।

- अध्यापक केन्द्रित कक्षा एवं बाल केन्द्रित कक्षा में मुख्य अंतर क्या-क्या हैं, इन दोनों कक्षाओं में से बच्चों को सीखने के ज्यादा अवसर किस कक्षा में प्राप्त हो सकेंगे? यह निर्णय कर पाने में सक्षम हो पाएँगे।
- आकलन की प्रक्रिया में प्रत्येक बच्चे के सीखने के तरीके, उसकी गति और उत्तर देने की शैली को भी समान महत्त्व देना आवश्यक है।
- बच्चों की विविध विषयों एवं अन्य क्षेत्रों में सीखने, संबंधी प्रगति जानने के लिए एक ही तरीका काफी नहीं होता अपितु विविध तरीकों को इस्तेमाल करना आवश्यक है।

आकलन—किस लिए?

आइए, नीचे दिए गए उदाहरण पर नज़र डालते हैं, एक अध्यापक होने के नाते अपने विद्यालय में इस तरह के हालातों से आपका बहुत बार सामना हुआ होगा।

एक प्राथमिक विद्यालय में कक्षा चार के बच्चों को पर्यावरण अध्ययन के अंतर्गत उनकी पाठ्यपुस्तक के जल से संबंधित अध्याय पर आधारित एक टेस्ट दिया गया। तीस बच्चों में से अधिकतर बच्चों ने 10 में से 6 अंक प्राप्त किए हैं। दो बच्चे जिनमें से मैथिली के आठ और रमन के 10 में से 3 अंक आए हैं। अध्यापक ने कक्षा में जब अंक बताए, सभी बच्चे रमन के अंक सुनकर हँसे और उसका मज़ाक भी बनाया क्योंकि उसके अंक सबसे कम थे। उस दिन के बाद से रमन ने कभी नहीं चाहा कि वह स्कूल जाए। उसके माता-पिता के लिए उसे स्कूल जाने के लिए तैयार करना, मनाना बहुत ही कठिन था। ये अंक अध्यापक, माता-पिता या मैथिली और रमन की शिक्षा से सरोकार रखनेवाले किसी को भी क्या बताना चाहते हैं? क्या ये अंक यह बता पाएँगे कि दोनों बच्चों ने क्या और कैसे सीखा और वे दोनों क्या-क्या कर सकते हैं? क्या ये अंक अध्यापकों को बता पाएँगे कि मैथिली और रमन की ज़रूरतों के आधार पर उनके लिए अध्यापन और सीखने की प्रक्रिया में कैसे सुधार लाया जाए?

क्या ये अंक मैथिली और रमन दोनों बच्चों को उनके सीखने के संबंध में किसी तरह का संकेत दे पाएँगे कि आगे किस तरह का सुधार लाया जा सके? बच्चों द्वारा प्राप्त किए गए अंक क्या किसी भी तरह से उनके माता-पिता या समुदाय के सदस्यों को उनकी प्रगति और सीखने के बारे में कोई उपयोगी रिपोर्ट या पृष्ठपोषण दे पाएँगे कि दोनों बच्चों में से कौन क्या जानता है?

दुर्भाग्य से हो क्या रहा है कि इस तरह के मूल्यांकन से कुछ बच्चों को असुरक्षा, तनाव, चिंता और अपमान जैसी स्थितियों का सामना करना पड़ता है जैसा कि रमन के साथ भी हुआ। मूल्यांकन से सिर्फ़ यही पता लगता है कि बच्चे क्या नहीं जानते बजाए इसके कि बच्चे क्या जानते हैं और क्या कर सकते हैं? इस तरह का मूल्यांकन पाठ्यपुस्तकों में पढ़ाई गई विषय वस्तु और रटंत प्रणाली द्वारा प्राप्त की गई जानकारी/ज्ञान का आकलन करने तक ही केंद्रित है। अधिकांशतः यह बच्चों में तुलना करने जैसे भाव रखता है और अवांछनीय प्रतिस्पर्धा को जन्म देता है, यहाँ तक कि मात्र आधे अंक के लिए भी क्या अध्यापक होने के नाते हम चाहते हैं कि सभी बच्चे सीखें? यदि ऐसा है तो आकलन के ज़रिए हम उनमें क्या खोजते हैं?

आप इस सच्चाई को तो ज़रूर स्वीकार करेंगे कि इस तरह की स्थितियाँ विद्यालयों में अकसर देखी जाती हैं। स्थितियाँ कुछ महत्वपूर्ण सवालों की तरफ़ हमारा ध्यान खींचती हैं— हम वास्तव में किस चीज़ का आकलन कर रहे हैं? क्या टेस्टों/परीक्षाओं के अतिरिक्त बच्चों का आकलन करने के कुछ और तरीके भी हो सकते हैं? क्या अंकों और ग्रेड के रूप में रिपोर्ट करना पर्याप्त है? आकलन संबंधी सूचनाएँ किस तरह की मदद करती हैं? हम अपने काम को कठिन बनाए बगैर बच्चों को सीखने के बारे में सूचनाएँ किस तरह की इकट्ठी कर सकते हैं? आखिरी सवाल बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि पूरे देश भर में अध्यापक रोज़ाना ही बहुत-सी समस्याओं का सामना करते हैं जैसे— विद्यार्थियों की अधिक संख्या, एक साथ दो-तीन या कभी-कभी तो इससे भी अधिक कक्षाओं को एक साथ बैठाकर पढ़ाना, भरी कक्षाएँ और विद्यालय में सुविधाओं का अभाव। इसके साथ-साथ उन्हें

ऐसे बच्चों को पढ़ाना होता है जो भिन्न-भिन्न पृष्ठभूमि से आते हैं, भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोलते हैं और जिनकी विशेष आवश्यकताएँ भी होती हैं। अध्यापकों और उन सभी में, जो चाहते हैं कि बच्चे अपनी अधिकतम योग्यता के अनुसार सीखें, अधिक समय, धैर्य और समझ की ज़रूरत है। इस तरह की स्थितियों में अध्यापकों की मदद किस तरह से की जा सकती है।

इससे पहले कि 'आकलन कैसे किया जाए' पर बात की जाए, यह ज़रूरी होगा कि हम तीन महत्वपूर्ण सवालों को समझने और उन पर चिंतन करने के लिए कुछ समय निकालें—

- प्राथमिक शिक्षा बच्चों में क्या विकसित करे?
- शिक्षा के प्राथमिक चरण के अंत में आप बच्चे से किस तरह की अपेक्षाएँ रखते हैं?
- समग्र व्यक्तित्व के विकास और भिन्न-भिन्न विषय क्षेत्रों के संदर्भ में बच्चों का क्या प्रोफाइल होना चाहिए?

इन सवालों के उत्तर आकलन की प्रक्रिया को स्पष्ट दिशा-निर्देश देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे। जैसा कि स्पष्ट रूप से नजर भी आ रहा है, तीनों ही सवाल बच्चे पर केंद्रित हैं जो कक्षाओं में होने वाली सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का मुख्य केंद्र है। इस समय हमारे सामने बुनियादी ज़रूरत है आकलन के लिए योजना बनाने और उसका क्रियान्वयन करने की, जिसे हम यह भी नाम दे सकते हैं कि प्राथमिक स्तर पर बच्चे और उसमें सीखने के बारे में समझ बनाना।

शिक्षा का मतलब है बच्चों के जीवन को अलग-अलग हिस्सों में नहीं बल्कि समग्रता में समझने के लिए शिक्षित करना है, जैसे कि शारीरिक, भावात्मक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक। एक विभाजित या टुकड़ों में बँटा दृष्टिकोण नहीं बल्कि जीवन के प्रति एक समग्र कुल एकीकृत दृष्टिकोण ... शिक्षा के माध्यम से हमें एक मानव को विकसित करना है जो रचनात्मक है, जो सभी कुछ करने के योग्य है, जिसके पास ऐसी बुद्धि है जो कि न तो बोझ से लदी हुई है और न ही जिसे किसी दिशा विशेष में ढाला गया है पर अपने आप में 'समग्र' है। यह मानव जो किसी समाज, जाति और धर्म विशेष का नहीं है, इस तरह की शिक्षा और बुद्धि के साथ जब वह परिपक्वता के स्तर तक पहुँचता है, वह अपनी जिंदगी का निर्माण एक टैक्नीशियन नहीं बल्कि मानव के रूप में करता है।"

बच्चों और उनके सीखने के बारे में समझ बनाना

एक पल के लिए हमें अपने बचपन की ओर लौटना होगा और वर्तमान समय की कक्षाओं और बच्चों के बारे में सोचना होगा जिन्हें हम पढ़ाते हैं। आप इस बात से तो ज़रूर सहमत होंगे कि हर बच्चे की अपनी पसंद, नापसंद, रुचियाँ, कौशल और व्यवहार के तरीके होते हैं। इस प्रकार हर बच्ची अपने आप में अद्वितीय है। चूँकि प्रत्येक बच्चा अपने आप में एक अद्वितीय व्यक्ति तथा किसी भी स्थिति के प्रति अपने ही ढंग से प्रतिक्रिया करता है। इसलिए बच्चों का आकलन करते समय यह बहुत ही महत्वपूर्ण हो जाता है कि हम उनमें पाई जाने वाली भिन्नताओं को पहचान सकें और इस सच्चाई को भी स्वीकार करें कि वे सीखने के दौरान भिन्न तरीके से प्रतिक्रिया करते और समझते हैं। आपने इस बात पर ज़रूर गौर किया होगा कि जब बच्चे पहली कक्षा में प्रवेश करते हैं तब उनके पास बहुत से अनुभव होते हैं और ज्ञान के कुछ प्रकारों का आधार भी होता है। **बच्चे न तो 'कोरी स्लेट' हैं, जिन्हें उन सूचनाओं और ज्ञान से भरना है जो शिक्षक के ही पास है।** आमतौर पर ऐसा ही सोचा जाता है। बच्चे विद्यालय में जिन अनुभवों के साथ आते हैं और जो भी वे जानते हैं उन्हीं को सीखने की प्रक्रिया का आधार बनाना महत्वपूर्ण है। बच्चे पहले से जो भी जानते और समझते हैं उसके आधार पर ही आगे कुछ सिखाने की योजना बननी चाहिए। इसके साथ ही यह समझना भी आवश्यक है कि प्राथमिक स्तर पर बच्चे कैसे सीखते हैं क्योंकि इसी आधार पर सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान बच्चों के आकलन की प्रक्रिया सुनिश्चित की जा सकती है। कुछ महत्वपूर्ण पहलू इस तरह हैं—

- सभी बच्चे सीख सकते हैं यदि उन्हें अपनी ही गति से सीखने दिया जाए और सीखने के अपने ही तरीकों का अनुसरण करने दिया जाए,
- बच्चे स्वाभाविक तौर पर खेल के माध्यम से सीखते हैं। वे एक-दूसरे से बहुत अच्छी तरह सीखते हैं जब वे वास्तव में किसी काम को करने की प्रक्रिया से जुड़े होते हैं,
- सीखना एक सतत प्रक्रिया है इसलिए 'सीखना' सिर्फ विद्यालय में ही नहीं होता। अतः कक्षा में सीखने की प्रक्रिया को घर में जो कुछ भी हो रहा है उससे जोड़ा जाना जरूरी है,
- बच्चे अपने ज्ञान का निर्माण स्वतः करते हैं और केवल तभी नहीं सीखते, जब शिक्षक पढ़ाते हैं। प्राथमिक स्तर पर बच्चे ठोस अनुभवों, खेल, खोजबीन, बहुत-सी चीजों के साथ परीक्षण और बहुत-सी गतिविधियों को वास्तविक रूप से करते हुए बेहतर और अधिक आसानी से सीखते हैं,
- बच्चों के सीखने की दिशा एक सीधी रेखा में नहीं चलती, वह घुमावदार है यानी कि वे पहले सीखी गई अवधारणाओं तक पुनः पहुँचते हैं और इससे उनकी समझ बेहतर ही होती है,
- सीखने के कार्य से जुड़ी हुई है, बच्चों द्वारा अवलोकित और महसूस किए गए तथ्यों से जुड़ाव बना पाने की प्रक्रिया। जो कुछ भी नया सीखा जा रहा है वह दिए जा रहे तथ्यों और सूचनाओं पर ही आधारित नहीं होता पर उन सबसे भी जुड़ा हुआ होता है और उस सबसे जोड़ा जा सकता है जो विद्यालय, घर या कहीं भी हासिल किया गया होगा। इसलिए सीखना सीधी रेखा में कभी भी नहीं हो सकता है।
- सीखना 'समग्रता' में ही संभव है न कि तब जब ज्ञान को छोटे-छोटे टुकड़ों में तोड़ा या विषयों में बाँटा जाए। इसलिए सीखने के लिए समेकित विधि ही बेहतर है,
- यह देखा जाता है कि प्राथमिक स्तर पर बच्चे एक-दूसरे के साथ अंतःक्रिया (खेलते-कूदते, हँसते-गाते) करते हुए बेहतर तरीके से सीख पाते हैं,
- सीखने के दौरान बच्चे बहुत-सी गलतियाँ भी करते हैं जो उनके सीखने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग हैं। गलतियाँ करके ही वे सीखते हैं।

उनके सीखने को खेल, अनुकरण, अभ्यास, मूर्त से अमूर्त की ओर ले जाकर, सरल से जटिल की ओर ले जाकर बढ़ावा दिया जा सकता है और समूची अधिगम प्रक्रिया को आनंदमयी और स्फूर्तिदायक बनाकर भी। इसका तात्पर्य यह है कि सभी बच्चे दी जा रही सूचनाओं के अर्थ अपने पूर्व अनुभवों और अधिगम के आधार पर अपनी ही तरह से बना लेते हैं। यही प्रक्रिया बच्चे को अपनी समझ बनाने और निष्कर्ष निकालने के लिए प्रेरित करती है। ज्ञान तक पहुँचने, उसे हासिल करने की हर बच्चे की अपनी एक अनोखी पद्धति होती है। यह प्रक्रिया लगातार चलती रहती है।

अभ्यास

- बच्चों का आकलन केवल अंकों के आधार पर किया जाना आपके विचार में कहाँ तक उचित है?
- बच्चों के सीखने की प्रक्रिया में कौन-कौन से कारक अपना महत्वपूर्ण समान रखते हैं और क्यों?
- सीखना एक समग्र एवं सतत रूप से चलने वाली प्रक्रिया है कैसे?

विद्यालय और कक्षा की समझ

कक्षा में चल रही सीखने-सिखाने की प्रक्रिया काफी हद तक विद्यालय, परिवेश और उसकी संस्कृति पर निर्भर करती है। एक सुरक्षित चिंतामुक्त, सुविधाजनक और खुशनुमा विद्यालयी परिवेश बच्चों को बेहतर तरीके से सीखने और कुछ अधिक हासिल करने में मदद करता है। इस प्रयोजन को ध्यान में रखते हुए विद्यालय के लिए जरूरी है कि विद्यालय में आवश्यक सुविधाएँ हों जैसे— सीखने की सामग्री, सहायक सामग्री, उपकरण और गतिविधियाँ आयोजित करने के लिए साथ-साथ काम करने तथा खेलने के लिए उपयुक्त स्थान। प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों के सीखने को खेल विधियों और बाल केंद्रित पद्धतियों द्वारा उन्नत किया जा सकता है।

आजकल 'बालकेंद्रित' शब्दावली बहुत अधिक प्रचलन में हैं, इससे क्या अभिप्राय है? हम दो कक्षाओं पर नज़र डालते हैं, एक अध्यापककेंद्रित है और दूसरी बाल केंद्रित है, दोनों की गतिविधियों पर नज़र डालने से 'बालकेंद्रित' के अर्थ स्पष्ट होंगे।

इन तस्वीरों के आधार पर निश्चित तौर पर हम 'बालकेंद्रित' कक्षा में ही काम करना चाहेंगे और इस तरह की व्यवस्था वाली कक्षा में आकलन—

- बाल केंद्रित पद्धतियाँ इस्तेमाल होंगी, शिक्षार्थियों के बीच पाए जाने वाले अंतरों को ध्यान में रखा जाएगा,
- आकलन प्रत्येक बच्चे की ज़रूरत, गति और सीखने के तरीकों को ध्यान में रखते हुए किया जाएगा,
- लचीलापन लिए हुए होगा,
- सीखने—सिखाने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग होगा,
- सतत और सारगर्भित होना।

यहाँ दिखाई जा रही तस्वीर उस कक्षा की तस्वीर है जिसे वास्तव में हम चाहते हैं। इसे बाल केन्द्रित कक्षा कहा जाता है। इस तरह की कक्षाओं में आकलन की प्रक्रिया कुछ इस तरह की होगी—

- बाल केंद्रित और कक्षा में पाई जाने वाली विविधता को समझने वाली प्रक्रिया,
- हर बच्चे की ज़रूरत, गति और सीखने की शैली के अनुसार चलने वाली प्रक्रिया,
- लचीली ज़रूरत के अनुसार तथा बच्चे की आयु और स्तर के अनुसार चलने वाली,
- सीखने—सिखाने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग सतत और सारगर्भित।

बच्चों का आकलन क्यों किया जाना चाहिए?

हम सभी बच्चों के सीखने और अच्छी शिक्षा पाने को लेकर चिंतित हैं, प्राथमिक कक्षाओं में आकलन क्यों किया जाना चाहिए इसके बहुत से कारण हैं। हम कुछ मुख्य कार्यों में नज़र डालते हैं। इनमें से कुछ आप पहले से ही जानते होंगे और कुछ तो सीखने—सिखाने की प्रक्रिया के दौरान इस्तेमाल भी करते होंगे। कुछ महत्वपूर्ण कार्य हैं—

- भिन्न—भिन्न विषयों में समय की एक अवधि विशेष में बच्चे की प्रगति और उसमें आनेवाले परिवर्तनों का पता लगाना,
- बच्चे की व्यक्तिगत और विशेष ज़रूरतों को पहचानना,
- अधिक उपयुक्त तरीकों के आधार पर अध्यापन और सीखने की स्थितियों की योजना बनाना,
- कोई बच्चा क्या कर सकता है और क्या नहीं, उसकी किन चीज़ों में विशेष रुचि है, वह क्या करना चाहता है और क्या नहीं, इन सबके प्रति समझ बनाने और महसूस करने में बच्चा की मदद करना,
- बच्चे को 'कुछ प्राप्त कर पाने' / पूर्णता की भावना के विकास के लिए प्रोत्साहित करना,
- कक्षा में चल रही सीखने—सिखाने की प्रक्रिया को बेहतर बनाना,
- बच्चे की प्रगति के प्रमाण तय कर पाना जिन्हें अभिभावकों और दूसरों तक संप्रेषित किया जा सके,
- बच्चे के आकलन के प्रति व्याप्त भय को दूर करना और उन्हें स्व—आकलन के लिए प्रोत्साहित करना,
- प्रत्येक बच्चे के सीखने और विकास में मदद करना और सुधार की संभावनाएँ खोजना।

दो कक्षाओं की तस्वीर



अध्यापक केंद्रित कक्षा	बाल केंद्रित कक्षा
- अध्यापक निर्देश देते हैं और बच्चों से अपेक्षा करते हैं कि बच्चे आज्ञा का पालन करें और अनुशासन में रहें, - अध्यापक के पढ़ाने के दौरान बच्चे सुनते हैं, - अध्यापक पाठ्यपुस्तक पढ़ते हैं, श्यामपट्ट पर प्रश्न और उत्तर लिखते हैं। एक समय वह भी होता है जब एक बच्ची जोर-जोर से पढ़ती है, बाकी सुनते हैं, - पाठ्यपुस्तक में दिए गए तथ्यों या अध्यापक द्वारा बताए गए तथ्यों को याद करते हैं, - कक्षा में अध्यापक का नियंत्रण रहता है। बच्चों की भागीदारी बहुत कम होती है, - बच्चे आमतौर पर अकेले (स्वयं में) ही सीखते हैं, - समय सारणी में लचीलेपन का अभाव होता है, - बैठने की व्यवस्था भी पहले से ही तय होती है, - सामग्री केवल प्रदर्शन के लिए होती है, - बच्चों में हमेशा उकताहट और अरुचि का भाव व्याप्त रहता है।	- अध्यापक सीखने के अवसर प्रदान करते हैं और सीखने को दिशा देते हैं, - बच्चे तरह-तरह की गतिविधियों और कार्यकलापों में क्रियाशील होकर जुड़े रहते हैं, - अध्यापक बच्चों के लिए ऐसी अधिगम स्थितियाँ उत्पन्न करते हैं जहाँ बच्चों को अवलोकन करने, खोजबीन करने, प्रश्न करने, अनुभव लेने और विभिन्न अवधारणाओं के प्रति अपनी समझ बनाने के अवसर मिलते हैं, - बच्चे स्वयं ही ज्ञान का निर्माण करते हैं जो उनके विद्यालय में या विद्यालय के बाहर प्राप्त अनुभवों पर आधारित होता है, - बच्चे व्यक्तिगत रूप से भी कार्य करते हैं और समूह में भी वे चर्चा करते हैं, अनुभव बाँटते हैं, सहयोग करते हैं और एक-दूसरे के विचारों का आदर करते हैं, - समय सारणी में लचीलापन होता है और बच्चे क्या करना चाहते हैं, उन पर निर्भर करता है, - गतिविधि के अनुसार बैठने की व्यवस्था में परिवर्तन होता रहता है, - तरह-तरह की सामग्री, उपकरण कक्षा में उपलब्ध रहते हैं और बच्चे इनका इस्तेमाल करते हैं, - किसी भी व्यक्ति के बाहर से आने पर बच्चों के लिए व्यवधान उपस्थित नहीं होता, चूँकि बच्चे काम में संलग्न रहते हैं अतः अध्यापिका ही बाहर आ जाती है।

अभ्यास

- ऊपर दो प्रकार की कक्षाओं के बारे में बताया गया है, आप एक अध्यापक के रूप में अपनी कक्षा को किस तरह की कक्षा बनाना पसंद करेंगे? अपनी बात को स्पष्ट कारण सहित लिखिए।

किसका/किस बारे में आकलन किया जाना चाहिए?

आकलन के संबंध में उठाए गए सवालों जैसे— 'बच्चों का आकलन क्यों किया जाना चाहिए' के बाद स्वाभाविक है कि बहुत से अध्यापक सवाल करें

आकलन किस बारे में किया जाना चाहिए? हमें अपने आप से सवाल करने की ज़रूरत है कि आखिर वह है क्या जिसकी हमें बच्चों का आकलन करते समय तलाश रहती है। चूँकि शिक्षा बच्चे के कुल समग्र विकास से जुड़ी हुई है (जैसे— शारीरिक, सामाजिक, भावात्मक और संज्ञानात्मक)। इसलिए यह ज़रूरी है कि सभी पहलुओं का आकलन किया जाए, सिर्फ अकादमिक उपलब्धियों का नहीं, जो वर्तमान में विद्यालयों में इस्तेमाल की जा रही आकलन पद्धतियों का मुख्य केंद्र है। इस प्रकार यह बहुत आवश्यक हो जाता है कि विद्यालय और कक्षा के बाहर और भीतर होनेवाली सभी गतिविधियों, जिनमें बच्चे की भागीदारी रहती है, का आकलन किया जाना चाहिए यह आकलन की सारगर्भित प्रक्रिया होगी। आकलन की प्रक्रिया को सूचना और पृष्ठपोषण (feedback) देने का जरिया बनाना होगा कि विद्यालय और अध्यापक शिक्षा देने की प्रक्रिया में किस सीमा तक सफल हो पाए हैं। बच्चे के अधिगम की पूरी तस्वीर समझने के लिए आकलन द्वारा निम्नलिखित बिंदुओं को उभारना होगा—

- भिन्न-भिन्न विषयों/क्षेत्रों में बच्चों का सीखना और प्रदर्शन,
- बच्चों के कौशल, रुचियाँ, रुझान और अभिप्रेरणा कुछ और पहलू हैं,
- एक निश्चित अवधि में बच्चों के सीखने और व्यवहार में होनेवाले परिवर्तन,
- विद्यालय के भीतर और बाहर मौजूद भिन्न-भिन्न स्थितियों और अवसरों के प्रति बच्चों की प्रतिक्रिया।

आकलन कब किया जाना चाहिए?

हममें से बहुतों द्वारा पूछा गया एक बहुत ही अहम सवाल 'आकलन किस बात का किया जाए' से जुड़ा हुआ एक ही सवाल है— बच्चों के सीखने की प्रक्रिया और प्रगति को कब और कैसे आँका जाए? सीखने के परिणामों का आकलन अध्यापन अधिगम प्रक्रिया के साथ सतत् रूप से जुड़ा हुआ है। समग्र रूप से आकलन करने के लिए, सीखने के सभी पहलुओं को अपेक्षित पहचान देनी होगी। इस तरह से तो प्रत्येक बच्चे का प्रोफाइल बनाना ज़रूरी हो जाता है। हालाँकि तरीके और पद्धतियाँ तो भिन्न-भिन्न होंगी ही। जब अध्यापक नियमित रूप से बच्चों की प्रगति पर बराबर नज़र बनाए हुए हों तो उस पर प्रतिक्रिया करने, पृष्ठपोषण देने और सुधार संबंधी तरीकों को अपनाने के लिए कुछ अवधियाँ तो तय करनी होंगी। इसके लिए ज़रूरी है कि व्यावहारिक अवधियाँ तय की जाएँ और उनका अनुसरण किया जाए। हालाँकि कक्षा में अनौपचारिक रूप से अवलोकन की प्रक्रिया तो चलती ही रहनी चाहिए। हर पंद्रह दिन में एक बार पीछे मुड़कर देख लेना (बच्चे के शुरुआती दौर को) और पारदर्शिक समीक्षा भी कर लेना ज़रूरी होगा इससे बच्चों के सीखने को उन्नत और सुदृढ़ किया जा सकता है।

अतः आकलन—

- *दिन-प्रतिदिन के आधार पर*— बच्चों के साथ सतत रूप से अन्तःक्रिया करना और सतत रूप से उनका कक्षा और कक्षा के भीतर और बाहर आकलन करना।
- *सावधिक*—हर तीन या चार महीने में एक बार अध्यापक बच्चों के कामों की जाँच करें और एकत्र की गई सूचनाओं के आधार पर उन्हें अपनी राय बताएँ। यह किसी प्रकार की जाँच के रूप में नहीं होना चाहिए।

आकलन कैसे किया जाए?

विभिन्न चरण और विधियाँ जो कि चक्रीय एवं क्रमिक हैं विस्तार से आगे दिए गए चित्र में दिखाई गई हैं।

पहला चरण

भिन्न-भिन्न स्रोतों और विधियों द्वारा सूचना और प्रमाण जुटाना

यदि हम सभी यह स्वीकार करते हैं और मानते भी हैं कि सभी बच्चे अपनी ही शैली से सीखते हैं और वे सिर्फ स्कूल में ही नहीं सीखते तब हमें बच्चों का आकलन करते समय दो चीजों पर तो काम करना ही होगा—पहला, तरह-तरह के स्रोतों से जानकारी इकट्ठी करना, दूसरा, तरह-तरह की गतिविधियों, अनुभवों और अधिगम कार्यकलापों से जुड़े बच्चे क्या वास्तव में सीख रहे हैं, यह जानने और समझने के लिए आकलन की बहुत-सी विधियाँ इस्तेमाल में लाना।

सूचनाओं के स्रोत

आज भी यही देखने में आता है कि अध्यापक ही सूचनाओं का मुख्य स्रोत है और यही वह व्यक्ति है जो बच्चों के सीखने का आकलन भी करता है। जो भी हो, चूँकि आकलन सीखने की प्रक्रिया का ही हिस्सा है, बच्चे स्वयं भी अपने अधिगम और प्रगति का आकलन करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अध्यापक बच्चों की स्वयं का आकलन करने में मदद कर सकते हैं।

बच्चों से क्या अपेक्षा की जा रही है, इसकी बेहतर समझ विकसित करने में मदद की जा सकती है, अपने काम और प्रदर्शन को आलोचनात्मक नज़रिए से देखने के लिए अनुभव प्रदान किए जा सकते हैं। बच्चों से यह भी कहा जा सकता है कि वे अपने उन कामों का चयन करें जो उनकी नज़र में सर्वोत्तम हैं और यह भी बताएँ कि उन्होंने उनका चयन क्यों किया। बच्चों के अतिरिक्त क्या कोई और भी है जिनसे बच्चों के आकलन के संबंध में सूचनाएँ ली जा सकती हैं? बच्चों के विकास के दूसरे पहलुओं की पूरी तस्वीर स्पष्ट करने के लिए इन्हें भी आकलन की प्रक्रिया में शामिल किया जा सकता है। वे कौन हो सकते हैं? अध्यापक और भी बहुत से व्यक्तियों के साथ बातचीत कर उन्हें आकलन की प्रक्रिया में शामिल कर सकते हैं, वे व्यक्ति हो सकते हैं—

- माता-पिता/अभिभावक
- बच्चों के मित्र/सहपाठी
- दूसरे अध्यापक
- समुदाय के लोग

अब अगला सवाल यह उठता है कि भिन्न-भिन्न स्रोतों से सूचना इकट्ठी कैसे की जाए?

आकलन के तरीके

किसी भी तरीके को चुनने से पहले प्राप्त की जानेवाली ज़रूरी सूचनाओं के लिए आकलन के प्रकार का निर्धारण आवश्यक है। आकलन करने के चार मूलभूत तरीके हैं—

- **व्यक्तिगत आकलन**— एक बच्चे को केंद्र में रखते हुए किया गया आकलन जब वह कोई गतिविधि/कार्य करता है और उसे पूर्ण करता है।
- **सामूहिक आकलन**— किसी कार्य को पूर्ण करने के उद्देश्य से बच्चों द्वारा, सामूहिक रूप से कार्य करते समय सीखने और प्रगति का आकलन सामूहिक आकलन है। आकलन का यह तरीका बच्चों के सामूहिक कौशलों, सहयोग द्वारा सीखने की प्रक्रिया तथा बच्चों के व्यवहार से संबंधित अन्य मूल्यों के आकलन के लिए बहुत उपयुक्त पाया गया है।
- **स्व-आकलन**— बच्चे द्वारा स्वयं के सीखने तथा ज्ञान, कौशल, प्रक्रियाओं, रुचि, व्यवहार आदि में प्रगति के स्व-आकलन से संबंधित है।
- **सहपाठियों द्वारा आकलन**— एक बच्चे द्वारा दूसरे बच्चे का आकलन, इसे दो बच्चों की जोड़ी या समूह में करवाया जा सकता है।

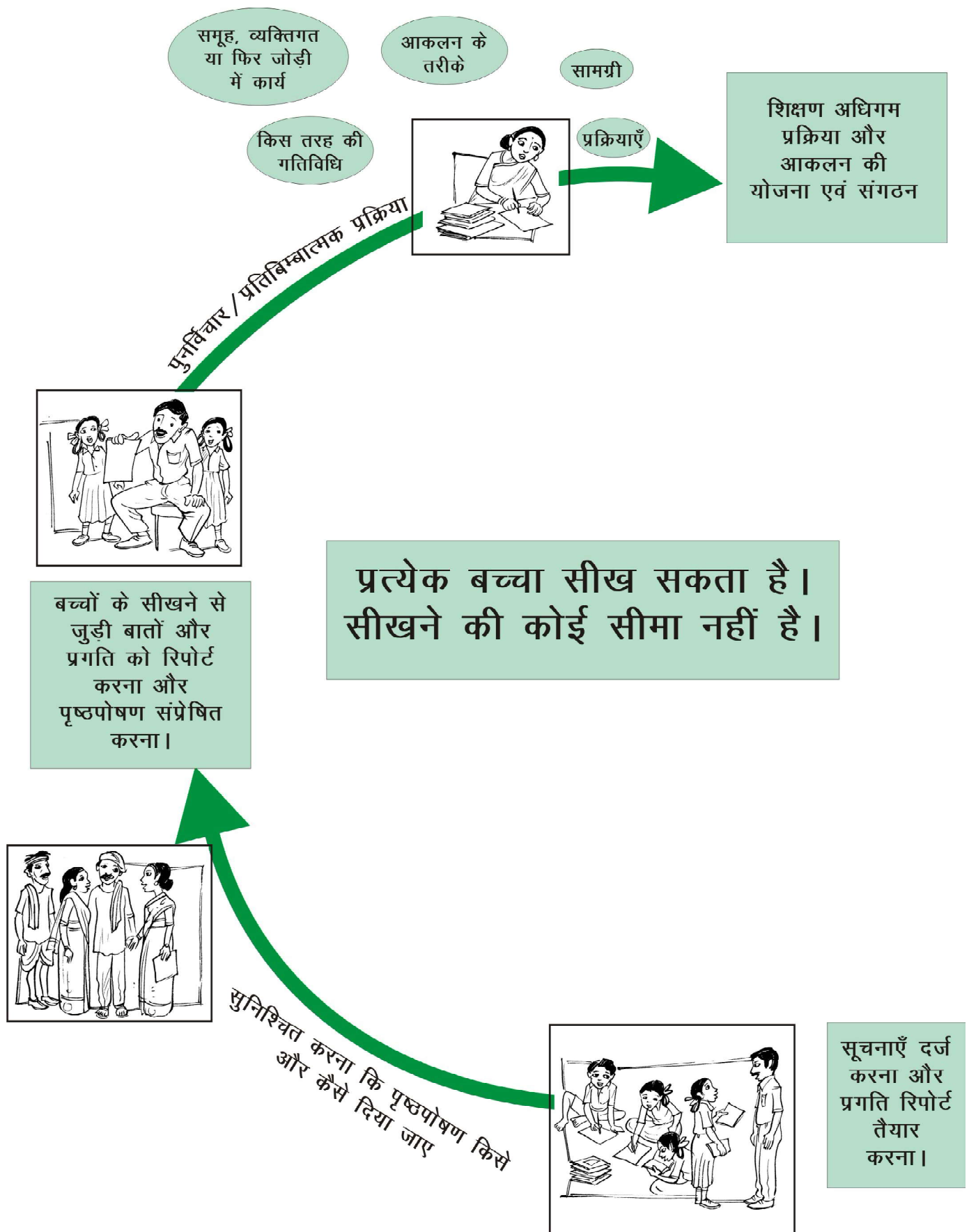
सभी स्कूलों में अध्यापकों द्वारा तैयार किए गए उपकरणों/तकनीकों के इस्तेमाल का ही प्रचलन है। इसमें पेपर, पैसिल, टेस्ट/कार्यकलाप, लिखित और मौखिक परीक्षाएँ, तस्वीर आधारित सवाल, कृत्रिम (सिमुलेटेड) कार्यकलाप और विद्यार्थियों के साथ वार्तालाप/संवाद शामिल हैं। अध्यापकों द्वारा बच्चों के सीखने की प्रगति का आकलन करने के लिए छोटे-छोटे क्लास टेस्टों का इस्तेमाल एक आसान और शीघ्रगामी तरीके के रूप में किया जाता है।

सामान्यतः एक अवधि विशेष में पढ़ाई गई निर्धारित विषय वस्तु के आधार पर सत्र या माह के अंत में ये टेस्ट करवाए जाते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि ये उपयोगी होते हैं परंतु इनका इस्तेमाल बहुत सावधानी के साथ किया जाना चाहिए। इस तरह के परीक्षणों में पूछे जानेवाले सवालों की प्रकृति ऐसी न हो कि उनसे पूर्व-निर्धारित उत्तर ही निकल कर आते हों अपितु इन प्रश्नों की शब्द संरचना इस तरह की हो कि बच्चों को अपने विचार और भाव तरह-तरह से अभिव्यक्त करने की पूरी गुंजाइश हो। टेस्ट में दी जानेवाली प्रविष्टियाँ/प्रश्न कुछ इस प्रकार के हों कि वे चिंतन और विश्लेषण पर बल दें न कि पाठ्यपुस्तकों में दी गई सामग्री को याद करके पुनः लिख देने पर। क्या आपने कभी सोचा है कि तरह-तरह की विधियों का इस्तेमाल क्यों करना चाहिए? ऐसा इस वजह से किया जाता है—

- भिन्न-भिन्न विषयों, क्षेत्रों और विकास के भिन्न-भिन्न पहलुओं में सीखने का आकलन किया जाता है,
- बच्चे एक विधि की तुलना में किसी दूसरी विधि के प्रति बेहतर तरीके से प्रतिक्रिया करते हैं,
- बच्चों के सीखने के संबंध में अध्यापकों की समझ बनाने में हर विधि का अपनी ही तरह से योगदान रहता है।

अभ्यास

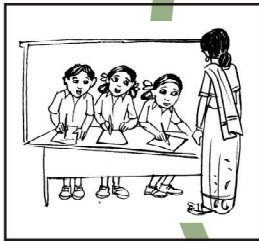
-
- कक्षा 5 के सामूहिक आकलन के लिए एक गतिविधि तैयार कीजिए गतिविधि का विषय एवं उद्देश्य क्या होगा तथा इसे करवाते समय कौन-कौन सी बातें ध्यान में रखना आवश्यक है।
-



अर्थपूर्ण सीखने के
अवसर प्रदान
करना



जोड़ी में काम
करवाना



लिखित कार्य



पोर्टफोलियो
दर्ज करना



अवलोकन



व्यक्तिगत रूप
से प्रस्तुतीकरण



भ्रमण



परियोजना कार्य

सूचनाएँ दर्ज करना और
प्रगति रिपोर्ट तैयार करना।

सीखने और आँकने (आकलन) का चक्र

विकास के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में बच्चों की प्रगति और अधिगम के बारे में सूचनाएँ और प्रमाण जुटाने के लिए आकलन का कोई भी एक उपकरण या विधि अपने आप में पर्याप्त नहीं है। पढ़ाते समय आपने ज़रूर महसूस किया होगा कि विद्यार्थियों का अवलोकन करके, उन्हें सुनकर, उनके अभिभावकों, दोस्तों और दूसरे अध्यापकों के साथ उनके बारे में अनौपचारिक तरीके से चर्चा करके, उनके लिखित कार्य (कक्षा तथा गृहकार्य दोनों ही), बच्चों द्वारा लिखे गए लेखों और उनके स्व-आकलन के आधार पर बहुत कुछ समझा जा सकता है।

दूसरा चरण

सूचनाओं को दर्ज करना या सूचनाओं की रिकॉर्डिंग करना

पूरे देश के सभी विद्यालयों में रिपोर्ट कार्ड का इस्तेमाल रिकॉर्डिंग का सर्वाधिक प्रचलित तरीका है। अधिकतर रिपोर्ट कार्डों में बच्चों द्वारा टेस्ट/परीक्षाओं में प्राप्त किए अंकों और ग्रेडों (श्रेणियों) के रूप में सूचनाएँ दर्ज होती हैं। अंकों और ग्रेडों की उपयोगिता तथा निहितार्थ के बारे में पहले ही चर्चा की जा चुकी है। महत्वपूर्ण प्रश्न यह उठता है कि दर्ज करने (रिकॉर्ड रखने) की प्रक्रिया में सुधार लाने के लिए क्या किया जा सकता है। कक्षा में किया गया वार्तालाप बच्चे के व्यवहार तथा सीखने का अवलोकन करने के लिए अनेकानेक अवसर प्रदान करता है। जैसा कि आप जानते हैं कक्षा में नित्य शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के दौरान अनौपचारिक रूप से कुछ अवलोकन किए जा सकते हैं। दिन-प्रतिदिन के अवलोकनों को अगर दर्ज नहीं किया जाए तो शीघ्र ही उनके भूलने की आशंका रहती है। बच्चों के कार्यों/गतिविधियों के कई अवलोकन सुनियोजित होते हैं। इस प्रकार के अवलोकन किसी उद्देश्य से योजनाबद्ध होते हैं और इसीलिए स्वरूप में औपचारिक होते हैं।

सूचना दर्ज करने की प्रक्रिया को और अधिक प्रभावशाली कैसे बनाया जाए

- बच्चों का अवलोकन करना और तुरंत मुख्य बिंदुओं को या फिर देखे जा रहे परिवर्तन को डायरी, रजिस्टर, नोटबुक आदि में दर्ज कर लेना,
- किसी गतिविधि को करने के दौरान या फिर जब गतिविधि पूरी हो जाए, बच्चे का आकलन करना,
- बच्चे द्वारा किए गए काम का या उससे जुड़ी रुचिकर घटना का गुणात्मक उल्लेख यानी कि विस्तार से लिखने के लिए विशेष प्रयास करना,
- बच्चे का प्रोफाइल तैयार करना,
- पोर्टफोलियो में बच्चों के काम के नमूने रखना,
- अवलोकन करते समय तथा सूचना दर्ज करते समय बच्चे से बातचीत करना कि क्या किया जा रहा है और कैसे किया जा रहा है।
- महत्वपूर्ण बदलाव, समस्याओं, सकारात्मक बिंदुओं, मजबूतियों और सीखने के साक्ष्यों को नोट करने के लिए विशेष प्रयास करना,
- सूचना दर्ज करते समय यदि किसी तरह का संदेह उत्पन्न होता है तो तत्क्षण उसे स्पष्ट कर लेना।

ध्यान रखें, पूर्वाग्रह/त्रुटियाँ, दर्ज की जा रही सूचनाओं को प्रभावित करती हैं

बहुधा ऐसा पाया गया है कि बच्चों के सीखने और प्रगति का अवलोकन करते समय कुछ गलतियाँ हो जाती हैं। ये गलतियाँ हमारे पूर्वाग्रहों का परिणाम हो सकती हैं—

- बच्चों की योग्यता, संभाव्यता व कार्य निष्पादन के संबंध में पहले के अनुभव,
- लड़कियों की अपेक्षा लड़कों को अधिक प्रिय मानना किन्हीं परिस्थितियों में स्थिति इसके उलट (विपरीत) भी हो सकती है,
- दूसरे विषय क्षेत्रों में बच्चों के पूर्व निष्पादन के आधार पर उसके द्वारा किए जा रहे कामों के एक ही पहलू पर विशेष ध्यान देना,
- बच्चे की सामाजिक पृष्ठ, जैसे— जाति, वर्ग, समुदाय, भौगोलिक पृष्ठभूमि (स्थान जहाँ वह रहती है) आदि।
- किसी एक विषय और उसके किसी एक क्षेत्र की परीक्षा से जुड़े पूर्व परिणाम,
- एक ही विषय में किसी एक मानदंड से मिलते-जुलते मानदंड के लिए एक से अंक दे देना। नोट— किस बात का अवलोकन किया जा रहा है, इस बात पर ध्यान देना बहुत ही महत्वपूर्ण है।

बच्चे के सीखने और प्रगति की पूरी तस्वीर देने के लिए इसके क्षेत्र को विस्तृत करने की आवश्यकता है। रिकॉर्डिंग में बच्चों द्वारा किए कार्यों/प्रदत्त कार्यों में उनकी प्रस्तुति के अवलोकन तथा उन पर की गई टिप्पणियों— बच्चे क्या करते हैं, उनका व्यवहार कैसा है की रेटिंग, बच्चों के दूसरों के साथ व्यवहार की घटनाओं को सम्मिलित करने की आवश्यकता है।

संभावनाओं के विस्तार की ज़रूरत है, जिसके अंतर्गत शामिल हो सकते हैं— अवलोकनों के रिकॉर्ड, किसी कार्यकलाप या प्रदत्त कार्य में बच्चों के प्रदर्शन पर टिप्पणियाँ, बच्चे क्या करते हैं और कैसे करते हैं, के बारे में श्रेणियाँ बनाना, दूसरों के साथ बच्चों के व्यवहार से जुड़ी घटनाएँ और वर्णन। यदि आप कर सकें तो नीचे लिखे बिंदुओं से भी आपको मदद मिलेगी—

- बच्चों का अवलोकन करने के बाद तुरंत ही अवलोकनों को दर्ज करें,
- कला और शिल्पकारी, जिनकी बहुत अधिक महत्व नहीं दिया जाता, के क्षेत्र में बच्चों के काम और प्रदर्शन के नमूनों का संग्रह करें,
- गुणात्मक टिप्पणियाँ लिखने के बारे में विचार करें।

यह भी बहुत महत्वपूर्ण है कि जिन सूचनाओं का संग्रह किया गया है, उन्हें अच्छी तरह से समझा जाए और उत्तरों की विभिन्नता तथा विविधता को प्रोत्साहित किया जाए और उसकी सराहना की जाए। इस संबंध में बहुत से उदाहरण और दृष्टांत दिए गए हैं।

अभ्यास

- एक अध्यापक के लिए बच्चे प्रगति देखने के लिए कौन-कौन सी सूचनाओं को रिकार्ड किया जाना महत्वपूर्ण होता है?
- किसी कक्षा में बच्चों के बीच या अध्यापक बच्चों के बीच चल रहे वार्तालाप को रिकार्ड कीजिए तथा इसका विश्लेषण करके पता कीजिए कि इससे आपको बच्चों के बारे में क्या पता चलता है।
- वार्तालाप को आमतौर पर कक्षा में महत्व नहीं दिया जाता है सभी शिक्षक चाहते हैं कि उनकी कक्षा सबसे शान्त रहे, उपर्युक्त कथन से आप कितना सहमत हैं?

तीसरा चरण

एकत्रित सूचनाओं से अर्थ निकालना

एक बार सूचनाएँ दर्ज कर ली जाएँ फिर तीसरा महत्त्वपूर्ण पहलू या अगला चरण है— उपलब्ध साक्ष्यों की मदद से एक समझ बना पाना कि क्या सूचनाएँ इकट्ठी की गईं और दर्ज की गईं और फिर बच्चे के सीखने तथा प्रगति के बारे में निष्कर्ष निकालना। 'बच्चे की प्रगति कैसी है' और बच्चे की मदद के लिए क्या किया जाना चाहिए, यह समझने के लिए रिकॉर्डिंग बहुत ज़रूरी है। इसके लिए ज़रूरी है कि बच्चे के संबंध में दर्ज किए गए रिकॉर्डों का नियमित रूप से विश्लेषण किया जाए और समीक्षा भी। साथ ही संग्रहीत सूचनाओं के प्रति सावधिक प्रतिक्रिया भी दी जाए। ये सभी प्रक्रियाएँ शिक्षक को भी बहुत तरह से मदद करेंगी जैसे— अपनी शिक्षण पद्धतियों, कक्षा प्रबंध सभी शिक्षण शास्त्रीय पहलुओं के साथ—साथ सामग्री का प्रयोग जैसे प्रक्रियाओं के प्रति चिंतन करना और शिक्षार्थी के लाभार्थ, इन सभी में आवश्यक सुधार करना।

संकेतक महत्त्वपूर्ण क्यों हैं?

दिए गए संकेतक अध्यापक की कई तरह से मदद कर सकते हैं—

- सीखने की निरंतरता को ध्यान में रखते हुए बच्चों के सीखने की बेहतर समझ और उसे केंद्र में रखना,
- पर्यवेक्षण, अधिगम और प्रगति को रिपोर्ट करने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करते हैं,
- अभिभावकों, बच्चों और कई दूसरों के लिए भी बच्चों की प्रगति को आसान तरीके से समझने के लिए संदर्भ बिंदु की तरह कार्य करते हैं।

यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण है कि सूचनाएँ जो एकत्रित की गई हैं, आँकड़ों और प्रमाणों के संग्रह के बाद भी सूचनाओं का संग्रह करना जारी रहना चाहिए। इन संकेतकों के आधार पर गुणात्मक टिप्पणियाँ भी तैयार की जा सकती हैं— एक दिए गए उत्तर के प्रति यह कितना उपयुक्त है— स्वीकार्य, महत्त्वपूर्ण और रुचिकर। बहुधा यह देखा जाता है कि शिक्षार्थी को 'अ' या 'ब' के द्वारा उसके उत्तर/प्रतिक्रिया को चिह्नित किया जाता है शिक्षार्थी के साथ किसी भी तरह की अंतःक्रिया किए बगैर यह बहुत ही आवश्यक विधियों में प्रयोग करें।

- सूचना एकत्र करने की प्रक्रिया सतत् रहे और सूचनाओं को दर्ज भी करते चलें।
- प्रत्येक बच्चे को प्रतिक्रिया करने, सीखने और अपना ही समय लेने को महत्त्व दें,
- एक सतत् प्रक्रिया के रूप में रिपोर्टिंग भी करें और प्रत्येक बच्चे की प्रतिक्रिया/उत्तर के प्रति सरोकार रखें,
- पृष्ठपोषण (फीडबैक) दें, जो सकारात्मक क्रियाओं के लिए संभावनाएँ जुटाएँ और बच्चे को बेहतर करने के लिए मदद दें।

अब तक जिस नज़रिए की चर्चा की गई है उसके तहत आगे दिए गए अध्याय भिन्न-भिन्न विषय क्षेत्रों में बच्चों का आकलन करने में मदद करेंगे। महत्त्वपूर्ण है कि उत्तरों को सही और गलत के आधार पर अंक या ग्रेड देने से आगे भी कहीं हमको सोचना होगा क्योंकि आकलन संबंधी आँकड़ों का उद्देश्य अध्यापन अधिगम पद्धतियों और प्रक्रियाओं को सुदृढ़ करना है। अध्यापकों को एक समझ बनाने में भी मदद मिलेगी कि बच्चे ने अपनी व्याख्या देने के संदर्भ में जो भी किया है, वह क्यों किया है। इस स्रोत पुस्तक में इन पहलुओं पर विस्तार से उदाहरण देकर चर्चा की गई है। व्याख्या करने के बाद ज़रूरत है योजना बनाने की कि कैसे और किसे आकलन संबंधी पृष्ठपोषण दिया जाना है।

आकलन संबंधी सूचनाओं का इस्तेमाल कैसे किया जा सकता है—

रिपोर्टिंग और पृष्ठपोषण देना

सीखने की प्रक्रिया के दौरान जब आकलन साथ-साथ चल रहा होता है तब अध्यापकों के पास बच्चों

के बारे में बहुत-सी सूचनाएँ जुट जाती हैं। सूचनाएँ दर्ज कर लेने के बाद उनका विश्लेषण कर लेने के बाद इनका क्या किया जाए, यह जान लेना भी जरूरी होगा। इस बात से आप सहमत होंगे कि सामान्यतः सभी विद्यालयों में विद्यार्थियों के सीखने और प्रगति के आकलन से जुड़ी सूचनाएँ बच्चे और विद्यार्थी दोनों को ही एक रिपोर्ट कार्ड के माध्यम से दी जाती हैं। ये रिपोर्ट कार्ड एक प्रकार से भिन्न-भिन्न विषयों में बच्चों के प्रदर्शन और निष्पादन की एक तस्वीर विद्यालयी सत्र में आयोजित टेस्टों, परीक्षाओं में प्राप्त अंकों और ग्रेडों के आधार पर प्रस्तुत करते हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि अध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों का जो आकलन किया जाता है और इस संबंध में वे जो भी रिकॉर्ड रखते हैं, वे सभी अध्यापकों को मदद करते हैं—

- यह समझने में कि बच्चे किस तरह और कितना सीख पा रहे हैं,
- स्वयं की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को उन्नत करने में,
- प्रत्येक बच्चे की सीखने की प्रक्रिया को समुन्नत करने के उद्देश्य से उन्हें और अधिक अर्थपूर्ण अवसर तथा अनुभव प्रदान करने की दिशा में।

उपर्युक्त संदर्भ में रिपोर्टिंग रचनात्मक, संप्रेषणीय तथा इस तरह से प्रस्तुत की जानी चाहिए जिससे कि संबंधित व्यक्ति उसे सरलतापूर्वक समझ सके। यह तभी संभव है जब अध्यापक विद्यार्थी के संबंध में उन सभी सूचनाओं को प्रतिबिंबित करें जो उन्होंने अपने दिन-प्रतिदिन के अनुभव के आधार पर हासिल की हैं और सीखने के क्षेत्र विशेष के संकेतकों के आधार पर प्राप्त की हैं।

अध्यापक द्वारा

दैनिक अथवा सावधिक रूप से किया जानेवाला आकलन आपके लिए तभी मददगार है, जब आप—

- निश्चित अवधि के भीतर (हर तीन महीने के भीतर) निरंतरता को आधार बनाते हुए पोर्टफोलियो तथा दूसरे रिकॉर्डों का आकलन करें,
- बच्चे से जुड़ी महत्वपूर्ण रुचिकर घटनाओं का पुनरावलोकन करें तथा बच्चे के व्यक्तित्व के और भी पहलुओं का आकलन करें,
- बच्चे के संबंध में पहले से अर्जित की गई सूचनाओं से तुलना करें,
- सुनिश्चित करें कि एक बार जिस समस्या का सामना किया गया है, उसकी पुनरावृत्ति न हो,
- समस्याओं/कठिनाइयों को किस तरह से सुलझाया गया है, उन तरीकों को समझा जाए,
- आकलन करें कि बच्चे ने किसी प्रकार की प्रगति की है अथवा नहीं। यदि किसी प्रकार की कमी रह जाती है तो उन पर सीखने-सिखानेवालों की प्रक्रिया के दौरान ही ध्यान दिया जाए।

अध्यापक की प्रतिबिंबात्मक टिप्पणी प्रगति पत्रक बनाने में मदद करेगी। प्रगति पत्रक एक निश्चित अवधि में बच्चे की प्रगति से संबंधित स्पष्ट तस्वीर प्रदान करने में सहायक सिद्ध होगा। इसी स्थिति में अध्यापक द्वारा बच्चों के सीखने की दिशा को अर्थपूर्ण बनाया जा सकता है और समझ तथा कौशल प्राप्ति के निम्न स्तर से उच्च एवं जटिल स्तर की ओर पहुँचाया जा सकता है। इस तरह से हमें इस बात की समझ बनाने में भी मदद मिलती है कि बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में क्या-क्या कठिनाइयाँ आ रही हैं और इन कठिनाइयों तथा अंतरों का समाधान किस तरह से ढूँढ़ा जा सकता है। पृष्ठपोषण ही वह माध्यम है जिसके जरिए शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में परिवर्तन लाया जा सकता है।

पृष्ठपोषण के संबंध में महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि अध्यापक द्वारा दी जानेवाली रिपोर्ट में क्या-क्या होना चाहिए। इस रिपोर्ट द्वारा एक निश्चित अवधि में की गई प्रगति का संपूर्ण ब्योरा होना चाहिए। बच्चे द्वारा की गई

प्रगति का उल्लेख किस तरह से किया जा सकता है? आइए, हम इस पर विचार करते हैं कि कौन-कौन सी सूचनाएँ शामिल की जानी चाहिए।

रिपोर्ट— बच्चे द्वारा की जा रही प्रगति को मापना

- विषय क्षेत्रों में ए.बी.सी. ग्रेड देना। ये ग्रेड बच्चे के अधिगम तथा प्रदर्शन के उस विस्तार की ओर ध्यान दिलाएँगे, जो तीन स्तरीय सूची द्वारा दर्शाया जाता है,
- बच्चे द्वारा किए गए कामों का संग्रह और उनका प्रदर्शन बच्चे की सीखने के प्रति समझ बनाने में मददगार होगा,
- बच्चे के व्यक्तित्व के भिन्न-भिन्न पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करके,
- ग्रेड के साथ-साथ बच्चे के सीखने के तरीकों के बारे में गुणात्मक कथन देकर,
- बच्चे द्वारा किए गए कामों के उदाहरण प्रस्तुत करके,
- बच्चे के सीखने की प्रक्रिया के मजबूत पक्ष को और अधिक उभारकर तथा उन पहलुओं पर विशेष ध्यान देकर जहाँ पुनर्बलन की ज़रूरत है।

रिपोर्ट तैयार करते समय अध्यापक के लिए ज़रूरी है कि वह बच्चे और माता-पिता के साथ पृष्ठपोषण संप्रेषित करे। यह पहलू बहुत ही महत्वपूर्ण है और बहुत ही सावधानीपूर्वक रचनात्मक तथा सकारात्मक तरीके से प्रेषित किया जाना चाहिए।

बच्चे को संप्रेषित करना

दिन-प्रतिदिन के अध्यापन में जब बच्चे बहुत-सी गतिविधियों में संलग्न होते हैं, अध्यापक अनौपचारिक रूप से पृष्ठपोषण देते चलते हैं। बच्चे अध्यापकों, दूसरे बच्चों या समूहदार/जोड़ीदार की कार्य प्रणाली का अवलोकन करते समय स्वयं की गलतियाँ भी दूर कर लेते हैं और समुन्नत भी करते चलते हैं। सीखने के संदर्भ में स्थिति समस्याजनक तब हो जाती है जब रिपोर्ट केवल यह दर्शाती है कि बच्चे सही तरह से कर नहीं पाते, यानी कि उनकी अक्षमताओं और असफलताओं का ही चित्रांकन किया जाता है। इस तरह की रिपोर्ट बच्चों को निरुत्साहित करती है। अध्यापक को चाहिए कि वह—

- प्रत्येक बच्चे से उसके काम के बारे में बातचीत करे, कौन-कौन सा काम अच्छी तरह से किया गया है, कौन-सा नहीं और कहाँ-कहाँ सुधार की ज़रूरत है,
- बच्चे और अध्यापक दोनों मिलकर इस बात की पहचान करें कि बच्चों को किस तरह की मदद की ज़रूरत है,
- बच्चे को अपना-अपना पोर्टफोलियो देखने तथा वर्तमान में (हाल ही में) किए गए कामों की तुलना पुराने काम से करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए,
- काम करने की प्रक्रिया के दौरान या बाद में भी सकारात्मक रचनात्मक टिप्पणियाँ देनी ज़रूरी हैं।

सबसे महत्वपूर्ण बात जिसे पृष्ठपोषण के माध्यम से सबसे अधिक प्रोत्साहित किया जाना चाहिए वह यह है कि स्वयं की तुलना अपने पिछले कार्यों की प्रगति से करें न कि दूसरे के कार्यों से। उदाहरण के तौर पर “कल एक सप्ताह पहले तक मैं क्या कर पा रही थी और आज मेरा स्तर कहाँ है?” बच्चों के बीच तुलना करना किसी भी मायने में हितकारी नहीं है। आम तौर पर इससे कुछ इस तरह की धारणा जन्म लेती है ‘मैं तो एकदम बेकार। मैं तो किसी भी काम की नहीं।’ स्थिति इससे भिन्न भी है, यदि किसी बच्चे ने उच्चतम अंक प्राप्त किए

हैं या बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है, तो उस पर विद्यालय एवं घर दोनों ही स्थलों पर उस स्थिति को बनाए रखने का दबाव बना रहता है।

अभिभावकों के साथ बाँटना

सामान्यतः सभी अभिभावकों को यह जानने में रुचि रहती है कि उनकी बच्ची विद्यालय में कैसा कर रही है, उसने क्या-क्या सीखा है, दूसरे बच्चे किस तरह का प्रदर्शन कर रहे हैं एक निश्चित समयावधि के भीतर उनके बच्चे की क्या प्रगति है। आम तौर पर अध्यापक यह महसूस करते हैं कि उन्होंने अभिभावकों को उनके बच्चों की प्रगति के बारे में भली-भाँति संप्रेषित कर दिया है “अच्छा कर सकती है, ‘अच्छा’, ‘खराब’, अधिक प्रयास करने की ज़रूरत है,” किसी भी अभिभावक के लिए इन टिप्पणियों की क्या सार्थकता है? क्या इस तरह की टिप्पणियाँ किसी तरह की स्पष्ट सूचना प्रदान कर सकती हैं कि उनकी बच्ची क्या कर सकती है और क्या सीख चुकी है। यह सुझाव दिया जाता है कि आप आसानी से समझी जानेवाली भाषा में पृष्ठपोषण दें—

- बच्ची क्या-क्या कर सकती है, क्या करना चाह रही है और क्या करने में उसे कठिनाई होती है,
- बच्चे को क्या-क्या करना पसंद है और क्या नहीं,
- बच्चों द्वारा किए गए कामों के नमूने गुणात्मक कथन, मात्रात्मक पृष्ठपोषण के साथ प्रस्तुत किए जा सकते हैं,
- बच्चों ने किस तरह से सीखा (प्रक्रिया) और सीखने में कहाँ-कहाँ कठिनाई का सामना किया,
- बच्चों के कार्यों की चर्चा अभिभावकों से करना जो उनकी सफलता और सुधार के क्षेत्रों को दिखाने में मदद करें,
- कठिनाई अनुभव करने पर काम पूरा कर सके या नहीं,
- सहयोग, उत्तरदायित्व, संवेदनशीलता, रुचि आदि पहलुओं पर बात करनी ज़रूरी होगी,
- अभिभावकों के साथ चर्चा करना कि (अ) बच्चों की किस तरह से मदद कर सकते हैं, (ब) घर पर उन्होंने किस तरह का अवलोकन किया है।

आप बच्चे की उन्नति/प्रगति को ग्राफ (लेखा चित्र) के माध्यम से भी प्रस्तुत कर सकते हैं, जिसे समझना बच्चों और अभिभावकों दोनों के लिए सरल होगा।

बच्चों के अधिगम तथा प्रगति के संबंध में एकत्रित की गई सूचनाएँ तथा पृष्ठपोषण अंततः समग्र शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को समुन्नत करेगी और बेहतर तरीके से सीखने के लिए प्रोत्साहित करेगी। यहाँ अध्यापकों द्वारा पुनर्विचार करने व प्रतिबिंबित करने की ज़रूरत है। आकलन का चक्र प्रभावशाली, उपयोगी रूप से चलता रहे, इसके लिए ज़रूरी है कि वे अपनी शिक्षण अधिगम प्रणाली, सहायक शिक्षण सामग्री, गतिविधियों के आयोजन/नियोजन और दूसरे बहुत से पहलुओं पर पुनर्विचार करें।

टीचर्स रिलेक्शन—बच्चों के अधिगम को समुन्नत करना

कुछ महत्वपूर्ण सवाल जो आपको पुनर्विचार करने तथा दूसरों के साथ चर्चा करने में मदद करेंगे—

- क्या मेरे बच्चे पूरी तरह से गतिविधियों में संलग्न हैं और ठीक तरह से सीख पा रहे हैं? यदि नहीं तो वे किस स्तर पर हैं?
- क्या मैं बच्चों की भिन्न-भिन्न ज़रूरतों को समझ सकती हूँ? यदि हाँ तो उन ज़रूरतों की समझ के आधार पर मैं क्या करनेवाली हूँ?

- क्या कुछ ऐसे बच्चे भी हैं, जो पहले स्तर तक पहुँचने में भी कठिनाई अनुभव कर रहे हैं? उन्हें प्रेरित तथा उत्साहित करने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?
- बच्चों को एक स्तर से अगले स्तर तक ले जाने के लिए मुझे अपनी अध्यापन अधिगम प्रक्रिया को उन्नत करने के लिए क्या करना चाहिए?
- मैं बच्चों को स्व आकलन के लिए किस तरह प्रेरित कर सकती हूँ?
- मुझे किन-किन क्षेत्रों में कठिनाइयाँ आती हैं— (बच्चों का समूह बनाने में, बच्चों की उम्र और स्तर के अनुसार गतिविधियों का चयन करने में, सामग्री की कमी व अनुपयुक्तता पर),
- मुझे और भी किस तरह की सहायता की ज़रूरत है? मुझे कौन इस तरह की मदद दे सकता/सकती है? (शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े लोग, अभिभावक, समुदाय, अन्य अध्यापक),
- बेहतर अध्यापन अधिगम अभ्यासों के लिए और क्या-क्या प्रयास किए जा सकते हैं?

यह संभव है— आप ऐसा कर सकते हैं

आकलन एक बहुत रुचिकर तथा लाभदायी उपयोगी प्रक्रिया बन सकती है। इसका साक्षात् अनुभव करने के लिए हमें ध्यान रखना होगा—

- हम बच्चों का आकलन क्यों कर रहे हैं, इस बात में स्पष्टता हो,
- बच्चों पर किसी तरह का ठप्पा नहीं लगाना होगा, जैसे— मंद, निकृष्ट, बुद्धिमान, व्यवधान पहुँचानेवाले और बच्चों की आपस की तुलना से भी बचना होगा,
- विषयों तथा अन्य क्षेत्रों में बच्चों के सीखने संबंधी प्रगति के बारे में सूचनाएँ इकट्ठी करने के लिए विविध प्रकार के तरीकों का इस्तेमाल करना होगा,
- सतत रूप से सूचनाओं का संग्रहण और उन्हें दर्ज करना,
- प्रत्येक बच्चे के सीखने के तरीके, उसकी गति और उत्तर देने की शैली को महत्व देना होगा,
- सतत आधार पर रिपोर्ट देना और प्रत्येक बच्चे की प्रतिक्रिया के प्रति संवेदनशील रहना होगा,
- नकारात्मक टिप्पणियों से बचना होगा। आकलन व पृष्ठपोषण के समय तकनीकी शब्दावली का उपयोग किया जा सकता है,
- सरल व स्पष्ट भाषा में पृष्ठपोषण देना जो बच्चे को सकारात्मक दिशा की ओर प्रवृत्त करने में मदद करे,

अभ्यास

-
- बच्चों को संप्रेषित करते समय पोर्टफोलियों की भूमिका किस प्रकार महत्वपूर्ण हो सकती है।
 - सकारात्मक पृष्ठपोषण मूल्यांकन हेतु कितना आवश्यक है और क्यों?
 - छात्रों द्वारा की गई गलतियों को किस तरह के सुधारा जा सकता है?
 - परीक्षण के लिए तैयार किए गए प्रश्नों की प्रकृति कैसी होनी चाहिए।
 - आकलन में किसी एक विधि का ही इस्तेमाल करना पर्याप्त नहीं होता है, क्यों?
-

मूल्यांकन (एन.सी.एफ.)

पाठ की रूपरेखा

- परिचय
- उद्देश्य
- शीर्षक व उप-शीर्षक
 - मूल्यांकन का यह प्रयोजन नहीं है
 - आकलन और मूल्यांकन
 - आकलन का उद्देश्य
 - दक्षताएँ
 - शिक्षार्थियों का आकलन
 - शिक्षण के क्रम में आकलन
 - पाठ्यचर्या के वे क्षेत्र जो अंकों के लिए जाँचे नहीं जा सकते
 - आकलन की रूपरेखा और उसका संचालन
 - स्व-आकलन और प्रतिपुष्टि
 - वे क्षेत्र जिनके बारे में नए सिरे से सोचने की जरूरत है
 - विभिन्न चरणों में आकलन

परिचय :

आकलन सीखने-सिखाने और पढ़ने-पढ़ाने की प्रक्रिया का अभिन्न हिस्सा है। सभी बच्चों के सीखने की एक अपनी गति होती है और सीखने के तरीके भी भिन्न-भिन्न होते हैं। भाषा के सन्दर्भ में आकलन का उद्देश्य है— भाषा की समझ, इसे विभिन्न संदर्भों में उपयोग करने की क्षमता और सौंदर्यपरक पहलू परख सकने की क्षमता का मापन करना। एक अच्छा मूल्यांकन और परीक्षा लेने के तरीके सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग बन सकते हैं, जो अध्यापक व बच्चे दोनों को ही अलोचनात्मक प्रतिपुष्टि देते हैं। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 में भाषा शिक्षण में मूल्यांकन एवं एक समग्र भाषिक निपुणता की बात की गई है। विद्यालय में आकलन का शिक्षार्थियों एवं शिक्षकों के लिए क्या महत्त्व है, आकलन में समालोचनात्मक प्रतिपुष्टि का क्या महत्त्व है? आकलन के विभिन्न चरण क्या हैं? आदि के प्रति एन.सी.एफ. 2005 का क्या नज़रिया है, यही हम इस अध्याय में जानेंगे व समझेंगे।

उद्देश्य :

- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 का आकलन के उद्देश्यों एवं प्रयोजन के प्रति क्या नज़रिया है?
- रिपोर्ट कार्ड बच्चों और माता-पिता के सामने बच्चों के कई क्षेत्रों के विकास पर समावेशी, समझ दृष्टिकोण एवं सकारात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।
- विश्वनीय आकलन के लिए सूचना आधारित प्रश्न ना होकर, बहुउत्तरीय प्रश्न होने चाहिए। जिससे में समझा जा सके कि बच्चों ने क्या सीखा और उनके सोचने की प्रक्रिया को कैसे आगे बढ़ाया जा सकता है आदि बातों पर हम अपनी समझ बना पाएंगे।

मूल्यांकन का यह प्रयोजन नहीं है :

- बच्चों को डर के दबाव में अध्ययन के लिए प्रेरित करना।
- बच्चों को नाम देना जैसे 'धीमी गति से सीखने वाला',

‘होशियार’, ‘समस्यात्मक विद्यार्थी’। ऐसे विभाजन अधिगम की सारी जिम्मेदारी विद्यार्थी पर डाल देते हैं और शिक्षाशास्त्र की भूमिका पर से ध्यान हटा देते हैं।

- उन बच्चों को पहचानना जिन्हें उपचारात्मक शिक्षण की आवश्यकता है (इसमें औपचारिक आकलन की प्रतीक्षा किए बिना शिक्षक, शिक्षण के दौरान ही शिक्षाशास्त्रीय योजना और व्यक्तिगत ध्यान देकर यह कर सकता है)।
- अधिगम की कठिनाइयों और समस्या क्षेत्रों की पहचान करना – अवधारणात्मक कठिनाइयों के व्यापक सूचक मूल्यांकन और परीक्षा से पता किए जा सकते हैं। निदान के लिए परीक्षा के विशेष औजारों की और प्रशिक्षण की ज़रूरत होती है। यह ज़रूरत साक्षरता और संख्यनन के आधारभूत क्षेत्रों के लिए है न कि विषयों के लिए।

आकलन और मूल्यांकन

भारतीय शिक्षा में मूल्यांकन शब्द परीक्षा, तनाव और दुश्चिन्ता से जुड़ा हुआ है। पाठ्यचर्या की परिभाषा और नवीनीकरण के सभी प्रयास विफल हो जाते हैं, अगर वे स्कूली शिक्षा प्रणाली में जड़ें जमाएँ मूल्यांकन और परीक्षा तंत्र के अवरोध से नहीं जूझ सकते। हमें परीक्षा के उन दुष्प्रभावों की चिन्ता है जो सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को सार्थक बनाने और बच्चों के लिए आनंददायी बनाने के प्रयासों पर पड़ते हैं। वर्तमान में बोर्ड की परीक्षाएँ स्कूली वर्षों में होने वाले हर आकलन और हर तरह के परीक्षण को नकारात्मक रूप से ही प्रभावित करती हैं। इसमें शाला पूर्व-स्तर में होने वाला आकलन और परीक्षण भी शामिल है।

एक अच्छी मूल्यांकन और परीक्षा पद्धति सीखने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग बन सकती है जिसमें शिक्षार्थी और शिक्षा तंत्र दोनों को ही विवेचनात्मक और आलोचनात्मक प्रतिपुष्टि से फायदा हो सकता है। यह भाग मूल्यांकन और आकलन को संबोधित करते हुए शुरू होता है क्योंकि ये सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के लिए पाठ्यचर्या के भाग की तरह प्रासंगिक होते हैं।

आकलन का उद्देश्य

शिक्षा का सरोकार एक सार्थक व उत्पादक जीवन की तैयारी से होता है और मूल्यांकन आलोचनात्मक प्रतिपुष्टि देने का तरीका होना चाहिए। यह प्रतिपुष्टि इस बात की होती है कि हम ऐसी शिक्षा लागू करने में किस हद तक सफलता प्राप्त कर पाएँ। इस परिप्रेक्ष्य से देखें तो वर्तमान में चल रही मूल्यांकन की प्रक्रियाएँ जो केवल कुछ ही योग्यताओं को मापती और आकलित करती हैं बिल्कुल ही अपर्याप्त हैं और शिक्षा के उद्देश्यों की ओर प्रगति की संपूर्ण तस्वीर नहीं खींचती हैं।

लेकिन मूल्यांकन का यह सीमित प्रायोजन भी, अकादमिक और शैक्षिक विकास पर प्रतिपुष्टि देने वाला, तभी बन सकता है जब शिक्षक पढ़ाने से पहले ही न केवल आकलन के तरीकों की तैयारी करें बल्कि मूल्यांकन के मानकों और उसके लिए प्रयुक्त होने वाले औजारों की भी तैयारी करें। विद्यार्थियों की उपलब्धि की गुणवत्ता की जाँच के अलावा एक अध्यापक को विभिन्न विषयों में उनकी उपलब्धि की जानकारी इकट्ठा कर, उसका विश्लेषण कर और उसकी व्याख्या करनी होगी। तभी अध्यापक विभिन्न क्षेत्रों में विद्यार्थियों के अधिगम की सीमा की एक समझ बना पाएँगे। आकलन का प्रायोजन निश्चय ही सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं एवं सामग्री का सुधार करना है और उन लक्ष्यों पर पुनर्विचार करना है जो स्कूल के विभिन्न चरणों के लिए तय किए गए हैं। यह पुनर्विचार और सुधार इस आधार पर किया जा सकता है कि शिक्षार्थियों की क्षमता किस हद तक विकसित हुई। यह कहने की ज़रूरत नहीं होनी चाहिए कि यहाँ इस आकलन का मतलब विद्यार्थियों का नियमित परीक्षण कतई नहीं है। बल्कि, दैनिक गतिविधियाँ और अभ्यास के उपयोग से अधिगम का बहुत ही अच्छा आकलन हो सकता है।

सुनियोजित आकलन और नियमित प्रगति रपट शिक्षार्थियों को उनके काम की प्रतिपुष्टि देते हैं और साथ ही वे मानक भी स्थापित करते हैं जिनको पाने के लिए विद्यार्थी प्रयासरत रहते हैं। वे अभिभावकों को उनके बच्चों के अधिगम की गुणवत्ता और उनके विकास के बारे में भी जानकारी देते हैं। ऐसा आकलन प्रतियोगिता को प्रोत्साहन देने का तरीका बिल्कुल नहीं है; अगर कोई शिक्षा में गुणवत्ता चाहता है तो बच्चों का विभाजन कर उन्हें ऐसी श्रेणियों में डालना जिससे उनमें हीन भावना आ जाए तो बिल्कुल नहीं होना चाहिए। अंतिम बिंदु है कि विश्वसनीय आकलन एक रपट देता है, या अध्यापन के एक कोर्स के खत्म होने का प्रमाण देता है या जिससे दूसरे स्कूलों, शैक्षिक संस्थानों, समुदाय और भावी मालिकों (रोज़गार देने वालों) को अधिगम की गुणवत्ता और सीमा के बारे में जानकारी मिल जाती है।

अभ्यास

- सही मायनों में आकलन का प्रयोजन क्या है?
- विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता किस हद तक विकसित हुई है? यह पता लगाने के लिए शिक्षक को किन-किन बातों को ध्यान में रखना होगा?

दक्षताएँ : दक्षताएँ शिक्षण और उससे संबंधित आकलन का ध्यान पाठ्यपुस्तक एवं तथ्ययुक्त विषयवस्तु से दूर ले जाने का एक प्रयास है। परन्तु अधिगम के न्यूनतम स्तर के उपागम में दक्षताओं को विस्तृत उप-दक्षताओं और उप-कौशलों में तोड़ा गया है, यह मानकर कि इनका कुल योग दक्षता है। परन्तु अक्सर व्यवहार और प्रस्तुति पर ध्यान देने से अवधारणाओं के लिए तो जगह ही नहीं बचती। उप-कौशलों के इस तार्किक, लेकिन यांत्रिक सूचीकरण से और उनकी उपलब्धि के लिए बनाई गई सख्त समय-सारणी से, कहीं भी न यह झलकता है कि अधिगम एवं दक्षताओं के उपयोग में खुद में ही लचीलापन हो सकता है, और न ही यह झलकता है कि जिस चक्र में दक्षताएँ सीखी जाती हैं, ज़रूरी नहीं है कि वे निर्धारित समय और गति के अनुसार से ही सीखी जाएँगी। यह सरोकर भी कहीं प्रतिबिंबित नहीं होता कि समग्र, दरअसल विभिन्न भागों के जोड़ से ज्यादा भी हो सकता है।

इस विस्तृत सूची के लिए अधिगम और परीक्षण के विषयों की सूची बनाना और पूर्व निर्धारित अधिगम के परिणामों के लिए पढ़ाना बिल्कुल ही अव्यावहारिक है और शिक्षाशास्त्रीय नज़र से अविश्वसनीय भी है।

यह धारणा प्रचलित है कि मूल्यांकन से उन ज़रूरतों को पहचानने में मदद मिलती है, जिन ज़रूरतों को उपचारात्मक शिक्षण से पूरा किया जाता है। इस धारणा ने पाठ्यचर्या की योजना बनाने में बड़ी समस्याएँ पैदा की है। इस 'उपचारात्मक' शब्द को उन विशिष्ट/विशेष कार्यक्रमों तक सीमित रखने की ज़रूरत है जो उन बच्चों की क्षमता विकास में मदद करते हैं जिनको पठन/साक्षरता (पठन में असफलता जिससे बाद में बोध पर फर्क पड़ता है) या अंकज्ञान (खासकर गणित के संकेतों वाले पहलू, स्थानीय मान और संगणना संबंधी) में समस्याएँ आती हैं। शिक्षकों को अच्छे निदानकारी परीक्षणों के लिए विशिष्ट प्रशिक्षण की ज़रूरत है, जो उन्हें उपचार के प्रयासों में मदद करेगा। ठीक इसी तरह, निदानात्मक कार्य के लिए भी विशिष्ट रूप से विकसित सामग्री और नियोजन की ज़रूरत है, ताकि शिक्षक प्रत्येक बच्चे के साथ अलग से काम कर पाएँ। इस उपचारात्मक काम की शुरुआत उन चीज़ों से होगी जो बच्चे को पहले से आती है और उन चीज़ों तक जाएगी जिन्हें बच्चे को सीखने की ज़रूरत है। यह आकलन और सतर्क अवलोकन की सतत प्रक्रिया के द्वारा ही संभव है। शब्दों का बिना सोचे-विचारे किया गया उपयोग, प्रभावशाली शिक्षाशास्त्र की आम समस्याओं से हमारा ध्यान हटा देता है और अधिगम एवं असफलता की ज़िम्मेदारी पूरी तरह से बच्चे पर डाल देता है।

शिक्षार्थियों का आकलन

बच्चे की अधिगम की गुणवत्ता और विस्तार पर लिखी गई एक सार्थक रपट को समावेशी होना चाहिए। हमें एक ऐसी पाठ्यचर्या की आवश्यकता है जिसमें सृजनात्मकता, नवप्रवर्तकता और बालक का संपूर्ण विकास हो। तो ऐसे में पाठ्यपुस्तक आधारित अधिगम और रटे हुए तथ्यों को जाँचने वाले परीक्षण, दोनों ही बेकार हैं। हमें मूल्यांकन और प्रतिपुष्टि को पुनः परिभाषित करने और उनके नए मानक ढूँढने की ज़रूरत है। विशिष्ट विषयों में शिक्षार्थियों की उपलब्धि का बड़े आराम से परीक्षण हो जाता है। उसके अलावा हमें आकलन में सीखने के प्रति अभिवृत्तियों, रुचि और स्वयं सीखने की क्षमता को भी शामिल करना होगा।

अभ्यास

- कक्षा 3 में आते-आते बच्चों में किन-किन भाषागत दक्षताओं का विकास हो जाना चाहिए?
- आकलन का आधार केवल पाठ्यपुस्तक में दी गई सूचनाओं को जाँचना मात्र नहीं होता है। इस बात से आप कितना सहमत हैं? स्पष्ट कीजिए।

शिक्षण के क्रम में आकलन

प्रगति-पत्र (रिपोर्ट कार्ड) तैयार करने से शिक्षक को अपने प्रत्येक विद्यार्थी के बारे में यह सोचने का मौका मिलता है कि उसने सत्र के दौरान क्या सीखा और किस क्षेत्र में उसको ज्यादा मेहनत करने की ज़रूरत है। ऐसे रिपोर्ट कार्ड को लिख पाने के लिए शिक्षक को प्रत्येक विद्यार्थी के बारे में सोचना होगा और इसीलिए रोज़मर्रा के शिक्षण के दौरान उस पर ध्यान देना होगा। इसके लिए विशिष्ट परीक्षाओं की ज़रूरत नहीं है। स्वयं सीखने वाली गतिविधियाँ बच्चों में निरंतर चलने वाले अवलोकनात्मक एवं गुणात्मक आकलन का आधार बनती है। अवलोकन के आधार पर रोज़ की दैनंदिनी रखने से निरंतर, सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में मदद मिलती है। एक शिक्षक की साप्ताहिक डायरी से लिया गया अंश— “किरण को अपने काम में मज़ा आया। उसको वे किताबें फौरन पसंद आईं जो छोटी थीं और जिनमें जानकारी थी। वह कहता है कि उसे साफ और सादी भाषा पसंद है। तथ्यों को लिखते हुए वह अक्सर संक्षिप्त उत्तर लिखता है। उसका कहना है कि इससे वह चीज़ों को आसानी से समझ पाता है। उसे व्यावहारिक तरीका पसंद है।” इसी तरह विभिन्न स्तर पर बच्चों के काम और उनके बारे में लिखने से शिक्षार्थी और शिक्षक को उसके अधिगम की प्रगति का व्यवस्थित रिकार्ड मिल जाता है।

यह विश्वास कि आकलन से सीखने में आने वाली कठिनाइयों का पता लगना ही चाहिए ताकि उनका उपचार हो सके अक्सर बहुत ही अव्यावहारिक हो जाता है और यह शिक्षाशास्त्रीय प्रयास की ठोस समझ पर आधारित नहीं होता। अवधारणात्मक विकास से जुड़ी समस्याएँ पहचाने जाने के लिए औपचारिक परीक्षण का इंतज़ार नहीं कर सकतीं। पढ़ाने के क्रम के दौरान ही एक शिक्षक ऐसी समस्याओं से अवगत हो सकता है।

पाठ्यचर्या के वे क्षेत्र जो अंकों के लिए जाँचे नहीं जा सकते

पाठ्यचर्या के सभी विषय परीक्षा द्वारा नहीं जाँचे जा सकते; बल्कि ऐसा करना तो पाठ्यचर्या के उन क्षेत्रों के सीखने की प्रकृति के विपरीत होगा। इनमें काम, स्वास्थ्य, योग, शारीरिक शिक्षा, संगीत एवं कला शामिल हैं। यद्यपि शारीरिक शिक्षा और योग के कौशल आधारित पक्षों का परीक्षण किया जा सकता है परन्तु स्वास्थ्य से जुड़े पक्षों को सतत और गुणात्मक आकलन की ज़रूरत होती है। वर्तमान में इन्हें पाठ्यचर्या में कम महत्व देने का चलन है। इन क्षेत्रों के लिए न ही पर्याप्त सामग्री उपलब्ध करवाई जाती है, और न ही पाठ्यचर्या के लिए ढंग से योजना बनाई जाती है और आगे बढ़ें तो इन विषयों को दिए गए समय को ‘विशेष पढ़ाई’ के लिए हमेशा बलिदान कर दिया जाता है। पाठ्यचर्या के इन भागों के साथ यह बहुत ही बड़ा समझौता है, जबकि इन भागों की गहरी शैक्षिक महत्ता और संभावनाएँ होती हैं।

‘अंक’ बिना दिए भी बच्चों का इन क्षेत्रों में विकास के लिए आकलन किया जा सकता है। भागीदारी, रुचि, और जुड़ाव तथा जिस स्तर तक क्षमताओं एवं कौशलों का विकास हुआ, ये कुछ सूचक हैं जिनके आधार पर शिक्षक यह समझ बना सकते हैं कि बच्चों को इन गतिविधियों से कितना फायदा हुआ है। बच्चों को अगर अपने अधिगम के बारे में खुद बताने के लिए कहा जाए तो उससे भी शिक्षकों में बच्चों की शैक्षिक उन्नति संबंधी अंतर्दृष्टि विकसित होगी और पाठ्यचर्या एवं शिक्षाशास्त्रीय सुधार करने के आधार मिलेंगे।

अभ्यास

- अंक प्रमाण पत्र की बजाय के आकलन की लिखित रिपोर्ट कार्ड द्वारा तैयार करने से बच्चे के सम्पूर्ण विकास व गति के बारे में अध्यापक को सोचने का मौका मिलता है। इसके लिए अध्यापक को किन-किन बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है तथा क्यों?
- वर्तमान पाठ्यचर्या में शारीरिक शिक्षा योग एवं अन्य कौशलात्मक विषयों को सम्मिलित करने का महत्त्व क्या है?
- इन विषयों में बिना अंक दिए कैसे आकलन किया जा सकता है?
- आकलन के लिए प्रश्न निर्माण करते समय अध्यापक को किन-किन बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है तथा क्यों?

आकलन की रूपरेखा और उसका संचालन

आकलन और परीक्षाओं को विश्वसनीय होना चाहिए, एवं अधिगम को मापने के वैध तरीकों पर आधारित होना चाहिए।

प्रश्न उठाना

एक लौह प्रगलन प्लांट आरंभ करने से पहले कौनसी चार बातें ध्यान में रखने की ज़रूरत होती है?

के स्थान पर

यदि एक उद्योगपति एक लौह प्रगलन प्लांट लगाना चाहता है तो वह किस स्थान का चुनाव करे और क्यों?

चिड़िया की चोंच का आकार अनुकूलन में किस प्रकार से सहायता देता है।

के स्थान पर

अपने पड़ोस में दिखने वाली साधारण चिड़िया की चोंच का चित्र बनाओ। उसकी चोंच के आधार पर वर्णित करो कि उसकी भोजन की आदतें क्या होगी और तुम्हारे पड़ोस में उसे वैसा भोजन कहाँ मिल पाएगा?

जब तक परीक्षाएँ बच्चों की पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान को याद करने की क्षमताओं का परीक्षण करती रहेंगी, तब तक पाठ्यचर्या को सीखने की तरफ मोड़ने के सभी प्रयास विफल होते रहेंगे। पहला बिंदु यह है कि ज्ञान-आधारित विषय क्षेत्रों में परीक्षाएँ ये समझ पाएँ कि बच्चों ने क्या सीखा और उस ज्ञान को समस्या सुलझाने और व्यवहार में लाने की उनकी क्षमता को जाँच पाएँ। इसके अलावा, परीक्षाएँ यह भी जाँचने में सक्षम होनी चाहिए कि विद्यार्थियों की सोचने की प्रक्रियाएँ कैसी हैं तथा यह पता लगा पाएँ कि क्या शिक्षार्थी ने यह सीखा कि जानकारी कहाँ मिलती है, उस जानकारी का इस्तेमाल कैसे करते हैं और उसका विश्लेषण और मूल्यांकन कैसे करते हैं।

आकलन के लिए जो प्रश्न निर्धारित किए जाते हैं उन्हें किताब में दी गई जानकारी से आगे बढ़ाने की ज़रूरत है। कितनी ही बार बच्चों का अधिगम इसलिए बहुत ही सीमित रह जाता है क्योंकि शिक्षक उन उत्तरों को स्वीकार नहीं करते जो कुंजियों में दिए गए उत्तरों से भिन्न होते हैं।

ऐसे प्रश्नों को भी इस्तेमाल करना चाहिए जिनका कोई एक उत्तर नहीं होता और जो बच्चों के सामने चुनौती पेश करते हैं। अच्छे प्रश्न और परीक्षा—पत्र बनाना भी एक कला है और शिक्षकों को ऐसे प्रश्न बनाने पर बल देने की ज़रूरत है। शिक्षकों की अच्छे प्रश्न बनाने की क्षमता और रुचि को बढ़ावा देने के लिए ज़िला या राज्य के स्तर पर प्रतियोगिताएँ की जा सकती हैं। सारे प्रश्न—पत्र कठिनाई की ऐसी रूपरेखा लिए हुए होने चाहिए कि सभी बच्चे सफलता के स्तर को अनुभव कर पाएँ और उत्तर देने एवं समस्या सुलझाने की क्षमता में आत्मविश्वास विकसित कर पाएँ।

खुली—पुस्तक परीक्षा—पत्र बनाना भी एक चुनौती है जिसे स्कूल के प्रत्येक स्तर के पाठ्यचर्या प्रयासों में शामिल करना चाहिए। लेकिन ऐसा करने के लिए अध्यापकों और प्रश्न—पत्र बनाने वालों से यह अपेक्षा होगी कि वे व्याख्या करने और अधिगम के व्यावहारिक पहलू पर ज्यादा जोर दें न कि किताब में दिए गए तर्क और तथ्यों पर। इस तरह के कई सफल उदाहरण हमारे पास मौजूद हैं कि ऐसी परीक्षाएँ बड़े स्तर पर आयोजित की जा सकती हैं और शिक्षक खुद ऐसी परीक्षाओं के परिणामों का नियमन कर सकते हैं और उन पर ऐसे नियमन के लिए भरोसा किया जा सकता है। इसीलिए, परियोजनाओं और प्रयोगशाला के काम के आकलन को भी और विश्वसनीय और पुख्ता बनाया जा सकता है।

यह ज़रूरी है कि जाँचे गए उत्तर वापिस मिलने पर बच्चे अपने उत्तरों को दोबारा लिखें और शिक्षक उन पर पुनर्विचार करें ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि बच्चों ने कुछ सीखा और ऐसी कठिन परीक्षा देने से उन्हें कोई लाभ हुआ।

स्पर्धा प्रोत्साहन तो देती है लेकिन वह प्रेरणा का आंतरिक रूप न होकर बाह्य रूप ही होता है। निश्चय ही इसे स्थापित करना और संचालित करना बड़ा आसान होता है इसीलिए शिक्षक और स्कूली व्यवस्थाएँ उत्कृष्टता की प्रेरणा को पोषण देने के लिए अक्सर इसका सहारा ले लेती हैं। स्कूल पूर्व—प्राथमिक स्तर से ही बच्चों को प्रथम, द्वितीय की श्रेणियों में बाँटने लगते हैं, जिससे उनमें स्पर्धा की भावना आत्मसात हो। इस तरह की प्रतियोगी प्रेरणा के अधिगम पर कई नकारात्मक प्रभाव हो सकते हैं; अक्सर प्रभाव बनाने के लिए सतही स्तर पर सीखना भर पर्याप्त होता है। समय के साथ—साथ बच्चे अपनी रुचि के अनुसार पहल करने की क्षमता खो देते हैं और इस प्रक्रिया में वे क्षेत्र जिनमें पाठ्यचर्या में 'अंक' नहीं दिए जाते उपेक्षित हो जाते हैं। इसका कक्षा की संस्कृति पर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ता है, क्योंकि बच्चे व्यक्तिवादी बनते हैं और सामूहिक कार्य करने की क्षमता खो बैठते हैं। 'परीक्षा' को बिल्कुल असंगत महत्व दिया जाता है और उन पर अनावश्यक ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिसमें अक्सर गोपनीयता और निरीक्षण की सख्त व्यवस्था की जाती है। माध्यमिक कक्षाओं तक तो इनके शारीरिक और मनोवैज्ञानिक प्रभाव आसानी से नहीं दिखते हैं लेकिन यह बच्चों में बेहद तनाव को जन्म देता है जिससे वह बहुत जल्दी उत्तेजित होने की हालत में पहुँच जाते हैं। स्कूल और शिक्षकों को अपने आप से पूछने की ज़रूरत है कि क्या इस तरह के व्यवहारों से सच में बहुत ज्यादा लाभ होता है और अधिगम को दरअसल किस हद तक अंक देने और श्रेणीकृत करने की ज़रूरत है।

अभ्यास

- बच्चों में अधिगम को प्रोत्साहन देने के लिए प्रतिस्पर्धा की भावना को बढ़ावा नहीं दिया जाना चाहिए। क्यों?

स्व-आकलन और प्रतिपुष्टि

आकलन की भूमिका उस प्रगति को समझने की होती है जो शिक्षार्थी और शिक्षक निर्धारित लक्ष्यों की दिशा में करते हैं। और इस प्रक्रिया को बेहतर बनाने के लिए उसकी समीक्षा भी करते हैं। प्रतिपुष्टि पाने के ऐसे अवसर हमेशा उपलब्ध होने चाहिए जो प्रदर्शन को दोहराने व सुधारने की दिशा में ले जाएँ, परीक्षाओं व मूल्यांकन के भय का इस्तेमाल किए बिना पढ़ने की दिशा में प्रेरित करें।

विद्यार्थियों की मौजूदगी में की गई जाँच व सुधार कार्य उन्हें इस तरह की प्रतिपुष्टि देते हैं कि उन्होंने क्या सही किया, क्या गलत और क्यों? बच्चों से इस बारे में जानकारी लेना कि उन्होंने कोई उत्तर क्यों दिया, शिक्षक को लिखित उत्तर से आगे जाने में मदद देता है और बच्चों की सोच से जुड़ने का मौका देता है। ऐसी प्रक्रियाएँ परीक्षाओं के डरावने और निर्णायक गुण को भी दूर कर देती हैं और बच्चों को सक्षम बनाती हैं कि वह अपनी गलतियों को समझें, उन पर ध्यान दें और उनसे सीखें। कभी-कभी प्रधानाध्यापक यह कह कर एतराज उठाते हैं कि बच्चों की मौजूदगी में की गई जाँच में वस्तुपरकता नहीं आ पाती। वस्तुपरकता के लिए यह सरोकार बिल्कुल अनुचित है जो प्रतियोगी व्यवस्था से उपजता है और जो बच्चों के परीक्षण में विश्वास रखता है। वस्तुपरकता की दृष्टि से यह सरोकार उस मूल्यांकन के लिए भी अनुचित है जो शैक्षिक लक्ष्यों से सुसंगत हो।

न केवल अधिगम के परिणाम बल्कि अधिगम के अनुभवों का भी मूल्यांकन होना चाहिए। शिक्षार्थी बहुत खुशी से अपने अनुभवों की संपूर्णता पर टिप्पणी देते हैं। व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों स्तर के ऐसे अभ्यास बनाए जा सकते हैं जिनसे बच्चे अपने अधिगम का आकलन करने और उस पर चिंतन करने में सक्षम हो पाएँ। इस तरह के अनुभव उन्हें स्व-नियामन की क्षमताएँ भी देते हैं जो 'सीखने के लिए सीखने' की खातिर ज़रूरी होती है। ऐसी जानकारी शिक्षक के लिए भी बहुत मूल्यवान प्रतिपुष्टि होती है जिसका उपयोग अधिगम की पूरी व्यवस्था को बेहतर बनाने में किया जा सकता है।

बच्चों के साथ की गई प्रत्येक कक्षायी अंतःक्रिया की माँग होगी कि बच्चे अपने काम का खुद मूल्यांकन करें और उनसे यह चर्चा भी हो कि किसका परीक्षण किया जाना चाहिए और यह पता करने के क्या तरीके हैं कि क्षमताओं का विकास दरअसल हुआ कि नहीं। बहुत छोटे बच्चे भी इसका सही आकलन कर सकते हैं कि कौन से काम वे कर पाते हैं और कौन से नहीं। अध्यापन की भूमिका यह है कि वह प्रत्येक बच्चे को उसकी क्षमता के अनुसार सीखने के सर्वश्रेष्ठ मौके दे और इस तरह के अनुभव दे कि जिससे संज्ञानात्मक गुणों का विकास हो, शारीरिक कुशलक्षेम सुनिश्चित हो, खेल-कूद संबंधी गुणों का भी विकास हो और सौंदर्यबोध और भावनात्मकता भी विकसित हो।

यह ज़रूरी है कि रपट कार्ड बच्चों और माता पिता के सामने बच्चों के कई क्षेत्रों में विकास पर एक समावेशी और समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करे। शिक्षक प्रत्येक बच्चे के बारे में ऐसी बातें कह पाएँ जो बताएँ कि उस बालक/शिक्षार्थी पर व्यक्तिगत ध्यान दिया गया है, एक सकारात्मक आत्म छवि को मजबूत करती हो और उनके सामने ऐसे व्यक्तिगत उद्देश्य रख पाती हो जिनको लक्ष्य करते हुए वे काम करें। चाहे अंकों की सूचना दी जा रही हो या श्रेणियों की, शिक्षक के द्वारा दिया गुणात्मक कथन आकलन के समर्थन के लिए बहुत ज़रूरी है। केवल इसी तरह का रिश्ता बनाने के बाद एक शिक्षक विद्यार्थियों को प्रभावित कर सकता है और उनके अधिगम में योगदान दे सकता है। शिक्षा प्रत्येक बच्चे का आकलन करे, इसके अलावा प्रत्येक बच्चा स्वयं का भी आकलन कर सकता है और उस स्व-आकलन को रिपोर्ट कार्ड में शामिल करना चाहिए।

वर्तमान में, कई रिपोर्ट कार्डों में विषय क्षेत्रों पर जानकारी होती है लेकिन बच्चे के विकास के दूसरे पहलुओं पर बताने के लिए कुछ नहीं होता है; जैसे— स्वास्थ्य, शारीरिक कुशलता, खेलों में दक्षता, सामाजिक कौशल, कला और हस्तकला में दक्षता। बच्चों की शिक्षा और उनके विकास के इन पहलुओं पर दिए गए गुणात्मक कथन शैक्षिक सरोकारों का एक समग्र आकलन दे सकेंगे।

अभ्यास

- बच्चों के सीखने की गति एवं रुचि को सकारात्मक प्रतिपुष्टि द्वारा किस प्रकार से आगे बढ़ाया जा सकता है?
- कक्षा 5 के बच्चों के लिए भाषा की अभिव्यक्ति कौशल की जाँच करने के लिए एक सामूहिक अभ्यास बनाइए। साथ ही यह भी स्पष्ट कीजिए कि इस अभ्यास को करवाते समय शिक्षक कैसे बच्चे का स्तर जाँच पाएगा?

वे क्षेत्र जिनके बारे में नए सिरे से सोचने की ज़रूरत है

पाठ्यचर्या के ऐसे कई क्षेत्र हैं जिनका आकलन किया जा सकता है पर जिनके लिए हमारे पास विश्वसनीय और प्रभावी उपकरण नहीं हैं। इसमें वह अधिगम भी शामिल है जिसके लिए समूहों में काम होता है और नाट्य, काम और हस्तकला के क्षेत्रों का अधिगम भी शामिल है जहाँ कौशल एवं दक्षताएँ लंबे समय में विकसित हो पाती हैं और जिन्हें बहुत सावधानी से किए गए अवलोकन की ज़रूरत होती है।

सतत व समावेशी मूल्यांकन को ही एक सार्थक मूल्यांकन माना गया है। हालांकि इस पर भी सावधानीपूर्वक विचार करने की ज़रूरत है कि इसका प्रभावी उपयोग करने के लिए कब लागू करना है। अगर मूल्यांकन को सार्थक रूप से लागू करना है और उसके आकलन की विश्वसनीयता रखनी है तो ऐसा मूल्यांकन शिक्षकों से बहुत ज्यादा समय देने की मांग करता है तथा यह माँग भी करता है कि वह सावधानी और कुशलता से रिकॉर्ड रखे। अगर यह प्रक्रिया महज बच्चों के बोझ को बढ़ाए और सारी गतिविधियों को आकलन का ज़रिया बना दे और उन्हें शिक्षक की ताकत का अनुभव कराती रहे तो वह शिक्षा के प्रयोजन को ही विफल कर देती है। जब तक व्यवस्था ऐसे आकलन के लिए पर्याप्त रूप से तैयार नहीं है तब तक शिक्षकों के लिए यही बेहतर है कि वे आकलन के सीमित रूपों का ही उपयोग करें। लेकिन उसमें वे आयाम शामिल कर लें जिनसे आकलन सीखने के एक सार्थक दस्तावेज़ के रूप में उभर पाए।

अंततः आकलन में विश्वसनीयता को विकसित करने और बनाए रखने की ज़रूरत है जिससे वे प्रतिपुष्टिकरण की भूमिका को सार्थक रूप से निभाते रहें।

विभिन्न चरणों में आकलन

पूर्व प्राथमिक शिक्षा और प्राथमिक चरण की कक्षा 1 एवं 2 : इस स्तर पर आकलन में विभिन्न क्षेत्रों में बच्चों की गतिविधियों पर दिए गए गुणात्मक कथन होने चाहिए और उनके स्वास्थ्य और शारीरिक विकास का आकलन होना चाहिए। यह आकलन रोज़मर्रा की अंतःक्रियाओं के दौरान किए गए अवलोकनों पर आधारित होने चाहिए। किसी भी कारणवश बच्चों की लिखित या मौखिक परीक्षा नहीं होनी चाहिए।

प्राथमिक चरण की कक्षा 3 से 8 तक : यहाँ कई तरीकों का इस्तेमाल किया जा सकता है जिसमें मौखिक एवं लिखित परीक्षा और अवलोकन शामिल हैं। बच्चों को यह पता होना चाहिए कि उनका आकलन किया जा रहा है पर उसको उनकी शैक्षणिक प्रक्रिया के भाग की तरह प्रस्तुत करना चाहिए न कि डरावनी धमकी की तरह। इस चरण पर उपलब्धि के लिए दिए गए अंक और गुणात्मक कथन उन क्षेत्रों के लिए बहुत ज़रूरी हैं जिन पर ज्यादा ध्यान देने की ज़रूरत है। कक्षा 5 से बच्चों के स्व-मूल्यांकन को रिपोर्ट कार्ड में शामिल किया जा सकता है। बड़ी-बड़ी मासिक और वार्षिक परीक्षाओं की जगह समय समय पर छोटी-छोटी परीक्षाएँ होनी चाहिए। ऐसी परीक्षाएँ जिनमें परीक्षण का आधार मानदण्ड हो। कक्षा 7 से सत्रीय परीक्षाएँ शुरू होनी चाहिए जब बच्चे ज्यादा बड़े हिस्से पढ़ने के लिए मनोवैज्ञानिक रूप से तैयार हों और उत्तरों पर काम करते हुए परीक्षा में कुछ घंटे बिताने लायक हो जाएँ। रिपोर्ट कार्ड में फिर से स्वास्थ्य और पोषण पर सामान्य टिप्पणियाँ देने के साथ-साथ शिक्षार्थी के समग्र विकास पर विशिष्ट टिप्पणियाँ हों और माता-पिता के लिए सुझाव हों।

माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक चरणों में कक्षा 9 से 12 : पाठ्यचर्या के ज्ञान आधारित क्षेत्रों के लिए आकलन, परीक्षाओं, परियोजनाओं की रिपोर्ट पर आधारित हो सकता है और साथ में शिक्षार्थी का स्व-आकलन भी शामिल हो। बाकी विषयों का आकलन अवलोकन एवं स्व-मूल्यांकन द्वारा किया जाना चाहिए।

रिपोर्ट में विद्यार्थियों के विभिन्न कौशलों/ज्ञान के क्षेत्रों और प्रतिशतांकों के बारे में अधिक विश्लेषण हो। यह बच्चों को उन विषयों को समझने में मदद करेगा जिन पर उन्हें ध्यान देना चाहिए और उनके आगे के विकल्प चयन की प्रक्रिया के लिए एक आधार भी देगा।

अभ्यास

- एक अध्यापक के रूप में पूर्व प्राथमिक शिक्षा और प्राथमिक स्तर की कक्षा के विद्यार्थियों का आकलन करते समय एवं रिपोर्ट बनाते समय किन-किन को ध्यान में रखेंगे जिससे बच्चे के सम्पूर्ण विकास की तस्वीर सामने आ जाए।

प्राशिका मूल्यांकन

1. मूल्यांकन या आकलन समग्र होना चाहिए। इसमें सीखने-सिखाने से सम्बंधित हर पहलू शामिल होना चाहिए, न कि मात्र सीखने वाले।
2. मूल्यांकन से हमें शिक्षार्थी व शिक्षक की क्षमताएँ व कमजोरी दोनों समझने में मदद मिलनी चाहिए और तदनुसार शिक्षण सामग्री व कार्यक्रम के नियोजन में मदद मिलनी चाहिए।
3. मूल्यांकन ऐसा न हो कि शिक्षार्थी डर जाए। उसे अपने बचाव का पूरा अवसर मिलना चाहिए। मूल्यांकन पीड़ादायक नहीं, खुशनुमा और दोस्ताना प्रक्रिया होनी चाहिए।
4. एकमुश्त सालाना इम्तहान प्रणाली भयावह बन ही जाती है। समय-समय पर विभिन्न सामान्य गतिविधियाँ, सामूहिक चर्चा, घर पर करने के कार्य आदि मूल्यांकन के आधार बनने चाहिए।
5. मूल्यांकन का मकसद बच्चों को रोकना नहीं होना चाहिए। सतत मूल्यांकन पाठ्यक्रम में निहित फीडबैक का आधार बन सकता है।
6. बच्चे का मूल्यांकन हमेशा किसी बाहरी कसौटी के आधार पर नहीं किया जाना चाहिए। मूल्यांकन का आधार उसका अपना विगत प्रदर्शन और पूरी कक्षा का प्रदर्शन होना चाहिए।
7. कई बच्चे किसी एक पहलू में 'कमजोर' होते हैं मगर हो सकता है कि वे किसी अन्य पहलू में मज़बूत साबित हों। कोई बच्चा/बच्ची अगर समस्याएँ सुलझाने में सिद्धहस्त हो सकता/सकती है तो कोई अन्य चित्र बनाने या कहानी कहने में।
8. मूल्यांकन के लिए जो गतिविधियाँ चुनी जाएँ वे आमतौर पर कक्षा में की जाने वाली गतिविधियों से अलग तो हों, मगर उसी स्तर और उसी किस्म की हों।

अभ्यास

- सतत् और सार्थक मूल्यांकन से आप क्या समझते हैं?
- मूल्यांकन अध्यापक एवं विद्यार्थी दोनों के लिए किस प्रकार मददगार होता है? स्पष्ट कीजिए।

प्राथमिक स्तर पर आकलन की मौजूदा प्रक्रिया

पाठ की रूपरेखा

- परिचय
- उद्देश्य
- शीर्षक व उप-शीर्षक
 - शब्द था परीक्षा
 - इसका जवाब हासिल करने के लिए ज़रूरी है कि हम परीक्षा की मौजूदा आकलन प्रक्रिया को टटोलें

परिचय :

“परीक्षा” शब्द सुनते ही बच्चे के माथे पर चिन्ताओं की लकीरे स्पष्ट दिखाई देती हैं। और क्यों न हो वर्तमान परीक्षाओं का स्वरूप ही ऐसा है। परीक्षा यानि आपने साल भर में कितने पृष्ठों को याद कर पाएँ कितने प्रश्न, कितनी कविताएँ, निबंध याद कर पाएँ। इसका परीक्षण की आप कितना जान पाएँ यही नहीं अगर नहीं जान पाए तो अन्य लोगों की टिप्पणी भी सुनना पड़ेगा। इस अध्याय में मौजूदा आकलन की प्रक्रिया के बारे में विस्तृत बातचीत की गई है।

उद्देश्य :

- यह समझ पाएँगे की परीक्षा की वर्तमान प्रक्रिया में क्या कमियाँ हैं?
- यह समझ पाएँगे कि इन कमियों को दूर करने के लिए क्या-क्या परिवर्तन करने की जरूरत होगी।

नगर निगम के एक प्राथमिक विद्यालय में ‘प्राथमिक स्तर पर मूल्यांकन की प्रक्रिया’ नामक विषय पर एक बैठक का आयोजन किया गया था। इस बैठक में भाग ले रहे थे— चौथी ओर पाँचवीं कक्षा के विद्यार्थी तथा उनके अभिभावक। साथ ही पहली से पाँचवीं तक की कक्षाओं के अध्यापक-अध्यापिकाएँ भी। अभिवादन संबंधी औपचारिकताओं को पूरा करने के बाद बैठक की संचालिका ने सभी को एक-एक पर्ची दी। पर्चियों के रंग अलग-अलग थे। पर्चियाँ बाँटने के बाद कहा गया कि संचालिका एक शब्द बोलेंगी। उस शब्द को सुनकर मन में जो भाव पहले कौंधे, उसे पर्ची पर लिख दिया जाए।

शब्द था ‘परीक्षा’

मात्र एक मिनट का समय देकर पर्चियाँ वापिस ले ली गई। पर्चियों में लिखे भाव जानने के लिए आप उत्सुक होंगे। विद्यार्थियों की पर्चियों पर कुछ इस प्रकार की टिप्पणियाँ थीं— पास या फेल, ओफ़! छोटे लगाने का समय आ गया, खेल-कूद की छुट्टी, टी.वी. पर ताला, थोड़े दिन घर के काम से छुटकारा, रद्द तोते के तो मजे आ गए, ज्योमैट्री बॉक्स की तो तैयारी

कर लो, रोज़ वाली कॉपी की बातें मैडम वाली कॉपी पर, छोटे लगाओ नंबर पाओ, नालायक नंबर वन, लाल-लाल गोले, ज़ीरो बटा सन्नाटा, पेट में मरोड़, आदि-आदि। शिक्षकों की पर्चियों पर कुछ इस तरह के भाव थे— प्रश्न पत्र बनाओ, दस-दस लिस्टें बनाओ, गलतियाँ निकालो, नकल पकड़ो, बेतुकी एक्सरसाइज़ नो यूज़, चेकिंग, उच्च रक्तचाप, घबराहट के दिन, आदि-आदि। अब आप यह भी जानना चाहेंगे कि अभिभावकों ने अपनी पर्चियों में क्या-क्या लिखा होगा। (बहुत से अभिभावक लिखना नहीं जानते थे। उन्होंने मौखिक रूप से अपनी बात कही।) तनाव, अवसाद, प्रतिष्ठा का सवाल, उम्मीदों पर पानी न फिर जाए, टेंशन, ट्यूशन का इंतज़ाम, मोमबत्ती और लालटेन का जुगाड़, बिना देखे लिखना आदि। शायद हम सब की प्रतिक्रियाएँ इनसे अलग नहीं होंगी। दरअसल परीक्षा का स्वरूप कुछ है ही इस प्रकार का कि नकारात्मक भाव यानी कि न चाहने वाली बातें ही सामने अधिक आती हैं।

अभ्यास

- आप भी अपनी कक्षा में इस तरह की गतिविधि कीजिये और देखिये की बच्चों के इस बारे में क्या विचार है? हो सकता है आपको गतिविधि में परिवर्तन करना पड़े जैसे यह लिखित न होकर मौखिक गतिविधि हो सकती है। उन्हें लिखिए।

बच्चों को स्कूल में प्रवेश लेते ही पता चल जाता है कि स्कूल में सबसे महत्वपूर्ण बात है— परीक्षा पास करना। दो-तीन दिन के भीतर ही वे इस कड़वी सच्चाई को भाँप लेते हैं कि उन्हें जो कुछ भी सिखाया-पढ़ाया जाएगा उसका 'टेस्ट' होगा और 'टेस्ट' के नतीजे ही उनकी योग्यता का सबूत होंगे। वे इस बात पर भी विचार करते होंगे कि उनकी छोटी-मोटी किताबों के पाठों में ऐसा कौन-सा हौवा छिपा है जिसके सामने उनके बहुत से करिश्माई तजुर्बे बौने हो जाते हैं, जैसे— सीलन भरी मुँडेरों पर कुशलतापूर्वक चढ़कर पतंगबाज़ी करना, छोटे-छोटे हाथों से अखबारी कागज़ के लिफाफे बनाना, जलावन की लकड़ियाँ चुनकर लाना, पशुओं को चराई करवाना, सार्वजनिक नल से पानी भरकर लाना, घर-बाहर के सैकड़ों काम कर डालना, आसपास की पचासों घटनाओं की जानकारी प्राप्त कर माता-पिता तक पहुँचाना, भीड़ भरी सड़के पार कर लेना और सबसे बड़ी बात जटिल हालात में भी जी लेना (सरवाइव कर पाना)।

ऐसी कुशलताओं के धनी बच्चे आखिर किताबों की सूचनाओं के किले में प्रवेश क्यों नहीं कर पाते और जो प्रवेश कर पाते हैं वे उन्हें भेद क्यों नहीं पाते?

इस प्रकार के सवाल सभी के मन में उठते ही होंगे और सभी इस बात पर भी विचार करते होंगे कि तथ्यों की समझ रखने वाले और कठिन से कठिन हालात में भी जी लेने वाले बच्चे स्कूली परीक्षा में असफल क्यों हो जाते हैं।

अभ्यास

- आपकी कक्षाओं में आने वाले बच्चे भी ऐसी कुशलताएँ रखते हैं? हरेक कक्षा के बच्चों से बातचीत करके एक रिपोर्ट बनाएँ जिसमें कक्षा के बच्चों की इन कुशलताओं का विवरण हो।

इसका जवाब हासिल करने के लिए ज़रूरी है कि हम परीक्षा की मौजूदा आकलन प्रक्रिया को टटोलें।

- आकलन के संबंध में अभी तक जो कुछ भी हो रहा है वह पूरी तरह से औपचारिक ताने-बाने में गुँथा हुआ है। बाकायदा निश्चित अवधि के अंतराल पर दिन तय किए जाते हैं और घोषणा की जाती है कि अमुक दिन आपकी मौखिक/लिखित परीक्षा होगी। इस औपचारिक घोषणा के डरावने रूप को पहली कक्षा के बच्चे भी सहते हैं और ऊपर की कक्षाओं के बच्चे भी। इस प्रक्रिया में मूल्यांकन सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा ही नहीं

आता। आमतौर पर सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान ही अवलोकन, संवाद, समूह कार्य आदि के माध्यम से विद्यार्थी के सीखने की प्रगति या व्यवहार में परिवर्तन को आँका जा सकता है पर 'अवलोकन' और 'संवाद' को तो पूरी तरह नकार दिया जाता है।

- औपचारिक घोषणा से उपजे भय में बढ़ोतरी करती है 'प्रश्न संस्कृति'। हर प्रकार की परीक्षा का मुख्य बिंदु होता है—'प्रश्न-पत्र'। बच्चे क्या सीख पाए हैं यह जानने के लिए वर्ष को तीन बड़ी इकाइयों में बाँट दिया गया है। (कहीं-कहीं इन तीन बड़ी इकाइयों के साथ-साथ छोटी-बड़ी मासिक इकाइयाँ भी होती हैं।) तीन बड़ी इकाइयाँ कहलाती हैं— यूनिट-1, यूनिट-2, यूनिट-3। सरकारी विद्यालय के बच्चे हों यो प्रइवेट विद्यालय के बच्चे, वे इन्हें 'यूटी' (UT) के नाम से जानते हैं। शायद आप सुनते भी होंगे— आजकल यूटी चल रहे हैं। इन यूटी के कारण दिमाग सुन्न हो गया है।
- हर यूनिट का अपना एक निश्चित पाठ्यक्रम होता है। दूसरे शब्दों में, इस प्रकार कहना कहीं अधिक उपयुक्त होगा कि हर यूनिट में कितने और कौन-से पाठों के आधार पर परीक्षा ली जाए, यह पाठ्यक्रम कहीं किसी केंद्र से तय होकर आता है। अब यह सवाल तो ज़रूर उठना चाहिए कि क्या यह 'केंद्र' इस बात की जानकारी रखता है कि प्रत्येक विद्यालय की सभी कक्षाओं में विद्यार्थी किस गति से सीख रहे हैं, क्या-क्या सीख चुके हैं, कहाँ-कहाँ दिक्कतें आ रही हैं। दूसरा सवाल यह भी कि एक यूनिट के भीतर आने वाले पाठ या गतिविधियों का संबंध दूसरी यूनिट के अंतर्गत आने वाले पाठ से अलग है तो क्या उसे पहली यूनिट की परीक्षा से जोड़ा जाता है? दोनों सवालों के उत्तर 'नहीं' में ही हैं।
- यह ज़रूरी है कि हर विद्यालय के अध्यापक को स्वतंत्रता हो कि वह पहली यूनिट परीक्षा में किन-किन पाठों के आधार पर और किन तकनीकों एवं गतिविधियों को आकलन का बिंदु बनाना चाहेगी/चाहेगा। वैसे तो सजग अध्यापक सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के साथ ही यह जाँच करते चलते हैं कि मेरे विद्यार्थी क्या सीख पा रहे हैं और क्या नहीं सीख पा रहे हैं, किस बिंदु पर उन्हें किस तरह की दिक्कतें आ रही हैं और उन दिक्कतों को कैसे दूर किया जा सकता है।
- यह तो रही पाठों के चयन या निर्धारण की बात। अब प्रश्न बनाने की बात आती है। पाठ के किसी भी कोने से संदर्भ रहित कोई-सा भी प्रश्न उठा लिया जाता है और घिसे-पिटे तरीके से पुनः उसकी प्रस्तुति कर दी जाती है। प्रश्न बनाने की प्रक्रिया में यूनिट के सभी अध्यायों को शामिल करने का असफल प्रयास किया जाता है जिसमें वास्तविक सृजनात्मक चिंतन कहीं नहीं झलकता।

प्रश्न कुछ इस प्रकार के होते हैं जो रटने के कौशल पर आधारित होते हैं और इन प्रश्नों के उत्तर देने के लिए विद्यार्थियों को न तो सोचने-समझने की ज़रूरत पड़ती और न ही अपने दैनिक जीवन से जोड़ने की। वे विद्यार्थियों के अनुभवों से परे होते हैं इसलिए वह विद्यार्थियों को वस्तु/घटना के संबंध में अपनी धाराण बनाने और अपने विचारों को प्रतिबिंबित तथा प्रमाणित करने से रोकते हैं। रटने के कौशल में प्रवीण विद्यार्थी इन प्रश्नों के उत्तरों की यांत्रिक प्रस्तुति कर 'होनहार', 'मेधावी' जैसे खिताब पा जाते हैं और जो ऐसा नहीं कर पाते वे असफलता के डंक की चुभन को सहते-सहते सीखने की प्रक्रिया से ही बाहर हो जाते हैं।

इन प्रश्न-पत्रों में समस्या निराकरण, विवेकपूर्ण सोच, कल्पनाशीलता को बढ़ाने वाले, संदर्भ को विस्तार देने वाले, विश्लेषण, वर्गीकरण करने की क्षमता का पोषण करने वाले प्रश्नों का लगभग अभाव ही दिखाई देता है। उदाहरण के तौर पर—

प्लेटफ़ार्म पर उतरकर उसने किसको बुलाया?

अब देखिए, क्या यहाँ किसी तरह का संदर्भ नज़र आ रहा है? नहीं ना! आप से ही अगर यह सवाल पूछ लिया जाए तो आप क्या जवाब देंगे? ऐसे ही सवाल की एक और बानगी देखिए—

राजा ने किस रंग का चोगा पहना था?

उपर्युक्त सवाल पूछ कर आप कौन-सा भाषायी कौशल जाँचना चाह रहे हैं? सिर्फ विद्यार्थी के पठन कौशल का ही न, क्योंकि चोगे का रंग उसने पाठ में पढ़ा होगा। अब अगर इस सवाल को कुछ इस तरह से पूछें—

राजा को लाल रंग का चोगा ही क्यों पसंद था?

भले ही सीधे-सपाट तरीके से उपर्युक्त सवाल का उत्तर पाठ में न मिल पाए पर अगर विद्यार्थी ने पाठ को समझ कर पढ़ा है तो अपनी कल्पना, तर्कशक्ति और अनुमान के आधार पर कारण खोज ही लेगा कि राजा को लाल रंग का चोगा क्यों पसंद था।

अब बात करेंगे प्रश्नों के साथ-साथ अंकों की। पूरा प्रश्न-पत्र एक निश्चित अंक सीमा में बँधा हुआ होता है और अंको की सहूलियत को मद्देनज़र रखते हुए प्रश्नों से प्राप्त होने वाले उत्तरों की सीमा भी तय हो जाती है।

उदाहरण के तौर पर—

- जंगल में रहने वाले दो जानवरों के नाम बताओ।
- मदर टेरेसा के चरित्र की तीन विशेषताएँ लिखो।
- जल के चार स्रोतों के नाम बताओ।
- वृक्षों से होने वाले पाँच लाभ लिखो।
- जातिवाचक संज्ञा के चार उदाहरण दो।
- नीचे लिखे शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द बताओ।

अभ्यास

- लेखक के अनुसार मौजूदा आकलन प्रक्रिया में किन-किन बातों का आकलन नहीं हो पाता है? अपने शब्दों में बताओ।

उपर्युक्त उदाहरणों में दो, तीन, चार, पाँच की संख्या ने अंक देने/काटने में भले ही सुविधा प्रदान कर दी हो पर विद्यार्थियों की उद्यमिता और विचार करने की क्षमता को उभारने का मौका गँवा दिया है।

कविता के संदर्भ में भी अंको की सुविधा को ही महत्व दिया जाता है, जैसे—

- अपनी पाठ्यपुस्तक से याद की हुई किसी भी कविता की छह पंक्तियाँ लिखो/सुनाओ। यहाँ विद्यार्थी के सामने पाठ्यपुस्तक से ही कविता याद करने और उसे छठी पंक्ति पर ही समाप्त करने की बेबसी है भले ही वह छठी पंक्ति किसी नए अंतरे की शुरुआत क्यों न हो।
- क्या पाठ्यपुस्तक से इतर कोई भी पसंदीदा कविता सुर, लय, ताल के साथ सुनवाकर हम किसी भी अधिगम अनुभव का आकलन नहीं कर सकते? क्या प्रश्न-पत्र विद्यार्थियों के सजीव अनुभवों को स्थान नहीं दे सकता?

अब हम बात करते हैं आकलन में भिन्न-भिन्न गतियों और तकनीकों की। हम सभी जानते हैं कि विद्यार्थियों के सीखने की गति अलग-अलग होती है। हर विषय-वस्तु को सीखने-सिखाने के तरीके भी अलग-अलग होते हैं। परंतु मौजूदा मूल्यांकन व्यवस्था में इस अवधरणा का कोई स्थान नहीं है। विद्यार्थी विभिन्न प्रकार के परीक्षणों की अनुभूति से वंचित रह जाते हैं।

पहली और दूसरी कक्षाओं में फिर भी मौखिक परीक्षण को स्थान मिल जाता है पर तीसरी कक्षा के बाद तो लिखित परीक्षा पर ही निर्भरता बनी रहती है। कहीं-कहीं प्रायोगिक कार्य को थोड़ी बहुत तरजीह दे दी जाती है पर वहाँ अध्यापक-अध्यापिकाओं के पूर्वाग्रह उसे बेमानी बना देते हैं। जिन विद्यार्थियों की वाचिक निपुणता लेखन से कहीं ज़्यादा अच्छी है, जिनके काम करने की गति तो बहुत धीमी है पर वे बड़ी सूक्ष्म दृष्टि के साथ करते हैं, जिन विद्यार्थियों में गहन अवलोकन करने, वर्गीकरण करने, तर्क प्रस्तुत करने, कल्पना करने और व्याख्या करने के कौशल हैं पर रटने की क्षमता का अभाव है, ऐसे विद्यार्थी अंको की कसौटी पर खरे नहीं उतर पाते।

बहुत से बच्चे समूह में बेहतर कार्य निष्पादन कर पाते हैं पर हमारी मौजूदा मूल्यांकन प्रक्रिया में ऐसी वैयक्तिक सुविधा का सर्वथा अभाव है।

तीसरी, चौथी तथा पाँचवीं कक्षा के प्रश्न-पत्रों की एक बानगी प्रस्तुत है—

- पहला प्रश्न अनुच्छेद या निबंध लेखन का होता है जिसमें अक्सर विषयों का दायरा बहुत ही सीमित होता है जैसे— रक्षाबंधन, मेरा प्रिय मित्र, मेरा विद्यालय, ईद, होली, 15 अगस्त।
- दूसरा प्रश्न-पत्र लेखन से संबंधित है। यहाँ विषय सीमा संकुचित होने के साथ-साथ बहुत हास्यास्पद भी है, जैसे— बीमार होने पर मुख्याध्यापक को प्रार्थना-पत्र, फीस माफ़ करने के लिए मुख्याध्यापक को पत्र, बड़े भाई के विवाह के कारण अवकाश के लिए पत्र।

क्या विद्यार्थियों के मित्र, सगे-संबंधी नहीं होते जिन्हें वे पत्र लिख सकें, क्या किसी स्थिति विशेष में ही पत्र लिखा जाता है, यँ ही अपने मन की बात या दिलचस्प वाक्या बताने के लिए पत्र नहीं लिखा जा सकता? यदि किसी अभियोजन को सिद्ध करने के लिए पत्र लिखना ही है तो विद्यार्थी क्रीड़ा-स्थल, खिलौनों, भ्रमण के आयोजन के संबंध में भी तो मुख्य अध्यापक को पत्र लिख सकते हैं।

अब बारी आती है वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की, जिसमें सही/गलत के निशान लगाने हैं—

- जंगल के जानवर चींटी से परेशान थे।
- हाथी सभी जानवरों से प्यार करता था।
- बूढ़ा कबूतर चतुर था।
- कुएँ के अंदर चाँद था।

सभी कथन पाठ्यपुस्तक पर आधारित हैं। पाठ से थोड़ा भी इधर-उधर हुए तो उत्तर गलत भी हो सकता है।

व्याकरण संबंधी प्रश्न कुछ इस प्रकार होते हैं—

संज्ञा या सर्वनाम की परिभाषा लिखकर पाँच उदाहरण दीजिए।

भाषा की बारीकियाँ कुछ इस प्रकार उभारी जाती हैं—

नीचे लिखे शब्दों के अर्थ लिखो—

ज़मीन, शिकायत, भली, आलस

सार यह है कि पूरे प्रश्न-पत्र में कल्पनाशीलता की कहीं कोई गुँजाइश नज़र नहीं आती। बेजान, नीरस-सा प्रश्न-पत्र पूरी मूल्यांकन प्रक्रिया में छाया रहता है। पहली और दूसरी कक्षा में श्रुतलेख, सुलेख और पठन करवाया जाता है। महत्वपूर्ण बात तो यह है कि तीनों के लिए टूटे-फूटे अलग-अलग गद्यांश चुने जाते हैं। श्रुतलेख में ही सुलेख के अंक दिए जा सकते हैं। पाठ्यपुस्तक से बाहर का गद्य/पद्य पठन के लिए लिया जा सकता है।

सीखने की प्रक्रिया के दौरान ही अवलोकन, मौखिक अभिव्यक्ति, समूह कार्य, काम के प्रति दृष्टिकोण आदि के आधार पर आकलन किया जा सकता है।

मौजूदा मूल्यांकन प्रक्रिया में शारीरिक एवं मानसिक रूप से चुनौती वाले बच्चों के लिए भी तिल भर बदलाव की ज़रूरत नहीं समझी जाती। हाँ, अंक देने में गैर ज़रूरी उदारता ज़रूर दिखाई जाती है—अरे, एक नंबर तो फालतू दे ही दो इसे। बेचारा। हमें यह समझना ज़रूरी है कि वे बेचारे नहीं हैं और अंको के मोहताज़ भी नहीं। वे हमसे उसी तरह के सामान्य व्यवहार की अपेक्षा करते हैं जैसा कि दूसरों के साथ किया जाता है। वर्तमान मूल्यांकन प्रक्रिया एक प्रकार से कुंठित प्रतियोगिता को जन्म देती है।

इस प्रतियोगिता में रटने के आधार पर अधिक अंक लाने वाले को तो 'गौरव' के कुछ पल प्राप्त हो जाते हैं पर कम अंक लाने वाले आत्मग्लानि के बोझ तले दबकर नीरस और थकावट भरी अधिगम प्रक्रिया को ठेलते रहते हैं। अपनी गति, अपने तरीकों से अनुभव प्राप्त करने की चाहत भी किसी गहराई में है। अब तो वह समय आ ही गया है जब किसी भी प्रशासनिक सुविधा या असुविधा की दुहाई न दी जाए और बदलाव को सहज स्वीकार किया जाए और यह विश्वास किया जाए कि हर बच्चे में सीखने की संभावनाएँ मौजूद हैं।

अभ्यास

- निम्न के बारे में अध्याय में क्या कहा गया है।
 - प्रश्नों की प्रकृति
 - यूनिट टेस्ट
 - विद्यार्थी के बारे में
-

अध्याय – 28

आकलन के तरीके

पाठ की रूपरेखा

- परिचय
- उद्देश्य
- शीर्षक व उप-शीर्षक
 - आकलन संबंधी युक्तियाँ
 - मौखिक परीक्षण
 - प्रश्न-उत्तर सत्र
 - कहानी कहना
 - बोलकर पढ़ना
 - वर्णन करना
 - अवलोकन
 - लिखित परीक्षण
 - पोर्टफोलियो

परिचय :

आकलन सीखने-सिखाने और पढ़ने-पढ़ाने की प्रक्रिया का अभिन्न हिस्सा है। सभी बच्चों के सीखने की अपनी एक 'गति' (पेस) होती है और सीखने के तरीके भी भिन्न-भिन्न होते हैं। आकलन के वही तरीके अच्छे हैं जो बच्चों की गति और सीखने के तरीकों को संबोधित कर सकें। शिक्षक द्वारा अपनाए गए आकलन के तरीके सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को उबाऊ, तनाव युक्त तथा भय पैदा करने वाला बना सकते हैं या फिर चुनौतीपूर्ण, मजेदार और तनाव मुक्त।

यहाँ पर आकलन की कुछ ऐसी युक्तियों की बात की जा रही है जो प्राथमिक स्तर पर हिन्दी के संदर्भ में प्रयुक्त की जाती है। यह सीखने और सिखाने वाले दोनों के लिए उपयोगी सूचनाएँ प्रदान करने में सहायक होगा और इसकी मदद से पढ़ाने के तरीकों को और भी समृद्ध बनाया जा सकेगा।

उद्देश्य :

- आप आकलन के विभिन्न तरीकों के बारे में जान पाएँगे।
- आकलन के क्या-क्या तरीके हो सकते हैं यह समझ पाएँगे।
- यह समझ पाएँगे कि कक्षा में इन तरीकों का कैसे उपयोग किया जा सकता है।

भाषा के संदर्भ में आकलन का उद्देश्य है— भाषा की समझ, इसे विभिन्न संदर्भों में उपयोग करने की क्षमता और इसके सौंदर्यपरक पहलू परख सकने की क्षमता का मापन। इससे हमें सीखने वाले की वास्तविक स्थिति का पता चलता है और उसकी स्थिति बेहतर करने के लिए समय पर उचित हस्तक्षेप करने के लिए आवश्यक पहल करने के संकेत भी मिलते हैं। शैक्षणिक प्रक्रियाओं में आकलन का अर्थ है— ज्ञान, समझ, क्षमता और प्रदर्शन को किसी भी तरीके से आँकना। भाषा शिक्षण के मामले में आकलन को कक्षा कार्य के ही विस्तार के रूप में देखा जाना ज़रूरी है।

भाषा के संदर्भ में यदि हम आकलन की मौजूदा प्रक्रिया का अवलोकन करें तो मुख्य बात यह समझ में आती है कि मौखिक और

लिखित परीक्षा द्वारा बच्चों की शब्द संपदा, व्याकरण तथा पढ़ने और लिखने के ही कौशल की जाँच की जाती है। जाँच के लिए जो परीक्षा पत्र/प्रश्न-पत्र तैयार किया जाता है वह आमतौर पर पाठ्यपुस्तक पर ही आधारित होता है और उनका उत्तर देना भाषा की समझ पर कम और स्मृति के कौशल पर अधिक आधारित होता है।

शिक्षक की सुविधा कहें या कुछ और, आकलन के लगभग सभी तरीके 'लिखित जाँच पत्र' के इर्द-गिर्द ही घूमते रहते हैं। मौखिक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, आवलोकन— इन सब का कोई स्थान नज़र ही नहीं आता।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 में भाषा-शिक्षण के जिन उद्देश्यों की बात की गई है, उनके अनुसार आकलन के तरीकों को भी बदलने की महती अनिवार्यता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 ने 'एक समग्र भाषिक निपुणता' की बात पर बल दिया है। इस संदर्भ को मद्देनज़र रखते हुए आकलन के नज़रिए और फिर उसके साथ आकलन की युक्तियों, तकनीकों में भी बदलाव की ज़रूरत है।

आकलन संबंधी युक्तियाँ

हिन्दी भाषा के आकलन के संबंध में 'पढ़ाने और सीखने' की प्रक्रिया को एकीकृत रूप में देखना ज़रूरी है। भिन्न-भिन्न युक्तियों का इस्तेमाल करते हुए आकलन की सतत प्रक्रिया द्वारा भाषा के सभी कौशलों की जाँच करना न केवल आसान हो जाता है अपितु प्रभावशाली भी बन पड़ता है। भाषा सीखने की प्रक्रिया का आकलन करने के लिए यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि विद्यार्थी (बच्चे) को भी आकलन की प्रक्रिया में शामिल किया जाए। स्व-आकलन, साथियों द्वारा आकलन विद्यार्थियों को बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रोत्साहित करता है।

आकलन की भिन्न-भिन्न तकनीकों पर बात कर लेने से पहले यह समझ बना लेना बहुत ज़रूरी है कि—

- हर बच्चा अपने आप में अद्वितीय है,
- सीखने-सिखाने के उसके अपने कुछ खास तरीके होते हैं,
- सभी बच्चे अपनी एक निश्चित गति से सीखते हैं,
- व्यक्ति विशेष की निश्चित गति (पेस) और सीखने के तरीकों को संबोधित करने वाली आकलन की तकनीकें उन में आत्मविश्वास पैदा करती हैं,
- सीखने के प्रति ललक पैदा करती हैं और बेहतर प्रदर्शन के लिए उत्साहित करती हैं।

मौखिक परीक्षण

यह एक बहुत ही सरल पर अधिक प्रभावशाली तकनीक है— भाषायी कौशलों के परीक्षण की। मौखिक परीक्षण के लिए औपचारिक एवं अनौपचारिक रूप से बहुत-सी गतिविधियाँ आयोजित की जा सकती हैं। कक्षा शिक्षण के दौरान बच्चों से तरह-तरह के मुद्दों पर संवाद करना, प्रश्न पूछना, समूह में चर्चा करवाना, अभिनय करवाना आदि बहुत-सी गतिविधियाँ आयोजित कर बच्चों के भाषायी कौशलों की जाँच की जा सकती है। मौखिक परीक्षण के अंतर्गत बहुत-सी गतिविधियाँ औपचारिक रूप से भी आयोजित की जा सकती हैं—

प्रश्न-उत्तर सत्र— बच्चों की भाषा संबंधी तत्परता, शब्द संपदा, उच्चारण और भाषा की बुनावट संबंधी कौशल जानने के लिए तरह-तरह के सवाल बनाए जाते हैं। शुरुआती दौर में पाठ्यपुस्तक के इर्द-गिर्द ही न घूमते रहें। बच्चों की रोजमर्रा की जिदंगी से जुड़े सवालों के द्वारा उनसे उत्कृष्ट कोटि के उत्तरों की अपेक्षा की जा सकती है। बच्चे अपने बारे में, अपनी परिवार और प्रिय वस्तुओं के बारे में बोलना बहुत पसंद करते हैं। जो कुछ उन्होंने चारों ओर देखा है, उसके बारे में बोलने के लिए वे सदैव तत्पर रहते हैं। अतः सवाल बनाते समय

उनकी रुचियों को अवश्य ध्यान में रखा जाए। 'सवाल बना लेना' ही अपने आप में पर्याप्त नहीं है, पूछने का तरीका, उत्तर पाने के लिए समय देना भी जरूरी है और उत्तर सुनते समय शिक्षक के हाव-भाव दोनों के बीच का आपसी रिश्ता बहुत ही महत्वपूर्ण है।

बहुत-से अध्यापक सवाल करते हैं कि भरी कक्षाओं (जहाँ विद्यार्थियों की संख्या अधिक है) में प्रत्येक बच्चे से प्रश्न कैसे पूछ सकते हैं? इस संबंध में उत्तर तो यही है कि बच्चे हमारे पास सिर्फ एक ही दिन के लिए तो नहीं हैं न! पाठ पढ़ाने के दौरान भी सवाल पूछे जा सकते हैं, इसके लिए एक निश्चित दिन तय करना जरूरी नहीं।

कहानी कहना— पाठशाला आने से पूर्व ही बच्चों का कहानी से रिश्ता सोते-जागते, उठते-बैठते किसी न किसी तरह से जुड़ ही जाता है। कहानी सुनना उनकी आदतों में शामिल हो जाता है। कहानियाँ सुनते-सुनते कब वे अपनी ही तरह से कहानियाँ गढ़ने लगते हैं यह एक चमत्कार ही है। सुनी हुई कहानी को अपने शब्दों में सुना देना और अपनी तरफ से कहानी सुनाना भी भाषायी कौशलों के आकलन की प्रभावशाली विधि है कहानी सुनाते समय (बच्चे द्वारा) आकलन के मुख्य बिंदु होंगे।

- सुने गए शब्दों के अतिरिक्त कुछ नए शब्द स्थिति के अनुरूप डाल पाना,
- आवश्यकतानुसार हाव-भाव का प्रयोग कर पाना,
- घटना क्रम को याद रख पाना।

अभ्यास

- अपनी इच्छानुसार कहानी को बड़ी व छोटी कर पाना क्या इसके अलावा भी कोई और बिन्दु हो सकते हैं? जरूर हो सकते हैं। बच्चों को उस वक्त देखिये जब वे कहानी सुना रहे हों और बताइये की इस सूची में आप क्या-क्या जोड़ेंगे।

बोलकर पढ़ना— भाषा संबंधी आकलन की इस पारंपरिक विधि की उपयोगिता और महत्व को किसी भी दृष्टि में नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता। पढ़ने के कौशल की जाँच के साथ-साथ उनके उच्चारण, भाव के अनुसार बल, अनुतान देने के कौशल की भी जाँच होती चलती है। विद्यार्थी को तरह-तरह के कथन, संवाद के छोटे-बड़े टुकड़ें, नाटक का कोई हिस्सा या फिर पाठ्यपुस्तक के पाठों के अंश बोल-बोल कर पढ़ने के लिए दिए जा सकते हैं।

विद्यार्थी द्वारा गलत उच्चारण करने पर, विस्मय, प्रश्नबोधक हाव-भाव का प्रयोग न करने पर तुरंत टोकना उन में भय और अरुचि के भाव उत्पन्न करेगा। अतः यह हम पर निर्भर करता है कि सकारात्मक प्रभाव लाने के लिए किस समय उन्हें सही उच्चारण बताया जाए और किस तरीके से बताया जाए।

वर्णन करना— देखी-सुनी या पढ़ी बात का वर्णन करना सुनने में बहुत आसान लगता है पर यह अपने आप में कहीं बहुत जटिल कौशल है। बच्चों में यह कौशल स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहता है पर भाषायी शिक्षण की प्रवृत्तियों इसे पुष्ट करने के स्थान पर कुचल देती हैं। 'वर्णन करना' आकलन की दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण है। प्राथमिक स्तर के शुरुआती दौर में विद्यार्थी को किसी भी परिचित परिवेश में जानी-पहचानी वस्तु दिखाकर, चित्र दिखाकर या फिर कोई क्रिया दिखाकर बच्चों को वर्णन करने के लिए कहा जा सकता है। वर्णन की शुरुआत एक वाक्य से हो सकती है।

मौखिक परीक्षण में अंक या ग्रेड देने के लिए तीन या पाँच बिंदुओं वाला रेटिंग स्केल प्रयोग में लाया जा सकता है।

सारणी

विवरण	1	2	3	4	5
प्रवाह				अ	
शब्द संपदा			अ		
संरचना			अ		
अभिव्यक्ति				अ	

कुल अंक : 20

उपर्युक्त सारणी में 5 उत्कृष्ट प्रदर्शन की और संकेत करता है। 3 से औसत प्रदर्शन का पता चलता है और 1 इस बात की ओर इशारा करता है कि विद्यार्थी को अभी अवसर देने की जरूरत है।

अवलोकन

कक्षा में भाषा शिक्षण के लिए आप बहुत-से तरीकों का प्रयोग करते हैं, जैसे— चर्चा करना, अभिनय, स्वतंत्र अभिव्यक्ति, समूह में संवाद, चित्र पढ़ना आदि। बच्चे जब इन प्रक्रियाओं में संलग्न होते हैं तब शिक्षक द्वारा इन सभी प्रक्रियाओं का अनौपचारिक अवलोकन आकलन का एक महत्वपूर्ण अंग बन जाता है।

अवलोकन आकलन का हिस्सा तभी है जब वह—

- नियमित रूप से किया जा रहा हो,
- किसी भी तरह के पूर्वाग्रह से दूर हो,
- आवश्यकतानुसार और सुविधानुसार उसका रिकॉर्ड भी रखा जा रहा हो।

यहाँ अवलोकन के लिए 'अनौपचारिक' शब्द इस्तेमाल किया गया है, इसका तात्पर्य यह नहीं कि बिना किसी उद्देश्य के अवलोकन कर रहे हैं। किसी गतिविधि का अवलोकन भाषा का प्रवाह, किसी की स्वतंत्र अभिव्यक्ति आदि जानने के लिए किया जा सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि भाषायी कौशलों की जाँच अवलोकन के आधार पर भी की जाती है।

लिखित परीक्षण

'पढ़ना' और 'लिखना' तथा अन्य कौशलों, यथा—वर्गीकरण, वर्णन आदि की जाँच करने के लिए आमतौर पर सभी शिक्षक लिखित परीक्षण पर निर्भरता प्रदर्शित करते हैं। कक्षा—कार्य, गृह—कार्य, यूनिट परीक्षाएँ लगभग सभी स्थितियों में लिखित परीक्षाओं का ही सहारा लिया जाता है। लिखित परीक्षाएँ सिर्फ लिखने के कौशल का ही आकलन नहीं करती अपितु पढ़ना, समझना, ग्रहण करना, कल्पना करना, स्वतंत्र अभिव्यक्ति— इन सभी पक्षों का आकलन करने में मदद करती हैं, बशर्ते इन परीक्षाओं के लिए जिस उपकरण, निःसंदेह रूप से प्रश्न—पत्र की ही बात सबसे पहले आती है, को सर्जनात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया हो। आमतौर पर प्रश्न—पत्र लिखने के कौशल की कम, 'स्मृति' के कौशल की जाँच अधिक करते हैं, अतः प्रश्न बनाते समय ध्यान रखा जाए कि प्रश्न—

- संदर्भ का विस्तार करने वाले हों,
- कल्पनाशीलता का पोषण करने वाले हों,

- समालोचनात्मक चिंतन को बल देने वाले हों,
- अनुभव आधारित उत्तरों का पोषण करने वाले हों,
- विश्लेषण क्षमता को बढ़ावा देने वाले हों ।

प्रश्नों के उत्तर के संबंध में एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात पर गौर करना बहुत ही जरूरी है— विद्यार्थी के शब्दों को महत्त्व देना। यह बात एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट की जा सकती है।

एक अध्यापक विद्यार्थी के लिखित उत्तर का आकलन करते हुए कह रहे हैं— “बात तो बच्चे ने बिल्कुल सही लिखी है, पर मैंने जिन शब्दों में बताई थी, वे शब्द नहीं हैं, क्या करूँ, नंबर काट लूँ क्या?”

आप इन शिक्षक महोदय की मदद किस तरह से करेंगे?

श्रुतलेख— श्रुतलेख को भी भाषायी क्षमता की जाँच के उपकरण के रूप में इस्तेमाल में लाया जा सकता है। पर यह पारंपरिक श्रुतलेख से भिन्न है। यह बच्चे की स्मृति और मात्राओं की जाँच नहीं है बल्कि समग्र भाषिक निपुणता/दक्षता की जाँच में सहायक है।

विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक स्तर को, उम्र को ध्यान में रखते हुए किसी भी पाठ्य-सामग्री का कोई भी अंश चुनिए। (श्रुतलेख पर तीसरी कक्षा से शुरू किया जा सकता है।)

पोर्टफोलियो

पोर्टफोलियो का जिक्र आते ही हमारे साथी अध्यापक कला, चित्रकारी आदि के आकलन की बात सोचन लगते हैं। पोर्टफोलियो भाषायी कौशलों के आकलन का भी महत्वपूर्ण और कारगर तरीका है। सत्र के पहले दिन से लेकर आखिरी दिन तक बच्चे तरह-तरह की गतिविधियों के द्वारा बहुत कुछ लिख रहे हैं, बना रहे हैं। यह सब उनके पोर्टफोलियो/फोल्डर में रखा जा सकता है। यदि आधुनिकतम तकनीकों की सुविधा हो तो सी डी, कैसेट द्वारा उनके मौखिक कार्यों को भी पोर्टफोलियो में रखा जाना संभव हो सकता है। अगर ये ना हो सकें तो आप बच्चों की कॉपी को भी पोर्टफोलियो की तरह उपयोग कर सकते हैं लेकिन फिर आपको बच्चों को अपनी कॉपी सिर्फ पाठ्यपुस्तक के प्रश्न ही नहीं बल्कि अन्य कार्य जैसे चित्र बनाना श्रुतलेख वर्णन करना यह सब लिखने की भी स्वतन्त्रता देनी होगी। पोर्टफोलियो रखने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि विद्यार्थी अपने काम को उलट-पुलट कर देख सकते हैं, अभिभावकों को भी अपने बच्चे के काम की जानकारी मिलती रहती है, शिक्षक भी उसे सिर्फ जाँच नहीं अपितु सिखाने की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण उपकरण बना सकते हैं। अब सवाल उठता है कि पोर्टफोलियो में क्या-क्या हो। आगे कुछ बातें प्रस्तावित रूप में दी जा रही हैं—

कक्षा 1 और 2

- तस्वीरें, चित्रकारी, हस्तलेख के नमूने, लेखन के शुरुआती दौर के वाक्य,
- मौखिक अभिव्यक्ति— वर्णन, कहानी, संवाद, कविता, चुटकुल, पहेलियों आदि की कैसेट (जो बच्चों ने सुनाई हो) सुविधानुसार,
- श्रुतलेख, अनुकरण लेखन,
- शुरुआती दौर का पठन, चित्र आदि को पढ़ना,

- किसी चित्र को देखकर वर्णन करना, लिखित और मौखिक दोनों रूपों में, घटना/कहानी पर चित्र बनाना ।

कक्षा 3 से 5 उपर्युक्त के साथ-साथ-

- अपनी समझ से लिखी गई कहानी, घटना वृत्तांत,
- तैयार किए गए विज्ञापन, नोटिस,
- अनुच्छेद लेखन,
- निबंध लेखन,
- पत्र
- क्लोज टेस्ट के उत्तर,
- स्वरचित कविताएँ,
- लिखी हुई घटनाओं, कहानियों पर चित्र,
- नाटक-प्रस्तुति आदि ।

अभ्यास

-
- पाठ में आकलन के क्या-क्या तरीके बताएँ गए हैं?
 - अवलोकन आकलन का हिस्सा कब माना जाएगा?
-